जो अर्द्धशताब्दी पर्यन्त ज्योतिर्मान रहा



उस

निर्मल

चन्द्र

की



शुक्ल-स्मृति

[लघु जीवन-रेखा एवं श्रद्धा स्मारिका]

संपादक

मुनि सुमन कुमार



पंजाब जैनाचार्य

पूज्य श्री काशीराम स्मृति ग्रन्थमाला, अम्बाला शहर

कौन–क्या ?



पुस्तक का नाम : सुमन-स्मृति

विषय : श्रद्धांजलियां

विधा : गद्य-पद्य

भाषा : हिन्दी

सम्पादक : मुनि सुमन

प्रबन्धक : श्री रतन चंद सम्पूर्ण चंद जैन
पुस्तक विक्रेता, जालन्धर

प्रकाशक : मुनी लाल जैन
लिए : मंत्री. पू. श्री काशी राम स्मृति
ग्रंथमाला, अम्बाला शहर

मूल्य : एक सौ पचास पैसे

प्रवेश : प्रथम—एक सहस्त्र
वि०सं० २०२६, ई०स० १९६९, वीरसं० २४९५
आ०सोह०स० ३५, शुक्ल सं० १

आमुख : 'रमरा' कलाकार जालन्धर

ब्लाक प्रबन्ध : श्री विमल 'अंशु' जालन्धर

मुद्रक : श्री कृष्ण चन्द्र अग्रवाल
संस्कृति मुद्रणालय,
टांडा रोड, जालन्धर शहर।



कहां क्या है ?





अपनी बात

'शुक्ल-स्मृति' पुस्तक को पाठकों के हाथों मे प्रस्तु करते हुए आज मुझे हर्ष का अनुभव होता है। इस में जीवन रेखा, संवेदना पत्र, श्रद्धांजलियां तथा सस्मरण आदि संकलित हैं। इस के सम्पादन का श्रेय श्री सुमन मुनि जी म० को है, उन्होंने ही सारा श्रम किया है। स्व० प्रवर्तक श्री जी म० के जीवन का परिचय देने में यह स्मारिका प्रथम कड़ी होगा। इस के साथ ही एक जीवन-चरित प्रकाशित करने का प्रयत्न हो रहा है।

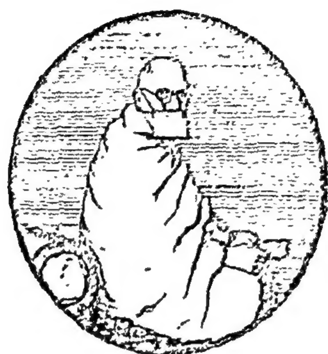
इस के प्रकाशन में रायकोट निवासी बन्धुओं तथा श्री मनमोहनशील जैन 'मॉन को इन्डस्ट्रीज जालन्धर' ने जो सहयोग दिया है धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रद्धेय स्व० प्रवंतक श्री जी कितने महान् थे यह सब आप इस स्मृति-ग्रन्थ में आयी सामग्री से पढ़ कर अनुमान लगा सकेंगे। वास्तविक ज्ञान तो उन के जीवन का उन जैसा ही हो कर या सर्वज्ञ बन कर ही लगाया जा सकता है। व्यक्ति के पास जितनी सोचने की बुद्धि और व्यक्त करने को वाणी एवं अन्य साधन है कर पाता है।

वे वस्तुत: महान् थे, सरलता, नम्रता और शांति तथा करुणा गुण तो उनके जीवन-अंग थे। सदा आत्म-समाधि में लीन रहना ही आपका स्वरूप था। ऐसे स्व-परहितैषी वन्द्य युग पुरुष को इन्हीं शब्दों के साथ पुन: पुन: वंदन है।

मै० भानामल खरैती लाल जैन
जैन एजेन्सीज, शुक्लकुण्ड रोड,
दि० २८ फरवरी, १९६९

—मुनि लाल जैन
मंत्री, पूज्य श्री काशीराम स्मृति ग्रन्थमाला
अम्बाला शहर (हरियाणा)



श्वेत हृदय तन श्वेत पट, श्वेताचार विचार ।
श्वेत सुगुन जिन-ध्यान शुभ, धन्य शुक्ल अणगार ॥



ध्यान शुक्ल बिन शिव कहां, शुक्ल बिना तम नाश ।
श्रमण संघ बिन शुक्ल के, कैसे करे उजास ॥



रत्न अमोलक आपसो, मिले फेर मुश्केल ।
करसी कुण पंजाब में, संत संघ में मेल ॥

—प्रवर्त्तक "मरुधर केसरी जी" म०



संत मिलेंगे बहुत मगर उन जैसा मिलना मुश्किल है ।
किसी सती को साधु को लख, मुख हो खिलना मुश्किल है ॥
जो भी मिला स्नेह से फौरन, अपना उसे बनाते थे ।
खूबी खास यही थी वह भी, उसके ही बन जाते थे ॥

—कवि चन्दन मुनि जी म०



देह जिस में भव्यता थी, ओज था आभा अनूठी ।
ढल गई किन्तु अलौकिक, ज्योति तो उसकी अमर ।
आवरण था मूर्त का, केवल उसी का नाश है ।
शुक्ल चन्द्र की कलाएं तो, सदा अविनाश है ॥

—मुनि सौभाग्य 'कुमुद'

जिन का महाप्रयाण २९ फरवरी १९६८ का हुआ

स्व० प्रवर्तक पण्डित शुक्ल चन्द्र जी म०



मैं बता दूं आपको अच्छों की क्या पहचान है ?
वोह हैं खुद अच्छे, जो औरों को नहीं कहते बुरा ॥
—ज़ौक



गुल से पूछिए न किसी गुलचीं से पूछिए।
सदमा चमन के लुटने का बुलबुल से पूछिए ॥
—तालिब



शुक्ल जन्मया ते शुक्ल लई दीक्षा,
शुक्ल नाम वराया संसार दे विच।
चमकया दमकया खिड़या ते महकया वी,
पूज्य सोहन लाल जी दे भरे परिवार दे विच ॥
शीतल लेश्या दी सुन्दर महक छिड़की,
पंजाब केसरी दे बाग़ गुलजार दे विच।
शुक्ल पक्ष अन्दर शुक्ल जी अमर होए,
'विलायती राम' तड़फता है ओहदे प्यार दे विच।



शुक्ल—वाणी

❀ कोई कुछ भी करे, यह तुम्हें देखने की जरूरत नहीं, सदा अपनी आत्मा की तरफ देखो कि मैं क्या हूं, बस, इसी में ही अपना और सब का भला है।

❀ सामने वाला व्यक्ति खिमाता है या नहीं यह मत सोचो, तुम अपनी ओर से उससे खिमत-खिमावना (क्षमा का आदान-प्रदान) कर लो, यदि वह नहीं करेगा तो वह विराधक होगा तुम नहीं।

❀ किसी को किसी कार्य के लिए बार २ कहने की जरूरत नहीं, उस से आग्रह, और कठोरता पूर्वक कहने से वह नहीं मानता है, यदि इस क्रिया से अपनी आत्मा की समाधि भंग होती है तो फिर दूसरे को समझाने से कोई लाभ नहीं। सदा समाधि में रहते हुए काम करो।

❀ शिष्य, भाई, बहिन अथवा कोई भी एक दो या तीन बार समझाने पर भी यदि नहीं मानता है तो उसे कहना, समझाना छोड़ देना चाहिए, इस से दो रूप होंगे— यदि वह विनय-संपन्न होगा तो विचार करेगा कि मुझे क्यों नहीं कहा जा रहा है और वह मार्ग पर आ जाएगा नहीं तो वह जीवन भ्रष्ट हो जाएगा। तुम्हें कुछ करने की जरूरत नहीं, उस की क्रियाएं ही उस के लिए काफी हैं।



जीवन-रेखा



जीवन-रेखा

जगती-तल पर अनेक मनुष्य जन्म ग्रहण कर, जीवन व्यतीत कर न जाने कहां और कब चले जाते हैं। अतीत और वर्तमान उन्हें सर्वदा विस्मरण कर देता है। किन्तु उन पुरुषों को सर्वदा ही स्मृत रखता है समय जो अपने अलौकिक गुण और आचरण से अपने के साथ मानव-समाज का हित कर जाते हैं। वे युग-पुरुष किंवा युग-प्रवर्त्तक कहला जाते हैं। फिर भला उन्हें कौन विस्मृत कर सकता है? वे जाति, समाज और राष्ट्र की समृद्धि हो जाते हैं। मार्गदर्शक, आदर्श तथा नायक आदि सर्वस्व होते हैं। वे इसी आधार पर इतिहास की वस्तु बन जाते हैं और आने वाली पीढ़ी उन्हें अपना पूर्वज मान कर सदा श्रद्धा-सुमन समर्पित कर उससे मौन मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त करती रहती है।

ऐसे महापुरुषों में थे एक हमारे युग-पुरुष श्रद्धेय प्रवर्त्तक पं० श्री शुक्लचंद्र जी महाराज।

वे जैन समाज एवं संस्कृति के गुण समन्वय, उदार, निभाव तथा विनय, सारल्य आदि तथा साधु व्यक्तित्व से परिपूर्ण, धर्म के प्रतीक थे। अखिल भारतीय वर्द्धमान स्थानक वासी जैन श्रमण संघ के एक आधार स्तम्भ, पंजाब श्रमण वर्ग के अनुशास्ता, शरीर सम्पदा,—गौरवर्ण, मंझला कद, सुडौल शरीर, उन्नत ललाट, विशाल वक्षःस्थल, तेजोसंयुत सौम्य मुख मंडल, राजीव नयन, आजानु-बाहु, गज-गति, मुखरित प्रतिभा, शुभ्र कान्ति युक्त तथा यशः एवं कीर्ति के प्रतीकात्मक युग-पुरुष थे।

जन्मधरा :—पुण्य-पुरुष के जन्म से वह धरा भी पुण्यवती हो कर तीर्थ धाम बन जाती है, और मूक प्रेरक का काम करती है—वह है, दड़ौली-फतेहपुरी की धरा। पंजाब प्रदेश का शस्य श्यामल आंचल हरियाणा, जो आज राजनीति का शिकार बन कर पृथक् राज्य बन गया है उसका जिला गुड़गांवा और उसकी सबसे बड़ी तहसील रिवाड़ी की ग्राम-धरा। यहां वि० सं० १९५१ भाद्र शुक्ला (१२) द्वादशी को जन्म हुआ।

इसी ग्राम-धरा पर पंडित श्री बलदेव जी शर्मा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमति महताब कुँवर रहते थे जो स्वभाव से नम्र एवं सरल तथा नैष्ठिकी

व्यक्ति थे। आचारवान्—मातृ-पितृ गुणयुक्त कुलीन परिवार का दीप आगे चल कर जैन समाज का प्रदीप बना जिससे सहस्त्रों दीपों ने प्रकाश की गति ली।

माता-पिता के आहर-व्यवहार तथा आचार का प्रभाव संतति पर पड़ना अनिवार्य होता है अतः आप अपने मात-पिता के अनुरूप ही गुण एवं संस्कार वाले हुए। आचार्य यास्क के मतानुसार पुत्र पिता की अनुकृति ही होता है।

इस उदीयमान् ब्राह्मण बालक का नाम 'शंकर' रखा गया। अपने पूर्वजों के पद-चिह्नों पर चलता हुआ शंकर आठ वर्ष की आयु में मुंडिया, हिन्दी, संस्कृत तथा गुजराती भाषाओं का विद्यार्थी बना। इधर अपने परिवार की लाडली और एकलौती पुत्र-सन्तान होने के नाते और पितामह पंडित आनन्द स्वरूप जी एवं चाचा पं० चुन्नी लाल जी तथा पिता जी व्यवसाय एवं उद्योग सुन्दर होते से वे अपने अहमदाबाद, भटिंडा और अबोहर का कार्यभार सौंपने को उत्सुक हो गए। इधर शंकर भी अपने स्वभाव और आचरण से परिवार के मन को मोहने लगा। फलतः वह उनका सर्वस्व हो गया।

संयोग और वियोग, निर्माण तथा संहार ये दो पक्ष प्रत्येक वस्तु के परिवर्तन एवं सुख-दुःख के सहकारी साधन हैं। सृष्टि-क्रम का यही आधार है। तेरह वर्ष की आयु में पं० बलदेव जी का देहावसान हो गया और अब सारा दायित्व बालक शंकर का चाचा के सिर पर आ गया। समय पर युवक शंकर के वैवाहिक जीवन को देखने के इच्छुक पितामह और माता हो गए और उन्होंने निकटवर्ती गांव हुडिया में एक सुन्दर, सुशीला कन्या से पाणिग्रहण निश्चित कर दिया। परिवार और विशेषतः माता अपनी पुत्रवधू के शीघ्र ही घर आने की मन में अभीप्सा लिए बैठी है।

विराग :—अतुल समृद्धि में लालित-पालित होने वाला युवक अब स्वयं सम्पत्ति का स्वामी बनने जा रहा है पर विधि को और ही स्वीकार था। वह उसे इसी भौतिक समृद्धि का अधिपति नहीं बल्कि आध्यात्मिक लक्ष्मी का स्वामी बनाना चाहता था जो प्रत्येक के लिए दुष्प्राप्य है।

यह घटना वि० सं० १९७१ की है। युवक शंकर अपने घनिष्ठ मित्र से मिलने सन्निकटवर्ती गांव नाहड़ में गए। मित्र-मातु को प्रणाम करके आशीर्वाद चाहा तो माता के नेत्रों से आंसू ढुलक पड़े। बस, युवक शंकर पांव पकड़ कर आग्रह कर बैठे इसका कारण जानने को। अन्त में विवश होकर माता को रुन्धे स्वर से कहना पड़ा—कि बेटा! आज तुझे देखकर एक दुखद-स्मृति याद आ गई जो

आज तेरी मंगेतर है वह पहले मेरे बेटे—तेरे मित्र की मंगेतर थी—इसके पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने सम्बन्ध तोड़ दिया, यह दुर्भाग्य था हमारा चूँकि हम अनाथ और असहाय हो गए थे।

मित्र-माता की बात सुनकर उसी स्थान पर युवक शंकर ने भीष्म-प्रतिज्ञा की कि—माता ! मैं अब उससे कदापि विवाह नहीं कराऊंगा और न ही किसी अन्य कन्या से, आजीवन ब्रह्मचारी रहूँगा। उस ने अपने मित्र की मित्रता का निर्वाह भीष्म-प्रतिज्ञा करके किया। वहीं से अपने ससुराल के गांव में जाकर स्वयं ही अपना सम्बन्ध तोड़ आए—कि वह विवाह नहीं कराएगा। ससुराल पक्ष और पितृ पक्ष के अत्यधिक आग्रह करने पर भी वह नहीं माना। इसी संघर्ष से वह लगभग दो वर्ष जूझता रहा और अन्त में वह अपने सहयोगी के माध्यम से अपने लक्ष्य को पाने में सफल हो गया। एक ओर उभरता यौवन, जीवन के सुखद साधन तथा अप्सरा सी युवती की संप्राप्ति, दूसरी ओर पितृपक्ष का अत्याग्रह, यह सब निरर्थक सिद्ध हुआ। कितना साहस है इस युवक का। उस रूढ़िवादी एवं पुरातन युग की रीति-नीति की उलझन में भी श्वसुरगृह जाकर स्पष्ट कह आया—कि तुम अपना प्रवन्ध कर लो मैं पाणिग्रहण नहीं करूंगा और यह सब कुछ मन का आत्मानुकूल होना और धर्म संस्कारों के अभ्युदय का ही प्रतीक है। त्याग के लिए कितना अद्भुत त्याग है। प्राप्त सुखों को ठोकर मार कर और मन को चंचल न होने देना सच्चे युग पुरुष वनने का लक्षण है। एक चिन्तक ने लिखा है कि—

> बच जाए जो दुनियां में जवानी की हवा से।
> होता है फरिश्ता कोई, इन्सां नहीं होता॥

जैनागम में कहा गया है "लद्धे वि पिट्ठि कुव्वइ से हु चाइत्ति वुच्चइ"— अर्थात् प्राप्त को पीठ कर देने वाला ही त्यागी कहलाता है। वाल्यकाल की सिर की हजामत करते हुए वहोडूमल नाई की वह भविष्यवाणी सार्थक हुई—'कि इसे वाहर मत भेजना यदि चला गया तो फिर नहीं आएगा।'

अपनी २३ वर्ष की आयु में, पंडित रामजीदास जो कि पारिवारिक चाचा थे के साथ व्यापार आदि के लिए अमृतसर आया करते थे। जब उन्हें चौरस्ती अटारी के जैन उपाश्रय में विराजित आचार्य सम्राट् श्री सोहनलाल जी महाराज के दर्शन और सन्त समागम का अवसर मिलता था, यहां ले आए और आषाढ़ शुक्ला १५ वि० सं० १९७३ को जैन भागवती दीक्षा स्वीकार कर जैन मुनि "शुक्ल चन्द्र" बन गए। इधर कुछ ही वर्षों के अनन्तर श्री रामजीदास भी

आचार्य सम्राट् के पौत्र शिष्य श्री गणी उदयचन्द्र जी के पास दीक्षित होकर निरंजनदास मुनि बने।

यहीं से युवक शंकर मुनि 'शुक्ल' चन्द्र बन गए। आचार्य सम्राट् ने उन्हें तपोनिधि श्री रत्नचन्द्र जी म० को शिष्य रूप में सौंप दिया किन्तु उनकी तीव्र इच्छा थी कि श्री युवाचार्य काशीराम जी म० का अंतेवासी बनाया जाए। क्योंकि तपस्वी जी और युवाचार्य श्री में अगाध स्नेह था फलतः बात बीच में रही और कुछ मास के पश्चात् ही तपोनिधि जी का स्वर्गवास हो गया और इतस्ततः प्रलोभन चलने लगे तो आचार्य सम्राट् ने पुनः घोषणा युवाचार्य श्री काशीराम के शिष्य की कर दी। इस प्रकार आचार्य श्री जी की सेवा, युवाचार्य श्री जी का संयमानुशासन और तपस्वी जी के तपःसंस्कारों से पूरित जीवन शास्त्रज्ञान में निखर उठा। अब वे सेवा, तप और ज्ञान की साधना में निरत हो गए। शनैः शनैः अपने शुक्ल नाम को सार्थक करने में सफल हुए। क्योंकि शरीर-गत, वेष, ज्ञान, स्वभाव-कार्य आदि सब में शुक्लता, श्री, शुक्ल चन्द्र की भान्ति विषय-कषाय की कालिमा का अंश नहीं था उनमें। जैन शास्त्रों के अतिरिक्त अन्य वैदिक आदि साहित्य का सांगोपाग अध्ययन करके वे प्राध्यापक बने।

जाति से ब्राह्मण और संयम से ब्रह्मनिष्ठ तथा आगम के अभ्यासी एवं पण्डा-सूक्ष्म बुद्धि होने के नाते आपको 'पण्डित' कहा गया और आगे चल कर 'पण्डित जी महाराज' के नाम से विख्यात हुए। पाण्डित्य ही पण्डित का कारण बना।

धर्म प्रचार :—जैन साधु की चर्या में पद यात्रा भी उसी का अनिवार्य अंग है अतः जैन मुनि को पद यात्रा जीवन भर ही करनी होती है तथापि धर्म प्रचार एवं प्रसार के लिए मुनि शुक्ल चन्द्र जी ने अपने गुरुदेव के साथ लगभग १५-२० वर्ष तक पंजाब (पूर्वी-पश्चिमी), देहली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्य भारत, दक्षिण-गुर्जर प्रदेश आदि प्रान्तों में अपने उपदेश, अध्यापन, चर्चा आदि विधाओं द्वारा जैन धर्म का ही नहीं जीवन धर्म का प्रचार किया है। समय-समय पर समाज और धर्म पर आने वाले आक्षेपों का निवारण आपने अपने बुद्धि कौशल के बल पर किया है। यह काल वि० सं० १९८० से लेकर २००२ तक का है। इसके उपरान्त भी जीवन के अन्त तक अपने शरीर की चिन्ता न करते हुए सामाजिक ऐक्यता एवं संघ संगठन के लिए प्रयत्नरत रहे।

समाज के शंकर :—वि० सं० दो सहस्र दो में पंजाब केसरी आचार्य गुरु

देव का देहावसान हो जाने के बाद आप पर पूर्ण दायित्व आ पड़ा और यह काल आपकी कड़ी परीक्षा का था। एक ओर सामाजिक विघटन तो दूसरी ओर पारिवारिक संक्लेश तीसरी ओर स्थानकवासी परम्परा का विरोधात्मक रूप। इस प्रकार त्रिकोणे संघर्ष में आपने अपने अनुभव, सहिष्णुता और शान्ति, नम्रता एवं गम्भीर गुणों के माध्यम से विजय पाई। आप अपने युग के समाज के शंकर बन कर कुसम्प, वैमनस्य रूप विष का स्वयं पान कर लिया पर उसे समाज में नहीं बिखरने दिया। भले ही अपने पर आलोचना के कितने ही प्रहार क्यों न हुए हों।

पंजाब के स्थानकवासी समाज के इतिहास में यह काल सबसे भयानक था। ऐसे कुसमय में मुनि शुक्लचन्द्र जी अर्थात् पण्डित जी म० ने ससम्मान दूरदर्शिता से समाज को छिन्न-भिन्न होने से बचाया और तत्फलस्वरूप ही तत्कालीन समाज ने आपको अपना भावी नायक स्वीकार किया यानि ससम्मान युवाचार्य पद प्रदान किया। वि० सं० दो सहस्र तीन से लेकर २००९ तक आप श्री जी ने इस पद को दीर्घदर्शिता एवं कुशलता से निभाया। इसी बीच में समाज में भयंकर उथल-पुथल हुई, दो विभाग भी हुए किन्तु आपने समाज को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास चालू ही रखा और इसके लिए आपने अपने पारिवारिक सन्तों की भी चिन्ता नहीं की फलतः पुनः एकरूपता आ गई। ये आपके अपूर्व साहस, निर्भयता के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

समाज सेवी :—पण्डित श्री जी म० प्रसिद्ध वक्ता (यह उपाधि वि० सं० १९९२ में होशियारपुर आचार्य पद प्रदान के अवसर पर मिली थी) लेखक, कवि एवं संयमी होने के साथ समाज सेवी भी थे। आपके मन में साहित्य एवं शिक्षण संस्थाएं तथा अन्य रचनात्मक संस्थानों का आदर था और वे इनके माध्यम से धर्म की ओर व्यक्ति को आकृष्ट करने का उपाय समझते थे। यही कारण है कि उन्होंने मात्र धर्मोपदेश ही नहीं सामाजिक आवश्यकता को भी ध्यान में रख कर उसे पूरा करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी प्रेरणा से शिक्षा निकेतन, साहित्य प्रकाशन, पुस्तकालय, औषधालय, धर्म उपाश्रय आदि स्थापित करवाए। यह जन सेवा की प्रतीक संस्थाएं आज पंजाब आदि प्रदेशों में समाज सेवा कर रही हैं।

श्रमण-समाज में पण्डित श्री जी ने स्वयं तथा अपने शिष्यों द्वारा वयोवृद्ध, रुग्ण एवं असहायी सन्तों की सेवा करके अपना स्थान बनाया था। उनकी दृष्टि में प्रत्येक साधु-साध्वी अपना था और वे सबको संयम पालन में सहयोग देते रहे।

इस पद का सर्व प्रथम त्याग कर प्रान्तीय सम्मेलन के निश्चय की घोषणा करते हुए महा संघ में विलय होने का पग उठाया। उसी महा सम्मेलन में प्रादेशिक मंत्री मंडल व्यवस्था वनी और आप पंजाव श्रमण संघ के मंत्री के रूप में आए। पुनः वीकानेर—भीनासर में भी मंत्री परिषद् के चयन में भी आप श्री जी को यह दायित्व संभाला गया। इस प्रकार एक दशक के लगभग आप प्रांत मंत्री रहे। अपने उदार गंभीर और समन्वय स्वभाव एवं नीति के बल पर इस पद का सुन्दर निर्वाह किया।

संघ संचालन समिति सदस्य :—श्रद्धेय आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज के समय संघ में एक वैधानिक संकट उपस्थित हो गया था। उस समय उन्होंने अपने कार्य भार को सुचारु रूप से चलाने, रुग्णावस्था एवं वृद्धत्व के कारण एक पंच सदस्यीय संघ संचालन समिति नियुक्त की थी उसके भी आप सदस्य रहे। यह समय भारतीय श्रमण संघ के लिए अति भयानक, खेद जनक तथा विघटन की पराकाष्ठा का था। संघ का अस्तित्व ही खतरे में था पर आप जैसे दीर्घ द्रष्टा युग पुरुषों ने उसे सुरक्षित रखने का सतत् प्रयत्न किया।

प्रवर्त्तक :—यह एक शास्त्रीय पद है। इसका अर्थ है धर्म—संयम में प्रवृत्त रह अन्य को, संघ को—श्रमण-श्रमणी एवं श्रावक वर्ग को प्रवर्तन कराना। अर्थात् संयम धर्म में जोड़े रखने वाला अधिकारी। वि० सं० २०२० में राजस्थान के नगर अजमेर में अ०भा० वर्द्ध स्था० जैन श्रमण संघ के शिखर सम्मेलन में मंत्री मण्डल व्यवस्था के स्थान पर प्रवर्त्तक व्यवस्था ने रूप लिया। उस समय पंजाव के लिए धर्म-चारित्र्य के प्रवर्तन का कार्य आप को सौंपा गया। साथ ही आचार्य श्री जी के परामर्श दातृ मण्डल के सदस्य मनोनीत हुए।

अधिशास्ता आचार्य होता है और उसके वाद प्रशासन दृष्टि से दूसरा स्थान प्रवर्त्तक का होत है। आपने इन दोनों पदों को जीवन पर्यन्त कुशलता पूर्वक निभाया। जिसके लिए स्वयं आचार्य श्री जी ने समय २ पर निर्देश किया है।

श्रद्धेय पण्डित श्री जी म० अपने अनुशासन काल युवाचार्य, मंत्री और प्रवर्तक जीवन में भी उदार और समन्वयवादी वने रह कर प्रत्येक समस्या का समाधान करते रहे। उनके शासन तंत्र में कठोरता एवं नादिरशाही नहीं थी। जीवन भर प्रति पक्षी तथा प्रतिद्वन्द्वी रहने वाले व्यक्ति के प्रति भी मध्यस्थ्य भाव से रह उनका का कार्य करते रहे। कोई छोटा-वड़ा (साधु साध्वी, श्रावक अथवा श्राविका) उनके सम्मुख आया उन्होंने सव को समान रूप से

करुणा का प्रीतिदान और आदर देकर उसकी मन:स्थिति को शांति प्रदान की। वे कहा करते थे—"समाज में सब को साथ लेकर चलना ही समाज को जीवित रखने का प्रयास है।" वे वस्तुत: समाज की विभिन्न कड़ियों को सहिष्णुता एवं आत्मीयता के धागे में जोड़ रखने वाले महान् संत थे।

प्रान्त मंत्री जी म० का जीवन स्वहिताय नहीं परहिताय था। अपनी वृद्ध एवं जीर्ण देह और वह भी रुग्ण, को लेकर श्रमणसंघ को संगठित रखने को एक बार नहीं तीन बार से अधिक पंजाब प्रदेश के अतिरिक्त दूरस्थ प्रदेशों की (राजस्थान आदि) हजारों माइल्स की पद यात्राएं की हैं। ई० सन् १९६४-६५ की पद यात्रा उन्होंने प्राणों को हथेली पर रख कर ही की। अम्बाला से अजमेर की लम्बी पद यात्रा मात्र श्रमण संघ के लिए जब कि वह विघटन के कगार पर खड़ा था की। किसी को आशा नहीं थी कि वे अजमेर के प्रांगण में अपने हाथों अपने मनोनीत आचार्य को अधिनायक की चादर ओढ़ा पायेंगे। पर वे अपने अदम्य साहस, संघ भावना और कर्त्तव्य निष्ठा को लेकर पहुँचे और लौट कर आते हुए लाए अपनी धर्म भूमि पंजाब में अपने अधिशास्ता को—धर्माचार्य को। वे लेकर आए तो सही पर अपने हाथों अपनी प्रदेशीय भूमि से विदा न कर सके।

पृष्ठ भूमि :—ई० सन् १९६४ के जनवरी मास में आचार्य श्री जी एवं उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द्र जी म० तथा अ० भा० कॉन्फ्रेंस के आग्रह पर पंडित मन्त्री श्री जी म० ने अम्बाला से अजमेर शिखर सम्मेलन में जाने को विहार किया। डा० मेतानी. डा० मित्रा एवं श्रमण तथा स्थानीय श्रावक संघ की आग्रह भरी विनति को भी अस्वीकार कर अजमेर पधार गये। वहां पर सब से पहला कार्य मनोनीत आचार्य श्री आनंदऋषि जी को आचार्य पद-चादर प्रदान करना और बाद में श्रमण संघ के विघटन के कारणों-कार्यों का समन्वय पद्धति से निपटारा करना था।

अजमेर शिखर सम्मेलन के बाद ६४ सन् में जयपुर नगर में संयुक्त चतुर्मास (आचार्य श्री, उपाध्याय श्री तथा प्रवर्तक श्री जी) किया। वैसे तो लम्बी पद यात्रा से अजमेर में ही श्रान्ति के कारण ज्वर आदि पीड़ा होने से शरीर शिथिल हो गया था, चतुर्मास व्यतीत करके देहली की ओर ही विहार किया। आचार्य श्री जी ने दिल्ली और प्रवर्त्तक श्री जी ने कांधला (उ. प्र.) में चतुर्मास किया और वहां से हरियाणा और पंजाब की धर्म भूमि को पावन करने को आचार्य श्री जी ने अम्बाला नगर में पदार्पण किया तो प्रवर्त्तक श्री जी उनका

स्वागत करने के लिए पधार गए। वहां उन्होंने आचार्य श्री जी की चरणों में अपना-त्याग पत्र संघ-संगठन एवं शान्ति के लिए अर्पित किया।

यह घटना दि० २७ फरवरी १९६५ की है। आचार्य श्री जी का पदार्पण श्री महावीर जैन भवन में हुआ और लगभग ४ बजे सायं प्रवर्त्तक श्री जी को रक्तचाप और हृदय रोग का आक्रमण हुआ। पूर्ण विश्राम से रोगोपशांति के बाद आचार्य श्री जी के साथ पंजाब-भ्रमण के लिए तैयार हुए किन्तु होशियारपुर श्री संघ के अत्याग्रह के उपरान्त भी अम्बाला श्री संघ के आग्रह और शारीरिक दुर्बलता तथा श्रद्धेय वयोवृद्ध श्री कपूर चन्द जी महाराज की विनय के कारण अम्बाला ही विराजमान रहे। इसी चतुर्मास में प्रवर्त्तक श्रीजी को भाद्र-पद में हृदय गति एवं रक्तचाप का भयंकर आक्रमण हुआ किन्तु आपने उसका अपनी आत्मिक शक्ति से पूरी तरह सामना किया और लगभग ७-८ फरवरी को अम्बाला से पंजाब यात्रा के लिए चल पड़े। शरीर चलने में जितना दुर्बल था मन उतना ही साहसी। श्री संघ के अत्याग्रह पर इतनी बात कह कर विदा हो गए कि "आप की सेवा-भक्ति का प्रेम मेरे मन में है, अम्बाला का मुझे ध्यान है एक बार विचार है कि पंजाब के क्षेत्रों का चक्कर लगा आऊं बहुत वर्ष हो गए हैं फिर फरसना हुई तो यहीं आने का विचार है।"

आप डेराबसी, प्रभात, चण्डीगढ़, खरड़, कुराली, रोपड़, बलाचौर, नवां-शहर, बंगा होते हुए होशियार पुर पधार गए। यहां से जालन्धर शहर जाना था चतुर्मासार्थ। यहां फिर स्वास्थ्य में शिथिलता आई किन्तु संभल गए। ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष के पश्चात् जालन्धर छावनी पधारे। मार्ग में उन्हें दो बार हल्की सी पीड़ा हुई किन्तु विहार करते ही रहे। शनिवार की रात, रविवार को प्रातः प्रतिक्रमण एवं मंगल पाठ, शौचादि क्रिया से निवृत्त होकर ६-३० बजे अपने आसन पर आकर बैठते ही अवचेतन हो कर लुढ़क गए और उन्हें पक्षाघात का भी आक्रमण हो गया। मेजर डा० इन्द्रसिंह एवं डा० कैप्टन और डा० कर्नल गोपी नाथन्। इधर डा० मित्रा (जो कि अम्बाला श्री संघ लेकर आया था) के परामर्श पर चिकित्सा हुई और वे स्वस्थ हो गए। डाक्टर वर्ग चकित था कि एक मास में ही वे किस प्रकार स्वस्थ हो गए। हमारे विचार में कम से कम ६ मास तक ही स्वस्थ होना चाहिए था। यह तो इनके साधु जीवन और ब्रह्मचर्य का ही प्रभाव है। जालन्धर छावनी के श्री संघ ने हार्दिक सेवा

की जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। सहस्रों भक्त दर्शन को उमड़ पड़े। स्थान २ से पत्र, तार, फोन मंगल कामना के आए।

भाद्रकृष्णा प्रतिपदा को जालन्धर छावनी से पाद विहार कर शहर के लिए चले। डोली, स्ट्रेचर के आग्रह को स्वीकार नहीं किया फलतः भाद्रकृष्ण ८ को जैन स्थानक वाजार पुरानी कोतवाली में पधार गए। स्थानीय श्री संघ ने हार्दिक स्वागत कर प्रसन्नता अनुभव की वह तो पहले ही आस लगाए बैठा था। सारा चतुर्मास सुख शांतिपूर्वक बीत गया। मृगसिर मास में पुनः शारीरिक दुर्बलता में वृद्धि हुई। थोड़े दिनों में पुनः स्वास्थ्य लाभ हो गया और वे अब लाठी के सहारे भली भाँति टहल लेते थे। इसी बीच उनका विचार होशियार होते हुए अम्बाला शहर जाने का हुआ. हुशियारपुर श्री संघ की विनति भी स्वीकार कर ली गई थी पर दैव को कुछ और ही मंजूर था। विहार के अभ्यास के लिए उपाश्रय से दो-तीन वार चलकर श्री पार्वती जैन हाई स्कूल तक पधारे भी, सुख शांति से लौट आए, पर दुर्बलता अनुभव की।

इधर हमारे आचार्य देव जम्मू-कश्मीर का चतुर्मास पूर्ण कर अमृतसर की ओर पधार रहे थे। उनकी सेवा में श्रमणसंघ विषयक सुझाव और अपने को दर्शन देने की विनय लेकर दो शिष्यों को वहां भेजा। फलतः अनुग्रह के प्रतीक आचार्य श्री जी दर्शन देने जालन्धर पधारे। तीन-चार दिन तक स्नेह मिलन के पश्चात् अपने आराध्य को हार्दिक विदाई और वह भी अंतिम—फरवरी मास के प्रथम दिन मध्याह्न १-३० बजे दी। यह कौन जानता था कि यह मिलन और विदाई अन्तिम होगी किन्तु प्रतीत होता है कि प्रवर्तक श्री जी अपने को जान पाये थे।

प्रवर्त्तक श्री जी ने ९ फरवरी १९६८ को जालन्धर में विराजित साध्वी श्री प्रवेश कुमारी जी के सानिध्य में दीक्षा होनी थी वहां जैन स्कूल में दीक्षा पाठ पढ़ाने की भी स्वीकृति दे दी। उसी रात को ४-३० वजे हल्का दिल का दौरा पड़ा जो एक घंटे के पश्चात् ठीक हुआ और प्रातः ११ वजे लगभग चल पड़े संतों को साथ लेकर विजय नगर। अनुनय-विनय की—महाराज ! श्री जी आपको पीड़ा है न पधारें, किन्तु यही कहते रहे—'मैं अब ठीक हूँ, मैंने सतियां जी को कह रखा है।' और चल पड़े दो मंजिल नीचे उत्तर कर अभी ५० कदम ही चले होंगे कि पुनः रक्तचाप और हृदयगति का दौरा पड़ गया फिर भी विद्यालय तक पैदल ही पधारे। वहां विद्यालय के विज्ञान कक्ष में उन्हें विश्राम कराया

और डा० आनन्द आए । स्वास्थ्य का निदान किया, इसी विज्ञान भवन में ही कुमारी राणी को धर्म दीक्षा दी गई। रात्रि को विश्राम वहीं किया। डा० आनन्द ने रात्रि को साधु जीवन एवं आत्मा के विषय में चर्चा-वार्ता की। यहीं से डा० आनन्द प्रथम बार जैन साधु के सम्पर्क में आ कर प्रभावित हुए।

१० फरवरी को प्रातः पुनः जैन स्थानक में जाने के लिए पैदल ही चल पड़े पर शरीर ने साथ न दिया, संत कुर्सी पर बैठाकर ले आए। उन्हें डा० और संघ के अधिकारी व्यक्तियों के परामर्श पर नीचे पुस्तकालय भवन में ही विश्राम कराया। रात्रि को अर्थात् ११ तारीख़ को प्रातः ३-२० बजे पुनः आक्रमण हुआ। डा० आनंद आए। १४ फरवरी को पुनः दिन के १०-२० पर, अन्त में १५ फरवरी सायं ६ बजे भयंकर आक्रमण हुआ और वे स्वयं कह उठे, 'अब मैं बहुत न जी सकूँगा' फिर भी वे १९—२० फरवरी को स्वस्थ हो गए। अन्तिम आक्रमण २७ फरवरी को प्रातः १०-३० बजे अति असह्य-दारुण हुआ। जो लगभग १२-३० तक रहा। शेष दिन-रात तथा २८ फरवरी का दिन-रात पूर्ण चैन से बिताए। २९ फरवरी का दिन प्रसन्नता पूर्वक वार्तालाप करते— सायं भी स्वेच्छा से स्वयं १-३० घंटे दिन रहते हुए चरम प्रत्याख्यान किया और प्रतिक्रमण भी स्वयं किया और उस समय तक यह मन में संकल्प तक भी नहीं था कि हमारे धर्म प्रवर्त्तक की सांध्य बेला भी आज ही है।

रक्तचाप और हृदय रोग की भयंकर वेदना भी उनके साहस, सहिष्णुता और शांति को खो नहीं सकी। जब भी किसी ने पूछा मुस्कराए, हाथ उठाकर संकेत दिया और बोल पड़े—'ठीक है' और मंगल पाठ सुनाना आरम्भ किया। दिनोदिन शांति आदि गुणों में वृद्धि ही होती चली गई। ९ फरवरी से २९ फरवरी का काल उनके जीवन का परीक्षा काल था। वे उसमें उत्तीर्ण हुए।

महाप्रयाण :—वे ऐसे गये जो लौटकर फिर नहीं आए। आते भी कहां से और क्यों? क्योंकि यह उनका प्रयाण नहीं महाप्रयाण था। सायं ठीक सवा सात बजे तीन ऊर्ध्ववायु (डकार) लेकर करबद्ध, खुले नेत्रों से सब को देखते हुए पार्थिव देह का समाधिपूर्वक त्याग करके विदा हो गए। रह गया मात्र उनका तपःपूत पार्थिव शरीर वह भी दो ढाई दिन के लिए देखने को किन्तु उनकी सौम्य, तेजस्वी मुद्रा दर्शकों के हृदय में अमिट रहेगी। उनके शुभ्र गुण सदा के लिए शास्ता, साधक, संत, विद्यार्थी, सेवक आदि के लिए प्रेरणादायी रहेंगे।

प्रवर्त्तक श्री जी के देहावसान की सूचना जालन्धर नगर में विद्युत लहर कि

सी फैल गई। आबालवृद्ध सभी सजल नेत्रों से अपने आराध्य को ठगे से देखते रहे और लघु मुनियों को उनका यशोगान करते ढाढस बंधाते रहे और गुरुजन भक्तों को प्रकृति का अटल नियम समझाते रहे। स्वर्ग गमन की वेला में ला० केसर दास जैन और मैं (सुमन मुनि) श्रीचन्दजी तपस्वी, संतोष मुनि और अमरेन्द्र मुनि थे। पर्यंकासन से विराजित श्री जी ने पहली डकार ली और आँखें मूंद ली, अभी डा० आनन्द आ ही न पाये थे कि दो ऊर्ध्ववायु खींच कर नेत्र खोल दिए। तत्काल अधिकारियों की सभा हुई। सभी प्रकार के प्रबन्ध किए गए। ऊपर की मंजिल से पार्थिव शरीर को नीचे हाल में लाया गया। युवक मंडल का श्री जोगिन्द्र पाल जी जैन के नेतृत्व में पहरा लग गया। सारा उपाश्रय कृत्रिम विद्युत से भर गया। कई छाया चित्र लेने चित्रकार पहुँच गए। रात भर देह दर्शन के लिए आवागमन रहा।

इधर जैन विरादरी ने अपना कर्त्तव्य का निर्वाह आरम्भ किया। टेलीफून, तार और मौखिक सूचनाएं देनी शुरु करदीं। १ मार्च को प्रादेशिक समाचारों में सूचना जालन्धर रेडियो से प्रसारित करवाई। एक संवेदना पत्र भी प्रकाशित किया। समाचार पत्रों में भी सूचना देने का प्रवन्ध किया किन्तु प्रेस-फ़ोटोग्राफर तो विना सूचना के ही पहुंच गए। १ मार्च को लगभग ४-५ सहस्र दर्शनार्थी विभिन्न नगरों से आकर दर्शन कर करके लौट गए। शुक्रवार की सायं से शनिवार ११ बजे तक १० से १५ हजार दर्शनार्थी पंजाव, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, जम्मू-काश्मीर, हिमाचल आदि देशों से आ गए। साथ ही शोक संवेदना की सूचनाएं भी। एस० एस० जैन सभा पंजाव तथा हुशियारपुर, जंडियाला, अम्बाला, अमृतसर, लुधियाना आदि नगरों के श्री संघ अपनी श्रद्धा के प्रतीक शोक ध्वनि वाले वाद्य के साथ हाथों में दुशाला और चन्दन लिए अपने आराध्य के प्रति मन की वेदना को जय ध्वनि अथवा आंसुओं से प्रकट कर रहे थे। सुदूरवर्ती श्री संघों ने प्रत्यक्ष एवं परोक्षरूप में टेलिग्रामों द्वारा अपनी श्रद्धा के पुष्प प्रेषित किए। सम्मानार्थ लगभग ५० दुशाले, २० मन चन्दन शेष सामग्री पार्थिव शरीर के संस्कार के लिए अर्पित की गई।

२ मार्च को मध्याह्न २ बजे प्रवर्त्तक श्री जी की देह यात्रा एक भव्य विमान पर शुरु हुई। पाठशालाओं के छात्र, पंजाव के विभिन्न संघों के वाद्य एवं भजन मंडलियां, सहस्रों नर-नारी जय ध्वनि बुलाते सजल नेत्रों से चले जा रहे थे। बाजारों में दोनों ओर अपार भीड़ थी। शव यात्रा रुक २ कर चल रही

थी। ऊपर से पुष्प एवं धन तथा केवड़ा, गुलाब जल और इत्र आदि सुगन्ध-द्रव्यों की वर्षा हो रही थी। सारा शहर शोक मग्न था। और उस समय जब कि जालन्धर बिरादरी की ओर से आयोजित पी० ए० पी० बैंड की शोक ध्वनि हृदयों के कंपा देने तथा शरीर को रोमांचित करने वाली सेल्यूट क्रिया करती थी और साथ ही अचित पुष्पों की वर्षा करने वायुयान विमान पर आता था तो उस महान आत्मा के व्यक्तित्व के प्रति निष्ठा स्मरण हो उठती थी। मार्ग में नगर पालिका सदस्यों ने भी अपनी श्रद्धा अर्पित की।

अन्त में सायं ५ बजे गांधी पार्क (स्टेडियम) में जिसे प्रथम बार ही अपने पवित्र अंक में पवित्र विभूति को लेने का अवसर प्राप्त हुआ था जहां २६ जनवरी अथवा राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन होता है, शव यात्रा अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच गयी। वहां एक ऊंचे से मंच पर चन्दन-चिता निर्मित थी। वायुयान और पी० ए० पी० वाद्य ने अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की। इधर गगनांगण का सूर्य देव अपनी रश्मियों को समेट कर अस्तंगत हो रहा था तो उधर समाज के युग पुरुष का पार्थिव शरीर रूप सूर्य भी अपनी कांति को लेकर चिता की ओट में छुपने का प्रयास करने लगा। उस समय लक्षाधिक जन समुदाय को सजल नेत्रों से अपने श्रद्धेय को अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करनी पड़ी।

इस प्रकार अर्द्ध शताब्दी अधिक काल तक स्व० आचार्य सोहन के हाथों की दीक्षा का जीवन्त आदर्श अपनी ७४ वर्ष से अधिक की देहावधि को पूर्ण कर सदा के लिए लुप्त हो गया। कवि के शब्दों में—

वो एक गुल था जिसके जलवे हजार थे।
वो एक साज, जिसके नग़मे हजार थे॥ ❀ ❀

संस्मरण

[स्व० प्रवर्त्तक श्री जी को अपने जीवन के अन्त का अनुभव हो चुका था और उन्होंने समय २ पर अनेक संकेतों द्वारा उसे प्रकट भी किया पर हमें उस पर विश्वास नहीं आ रहा था मन में इस की आशंका होने पर भी क्योंकि मन उनके जीवन की तीव्र अभिलापा लिए बैठा था । अव वह एक २ वात प्रमाणित हो रही है । २० दिन के अल्प कालीन संस्मरण दिए जा रहे हैं पाठक अनुमान लगा सकेंगे कि वे सही अर्थों में महान थे ।]

जालन्धर नगर का चतुर्मास काल पूर्ण हो चुका है । श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी को स्थानीय संघ विनति कर रहा है कि आप श्री जी जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जाएं यहीं विराजित रहें । गुरुदेव ने उत्तर में कहा—'जैसी स्पर्शना ।' ला० दीना नाथ जी ने कहा, जब कि स्वीकृति नहीं मिली—अच्छा कृपा नाथ ! इतनी सी विनय स्वीकार कर लें कि हमारे—श्री संघ से बिना परामर्श किए यहां से नहीं पधारना ।' 'हां, कह कर ही तुम्हारे से जाएंगे—चुपके से नहीं ।' ननुनच होती रही । संतों ने भी आग्रह किया । ला० केसर दास जी ने भी, कहने लगे फिर विचार कर लेंगे । फिर महावीर जयंति का आग्रह चालू रहा ।

सायं प्रतिक्रमण करने के वाद सभी संत (लगभग ११ ठाणे) एकत्रित हो कर प्रार्थना दुहराने लगे—महाराज श्री जी ! आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, यात्रा लम्बी है अभी शीत काल यहीं विताने का कष्ट कीजिएगा वाद में जैसी आज्ञा होगी—यहां आप श्री जी को कोई पीड़ा तो नहीं है ? फरमाने लगे—'भोला ! यहीं बैठे थोड़े ही रहना है, चलना भी तो है, मैं कपूरमुनि को कह आया था, मिल तो लूंगा, अव शरीर का कोई भरोसा नहीं है । तुम ऐसा करो डोली वना लो, किसी तरह यहां से ले चलो ।' यहां से विरादरी वाले कैसे जाने देंगे और वे इसमें अपना अपमान भी समझेंगे—अच्छा तो ; यहां से धीरे २ पैदल चल पड़ूंगा वाहर एक पड़ाव पर से डोली में वैठ जाऊंगा ।' सब ने कहा कि 'आप कृपा करें' ; तो मौन रह गये ।

दूसरे दिन फिर वात चलाई कि 'तुम मुझे ले ही चलो' यह आग्रह इस वात के संकेत थे कि उनका आयुष्य स्वल्प सा रह गया है और वे अम्वाला फिर नहीं पहुँच सकेंगे । ×—×—×—×

और स्वप्न सार्थक सिद्ध हो गया। स्वप्न भविष्य का निर्देश करता है और उन महान् मनीषियों और आचारवान् जीवन्त योगियों के लिए वह स्वप्न—मनः चित्र ही नहीं अपितु समय का साक्षात्कार होता है।

बात पन्द्रह फरवरी के सांयकाल सवा सात बजे की है। श्रद्धेय पितामह प्रवर्त्तक देव को हृदय रोग का आक्रमण हुआ। शरीर में तीव्र वेदना, पर मुख पर सहिष्णुता तथा शांति के अनुपम भाव राजित थे। संत शैय्या के इधर-उधर खड़े थे। अनायास ही बोले—बस! अब समय संन्निकट ही है, घबराने की ज़रूरत नहीं—मुस्कराहट से पुनः बात आगे बढ़ाई कि—'मैं मौत से डरता नहीं, मुझे कोई घबराहट नहीं हैं। जब आचार्य सम्राट श्री सोहनलाल जी म०, श्री पूज्य काशीराम जी म० जैसे भाग्यवान पुरुष नहीं रहे तो मैं...जाना ही है न! तनिक रुके और फरमाने लगे—आज प्रातः मुझे स्वप्न में महातपस्वी श्री निहालचन्द्र जी म० और उनके साथ तीन काले कपड़े वाले साधु आते हुए दिखाई दिए, उनमें से तपस्वी जी म० ऊपरी सीढ़ियां चढ़ने लगे तो मैंने विनय की—तपस्विन्! यहीं पड़गा कर लीजिए पर वे कहने लगे—नहीं, मैं ऊपर ही जाऊंगा, तुम भी आ जाओ।—बस यह स्वप्न मेरे स्वल्प जीवन का चिह्न है कहते हुए मौन रह गए।

श्री केसरदास जी आए। उन्होंने, सन्तों ने प्रार्थना की—नहीं महाराज श्री! ऐसी तो कोई बात नहीं—पर उन्होंने पुनः दृढ़ता से अपने स्वप्न को दोहरा कर मौन कर लिया।

ठीक, २९ फरवरी की वही सांय सवा सात की वेला उनके स्वप्न को साकार बना गई।

×—×—×—×

अमरेन्द्रमुनि...! गम्भीर वाणी कमरे में व्याप्त हो गई। बाहर बैठा लघुमुनि शीघ्रता से अपने गुरुदेव के चरणों में उपस्थित होकर आज्ञा चाही—मेरे पुट्ठे से पाठ वाली कॉपी निकालना और पत्रा भी'—मुनि लाकर हाथ में थमा देता है, उठकर बैठते हैं इतने में ही मैं आता हूँ इसलिए कि सन्त उन्हें आराम नहीं करने देता है। डाक्टर सा० की कड़ी हिदायत जो थी—तुम क्या कर रहे हो? छोड़ो इनको, फिर कर लेना! मंगल मूर्ति मुस्करा पड़े—आप भी कृपा नाथ...! —नहीं कुछ नहीं है। यह विचारा सेवा ही करता है, अच्छा अभी...।

अमरेन्द्र मुनि की ओर संकेत करते हुए कहने लगे—१७-१८वाँ नक्षत्र निकालो...उसे अपनी पाठ-पुस्तिका में अंकित काल-चक्र पर लगाकर बात समाप्त कर दी।

लघुमुनि ने निवेदन किया, गुरु महाराज जी ! कैसा है ? 'ठीक है'—बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा सप्ताह तक—बिल्कुल ठीक हो जाओगे ? हां, बिल्कुल ...! और मुस्कराने लगे।

ज्योतिष-गणित ठीक हो गया। बात बाईस फरवरी की थी मध्याह्न तीन बजे के लगभग की। और लघुमुनि अमरेन्द्र उनका सबसे लघुतम शिष्य लाडला। वह समझ नही सका कि 'बिल्कुल' का अर्थ कितना गम्भीर होता है और सप्ताह बाद वह ठगा सा इस घटना पर विचार करता रह गया। ×—×—×

प्रतिदिन की भान्ति आज भी रात्रिकी क्रिया रात के अन्त—भोर वेला मेंपूर्ण कर कुछ स्मरण-जाप करने लगे—अनायास ही निकट बैठे पर्युपासी शिष्य से पूछने लगे—आज अंग्रेजी महीने की कौनसी तारीख है ? सविनय उत्तर मिला—गुरुदेव ! आज फरवरी मास की २९ तारीख है—इसके आगे और भी है या आखिर की है—नहीं, महाराज, यही है। 'अच्छा, आखीर का दिन है' कहकर वे मौन हो गए।

सांयकाल को वही दिन मास का ही नहीं, उनके जीवन का अन्तिम दिन बन गया और मुनि सन्तोष का उत्तर अब उनके निर्देश, संकेत और उस महा प्रयाण का साक्षी बनकर उस भवन में विकीर्ण हो गया। ×—×—×

मध्याह्न के तीन बजे का समय है। स्व० प्रवर्त्तक श्री जी म० अपनी शैय्या पर विराजित हैं। ला० केसरदास जी साता पृच्छा को आए हैं। वे अनिमेष दृष्टि से उनके मुख मण्डल को निहार रहे हैं कि अचानक उनका पौत्र पर्दा उठा कर चुपके से आ गया। इतने में ही आवाज़ आती है—बाहर र..र गुरुदेव मुस्करा कर संकेत करते हैं ; आने दो और प्रदीप—मिन्टू चरण वन्दना करता है—और सिर पर आशीर्वाद, प्यार का वरद हस्त आता है, सब हैरान थे—वे किसी के सिर पर हाथ रखते कम ही देखे गए थे। बालक प्रदीप की यह चरण-वन्दना और प्यार का हाथ पाना सब कुछ अन्तिम ही था क्योंकि सांयकाल तो वह वरद हस्त अपने दीर्घकाल के कार्य को पूरा करके सदा के लिए विश्राम में लीन हो गया था। ×—×—×—×

जैन स्थानक के ऊपरी खण्ड की बरसाती में मैं खड़ा वार्तालाप कर रहा हूँ। संतोष मुनि ने आकर सांयकालीन प्रतिक्रमण आज्ञा लेने की बात गुरुदेव की कही। समय पूछा तो अभी पांच के लगभग ही था। मैंने ठहरने को कहा क्योंकि सूर्यास्त लगभग ६-२० पर होता था। पुनः आध घंटे के बाद आया और वही बात दोहराई। मैंने उत्तेजित होकर कहा—भाई ! अभी औषधि और देनी है महाराज

दीनानाथ जी निवेदन करने लगे—महाराज जी ! कहां और कौनसे स्थानक पधारोगे यही तो स्थानक है—नहीं, यह स्कूल है, धर्मशाला है"—नहीं महाराज ! आप भूल रहे हो । देखो ! ये दरवाज़े, खिड़कियां और ये चिक, ऊपर छत का कपड़ा । यह सब कुछ मौजूद है ।' सुनकर आश्चर्य दृष्टि से चारों ओर देखा और बड़ी सन्दिग्ध भाषा में बोले—'अच्छा ! मैं तो और ही समझता था, हां है तो सही । बाद में खड़े व्यक्तियों की ओर संकेत करके पूछा गया तो फरमाने लगे—ये दीना नाथ जी हैं, केसरदास जी, राजकुमार जी हैं आदि ।

बाहर आकर वार्तालाप में यही निश्चय हुआ और ला० अनन्तराम जी और श्री कपूर चन्द जी रायसाहब कहने लगे कि ये अलामतें अच्छी नहीं ।

सोचने का दृष्टिकोण अपना होता है, सबने सोचा पर उन्होंने क्या सोचा और कहा, यह वस्तुतः दार्शनिक, धार्मिक दृष्टि थी कि यह धर्मशाला है, चलो अपने स्थान पर—यह उनके अन्तर का दृढ़ विश्वास, आगम निष्ठा और चिरन्तन सत्य का ही उद्घोष था । हम इसे अपने ढंग से समझे और वे उसे और ढंग से पर लाख प्रयत्न के पश्चात् भी हम उन्हें नहीं रोक सके जाने से । X—X—X

"बस, अब दवाई नहीं लेनी—कहते हुए अपने अनुसेवी संतों को निर्देश किया । इस पर सभी ने अपनी अस्वीकृति की आज्ञा का उल्लंघन जानते हुए भी, क्योंकि सब में अपने श्रद्धेय के स्वस्थ होने की प्रबल मानसिक अभिलाषा थी । खैर, औषधि यथा समय दी जाती रही पर अत्याग्रह के साथ । अन्त में उन्होंने बालक की भाँति दी जाने वाली औषधि को मुंह में रख कर जल आदि का पान कर लेते और बाद में उसे निकाल देते ।

इस प्रच्छन्न क्रिया का उपाय डॉक्टर से पूछा गया । पूर्व तो सभी संघ-अधिकारियों, डॉक्टरों आदि ने प्रयत्न किया पर वे नहीं माने । अन्त में जल-दूध आदि पदार्थ में औषधि मिश्रित करके देने का प्रयास हुआ इस में भी सफलता न मिल सकी । वे तत्काल कह उठते इस में कुछ है । अन्त में औषधि अतिस्वल्प मात्रा में दी जाने लगी किन्तु श्रद्धेय का आग्रह यही रहा—मुझे इसकी जरूरत नहीं है, बन्द कर दो तुमने तो हस्पताल ही खोल दिया है,—आग्रहोपरान्त इन शब्दों के साथ मौन कर लेते—भाई ! "तुम तो मेरे लाभ के लिए देते हो किन्तु मुझे यह हानि पहुचाती हैं ।"

दो दिन पूर्व ही उन्होंने सूर्यास्त से बहुत पहले ही चतुर्विध आहार—

और प्रहर दिन तक एक आसन से बैठे वे साधक अपना मंगल पाठ करते और दूसरों को सुनाते रहते।

अपनी पीड़ा पीड़ा नहीं, पर-पीड़ा ही पीड़ा है ऐसी अनुभूति वाले संत ही वस्तुत: महान होते हैं उनकी ही महिमा—गरिमा व्यक्ति के जीवन के कल्मष को धोने में समर्थ होती है। कवि की यह उक्ति उचित ही है—

तरुवर सरिता सन्त जन, चौथे वर्षे मेह।
परमारथ के कारणे, चारों धरी है देह॥ ×—×—×

संयम और नियम की दृढ़ता व्यक्ति के जीवन विकास के अनिवार्य साधन हैं। इन के अभाव में स्वच्छन्ता और उच्छृंखलता से पूर्ण निरंकुश मन जीवन को पतित कर देता है। उक्त दृढ़ता के दर्शन स्व० प्रवर्तक श्री जी महाराज के जीवन में होते थे यही कारण है कि आज भी हमारा सिर उनके प्रति श्रद्धानत होता है।

बात जालन्धर छावनी की जून मास की है, श्रद्धेय पितामह गुरुदेव अचानक ही रक्तचाप और पक्षाघात रोग से पीड़ित हो गए। साथ ही अतिसार और मूत्र-कृच्छ्र रक्त से भी। चिकित्सकों ने उन्हे पथ्य की दृष्टि से नीम्बू का रस और अन्य फलों का रस लेने को बाध्य किया। फलत: संतों ने कहीं से रस की गवेषणा कर और उन्हें पानी के साथ दिया गया। तीसरे दिन जब उन्हें चेतना आई और पुन: नीम्बू का रस दिया जाने लगा तो तत्काल पूछने लगे—यह क्या है कहां से आया है आदि और उन्होंने उसे ग्रहण करने से इन्कार कर दिया साथ ही जब उन्हें एक बार वह भी प्रथम ही मौसम्मी का रस जो कि एक रुग्ण व्यक्ति के यहां से थोड़ी सी मात्रा में लाया गया था, जामुन जो कि लवण आदि पदार्थों से संस्कारित लेने का श्रद्धालुओं द्वारा लेने का अत्याग्रह हुआ पर उन्होंने सर्वथा नकरात्मक उत्तर दिया। अब और कोई चारा न रहा तो विवश हो कर फ्रेशफ्रूट के स्थान पर डिब्बों का टिंड-जूश देना आरम्भ किया किन्तु डॉक्टरों को इस से संतोष नहीं था और न ही श्रद्धेय श्री जी को। वे कहते—इस से क्या होता है जब तक अन्दर की विकृति दूर न हो।

पाठक समझ गये होंगे कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। जैन साध्वाचार के नियम और संयम तथा धार्मिक दृष्टि ही उसका कारण थी। जैन परम्परा में वनस्पति काय सजीव मानी जाती है अत: जैन साधु उसका अपने जीवन के लिए प्रयोग नहीं करता वह मात्र उसे गृहस्थ के अपने लिए बनाए वनस्पत्यक आहार

अपने भविष्य के स्थान का प्रत्यक्षीकरण। आगम में प्रतिपादित शुभ-अशुभगति और परिणामों की विवक्षा का माप दण्ड यही स्थिति तो नहीं है कि उन्हें अपने स्वर्गीय जीवन का निमंत्रण इस रूप में आया हो जिसने सारे वातावरण में प्रसन्नता और शांति व्याप्त कर रखी थी। सच तो यह है कि उनकी आत्मा यह जान पाई थी कि मेरा गन्तव्य कहां है और यह उसका निर्देश मात्र था। X-X

महानता सचमुच एक आदर्श संप्राप्ति का यथार्थ सोपान है। यह गुण बाह्य क्रिया-कलापों में नहीं अपितु आन्तरिक स्थिति का रूप है। एक बार प्रकट होने पर यह विनष्ट नहीं होता। इसी आधार पर व्यक्ति महान और महिमा-गरिमा वाला होता है। ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व का स्मरण हो उठता है जब इस गुण का चिन्तन होता है मन में तो। वे थे स्व० प्रवर्तक श्री जी महाराज।

जालन्धर नगर में जब वे रुग्ण थे, दुर्बलता और नवीन रोगाक्रमण के भय से चिकित्सों के द्वारा पूर्ण विश्राम की बात कही गई। इधर भक्तजन, श्रद्धालुओं का स्थानीय तथा नगरान्तर से आगमन होता रहता उनकी साता पृच्छा के लिए। जब भी कोई सामने आ गया उन्होंने तत्काल हाथ उठा कर स्वीकृति और वाणी द्वारा भी 'हाँ, जी' आदि सम्बोधन किया और यहां तक ही नहीं मंगल-पाठ भी सुनाने लगते। सुनने वालों की संख्या सीमित नहीं और परम्परागत प्रणाली ऐसी कि पृथक् २ भी सुनते किन्तु वे कभी नहीं अघाए, उकताए। तनिक भी मस्तिष्क पर, भौं पर संकोच-सिकुड़न दृष्टिगोचर नहीं हुआ। मंगल-पाठ भी विस्तृत, सबको समान।

संत एवं संघ अधिकारी सभी ने विनय की—महाराज श्री! आप यह कष्ट न करें, हमें तो आपके दर्शनों से ही संतृप्ति है।" मुस्कराहट—मन्दहास्य जिसका मुख मण्डल पर ही सर्वदा वास था से फरमाने लगते—नहीं, कष्ट क्या है, इसमें क्या ज़ोर लगता है, आप सब को भ्रान्ति है—आग्रह पर पुन: कह कर मौन हो जाते कि—भोला! और संतों के पास है ही क्या, भगवान के मंगलवचन ही तो है न? उन्हें ही बन्द कर दो तो बस, विचारे मंगल-पाठ की आशा ले कर आते हैं सुना देना चाहिए किसी का भला हो जाए और हमारी निर्जरा हो तो क्या बुरा है?"

रात्रिकी क्रिया निवृत्ति के पश्चात् बाहर आ कर विराजित हो जाते

और प्रहर दिन तक एक आसन से बैठे वे साधक अपना मंगल पाठ करते और दूसरों को सुनाते रहते।

अपनी पीड़ा पीड़ा नहीं, पर-पीड़ा ही पीड़ा है ऐसी अनुभूति वाले संत ही वस्तुत: महान होते हैं उनकी ही महिमा—गरिमा व्यक्ति के जीवन के कल्मष को धोने में समर्थ होती है। कवि की यह उक्ति उचित ही है—

तरुवर सरिता सन्त जन, चौथे वर्षे मेह।
परमारथ के कारणे, चारों धरी है देह ॥ ×—×—×

संयम और नियम की दृढ़ता व्यक्ति के जीवन विकास के अनिवार्य साधन हैं। इन के अभाव में स्वच्छन्ता और उच्छृखंलता से पूर्ण निरंकुश मन जीवन को पतित कर देता है। उक्त दृढ़ता के दर्शन स्व० प्रवर्तक श्री जी महाराज के जीवन में होते थे यही कारण है कि आज भी हमारा सिर उनके प्रति श्रद्धानत होता है।

बात जालन्धर छावनी की जून मास की है, श्रद्धेय पितामह गुरुदेव अचानक ही रक्तचाप और पक्षाघात रोग से पीड़ित हो गए। साथ ही अतिसार और मूत्र-कृच्छ रक्त से भी। चिकित्सकों ने उन्हे पथ्य की दृष्टि से नीम्बू का रस और अन्य फलों का रस लेने को बाध्य किया। फलत: संतों ने कहीं से रस की गवेषणा कर और उन्हें पानी के साथ दिया गया। तीसरे दिन जब उन्हें चेतना आई और पुन: नीम्बू का रस दिया जाने लगा तो तत्काल पूछने लगे—यह क्या है कहां से आया है आदि और उन्होंने उसे ग्रहण करने से इन्कार कर दिया साथ ही जब उन्हें एक बार वह भी प्रथम ही मौसम्मी का रस जो कि एक रुग्ण व्यक्ति के यहां से थोड़ी सी मात्रा में लाया गया था, जामुन जो कि लवण आदि पदार्थों से संस्कारित लेने का श्रद्धालुओं द्वारा लेने का अत्याग्रह हुआ पर उन्होंने सर्वथा नकरात्मक उत्तर दिया। अब और कोई चारा न रहा तो विवश हो कर फ्रेशफ्रूट के स्थान पर डिब्बों का टिन-जूश देना आरम्भ किया किन्तु डॉक्टरों को इस से संतोष नहीं था और न ही श्रद्धेय श्री जी को। वे कहते—इस से क्या होता है जब तक अन्दर की विकृति दूर न हो।

पाठक समझ गये होंगे कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। जैन साध्वाचार के नियम और संयम तथा धार्मिक दृष्टि ही उसका कारण थी। जैन परम्परा में वनस्पति काय सजीव मानी जाती है अत: जैन साधु उसका अपने जीवन के लिए प्रयोग नहीं करता वह मात्र उसे गृहस्थ के अपने लिए बनाए वनस्पत्यक आहार

को ही स्ववृत्यानुसार ग्रहण करता है। अपने लिए वह किसी भी प्रकार की वनस्पति—फूल, फल, लता, छाल पत्र आदि हरित एवं बीज का प्रयोग नहीं करते और न ही उस के लिए विशेषतौर पर तैयार किए गए आहार को। इसके मूल-भूत दो कारण हैं—जीवरक्षण, और रसनेन्द्रिय-विषय निग्रह। उनके मन में एक ही धारणा थी कि फल आदि और उसका रस प्रायः गृहस्थों के यहां उपलब्ध नहीं होता है, वह साधु के निमित्त ही मिलता है अतः ये ग्रहण नहीं करते थे।

यह था उनका अपने साध्वाचार के नियम संयम के प्रति दृढ़ विश्वास। उनकी यह दृढ़ धारणा रही है कि अपने मूल नियमों का संरक्षण साधक के लिए अतीव अपेक्षित है। यही दृढ़ता उनके जीवन को ऊपर उठाने सहयोगी सिद्ध हुई। ×—×—×—×

गुरु-परम्परा

पांचाल देश-पंजाब की भूमि में स्थानकवासी परम्परा में नवें अधिशास्ता एक विश्रुत नाम संत श्रेष्ठ श्री रामलाल जी महाराज हो गए हैं। उन्हीं के पट्टधर सुयोग्य शिष्य श्री अमरसिंह जी महाराज थे जो आगे चल कर अपनी विद्वता आचार-संयम गुण के आधार पर पंजाब श्रमण संघ के महान् आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। उन्हीं के नाम पर पंजाब का साधु-समुदाय 'श्री अमर सिंह जी के सम्प्रदाय के नाम से अभिहित हुआ था। आज भी उस युग प्रधान आचार्य के स्मृति स्वरूप अम्बाला में श्री अमर सिंह जैन सभा और एस. एस. जैन सभा पंजाब द्वारा संचालित श्री अमर जैन होस्टल (लाहौर) चण्डीगढ़ में है।

इन सुप्रसिद्ध आचार्य श्री जी के अनेक शिष्य रत्न हुए जिन में से एक श्री राम बक्ष जी म. थे। ये अलवर निवासी लोढ़ा गोत्रीय ओसवाल थे। आचार्य श्री के चरणों में इन्होंने सपत्नीक दीक्षा ग्रहण की थी। इन्हें भी पंजाब का आचार्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन्हीं के शिष्य थे संत पं. रत्न श्री धर्मचन्द जी महाराज। इन के शिष्य संत शिरोमणि आचार्य श्री सोहन लाल जी महाराज थे और उनके अनेक शिष्य रत्नों में से थे एक संत-समाज गौरव पंजाब केसरी आचार्य श्री काशीराम जी महाराज। एवं इन्हीं के शिष्य स्व० प्रवर्तक पं. र. श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज हुए।

स्व० प्रवर्तक श्री जी महाराज के वर्तमान में छह शिष्य हैं जो अपने संयम-नियम के साथ विशिष्टगुण सम्पन्न भी हैं।

१. **तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज**—आप प्रवर्तक श्री जी के सब से बड़े शिष्य हैं, आचार्य सम्राट् श्री सोहन लाल जी महाराज के हाथों दीक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त है। सेवा और तप आपके विशिष्ट गुण हैं, साथ ही शास्त्र-स्वाध्याय भी जीवन अंग है। स्वभाव से विनम्र और किसी प्रकार की अन्य गतिविधियों से अलग-थलग रह अपनी साधना में लीन रहते हैं।

२. **पं. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज**—आप महाराज श्री जी के द्वितीय शिष्य हैं। सेवा और स्वाध्याय निरत मुनि श्री संस्कृत-प्राकृत भाषा के पंडित हैं। स्वभाव से स्पष्टवक्ता एवं अनख के धनी हैं। आज कल आप महाराष्ट्र, बंगाल, गुर्जर आदि प्रदेशों की यात्रा पर गये हुए हैं।

३. **पं. श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज**—पं श्री राजेन्द्र जी महाराज के लघु गुरु भ्राता एवं सहोदर भी हैं। आप की भांति ये भी संस्कृत एवं प्राकृत भाषा के पंडित, सेवा-स्वाध्यायलीन संत हैं। स्वभाव से शांत एवं विनम्र हैं।

४. **तपस्वी श्री चंद जी महाराज**—ये प्रवर्तक श्री जी के पारिवारिक निकट सम्बन्धी थे, प्रथम बार ग्राम में दर्शन करते ही इनके के चरणों में रह कर सेवा करने का संकल्प कर लिया था फलतः दीक्षा ग्रहण करके अपना संकल्प साकार किया। सेवा और तपस्या इन का जीवन धर्म है।

५. **श्री संतोष मुनि जी**—स्वाध्याय और सेवाव्रती वाले युवक संत हैं, साथ ही प्रवचन के अभ्यासी हैं।

६. **श्री अमरेन्द्र मुनि जी**—ये प्रवर्तक श्री जी के लघुतम शिष्य हैं। विद्याभ्यासी उदीयमान संत से समाज को आशाएं हैं।

७. **सुमन मुनि**—प्रस्तुत पुस्तक का सम्पादक। मेरे गुरुदेव पं० श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज हैं, श्रद्धेय पितामह गुरुदेव एवं गुरुदेव की अनुग्रहवृत्ति से ही यह जीवन थोड़ा बहुत बन पाया है।

८. **श्री दाता मुनि जी**—आप पं. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज के शिष्य हैं

तथा प्रवर्तक श्री जी के पौत्र शिष्य हैं। सेवा-तपस्या ही जीवनध्येय है आपका।

इन सतो के अतिरिक्त स्व० प्रर्वत्तक श्री जी ने अपनी गुरु एवं पिता मह गुरु परम्परा के संतो को पूर्ण आदर सम्मान तथा सहयोग प्रदान किया है। आज भी वे हम प्रवर्तक परिवार के लिए आदरणीय एवं श्रद्धास्पद हैं।

श्रद्धेय स्थविर श्री भागमल जी महाराज, श्री ताराचन्द जी महाराज, श्री कपूर चन्द जी महाराज, श्री माणक चन्द जी महाराज, श्री फूल चंद जी महाराज श्री पं. शांतिस्वरूप जी महाराज एवं श्री रघुवर दयाल जी महाराज, श्री सत्येन्द्र मुनि जी, श्री पद्ममुनि जी महाराज आदि लगभग १८ संत रत्न जो कि आचार्य सम्राट् श्री सोहन लाल जी महाराज एवं उनके शिष्य रत्न तपस्वी श्री गैंडे राय जी महाराज, श्री बिहारी लाल जी महाराज, श्री विनय चन्द्र जी महाराज एवं पौत्र शिष्य श्री गणि उदय चन्द्र जी महाराज, बहुसूत्री श्री नरपत राय जी महाराज, तपस्वी निहाल चन्द्र जी महाराज, श्री नत्थूराम जी महाराज, श्री दीप चन्द्र जी महाराज के शिष्य-प्रशिष्य तथा आचार्य श्री सोहन लाल जी महाराज के संतानीक हैं। इन में तपस्वी, व्याख्याता, विद्वान एवं सेवाभावी संत हैं।

प्रवर्तक श्री जी के गुरु भ्राता जिनका उन्होंने शिष्यवत् ही सदा संयमरक्षण किया है—

१. श्री जौहरी लाल जी महाराज—(मूल में ये श्रद्धेय श्री कस्तूर चन्द महाराज से दीक्षित हुए हैं कालान्तर में आचार्य श्री काशी राम जी महाराज के अंतेवासी हुए) युवक वर्ग को धर्मनिष्ठ बनाने की प्रेरणा आप में बलवति है।

२. श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज—आप कवि और धर्म प्रचार में रुचि रखने वाले सत हैं। पंजाब के व्याख्यता सतों में आपका स्थान है।

३. श्री हरि चन्द्र जी महाराज—थानेदार जी के नाम से प्रसिद्ध संत में सेवा और तपस्या का महान गुण है।

४. श्री विवेक मुनि जी—(मूल में आप श्री हरिचन्द्र जी महाराज के हाथों

दीक्षित हुये बाद में प्रवर्तक श्री जी के अंतेवासी बने) आप में सेवा और स्वाध्याय और स्मरण का गुण अविकल रूप मे विद्यमान है।

५. श्री विकास मुनि जी—प्र०व० श्री सुरेन्द्र मुनि जी महाराज के शिष्य हैं। उग्र एवं दीर्घ तपस्या के धनी मुनि जी सेवाव्रती भी हैं।

६. श्री देवेन्द्र मुनि जी—श्री हरि चन्द्र के लघु शिष्य हैं।

इस प्रकार यह आचार्य श्री सोहन के संतानिक एवं प्रवर्तक श्री जी परम्परा का संक्षेप में उल्लेख है।



ओम्-स्तुति

[स्व० प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री जी महाराज का भक्ति प्रेरक गीत]

ओम् में हो नित्य लीन प्रेम के पुजारी ॥

वीज मंत्र ये ही सार, प्राणी मात्र का आधार ।
पांच पद हैं इस में सार, शुद्ध निर्विकारी ॥१॥

सर्वज्ञ शास्त्र को पहिचान अर्थ योजना व्याख्यान ।
गाते गुण गण सुजान, कर्म विषहारी ॥२॥

ध्यानी ध्याते हैं हमेश, काटने को सब कलेश ॥
इस के वश में सुर सुरेश, काल पास हारी ॥३॥

मोक्ष गामी करते जाप काटने को कर्म पाप ।
आत्मा स्वयं ही आप ओम् हितकारी ॥४॥

प्राणी मात्र इस का नाम, जो जपे हो सिद्ध काम ।
अन्त पावे मोक्ष धाम, "शुक्ल" ध्यान धारी ॥५॥

संवेदना-पत्र

[पत्र, तार, आदि]



पूज्य

साधु

एवं

साध्वियाँ

जी

महाराज

तथा

सामाजिकों

द्वारा

श्री सुमन मुनि जी की सेवा में,
जालन्धर शहर।

मोगा
दि० १.३.६८

श्री

सुश्रावक धर्म प्रेमी श्रीमान मंत्री जी एस. एस. जैन सभा जालन्धर की सेवा में सादर सप्रेम जयजिनेन्द्र।

अत्र श्रमण संघ समुन्नायक द्वितीय पट्ट धर बाल ब्रह्मचारी महामहिम पं० रत्न परम श्रद्धेय जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री १००८ श्री आनन्द ऋषि जी म० आदि ठाणे १२ सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं उन्होंने आपके वहाँ विराजित पं० श्री जौहरी मुनि जी म० स्थविर सेवा भक्ति मुनि श्री महेन्द्र मुनि जी म० आदि ठाणे की सेवा में यथायोग्य वन्दन पूर्वक सुखसाता पूछी है सपरिवार आपको तथा श्री संघ को धर्म ध्यान करने का शुभ संदेश फरमाया है।

विशेष—आज प्रातःकाल में व्याख्यान चल रहा था उसके मध्य में तार मिली, प्रवर्त्तक पं० मुनि श्री शुक्ल चन्द्र जी म० का स्वर्गवास हो गया है यह पढ़ते ही दिल पर आघात पहुँचा प्रवर्त्तक श्री जी म० पंजाब प्रान्त के एक लब्ध प्रतिष्ठित शांत स्वभावी मिलनसार संत थे। आपके दिल में श्रमण संघ विषयक अत्यन्त प्रेम था। इसी कारण समाज संगठन प्रीत्यर्थ शारीरिक असमर्थता होते हुए भी सादड़ी-भीनासर-अजमेर साधु सम्मेलन में पधार कर अपना पूर्ण सहयोग दिया था। अम्बाला के स्वागत समारोह के प्रसंग पर प्रवर्त्तक श्री जी म० ने विशाल हृदय से श्रमण संघ के उत्थान में अपना प्रवर्त्तक पद त्याग करने की भी उदारता प्रकट की थी। यह सद्भावना संगठन प्रेमी आत्माओं के अन्तःकरण में स्मरणीय एवं प्रशंसनीय है। पंजाब प्रान्तीय श्रमण संघ में संत-सति वर्ग के लिए प्रवर्त्तक जी म० आधार भूत थे और आपने हर एक को आपनी शीतल छाया में शांति पहुँचाई थी।

आपके आकस्मिक वियोग से श्रमण संघ की बड़ी भारी क्षति हुई है। इस समय श्रमण संघीय विचारणा में आपकी उपस्थिति आवश्यक थी परन्तु काल ने मध्य में ही प्रवर्त्तक जी को हमारे संघ में से उठा लिया आयुष्य के आगे जोर नहीं है ऐसा समझकर दिल को संतोष देना पड़ता है। आचार्य श्री जी ने शिष्य

श्री सुमन मुनि जी
द्वारा/मंत्री, एस. एस. जैन सभा,
जालन्धर शहर ।

सन्मति मातृ सेवा संघ,
जगराओं ।
दि० १.३.६८

अर्हं

स्नेहास्पद श्री सुमन मुनि जी

सविधि सुखसाता !

आज प्रातः से ही कुछ मन खिन्न सा उदास सा था ऐसे लग रहा था कि जैसे कुछ खो सा गया हो । मन का स्वभाव समझकर उपेक्षा कर दी और अपने दैनिक कार्यों में लग गए, शास्त्र हुआ फिर गोचरी को चले गए मार्ग में भी कुछ उदासी सी उदासी सी ! सोचता गया कि क्या कारण है ।

भिक्षा लेकर आया तो भण्डारी जी ने दुःखद संदेश दिया कि हमारे महनीय प्रवर्तक पं० रत्न शांत एवं सरल कविवर श्री शुक्ल चन्द्र जी म० हमें असहाय छोड़ कर परमपद को प्राप्त कर गये हैं। सुनकर अवाक् सा रह गया। पंजाब की भविष्य स्थिति लुटे हुए सेठ की सी मस्तक पर चलचित्र की तरह घूम गई। धीरे-२ पंजाब श्री संघ अपनी श्री कालकराल को सौंपता हुआ कंगाल होकर क्या करने जा रहा है इसका वभिस्सिक दृष्य देखकर हृदय सिहर उठा और शासनदेव से प्रार्थना करने लगा प्रभो ! इस अपनी असहाय सन्तति को सहारा देकर इसमें जीवन जागरण की अदम्य शक्ति भर दे पारस्परिक स्नेह प्यार के बन्धन में बाँध कर इन्हें त्याग तप से आत्म शुद्धि देश के नव निर्माणार्थ कर्मठ एवं दृढ़ व्रती बना डाल। दुनियां में शुक्ल पक्ष प्रारम्भ हुआ परन्तु हमारा शुक्ल कृष्ण क्यों हो गया काश ! कि शुक्ल की शुक्ल कृतियां हमें सदा शुक्ल बनायें और हम उनके चरण चिह्नों पर चल कर अपना तथा पंजाब का और देश को ऋण उतार सकें।

महाराज श्री के निधन से श्रमण संघ को तो असहाय आघात पहुंचा ही है समूचे राष्ट्र को ऐसे त्यागी तपस्वी शांत गंभीर दयालु युग पुरुष को खोकर जो क्षति हुई है वह निकट भविष्य में पूर्ण होनी कठिन ही नहीं बहुत कठिन है। अन्त में शासनदेव से सविनय प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो और हम सबको उनका दिव्य प्रकाश सदा ही मिलता रहे कि हम अपने पूर्वजों के चरण चिह्नों पर चलते हुए अपने जीवन को आदर्श बना सके ।

अन्य सभी पूज्य मुनिवरों को यथाविधि वन्दना सुखसाता ।

—मुनि विमल

और सबसे ज्यादा उन्होंने दुःख का अनुभव किया कि इससे बढ़कर और क्या क्षति हो सकती है। पूज्य श्री के पश्चात् जो पंजाब के वातावरण को उन्होंने संभाल कर अपनी दृढ़ता का परिचय था वे हमारे निकटतम साथी आज हमसे बहुत ही दूर हो गए। उनके अभाव में अब चारों ओर अन्धकार नजर आ रहा है। अस्तु मैं आपको इस विषय में क्या सान्त्वना दूं जबकि हम स्वयं ही स्थिर नहीं हो पा रहे हैं किन्तु किसी के बड़े सदा कहां रहे हैं अब तो उन्हीं के समान अपना जीवन बना कर अपना और पूज्य गुरुदेव का नाम ऊंचा उठावें थोड़े लिखे को ज्यादा समझें आपतो स्वयं समझदार हैं।

श्रद्धांजलि साथ ही भेज रहे हैं गुरु म० तत्रस्थ समस्त सन्तों को आपको बहुत २ साता पूछते हैं। छोटे संतों की ओर से यथायोग्य बन्दना सुखसाता।

आपका—

भद्र मुनि

श्री सुमन मुनि जी की सेवा में,
जालन्धर शहर।

जैन स्थानक
अम्बाला शहर।

दि० शुक्रवार १ मार्च

श्री सुरेन्द्र मुनि जी, श्री महेन्द्र मुनि जी, श्री सुमन मुनि जी !

श्री श्री १००८ श्री पंजाब प्रवर्त्तक श्री गुरु म० जी के निधन की बात सुनते ही एकदम सन्नाटा छा गया वैसे तो आज सारा दिन बेचैनी रही शरीर में...।

हा ! आज हमारे सिर का साया उतर गया। हम किसके पास अपना दुःख सुनाएँगे। हमारे लिए तो मानो आज सिर पर पहाड़ ही टूट गया। सुमन मुनि जी ! आज हम इस दुनियां में अनाथ हो गए हैं हमने गुरु जी के सिर पर कभी गुरुनी जी को भी याद नहीं किया। ओह ! क्या अब गुरु जी कभी दिखाई नहीं देंगे ? हमारे तो भाग्य ही मंद हैं हमने अपने रत्न को खो दिया। ऐसी २ महान हस्तियां मुश्किल से ही मिला करती हैं। आप भाग्यशाली हैं आपने अन्तिम समय में उनकी सेवा और दर्शन दोनों किए। किन्तु हम तो अन्तिम दर्शन भी न कर सके। हमने सोचा था पहली को विहार का प्रोग्राम बनाएँगे यदि गुरु जी म० जी की तबीयत ठीक रही।

अब तो धैर्य से ही काम चलेगा आप समझदार हैं सारी स्थिति को संभालना आप पर बोझ आ पड़ा है अब तो सारी डोर आपके हाथ में है।

— आर्या स्वर्णा

जैन स्थानक
गुड़गावां
दि० २.३.६८

श्री सुमन मुनि जी म०
द्वारा, मदनलाल जैन,
माई हीरां गेट, जालन्धर शहर :

श्री सुमन जी,

सस्नेह सुखसाता !

परम श्रद्धेय पंजाब प्रवर्त्तक पं० प्रवर श्री शुक्लचन्द्र जी म० का देवलोक महाप्रयाण का दुखद हृदय विदारक समाचार सुनकर मन की वेदना की कोई सीमा न रही।

आप सब सन्तों को यह दारुण दुख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो विधि के अटल विधान के आगे मौन रहकर नत मस्तक होना पड़ता है इसके सिवाय कोई चारा नहीं।

सब मुनिराजों को यथा योग्य वन्दना सुखसाता। योग्य सेवा लिखें।

—मुनि मनोहर

एस. एस. जैन सभा, जींद (हरियाणा)
दि० २ मार्च १९६८

सेवा में श्री सुमन मुनि जी म०
द्वारा, श्री राज कुमार जी जैन, प्रधान
एस. एस. जैन सभा, जालन्धर।

श्री श्री श्री १००८ श्री सुमन मुनि जी म० तथा विराजित सभी संत तथा एस. एस. जैन सभा, जालन्धर।

यहाँ पर विराजित श्री श्री श्री १००८ पं० श्री सुदर्शन मुनि जी म० आदि ठाणे ४ तथा, श्री रूपचंद जी म० ठाणे २ व श्री एस. एस. जैन संघ को आज समाचार पत्र द्वारा तथा १२ बजे तार मिलने पर श्री श्री श्री १००८ पं० रत्न पंजाब

प्रवर्त्तक शांत मूर्ति श्री श्री श्री शुक्लचन्द्र जी म० के देवलोक का हृदय विदारक समाचार मिला जिसको सुनकर सभी को वड़ा भारी दुःख प्राप्त हुआ।

म० श्री जी के निधन पर शोक सभा हुई जिसमें पं० रत्न श्री श्री श्री १००८ पंजाब प्रवर्त्तक जी के जीवन पर रोशनी डाली म० श्री जी की आत्मा की शांति के लिए २ मिनट का मौन रखा गया और श्री नवकार महामंत्र का ध्यान किया गया। श्री श्री श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी म० जैन श्री संघ के एक महान रत्न थे, महान विद्वान, शांत स्वभावी और सरल थे। आप श्री जी ऊँचे पद विराजित थे।

आप श्री जी के निधन से जैन समाज को वड़ी भारी क्षति पहुँची है जिसका पूरा होना कठिन है। श्री वीर प्रभु के चरणों में निवेदन है कि स्वर्गीय महान आत्मा को शान्ति प्रदान हो और सुमन मुनि जी तथा सभी साथी मुनियों को यह महान कष्ट वरदाशत करने की शांति प्राप्त हो वहाँ पर विराजित सभी सन्तों के चरणों में जैन संघ जींद की तरफ से हार्दिक समवेदना।

निवेदक (संघ सेवक)
वैजनाथ जैन
मंत्री, एस. एस. जैन सभा
जींद (हरियाणा)

मुनि श्री जौहरीलाल जी महाराज
मंत्री, श्री एस. एस. जैन सभा,
जालन्धर शहर।

लुधियाना
दि० २-३-६८

आदरणीय मुनि श्री जौहरी लाल जी

सादर सुखसाता !

यह सुनकर कि "प्रवर्त्तक श्री पं०रत्न श्री श्री श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० का परसों ७ वजे रात्रि को स्वर्गवास हो गया है" हृदय को जो धक्का लगा उस का वर्णन लेखनी द्वारा प्रायः शक्य नहीं है। वे शांत आत्मा थे। सब को सान्त्वना देने वाले थे। वे ज्ञान की मूर्ति थे उनके द्वारा रचित रामायण और मध्य भारत आदि ग्रन्थ इस वात का साक्षात् प्रमाण है। वे पंजाब में अपनी

अनूठी शान से विचर रहे थे। वे स्वर्गीय पूज्य श्री श्री श्री १००८ काशीराम जी म० के प्रिय शिष्य थे उनके समान ही इन्होंने भी उज्जवल कीर्ति और यश प्राप्त किया था।

आप श्री की शांति, सहिष्णुता, धैर्य, गाम्भीर्य्य एवं विद्वत्ता आदि सद्गुण सब के लिए अनुकरणीय हैं। सब इन का अनुकरण करें यही हार्दिक भावना है इनकी इस दुःखद मृत्यु पर मैं आप तथा समस्त मुनियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ।

निवेदक—
मुनि श्री हेमचन्द्र

श्री वीतरागाय नमः

सेवा में
श्री श्री श्री सुरेन्द्र मुनि जी, श्री महेन्द्र मुनि जी,
द्वारा, ला० केसरदास जैन, बांसा वाला बाजार,
जालन्धर शहर।

जैन स्थानक, जैन नगर
मेरठ।

दि० २.३.६८

आदरणीय बन्धु श्री सुरेन्द्र मुनि जी एवं महेन्द्र मुनि जी,

सादर सस्नेह पौनः पुनः सुखसाता!

आशा है शासनेश महाप्रभु की कृपा दृष्टि से तत्र विराजित आप सभी मुनिराज सुखसाता पूर्वक विराजमान होंगे परन्तु प्रवर्त्तक श्री जी म० सा० का इस तरह यकायक अपने बीच में से अन्तर्धान हो जाना एक वज्रपात के समान महान दुखद दुर्घटना है। हमने तो अभी ३-४ दिन पहले ही यह सुना था कि म० श्री जी की तबीयत अब पहले से काफी अच्छी है और स्थानक में पधार गए हैं तो फिर यह अकल्पित सहसा अनभ्र वज्रपात कैसे हुआ?

कुछ भी हो पंजाब का श्रमण संघ तो एक वात्सल्य परिपूर्ण हृदयी धर्म पिता को खोकर अनाथ हो ही गया है अब ऐसी स्वपर हितैषी शांत दांत परोपकारी आत्मा के देव दुर्लभ दर्शन कहाँ? इसके साथ ही अपने महानमुनि कुल का निर्विवाद एक छत्र अपने हाथ से खो गया यह एक अत्यन्त सोचनीय प्रसंग है। खैर और तो जो होगा पीछे देखा जाएगा परन्तु इस समय में आपसे एक बात

निवेदन करना चाहता हूँ। कोई उपदेश के रूप में नहीं क्योंकि आप स्वयं बुद्धिमान हैं विचारशील हैं। बल्कि व्यक्तिगत और आत्मीयता के नाते एवं पारिवारिक सौहार्द के कारण यह साहस कर रहा हूँ लिखने का कि अब आपके कन्धों पर एक विशेष जिम्मेदारी आ पड़ी है और सुयोग्यपूर्वक आपने इसको वहन करना है इसलिए आप समस्त मुनिराज परस्पर एक हृदय बने रहें प्रेम सौहार्द प्रतिदिन वृद्धिगंत होता रहे एक स्वर एक जूट होकर आगे बढ़ते रह सकें ऐसा प्रयत्न हो। इसके लिए आप ध्यान रखियेगा। पंजाब का मुनि वर्ग इस समय किस प्रकार लोकेषणा का शिकार बनकर व्यक्तिगत "अहं" तक ही सीमित होता जा रहा है और इसके कारण कैसे आत्मीयता का स्रोत सूखकर परस्पर छीछालेदर पर भी उतरता जा रहा है वह आप विचार दृष्टाओं से छुपा हुआ नहीं है हम इस दल दल से उभरे रह कर शांतिपूर्वक अपने आत्म कल्याण के लक्ष्य की ओर बढ़ते रह सकें इसलिए आपका ध्यान इस ओर खींचने का प्रयत्न किया है।

बाकी यह शोक का बादल तो हम सब के लिए एक सा ही है आखिर धैर्य से ही इसको पार करना होगा हमारी समस्त शक्ति आपकी अपनी है सबको धैर्य दीजिएगा और अपने सुखसाता के समाचार से अवगत कराते रहिए। हमारी सब की तरफ से सब मुनिवरों को यथायोग्य सुखसाता एवं वन्दना निवेदन है।

आपका अपना ही
मुनि शान्ति स्वरूप

श्री सुमन मुनि जी,   मुकेरियां
द्वारा/मंत्री, एस. एस. जैन सभा,   दि० २.३.६८
जालन्धर शहर।

समादरणीय बन्धो,

सादर जयवीर !

तत्र विराजित मुनि वृंद के पावन पद् पद्मों में अत्र स्थिता साध्वी मण्डल श्री अभय कुमारी जी म० व श्री सीता जी म० ठाणा ७ की ओर से करबद्ध नतमस्तक शतशः भावाभिनन्दन अंगी कृत होने के पश्चात् मुनि श्री के वपु-रत्न सम्बन्धी अधिकाधिक सुख शांति पूछिएगा।

व्याख्यान समाप्ति के साथ ही हृदय विदारक वज्र सन्निभदारुण समाचार को श्रवण कर समस्त साध्वी वृंद कांप कर रह गया हाय दैव ! यह क्या हुआ इस अनहोनी की तो स्वप्न में भी कल्पना न की थी हमारी अमूल्य निधि कहाँ चली गई। पता नहीं कौन से अशुभ कर्मों का उदय है जो एक २ करके हमारे साए सिरों से उठते चले जा रहे हैं। पंजाब के भाग्य विधाता पंजाब की नैया को मंझधार में छोड़ते चले जा रहे हैं।

जिसके सानिध्य को पाकर आबाल-वृद्ध प्रसन्न थे जो ज्योति का आगार था उस आत्म प्रभा मण्डित शुक्ल महार्णव में जिसने भी गहरे पैंठ देखा उसी को महान आत्मानंद की सुखद अनुभूति हुई, स्नेहिल मुस्कान के साथ २ उसे जीवन के आंचल में सद्गुण रूपी रत्न कणिकाओं की उपलब्धि हुई। उस ज्योति स्तम्भ के अकस्मात गिर जाने से हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर आरोहित जैन समाज तमसावृत हो इधर उधर भटक रही है।

तप त्याग के ज्वलंत भास्कर, शांति की साकार प्रतिमा, ब्रह्मचर्य के एकनिष्ठ पुजारी, समस्त सद्गुणों के आधार महाराज श्री के इस आकस्मिक गमन से आज हम ही नहीं देश का बच्चा बच्चा रो उठा है। म० श्री के निधन से जैन जगति विशेषकर पंजाब की धरित्री को वह आघात पहुँचा है जिनका दर्द आने वाली शतियों में भी भुलाया न जा सकेगा। उनके अभाव की पूर्ति सर्वथा असम्भव है।

मां भारती का वरद पुत्र मां के अंक को सदैव के लिए सूना कर गया है। जन २ का निर्माता न जाने किस अपराध से रूठ कर क्षितिज के उस पार चला गया है उसे अब कहाँ पाएँ ? कहाँ ढूँढें ? पृथ्वी का कण २ उसकी स्मृति में पागल है अश्रुपूरित दृगों से कण २ में अपने भाग्य विधाता जीवन निर्माता को खोज रहा है। इस दुःख सागर में निमज्जित अशेष प्राणीमात्र के साथ अत्र विराजित साध्वी वृंद भी शोकाकुल हृदय से सम्वेदना प्रकट कर रहा है। मन चाहता कि कुछ और लिखा जाए किन्तु लेखनी हृदय का साथ नहीं दे पा रही अतः पंक्ति चित् जो भी लिख पाए हैं उसे ही स्वीकार करें।

शोक विह्वला साध्वी समुदाय की ओर से

साध्वी महेन्द्रा

ॐ

श्री सुमन मुनि जी, जगराओं
द्वारा, मंत्री, एस. एस. जैन सभा, शनिवार २ मार्च
जालन्धर शहर।

आह गुलचीने अजल, तुझसे वह नादानी हुई।
फूल वह तोड़ा कि, गुलशन भर में विरानी हुई॥
हा हन्त ! हन्त !! सर्वस्व मयि प्रणष्टम्।
प्रवर्त्तक देव गए ! पूज्य गुरुवर गए !! परमाराध्य गए !!!

भिक्षा लेकर लौटते ही इस कठोर एवं दुखद समाचार ने तो अकस्मात् ही हृदय पर वज्रपात कर दिया इस हृदय विदारक सूचना को सुनते ही मानो पृथ्वी और आकाश कांपते से नजर आने लगे। जैन जगत पर यह सहसा क्या वज्रघात हुआ इतनी जल्दी जिसकी स्वप्न में भी कल्पना न थी। हाय रे ! विकराल क्रूर काल यह तूनें क्या कर डाला ?

आज हमारा शिखर टूट गया है आज हमारा सहारा चला गया है आज हम दीन से दीनतर हो गये हैं अब हमारा आलम्बन कौन होगा हम किसकी छत्र छाया में सुख की अनुभूतियां प्राप्त करेंगे। जैन संघ की उज्जवल विभूति आत्मसाधना में निष्ठ सरलता का महास्रोत, ज्ञान का पुंज, शांति का देवता, गौर वर्ण, कार्य कर्मठ महान योगी को हम पुनः संसार में कहाँ से प्राप्त करें ?

जिस महान आत्मा के नाम एवं दर्शन से संतप्त प्राणी अपने जीवन में आनन्द का अनुभव किया करते थे आज वह महानात्मा हमारी आंखो से ओझल हो गई आज हम शून्य हो गए। आज वर्द्धमान श्रमण संघ तो अनाथ हो गया हैं विशेषकर पंजाब संघ तो एक वह अनमोल निधि खो बैठा है जिसे खोकर आज हम कंगाल बन गए हैं।

हाय रे ! समाज का दुर्भाग्य ऐसी २ महान विभूतियों का निधन जिनकी क्षतिपूर्ति निकट भविष्य में कठिन ही नहीं अपितु असंभव ही है। स्वनामधन्य शुक्ल की महान शुक्ल कृतियां ही अब तो एक मात्र अवलम्बन होगी। जैन संस्कृति के इतिहास में इस महानात्मा के अनेकानेक गुण स्वर्णाक्षरों में चिरकाल तक अमिट छाप बनी रहेगी।

कितनी ही चिरचिन्तन नवनूतन स्मृति संस्मृतियां दुःखावेग के प्रवाह में प्रवाहित सी होने लगी हैं। ऐसा लगा कि सब कुछ अतीत में समा रहा है शून्य में डूबा जा रहा है और सब अनुभूतियों को छोड़ कर यह अनुभूतियां पुनः २ उठ रही हैं कि आज हमारा सूर्य अस्त हो गया है।

शुक्ल पक्ष के पश्चात् तो अन्धकारपूर्ण कृष्ण पक्ष ही आता है माना कि उसे अस्त होना था क्योंकि आज तक अस्तगामी सूर्य के रथ को कौन रोक सकता है। यह सब जानते हुए भी जब २ भावी अन्धकार की प्रगाढ़ता को देखते हैं तो एक विह्वलता सी आ जाती है कर्म गति क्रूर है टाली नहीं जा सकती।

शासन के शृंगार और जगति की निधि को इस निर्दयी काल ने कैसा झपटा मारा और हमें निराधर कर डाला। अन्त में दर्द भरे शब्द लिखने में यह लेखनी भी असमर्थता ही रखती है। जब अपना ही हृदय अधीर है तो आप श्री जी को सान्त्वना देने क्या लिखा जाए फिर भी सम्वेदना सहानुभूति के साथ हृदय पर पत्थर धर कर यह लिखना पड़ता है कि दिवंगत आत्मा को शासनदेव शांति प्रदान करें और आपको भी महान् धैर्य एवं इस दर्द गम को सहन करने की क्षमता प्राप्त हो।

शासनदेव से यही प्रार्थना है कि हमें और श्री संघ को उस महानात्मा की प्रिय ऐक्य भावना प्राप्त हो उनके पद् चिह्नों का हम अनुकरण करें ऐसी धीरता गंभीरता महानता प्रत्येक व्यक्ति में निवास करे।

एस. एस. जैन सभा, जगराओं —श्रमणी सुन्दरी, श्रमणी आज्ञा

२.३.६८

वन्दे जिनवरम् वरनाला

शनिवार (२ मार्च)

पं० श्री महेन्द्र मुनि जी म०,

श्री सुमन मुनि जी म०,

जैन स्थानक, जालन्धर।

सम्माननीय स्वनाम धन्य श्री सुरेन्द्र मुनि जी म०, श्री महेन्द्र मुनि जी म०, श्री जौहरी मुनि जी म०, श्री हरिश्चन्द्र जी म०, श्री सुमन मुनि जी म०, श्री विकास मुनि जी म०, श्री रमेश मुनि जी म०, श्री सन्तोष मुनि जी म०, श्री अमर मुनि जी म०। शेष दो सम्माननीय संतों के नाम ज्ञात न होने से नहीं लिखे जा सके हैं आशा है वे क्षमा करेंगे यों ठाणा ११ को ठाणा २ की ओर से

बहुत २ वन्दना सुखसाता यथायोग्य विदित कीजिएगा। लेखनी रुक रही है मन भर-भर आ रहा है। हा ! अचानक यह कैसा वज्र सा टूट पड़ा जो कि पंजाब प्रांत के प्रवर्तक पद विभूषित शांतात्मा-सरलात्मा-पंडितरत्न-पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय श्री शुक्लचन्द्र जी म० अब हमारे में नहीं रहे। हमारी समाज के अनमोल रत्न को क्रूरकाल हम से सदा के लिए जबरदस्ती छीन कर ले गया। उनके इस सम्मानित रिक्त स्थान की कभी भी पूर्ति न हो सकेगी। खेद ! खेद !! महाखेद !!!

आप सबने उनकी सुनहरी सेवाएँ की हैं जो इतिहास में सदा अमर रहेंगी उनके अतीव निकट रहने से उनके वियोग का आप सभी के कोमल हृदयों पर एक अविस्मरणीय एवं गहरा आघात लगना स्वभाविक ही है फिर भी अब तो उनके अनगिनत एवं सराहनीय महान गुणों को स्मरण रखते हुए भगवान महावीर का शरणा लेकर धैर्य धारण करना ही उचित है। हमारी ठाणा २ की संवेदना हार्दिक सहानुभूति आप सब समादरणीय संतों के साथ है। हम उन महान आत्मा के लिए शांति की प्रार्थना करते हुए पुनः आप सबसे धैर्य रखने का स्नेहाग्रह करते हैं। श्रद्धेय म० श्री जी एक महान संत थे। हम तो क्या उन्हें कोई भी भूल न सकेगा। उनका मधुर और सरल स्वभाव अमर रहेगा और उनका निर्मल संयम भी। जैन जगत के उस महान योगी को, महान ऋषि को, महान गुणी ज्ञानी को हमारी भाव भरी श्रद्धांजलि अर्पित है।

—चन्दन मुनि

श्री श्री महेन्द्र मुनि जी म० जयपुर शहर
द्वारा/श्रीमान ला. सैकेट्री साहब जी, ता: २-३-६८
एस. एस. जैन सभा, जालन्धर शहर।

श्रीमान मंत्री साहिब जी

जयजिनेन्द्र वंचना।

आगे समाचार यह है कि हमारे यहाँ पर श्री श्री १००८ सती श्री वल्लभ वती जी म० (पंजाबी) ठाणा ३ के सहित सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं। आगे आप का तार १-३-६८ को दोपहर को प्राप्त हुआ था जिसके द्वारा दुःखद समाचार उपलब्ध करके महासति जी के दिल को बहुत भारी आघात पहुँचा जिसका कि यह लेखनी वर्णन भी नहीं कर सकती कि देखो कैसी महान आत्मा थी। ऐसी ऐसी महान आत्माओं की पूर्ति किस प्रकार होगी यही मन में ख्याल

आते ही एक दम मन विह्वल हो उठता है। अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प मन में उठते हैं और विलीन हो जाते हैं। अन्त में सिवाय आर्त्तध्यान के बनता कुछ नहीं है। उनकी तो महासति जी पर अपार कृपा थी जिससे कि आज वह वंचित रह गए। इस बात का सती जी को बहुत दु:ख है और सती जी सर्व सन्तों से यही कामना रखती हैं कि आप पूर्व की भांति अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखेंगे।

सर्व साधु वृन्द के चरण कमलों में अत्र विराजित ठाणा ३ की तरफ से वन्दना सविधि नमस्कार करके सुखसाता पूछ लें।

अन्त में शासन देव से भी यही प्रार्थना की जाती है कि उनकी आत्मा को चिरस्थायी शांति प्राप्त हो तथा आपको और हम सब को आघात सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रेषक— —आर्या कृष्णा

राजकुमार जैन (सती श्री वल्लभवती जी म० की आज्ञा से)

पता : जैन मैटल वर्क्स, पोस्ट बॉक्स नं० १०४,
जयपुर (राजस्थान)

मंत्री, एस० एस० जैन सभा, डेराबसी (अम्बाला)
जालंधर शहर। ३-३-६८

श्री सेक्रेट्री साहिब जी,

जयजिनेन्द्र।

हमारे यहाँ पर श्री श्री १००८ श्री नौबत राय जी म० तथा श्री श्री १००८ पं० श्री जगदीश मुनि जी महाराज ठाणे ४ सुखशांति से विराजमान हैं। कल रोज़ जब आपका तार मिला और गुरु महाराज के चरणों में पढ़कर सुनाया गया जब उन्होंने सुना कि पं० शुक्लचन्द्र जी महाराज का स्वर्गवास हो गया तो अति दु:ख हुआ और जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गई।

आगे वहां पर समस्त मुनि मंडल के चरणों में श्री जगदीश मुनि जी महाराज ने प्रार्थना की कि इतनी बड़ी हस्ती का उठ जाना मुनि मंडल के लिए तथा समाज के लिए अति दुख की बात है। परन्तु क्या किया जाय काल के आगे किसी की पेश नहीं चलती। अब तो हमारा और आपका यही कर्त्तव्य है कि उनकी शिक्षाओं पर चलते हुए संयम का पालन करें। (यथायोग्य वंदना सुखसाता)

भवदीय—

गंगासागर जैन, सेक्रेट्री

जैन गर्ल्ज़ हाई स्कूल, डेराबसी।

सेक्रेट्री, एस० एस० जैन सभा,
बाज़ार बांसा, जालंधर शहर।

वनारसीदास प्रेमचंद ओसवाल
सब्जी मंडी, दिल्ली
दि० ५-३-६८

श्रीमान् सेक्रेट्री साहब !

जयजिनेन्द्र ! अर्ज (है कि) हमारे यहाँ विराजमान महासती श्री रोशनमति जी, केसरादेवी जी व हुक्म देवी जी विराजमान हैं। महा० साहब सब्जीमंडी से आपके यहाँ विराजमान मुनिराजगान को वंदना सुखसाता लिखवाती हैं। साथ ही गुरु महाराज प्रवर्त्तक श्री श्री १००८ पंडित रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज साहब के देवलोक से समाज व धर्म को जो हानि पहुँची है उसका दुख महसूस करते हुए आप सब मुनिराजाओं से धैर्य के लिए और स्वर्गवासी आत्मा के लिए शांति की प्रार्थना करती हैं।

सब की तरफ से बहुत २ वंदना सुखसाता मालूम हो। तावेदार बनारसी दास ओसवाल की तरफ से वंदना अर्ज है। —बनारसीदास प्रेमचंद ओसवाल
सब्जी मण्डी, दिल्ली।

श्री सुमन मुनि जी महाराज,
द्वारा, ला० परतूलचंद जैन,
सेक्रेट्री, एस० एस० जैन सभा,
जालंधर शहर।

एस० एस० जैन मित्र मंडल,
मोगा (मंडी)
५-३-६८

श्रीमान् मंत्री जी,

जयजिनेन्द्र देव

यहाँ पर श्री श्री १००८ वाणी भूषण, प्रसिद्ध वक्ता, उपप्रवर्त्तक श्री पूर्ण चंद जी म० सुखसाता से विराजमान हैं। श्री म० जी को परम पूज्य प्रात: स्मरणीय प्रवर्त्तक १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी म० के स्वर्गवास होने का अति शोक है। जैन साधु समाज को पं० जी म० की बहुत आवश्यकता थी परन्तु काल की इच्छा ऐसी ही थी। श्री म० जी का आप की ओर ध्यान लगा हुआ है।

श्री महाराज जी का विचार है कि आप सब को अब प्रेम पूर्वक इकट्ठे रहना

चाहिए, श्री म० जी आपको हर प्रकार का सहयोग देंगे। हम सब आपके साथ हैं हर प्रकार का सहयोग देवेंगे और आप सब के प्रति शुभ भावना रखते हैं। परम पूज्य श्री सोहनलाल जी का नाम पूज्य श्री काशीराम जी ने रोशन किया था और पूज्य काशीराम जी के नाम को श्रद्धेय पंडित जी ने चार चांद लगाकर ऊँचा किया है। आप सब भी श्री पं० जी म० के नाम को उजल करें और प्रेम पूर्वक चार चांद लगाएँ ऐसी हमारी भावना है और हम भी इस काम में पूरा सहयोग देवेंगे। श्री म० जी की शुभ कामनाएं आपके साथ हैं।

आपका दास—
शालिगराम गुप्ता

सेवा में, दिल्ली सदर
श्री महेन्द्र मुनि जी म० ५ मार्च, १९६८।
द्वारा/ला० कर्मचन्द दीनानाथ जैन,
जालन्धर शहर।

मान्यवर भाई साहिब दीनानाथ जी,

जयजिनेन्द्र !

यहाँ पर विराजित श्री १००८ श्री पन्ना देई जी म० ठाणे ७ सुख शान्ति पूर्वक विराजमान हैं।

महासति पन्ना देई जी म० ने अकस्मात् जब प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी म० के नश्वर शरीर को परित्याग करने का हृदय द्रावक समाचार सुना तो उनको असीम दुःख हुआ और उन्होंने कहा कि "आज प्रकाशस्तम्भ का लोप हो गया है। इतनी महान आत्मा आज विश्व में मुझे कहीं नज़र नहीं आती लेकिन काल के क्रूर पंजे सभी को जकड़ लेते हैं जिसके सामने कोई पेश नहीं चलती। महान आत्माएँ विदा हो जाती हैं लेकिन गुण गौरव गाथाएँ विश्व को सदैव प्रेरणा देती हैं।" उनके हृदय में दुःख तो वहुत है कि समाज को जिस समय ऐसे रत्न की आवश्यकता थी, ऐसे समय ही हमारे ऊपर वज्र टूट पड़ा।"

सब संतों को वंदना निवेदन करें और धैर्य धारण की प्रेरणा दें।

भवदीय—
एस० के० जैन

श्री वीतरागाय नमः

सेवा में, लुधियाना

श्री महेन्द्र मुनि जी म० ६ मार्च, १९६८

द्वारा/सेक्रेट्री, एस० एस० जैन सभा,

जालंधर शहर।

श्रद्धेय पं० रत्न श्री महेन्द्र मुनि जी म०

सादर सविधि चरण वन्दना

आप सब सुखशांति में होंगे। परम श्रद्धेय वयोवृद्ध प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० के दिवगंत होने के समाचार ने मन को अति खिन्न रखा वड़ों की छत्र-छाया में अपना जीवन महत्त्व रखता है। वड़ों के आश्रय में ही जीवन निश्चिन्त और सुखी रहता है जिसमें प्रवर्त्तक श्री जी की महानता, क्षमा सहनशीलता और छोटों के प्रति जो कृपा भाव रहा है वह एक वक्त दर्शन करने वाले प्रत्येक संत के नेत्रों से आंसू वरसाए विगैर न रहेगा।

पंजाब प्रान्त का भूषण याने महान हस्ती का विलय हुआ समाज को अति खेद है इस क्षति की पूर्ति निकट काल में होनी असंभव सी जान पड़ती है। समवेदना प्रकट करते हुए लघुमुनियों को सान्त्वना देने का सानुनय अनुग्रह करें।

सब सन्त मुनिराजों की पुनीत सेवा में यथायोग्य वन्दन पूर्वक सुखसाता। अनुग्रह बना रहे। आप श्री का भावी प्रोग्राम जानने की आकांक्षा के साथ—

रतन मुनि

सेवा में, वडौत

श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज, ६—३—६८

द्वारा/केसरदास जैन, बाजार बांसावाला,

जालन्धर शहर।

ला० केसरदास जी,

जयजिनेन्द्र !

यहाँ पर श्री श्री १००८ श्री सत्यावती जी म० ठाणे ८ से रविवार को ३-३-६८ को पधार गई हैं उन्होंने रास्ते में ही प्रवर्त्तक श्री जी के स्वर्गवास की खबर सुनकर वड़ा खेद हुआ लेकिन ऐसे समय पर कोई पार नहीं बसाती। आपके यहाँ पर इस समय श्री श्री १००८ श्री सुरेन्द्र मुनि जी म० और श्री श्री १००८ श्री महेन्द्र मुनि जी म० आदि ठाने से विराजमान होंगे। उनको आठों सती की

तरफ विधिपूर्वक वन्दना नमस्कार सुखसाता पूछ लें।

इन्द्री जी ने कहा है कि हमें म० श्री जी के स्वर्गवास से बहुत दुःख हुआ है और कहते हैं कि हमारा तो सिर पर से साया ही चला गया है। हमने तो आज यह सुना है कि गुरुजी जी का स्वर्गवास हुआ है हमें तो गुरुजी जी के स्वर्गवास के बाद उन्हीं का सहारा था और पं० श्री महेन्द्र मुनि जी से कहना कि आप हमारी तरफ का ख्याल रखें और निवर विचरें समाचार दें।

पता—लाला फकीर चन्द चेला राम जैन
चौधरान पट्टी मौहल्ला, बड़ौत (मेरठ)

श्री जौहरी लाल जी म० लुधियाना
द्वारा त्रिभुवन लाल जैन, ७-३-६८
मिठा बाजार, जालन्धर।

आदरणीय श्री जौहरीलाल जी म०

सादर यथायोग्य वन्दना सुखसाता।

नम्र निवेदन है कि हमारे सिर का छत्र शांति की मूर्ति जिन पर हमें फ़कर था वह हमें मंझधार में छोड़ कर हमेशा हमेशा के लिए बहुत दूर जहां जाकर कभी फिर नहीं लौटा जा सकता वहाँ चले गए हैं। हमारा रखवाला अब इस दुनिया में कोई नहीं है। मन संकल्प विकल्प में पड़ा रहता है फिर भी मन को धैर्य देकर चुप बैठे हैं। परन्तु शासन नायक से यह प्रार्थना है कि इनके परिवार में शांति रहे सब मिलकर कदम उठे और सब का साथ लेकर चलें। महाराज श्री जी के परिवार के संत जो उन के प्रतिरूप हैं इनका भी फर्ज है कि उनकी आत्मा को शांति देने के लिए सब मिलकर रहें और इनकी शोभा दिन दूनी रात चौगनी बढ़ती रहे। उनके चरण चिह्नों के अनुसरण करने से ही उनको सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है।

भवदीय—
मोहन मुनि

मंत्री जी, रूपचन्द जैन श्यामपुरा, रामकिशन लोक
श्री श्री एस. एस. जैन सभा, जिला सवाई माधोपुर (राजस्थान)
पु० कोतवाली बाजार, जालन्धर शहर। सी न० १५५/६८
दि. ९ मार्च १९६८।

श्रीमान मंत्री जी

सप्रेम जयजिनेन्द्र!

आज जैन प्रकाश द्वारा यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि प्रवर्त्तक पं० रत्न

श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० आकस्मिक काल धर्म को प्राप्त हो ग
हैं। यह हृदय विदारक समाचार सुनकर संघ में शोक छा गया और सभी ने तत्का
ध्यान रखकर प्रवर्त्तक श्री जी को श्रद्धांजली समर्पित की।

यहां विराजित पं० रत्न श्री रामनिवास जी म० सा० तथा महासतियां श
श्री प्रेम कुंवर जी म० सा० ने भी स्वर्गस्थ श्री जी को श्रद्धांजलि समर्पित क
तथा व्याख्यान में प्रवर्त्तक श्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रवर्त्तक श्री ज

हैं। यह पत्र उनके तक पहुंचाने का कष्ट करें। तत्र विराजित मुनि मंडल को उपप्रवर्त्तक श्री की ओर से पुनः २ सस्नेह सुख शांति संदेश अवगत करें। प्रवर्त्तक श्री के स्वर्गवास से हमें बहुत दुःख है किन्तु क्या करें? पत्रोत्तर आवश्य दीजिए।

—मनोहरलाल सोहनलाल पोखरना
राश्मी (कपासन)

बाबू मेहर चंद जी,
द्वारा/चिरन्जी लाल एण्ड सन्ज,
ठाकुर द्वारा नोहरिया, लुधियाना (पंजाब)

श्री वर्द्ध० स्था० जैन श्रावक संघ (रजि०)
लाल भवन चौड़ा रास्ता, जयपुर-३
दि० ८.३.१९६८

बाबू मेहर चंद जी, लुधियाना।

सादर जयजिनेन्द्र !

हमारे यहाँ पर श्री श्री १००८ स्वर्गीय बहुसूत्री पण्डित श्री नरपत राय जी महाराज के शिष्य श्री सत्येन्द्र मुनि जी म० श्री लखपतराय जी व श्री श्यामलाल जी महाराज ठाणा ३ सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। महाराज श्री ने फरमाया है कि जब हम जयपुर की तरफ आ रहे थे, जयपुर से ९ माईल के फासले पर एक भाई के द्वारा समाचार मिला कि प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज देवलोक पधार गए हैं। इस समाचार को सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ और विचार हुआ कि हमारे पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के सन्तों का क्या बनेगा? क्योंकि इनको सम्हालने वाला कोई भी बड़ा सन्त नहीं रहा। पण्डित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज तो हमारे लिए आधार स्तम्भ रूप थे और यह हमारा दुर्भाग्य ही रहा जो हम अन्तिम समय दर्शन भी न कर सके।

नोट—यह समाचार जहाँ पर सन्त विराज रहे हों वहाँ पर पहुंचाने की कृपा करें। महाराज श्री ने आपको बहुत २ धर्मध्यान फरमाया है।

—भवदीय

श्री सुमन मुनि जी
द्वारा/श्री दीनानाथ जोगिन्द्रपाल जैन,
जैन मार्किट, जालन्धर शहर।

बटोट (कश्मीर)
८ मार्च, १९६८

बन्धुवर सुमन मुनि जी,

कल कुद्द के रास्ते मर्मान्तिक समाचार मिला सहसा विश्वास नहीं हुआ, दो भाइयों ने जब विस्तार से बताया तो विश्वास करना पड़ा। समाचार सुनते ही

मन को बड़ी बेचैनी हुई ऐसा असह्य आघात एवं ऐसी निर्ममवेदना मन को कचोट कर खा गई कि हमारे सब के छत्र, पंजाब के सहारे, शरणागतवत्सल हमें असहाय छोड़ कर चले गए और इस प्रकार छोड़ गए कि फिर उनका न दर्शन एवं न सदेह साक्षात्कार हो सकेगा ? वे सदा के लिए हमें छोड़ गए।

सारी पुरानी स्मृतिएँ दिमाग में घूमने लग पड़ी हैं अब क्या होगा कौन मार्ग-दर्शन करेगा कौन सबको मिलाने की कड़ी बनेगा ? सचमुच हमारे बीच वे शान्ति के देवता एव सारे समाज के प्रकाश स्तम्भ थे। उनके बिना सारा समाज सूना हो गया है। मेरे मन को बड़ी चोट लगी है उनके चले जाने से। सुमन मुनि, मैं आपके पास नहीं हूँ। बहुत दूर हूँ कश्मीर के आधे मार्ग को पार कर गया हूँ अब बीच में से वापिस लौटने से कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि तुम्हारे तक जल्दी पहुंच नहीं सकता हूँ किन्तु मैं पूरी तरह तुम्हारे साथ हूँ। गुरु भाई, मित्र, साथी सब संबंध मुझे स्वीकार हैं मैं तुम्हारे मानसिक पीड़ाओं में सांझीदार हूँ सारे परिवार के शोक में। सारे परिवार पर आई जुमेदारियों में बराबर तुम्हारे साथ हूँ।

महाराज श्री जी के असमय चले जाने का दुःख तो सारे समाज को है किन्तु हमें व्यक्तिगत है फिर भी मृत्यु की वास्तविकता को तो हम किसी भी तरह झुठला नहीं सकते अतः भावी जुमेदारियों से पीछे हट नहीं सकते और फिर महाराज ने जिस रास्ते पर हमें खड़ा किया है जिस उद्देश्य पर जीवन अर्पण करने के लिए प्रेरित किया है उससे पीछे हम नहीं हटेंगे। प्रवर्त्तक श्री जी के बताये रास्ते पर चलना हमारा धर्म है। आप शांति के साथ भावी व्यवस्थाओं तथा पंजाब के संघ संचालन के सम्बन्ध में भी सोच लें जिससे अपना समूचा मुनि मंडल एक सूत्र में बंधा रहे। प्रवर्त्तक श्री जी महाराज के प्रति निष्ठा प्रदर्शन एवं श्रद्धांजली व्यक्त करने का इससे अच्छा रास्ता और कोई हो भी नहीं सकता। सारे परिवार को जोड़े रखना, समाज के दायित्व को निभाना, भावी अपेक्षाओं का पूरा करना तुम्हारा सब से बड़ा कर्त्तव्य है मैं तुम्हारे साथ हूँ जो सेवा मेरे योग्य बताओगे मैं उससे पीछे नहीं हटूँगा।

सभी सन्तों को यथायोग्य वन्दना नमस्कार सुखसाता। जालन्धर संघ को धर्मध्यान।

तुम्हारा अपना ही
मुनि सुशील कुमार
मुनि सौभाग

सेवा में
श्री सुमन मुनि जी
द्वारा/श्रीमान सुश्रावक केसर दास जी
बासाँवाला बाज़ार, जालन्धर।

हिन्द स्टोर, मेन बाज़ार, ऑटाकामंड
नीलगिरी (मैसूर)
११-३-६८।

श्रीमान् सुश्रावक श्री केसरदास जी

सादर जयजिनेन्द्र !

आपके यहाँ पर श्रमण संघीय पं० रत्न प्रान्तीय प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० का स्वर्गवास का समाचार जैन प्रकाश मार्च १ ता० के अंक में पढ़ा। यहां विराजित मुनि म० श्री पूज्य श्री ब्रह्मऋषि जी म० सा० पं० वक्ता श्री भानु ऋषि जी म० सा० पढ़ कर के बहुत की खेदीत हुए। पंजाब श्रमण संघ के महान स्तम्भ, गंभीर, धोर, महान आत्मा इस पौद्गलिक शरीर से विमुक्त हो कर स्वर्गगमन किया। उनकी यश: कीर्ति शांतमुद्रा गंभीरता वो भी हमारे स्मरण पटल पर अंकित है। उनका शिष्य समुदाय तपस्वी सुदर्शन मुनि जी आदि महेन्द्र मुनि, राजेन्द्र मुनि आदि उनके आदर्श में जीवन को अपनायेंगे और अपने जीवन को भी उन्हीं के अनुकरण में लगावेंगे। महाराज श्री जी की यही कामना है कि उनके नाम को यश कीर्ति, नम्रता, धैर्यता संयम यात्रा में निर्विघन रूप से चलावें बस हमारा यही आपसे आश्वासन है।

—भवदीय

ॐ

सेवा में
पं० श्री महेन्द्र मुनि जी महाराज
द्वारा/श्री केसर दास जैन,
बाजार बांसावाला, जालन्धर शहर।

शाहकोट
१३-३-६८

श्रीमान् जी जयजिनेन्द्र !

हमारे यहाँ पर तपस्वी श्री श्री १००८ श्री मनोहर लाल जी म० श्री मंगल राम जी म० तपस्वी प्रीतम मुनि जी ठाणे ३ सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं। आपके यहाँ पर पं० श्री श्री १००८ श्री महेन्द्र मुनि जी म० श्री जौहरी लाल जी म० श्री हरिश्चन्द्र जी म० पं० श्री सुमन मुनि जी म० ठाणा आठ सुखसाता पूर्वक विराजमान होंगे उनके चरण कमलों में यथायोग्य ठाणे ३ की तरफ से वन्दना

नमस्कार सुखसाता अर्ज करदें। और महाराज श्री जी के देहान्त का बहुत भारी दुःख हुआ है। हमारे अशुभ कर्मों का ही फल है जो जुदाई हो गई है। ला० केसरदास जैन को उनके सब परिवार को धर्म ध्यान फरमाते हैं।

—भवदीय
अमरनाथ जैन

श्री वीतरागाय नमः।

पं० मुनि श्री सुमन मुनि जी की सेवा में
द्वारा/एस. एस. जैन सभा सेक्रेट्री,
जालन्धर शहर।

स्नेहलता गंज, इन्दौर
ता० १६-३-६८

धर्म प्रेमी सेवाभावी सेक्रेट्री महोदय श्री!

प्रेम कुंवर का जयजिनेन्द्र।

विशेष—यहां पर विराजित परमोपकारिणी श्री रंभा कुंवर जी म० विदुषि म० श्री सुमति कुंवर जी म० आदि ठाणा ८ सुखशांति में विराजमान हैं।

आपके वहां विराजित मधुर व्याख्यानी श्री सुमन मुनि आदि संत सती मंडल की सेवा में सभी सती वृन्द ने यथायोग्य वन्दना सुखसाता पूछवाई है।

विशेष-पंडित शांत स्वभावी श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० का स्वास्थ्य कई दिनों से अस्वस्थ था और अचानक इन्दौर तार आया कि महाराज शांत हो गए यहां से संवेदना का तार दिया गया और पं० ज्योतिष विशारद वयोवृद्ध श्री कस्तूरचन्द जी म० सा० के सानिध्य में शोक सभा बिठाई गई। श्रमण संघ के एक २ सितारे अस्त हो रहे हैं ये समाज का दुर्दैव ही है नए संत विशेष होते नहीं और अनुभवी संत विदाई ले रहे हैं।

पं० शुक्लचन्द्र जी म० जिन का सर्व प्रथम परिचय पंजाब केसरी श्री काशीराम जी म० के साथ अहमदनगर चतुर्मास करने मुम्बई पधार रहे थे बीच में पनवेल क्षेत्र आता है वहां दर्शन सेवा व्याख्यान का लाभ मिला। उस समय भी अपने गुरु जी के साथ विनयी शांत स्वभाव के कारण योग्य शिष्यत्व का पार्ट अदा किया था। बाद में सादड़ी-सोजत-भीनासर-अजमेर-जयपुर कई जगह सेवा करने का चान्स मिला। संत के गुण जो हैं वे सब महाराज श्री में विद्यमान थे।

जालन्धर श्री संघ का अहो भाग्य है कि पहले वयोवृद्धा पं० महासति जी श्री पार्वती जी म० के सेवा का चान्स मिला और अभी महाराज श्री का। जैसे

पूज्या महासति जी की स्मृति में हाई स्कूल चल रहा है उसी तरह पंजाब (जालन्धर) श्री संघ पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० के स्मृति में जैन कालेज, बोर्डिंग जहाँ सारे पंजाब में जैन मास्टर अथवा देवकी देवी जैसी बहिनें उत्पन्न हों और पंजाब भर में महाराज की स्मृति में रचनात्मक कार्य चलता रहे। इन दिनों पं० शुक्लचन्द्र जी म० अस्वस्थ थे। एक दृष्टि से अच्छा हुआ आचार्य श्री के दर्शनों का लाभ मिला बातचीत भी हुई। पं० शुक्लचन्द्र जी म० का जो भी साहित्य उसका प्रकाशन अब तक कितनी पुस्तकें छपी हैं उसकी याद जैन प्रकाश में कभी कभी दी जाये इधर उधर का प्रकाशन चल रहा है किसी को मालूम नहीं होता

गुरुदेव ने कहा "हमारी पंक्ति का एक देवता चला गया"।

मैं सोचता हूँ जब कि हम लोग मामूली परिचय में ही इतने दुःखित हो रहे हैं तो आपको कैसा लग रहा होगा। निश्चय ही आप उनकी अनुपस्थिति में अत्यधिक शोकग्रस्त होंगे। किन्तु कर्म सिद्धाँत की अटल रेखाओं को और उनके प्रभाव को अपरिहार्य समझकर आप जैसे विज्ञ अवश्य धैर्य धारण कर रहे होंगे। बुद्धिमानों के लिए यही मार्ग है।

—मुनि सौभाग्य

देहली
१४-५-६८

श्रद्धेय मुनि जी,

चरण वन्दन।

संवेदना पत्र सही पता ज्ञात न होने से नहीं दिला सके। विचार तो कई दफा आया मगर विवशतया न लिख सके। पूज्य गुरुदेव के स्वर्गवास से जो समाज को क्षति हुई है उस रिक्त स्थान की पूर्ति होना असाध्य ही है। उन महामहिम गुरुदेव के बताए हुए मार्ग पर चलना और आदेशों का पालन करना हम सबका पूर्ण कर्त्तव्य है। काल कराल की विचित्रता के आगे हम सब असमर्थ हैं। जिसका आधार संसार से उठ जाए, और वह सदा के लिए आँखों से ओझल हो जाय, क्या उसको दुःख न होगा? आज हमारा निराधार जीवन हो गया मगर क्या करें? अब तो बस यही कामना है कि उस स्वर्गीय आत्मा को पूर्ण शान्ति हो। यही हमारी स्वर्गीय गुरुदेव के चरण युगलों में सच्ची श्रद्धाँजली है।

भवदीय—प्रेम

मंत्री, एस० एस० जैन सभा,
जालंधर।

धवा (राज०)
चैत्र शुक्ला २, २०२५ वि०

सादर जयवीर!

हमारे यहां आज पूज्य गुरुदेव मरुधर केसरी पं० रत्न मुनि श्री मिश्रीमल जी म० सा० के आज्ञानुवर्ती पं कविवर मुनि श्री रूपचंद जी म० सा० 'रजत' श्री महेन्द्र मुनि जी म० गणा २ से जोधपुर से पधारे हैं, गुरुदेव जोधपुर विराजे हैं।

मुनि श्री ने आपके वहां पं० प्रवर श्री महेन्द्र मुनि जी म० मधुर वक्ता सहृदय श्री सुमन मुनि जी म० आदि ठाणा की सेवा में बहुत २ सुखसाता यथायोग्य वन्दन कहा है। और पंजाब के प्रसिद्ध धर्मोद्धारक, शान्त दान्त प्रवर्त्तक

श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० का स्वर्गवास हो जाने से समाज में व श्रमण संघ में क्षति हुई है, पर काल कराल को कौन रोक सकता है। मुनि श्री ने आपके वियोग में दो शब्द पद्यमय लिखे हैं वह इस पत्र के साथ है कृपया पहुंच दिरावें।

—चरण सेवक

जालन्धर छावनी
४-३-६८

धर्मप्रेमी ला० केसरदास जी जैन,

सादर जयजिनेन्द्रदेव ।

यहां पर श्री श्री श्री १००८ श्री स्वामी टेकचन्द जी म० जुमला ठाणे सुखसाता से विराजमान हैं, उनकी तरफ से आप के यहां विराजित श्री जौहरी मुनि जी म० जुमला ठाणे ७ को यथायोग्य वन्दना सुखसाता मालूम करें और महाराज साहब आपके और आपके सब परिवार तथा जैन बिरादरी जालन्धर शहर को बहुत २ धर्म ध्यान के लिए फरमाया है और यह भी फरमाया है कि श्री श्री श्री १००८ प्रवर्तक राज पंडित रत्न श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी म० के स्वर्गवास की खबर सुन कर बड़ा ही दुःख हुआ। मगर इस काल बलि के आगे बड़े २ महापुरुषों की भी कोई पेश नहीं चलती तो फिर हम तो किस बाग की मूली हैं। इस कालबलि के आगे सबर सन्तोष करने के बगैर कोई भी चारा नहीं चलता। इसलिए हार्दिक खेद प्रकट करते हुए समस्त मुनिमंडल से मेरा यही अनुरोध है कि इस समय अपने दिल को मजबूत बनाकर धैर्य से ही काम लेवें, क्योंकि मैंने सुना है कि बड़े महाराज साहब की जुदाई से श्री सुमन मुनि तो दो घंटे तक बेहोश हो गए और बाकी मुनि भी बड़ा ही दुःख महसूस कर रहे हैं, सो ठीक है ऐसे महापुरुषों का अपने से वियोग हो जाना बड़े ही दुःख की बात है, ऐसा कौन पुरुष होगा जिसको इन महापुरुषों के स्वर्गवास का दुःख न हुआ हो, मगर आखिर सब को सन्तोष ही करना पड़ता है।

हमें तो जब शुक्रवार को सुबह ही ला० अमरनाथ जी ने दुःख से भरी हुई सूचना दी तो दुःख का कोई ठिकाना नहीं रहा। क्योंकि इन महापुरुषों की छत्रछाया में आकर हम अपने बजुर्गों के वियोग का दुःख दिलों से भुला बैठे थे। मगर अब इनके वियोग के साथ पिछले बजुर्गों के वियोग का दुःख फिर से खड़ा हो गया। आज इस पत्र के लिखने २ मेरा दिल फूट २ कर रोने लग गया है। अपनी श्रद्धांजलि स्वर्गीय आत्मा को पेश कर रहे हैं। उस रोज चार [illegible]

ध्यान करके भगवान से यही प्रार्थना की थी कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति मिले।

सेक्रेट्री

एस० एस० जैन सभा, जालन्धर छावनी।

श्रीमान् जी, जंडियाला।

जय जिनेन्द्र ! १६-३-६८

यहाँ पर श्री श्री १००८ स्वर्गीय श्री मोहन देवी जी म० की सुशिष्या श्री श्री राजेश्वरी जी म० जुगला ठाणा ३ सुखसाता से विराजमान हैं। आपके यहाँ विराजमान श्री जौहरी मुनि जी श्री सुरेन्द्र मुनि जी श्री महेन्द्र मुनि जी आदि ठाणे के चरण कमलों में सब साध्वियों की तरफ से यथा विधि वन्दन-साता और चतुर्मास सम्बन्धी विगत मिलावना अर्ज कर देवें।

प्रवर्तक श्री जी का सुनकर बहुत ख्याल हुआ। समाज के स्तम्भ थे और तमाम को सहारा था। काल के आगे किसी की पेश चली नहीं। हमें भी प्रवर्तक श्री जी के मौके पर दर्शन हो गए और पास रहने का अवसर प्राप्त हुआ। आपके यहां विराजित महा भाग्यवान गुण सम्पन्न श्री विनय चंद्र जी तथा अन्य साध्वियों को यथा विधि वन्दना सुखसाता अर्ज कर देवें। और तमाम बिरादरी के लिए धर्म ध्यान फरमाया गया है।

—सैक्रेटरी, जैन सभा।

बद्रीलाल जैन, १०७ जवाहर मार्ग,

हाईकोर्ट एडवोकेट खाचरोद (म०प्र०)

परम आदरणीय, श्री सुमन मुनि महाराज साहब, ११.५.६८

द्वारा/श्री केसरदास जी जैन, बाजार बासां वाला,

जालन्धर शहर।

सादर सविधि वन्दना।

आपका पत्र मिला। परम श्रद्धेय, स्थविर पदविभूषित, श्रमण संघ के प्रवर्त्तक, सरल स्वभावी पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० को समाज की जानकारी रखने वाले भली प्रकार से जानते हैं। वे पंजाब प्रान्त में तो बहुत प्रिय थे किन्तु अन्य प्रान्त के लोग भी उन में विशेष गुणों से आकृष्ट हो जाते थे और उनको अपना ही समझने लगते थे।

जैसे ही समाचार पत्र द्वारा प्रवर्त्तक श्री जी के स्वर्गवास के समाचार मिले, यहाँ संघ में उदासी छा गई। एक शोक सभा द्वारा श्रद्धाँजलि अर्पित की गई।

आपका विनम्र

बद्रीलाल जैन

कलावती

प्रभाकर, साहित्यरत्न

द्वारा—क्वालिटी आप्टीकल इण्डस्ट्रीज,

जैन बाज़ार, जम्मू ७-३-६८

श्रद्धेय सुमन मुनि जी,

सविधि अभिवादन।

आश्वासन था मन को, जब गुरुदेव के स्वास्थ्य सुधार की कुछ आशा हुई थी वही दर्शन उनके अन्तिम दर्शन थे। अनायास ही उनके निधन का समाचार सुन कर मन को बड़ा आघात पहुँचा।

सभी महापुरुष विश्व की विभूति हुआ करते हैं, उनके अभाव की क्षति-पूर्ति होना असंभव है। स्व० पूज्य गुरुदेव जैन समाज के पहुँचे हुए सन्त थे। आपकी धीरता, गंभीरता, सरलता, सहिष्णुता एवं एकता की भावना प्रशंसनीय थी, और था अद्वितीय शास्त्रीय ज्ञान। पंजाब के प्रवर्त्तक पद को समीचीन रूप से संभाल कर रहे थे। आप! आज जो 'अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग' वाली उक्ति साधु समाज में चरितार्थ हो रही है उससे आपका मन क्षुब्ध रहता था। आप चाहते थे पंजाब में विराजित मुनिवरों की एक सामूहिक बैठक हो। परन्तु आप श्री की उपस्थिति में ऐसा नहीं हो सका। अभी आपकी महती आवश्यकता थी समाज को। परन्तु......

मुनि जी! ठीक है, गुरु का पार्थिव शरीर अब हम में नहीं रहा, परन्तु अपनी असाधारण प्रतिभा एवं गुणों के कारण परोक्ष-रूप में वे सदा-सर्वदा हमारे हृदय-सम्राट् बने रहेंगे। हम उनके बताए आदेशों का आचरण करें, जैसी उनकी आस्था थी संयम के प्रति वैसा ही हमारा विश्वास हो। जो कार्य वे अधूरा छोड़ गए हैं—उसे पूरा करें। यही होगा हमारा उनके प्रति सच्चा एवं निस्वार्थ स्नेह!

आप अपने मन में धैर्य रखें। पूज्य गुरुदेव ने अपने मानव जीवन का पूरा २ लाभ उठाया। उनके सुयोग्य शिष्य हैं आप—सामाजिक वातावरण में क्रान्ति लाएं। गुरुदेव के पद चिह्नों का अनुसरण करें।

स्वर्गस्थ गुरुदेव की आत्मा को शान्ति लाभ हो।

—आन्तरिक संवेदना सहित बहन कला

शक्तिनगर, दिल्ली-७
दिनांक २ फरवरी, १९६८

परमादरणीय मुनि श्री सुमन जी,

तार दूर्भाग्य से मुझे समय से न मिल सका। महाराज जी के अमरत्व प्राप्ति से मुझ जैसे तुच्छ सांसारिक व्यक्ति पर तो कष्टों का पहाड़ सा टूट पड़ा है। जब से मुझे महाराज श्री जी के परम पावन चरणों में स्थान मिला था मुझ में आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया था। मैंने अध्ययन और स्वाध्याय का लाभ प्राप्त किया। मेरी मानसिक स्थिति ऐसी बनी थी कि मैं हर परिस्थिति में अचल रहने की सिद्धि उनकी कृपा से प्राप्त कर चुका था किन्तु स्वयं इस घटना ने मुझे विचलित कर दिया।

जहां मुझ जैसे पामर को निःसहाय होना पड़ा वहां आप पर कर्त्तव्य निस्सीम रूप से बढ़ गया है। पूज्य श्री जी के इतने बड़े परिवार को व्यवस्थित रूप में देखना यह उनके प्रति महान् सेवा होगी। मेरी भाग्यहीनता तो इससे अधिक क्या होगी कि मैं अन्तिम दर्शन भी न कर सका।

यह अधिक लिखने का समय नहीं है। आपसे मैं यह चाहूँगा कि अपनी कृपा का वरदहस्त आप मुझ दीन पर उसी रूप में रखेंगे जैसे पूज्य जी की अनुकम्पा रही है।

कृपा कांक्षी
मूलचन्द्र शास्त्री

वन्दे वीरम्

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल
पंचकूला (अम्बाला)
१-३-६८

परममहनीय श्री सुमन मुनि जी महाराज,

तत्र विराजित समस्त मुनि वृन्द के चरणारविन्द में सविधि वन्दना व सुखसाता पृच्छा के समनन्तर निवेदन है कि—

आज अचानक ही यह जानकर (तार से) हृदय को गहरी चोट लगी कि स्थविरपद विभूषित, शान्ति मूर्ति, परम श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का स्वर्गमन हो गया! तीन-चार दिन हुए जालन्धर के 'वीर प्रताप' में देखा था कि उनका स्वास्थ्य संभल रहा है।

आप महानुभावों के साथ मैं किन शब्दों में समवेदना प्रकट करूँ! अब तो

कनिष्ठ होते हुए भी आप पर विशेष रूपेण दायित्व आ पड़ा है। परम पवित्र दिवंगत आत्मा का परम कल्याण हो—यही हार्दिक भावना है।

आशा है आप अपना संदेश प्रेषित करते रहेंगे। दर्शनाभिलाषी—
कृष्णचन्द्राचार्य

अन्य भी सन्त महानुभावों एवं श्रद्धालुजनों के पत्र आए हैं स्थानाभाव से उन सबका प्रकाशन अशक्य है एतदर्थ क्षमार्थी हूँ। —सम्पादक

CONDOLENCE TELEGRAMS

Very much grieved on hearing sad demise of Maharaj Shri Pandit Ratna Shri Shukalchand Ji may his soul rest in peace.
—Maharaj Shri Rajendramuni, Bombay.

Heartly grieved on sad demise of Pravartak Shukalchand Jee Maharaj. —Muni Sushil Kumar, Batote.

Sadri Sangh pays respectful homage departed Shukalchand Ji Maharaj. —Sadri Sthanakwasi Sangh, Sadri.

Our sincere condolences on Shri Shukalchand Ji Maharaj demise pay their soul tranquility. —Thakardas Vasdev, Bombay.

Jain Sabha shocked to know about sad demise of Pandit Rattan Shri Shukalchand Ji Maharaj and sends heartfelt condolences prays Bhagwan grant peace to departed soul. One shawl and Rupees fifty one for chandan sent. —Secretary, Jammu Tawi.

Very sorry sent fity one Money order. - Jain Sabha, Raman.

Jain Sabha Kharar overwhelmed with grief at untimely separation of Swami Shukalchand Maharaj may their soul rest in peace. -- Jain Baradari, Kharar.

Much grieved passing away Pt. Shukalchand Ji Maharaj this is irreparable loss to samaj. —Hiralal, Phillaur

Deeply grieved Money order follows for doshalla.
—Secy. Budhlada.

Shocked to hear sad demise of Swami Shukalchand Ji Maharaj kindly accept our heartfelt condolences.
—Sampatsingh, Sureshchand, Jodhpur.

श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के निधन पर श्री कसतूरचन्द जी महाराज शोक मग्न हैं।
—भंवरलाल जी धाकड़, इन्दौर नगर।

Deeply shocked Nemchand Ji Maharaj Vallabhwati Ji Maharaj and all pariwar. —Sunderdass Rajkumar Jain, Jaipur.

Shocked pray peace departed soul Shree Shukalchand Jee Maharaj offer doshala Rs. 51. —Mukandilal Jain Secy. Patiala.

Extremely sorry may pious his soul rest in highest heaven condolences Pujya Maharaj Saheb and Mahasati Ji and Sangh.
—Mota Sangh, Rajkot.

Accept heartfelt condolences Devlok Pravartak Shri Shukal Chand Ji Maharaj. —Secy. S.S. Jain Sabha, Adarshnagar, Jaipur.

Extremely grieved may God give departed Suklamuni's soul eternal peace. Vandana Muni Mandal. —Lalwani Samayek Sangh, Convenor All India, Jaipur.

Pandit Muni Kasturchand Ji and Mahasati Sumatikunwar Ji and Shreesangh convey condolence on Devlok of Pravartak Shukal Chand Ji Maharaj. —Indore Shree Sangh, Indore.

Shocked to learn sad demise of Pandit Shukal Chand Ji Maharaj. —Apee Jain Secy. Atmanand Jain Sabha, Chandigarh.

Parvartak Shukalchand Ji Maharaj Sahib demise known realiably Jain Prakash Today, Jodhpur Sangh felt irrepairable loss on account of this demise prayed for internal peace.
—Madholal, Jodhpur.

Parvartak Shri Sukalchand Ji Maharaj Swargbas Marudharkesri Maharaj and Jain Sangh sorry. —Mantri Parasmal, Sojat.

Shri Shukalchand Ji Maharaj's sad demise is irrepairable loss to community. —Punjab Jain Sabha, Bombay.

Deepest condolence spiritual vaccum caused by sad demise of Parvartak Shri Shukal Chand Ji Maharaj.

—Jain Sabha, Faridkot.

Jain Swetember Murti Pujak Sangh expresses great sorrows sad passing away Shri Shukalchand Ji Maharaj loss irrepairable Pray Sasan peace. —Rikhabdass, Secy. Ambala.

Shocked to learn sad demise of Pandit Shukalchand Ji Maharaj. —Secy. Jain Sabha, Ambala City.

Kavi Ji express deep sorrow on sudden death of Pandit Shukalchandra Ji Maharaj. —Prabhudayal Secy. Agra Jain Sangh.

गुरुमहाराज के स्वर्गवास हो जाने का हमारे परिवार को हार्दिक दुःख है।

—गेंदामल हेमराज, नई दिल्ली।

गुरुदेव के देवलोक हो जाने का मुझे अति शोक है।

—बाबू भाई, माटूंगा।

प्रवर्त्तक पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० के देवलोक से नारनौल श्री संघ शोक मग्न है। —नानकचन्द गांधी, नारनौल।

श्री पं० जी म० के स्वर्गवास होने का बहुत दुःख है।

—धनेशकुमार जैन, खदरी।



शान्ति-प्रस्ताव



पंजाब

हरियाणा

उत्तर प्रदेश

राजस्थान

महाराष्ट्र

मध्य प्रदेश

सौराष्ट्र

आदि

संघ

सभा

बिरादरी

की

ओर से

एस०एस० जैन सभा (रजि०)
कोतवाली बाज़ार, जालंधर।
३-३-१९६८

शांति प्रस्ताव

आजकी यह विशेष शांति सभा जो श्री पार्वती जैन हाई स्कूल विजय नगर में हुई, दिवंगत परम श्रद्धेय प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री श्री १००८ श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी महाराज के प्रति श्रद्धांजलि प्रगट करने के लिए बुलाई गई है। श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी एक विद्वान और संयमी आत्मा थे, जिनके देहावसान से समस्त समाज को एक महान और कभी न पूरी होने वाली क्षति का सामना हुआ है।

आप श्री जी ने अपनी लेखन शक्ति द्वारा समाज को साहित्य का बहु-मूल्य भण्डार अर्पित किया है। जैन रामायण तथा महाभारत आदि उसके ज्वलंत उदाहरण हैं। आप श्री जी का समस्त जीवन तप-त्याग, सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह से परिपूर्ण था। आपके चेहरे से शान्ति और दया का नूर टपकता था, वाणी से अमृतमय अविरल धारा बहती थी। ऐसी परम पवित्र महान आत्मा की क्षति केवल समाज को ही नहीं, अपितु समस्त राष्ट्र की क्षति है, इन्हीं शब्दों से यह विशेष सभा प्रवर्त्तक श्री जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रगट करती हुई, शासन देव से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो, तथा समस्त समाज प्रवर्त्तक श्री जी के सद्‌गुणों के उज्जवल प्रकाश में अपने सन्मार्ग को प्राप्त करें।

ओं: शान्ति, शान्ति, शान्ति ओं: !! —परतूल चन्द जैन, मन्त्री।

शांति सभा

आज तिथि ३-३-६८, रविवार दिन के साढ़े ग्यारह बजे एस. एस. जैन सभा, जालन्धर की ओर से परम श्रद्धेय, प्रवर्त्तक श्री श्री १००८ श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी महाराज के देवलोक होने पर एक विशेष शांति सभा श्री पार्वती जैन हाई स्कूल विजय नगर में सभा के प्रधान श्री राजकुमार जी की प्रधानता में हुई, जिसमें मैम्बरान के अतिरिक्त शहर और बाहर के भाई-बहनों की भी काफी उपस्थिति थी। शहर में विराजित मुनिराज, और सती जी महाराज भी वहाँ पधारे। डाक्टर सी. एल. आनन्द जिन्होंने महाराज श्री जी का इलाज बड़ी श्रद्धा

और निष्काम भावना से किया, को खास निमन्त्रण पर बुलाया गया था। पंडाल में लाउड-स्पीकर का प्रवन्ध किया गया था। ला० वलायती राम जी ने आज की शांति सभा का परिचय देते हुए स्टेज-सैक्रेट्री के कर्त्तव्य को निभाया।

सब से पहले मन्त्री श्री जैन नवयुवक मण्डल और मन्त्री श्री जैन पार्वती हाई स्कूल ने अपनी श्रद्धांजलि स्वर्गीय आत्मा के चरणों में रखी। ला० केसरदास जी ने भी कविता के रूप में अपनी श्रद्धांजलि पेश की। इसके बाद एस. एस. जैन सभा की ओर से सभा के मन्त्री परतूल चन्द जी ने एक शांति प्रस्ताव पेश करते हुए अपनी श्रद्धांजलि स्वर्गीय गुरुचरणों में रखी जिसके पश्चात् उपस्थित जन-समूह ने मौन रह कर नौ वार महामंत्र नवकार का उच्चारण कर अपनी २ श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-प्रस्ताव का समर्थन किया।

इसके पश्चात् नि.व. श्री सुमन मुनि जी महाराज और अन्य दूसरे मुनियों ने, तथा साध्वी श्री प्रवेश कुमारी जी महाराज ने भी अपने २ श्रद्धा के फूल गुरु चरणों में रखे। अन्त में सभा के प्रधान श्री राज कुमार जी ने डाक्टर सी. एल. आनन्द की सेवाओं की सराहना करते हुए, उनका धन्यवाद किया और उपस्थित भाई वहनों का धन्यवा करते हुए सभा समाप्त की।

मन्त्री, एस. एस. जैन सभा जालन्धर।

श्री जैन नवयुवक मण्डल,
कोतवाली वाजार, जालन्धर शहर।
दिनांक २९-२-६८

शांति प्रस्ताव

श्री जैन नवयुवक मण्डल की यह वैठक पंजाव प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री श्री १००८ श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी महाराज के देव लोक हो जाने पर अश्रुपूर्ण नयनों से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा शासनदेव से प्रार्थना करती है कि इस अपार शोक को हमें सहने की शक्ति प्राप्त हो और शांति प्रदान हो।

विमल कुमार जैन, मन्त्री। पवन कुमार जैन, प्रधान।

शांति प्रस्ताव

"जैन मुनि प्रवर्त्तक पंडित रत्न स्वामी श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज जिनका २९ फरवरी १९६८ की सायं को जालन्धर में स्वर्गवास हो गया था, वह न केवल जैन समाज के सन्त थे वल्कि समस्त मानव जाति के लिए एक

महान आदर्श तथा प्रकाश पुंज के समान थे। उनका समस्त जीवन तप, त्याग, वैराग्य और करुणा से भरपूर था। उन्होंने जैन साधु के कठिन महामार्ग पर चलकर इस भीषण कलयुग में भी भीष्म पितामह का उदाहरण स्थापित करते हुए आजीवन व्रत को निभाया। ऐसे महापुरुष कभी कभी ही आते हैं और जब आते हैं तो मानव कल्याण करने में अपना सर्वस्व अर्पण कर देते हैं। ऐसे महापुरुष का निधन सचमुच ही मानवजाति की अपार क्षति है। जालन्धर की भूमि उनके शरीर को अपने साथ मिलाकर धन्य हो गई है। जालन्धर नगरपालिका की आज दिनांक १-४-६८ की बैठक मे हम उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।" —नगरपालिका, जालन्धर

साडे नगरपाल जैन मुनि प्रवर्त्तक पं० रत्न स्वामी श्री शुक्लचन्द्र जी म० दी आत्मा दी शाँति अते उन्हां नूँ श्रद्धांजलि भेटा करन दे लई दो मिण्टा वासते मौन खड़े होए। इसदा एह उतारा सिकत्तर एस०एस० जैन सभा ते प्रेस नूँ सूचना दे वास्ते भेज्या जावे। —प्रधान, १-४-६८

केसरी भवन, रेलवे रोड,
भिवानी (हिसार)

श्रीमान् मान्य श्री मंत्री स्थानकवासी जैन सभा,
जालन्धर शहर।

दुःख के साथ निवेदन है कि श्री श्री १००८ परम प्रतापी, क्षमा के सागर सरलता के प्रतीक प्रवर्त्तक मुनि श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज सा० के स्वर्गवास के समाचार जानकर खासकर मुझ को और यहाँ के जैन श्रावकों को हार्दिक आघात पहुँचा। महाराज जी के देहावसान से समाज और श्री संघ को एक बहुत बड़ा हानि हुई है हमारी सभी की श्री शासन देव से नम्र प्रार्थना है कि स्वर्गीय प्रवर्त्तक श्री महाराज साहब की महान आत्मा को चिरकाल शाँति प्राप्त हो तथा उन के सभी शिष्य परिवार का वियोग दुःख के सहन करने की शक्ति दे, यही वीर प्रभु से प्रार्थना है और यही हमारी श्रद्धाँजलि है। आगे श्री १००८ मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी तथा श्री पंडितराज व्याख्यानी मुनि महाराज श्री सुमन जी महाराज के चरणों मे वन्दना नमस्कार अरज कर सुखसाता पूछें।

आपके शुभचिंतक
गुरुप्रसाद जैन रंगीलाल जैन

पंचकूला—प्रवर्त्तक मुनि श्री १००८ पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के २९ फरवरी १९६८ को जालधर शहर में देवलोक होने के दुःखदायी समाचार को सुनकर श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला में शोक व्याप्त हो गया। छात्रों तथा अध्यापक संघ ने दो मिनट का मौन रखा तथा दिवगंत महान आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

परमश्रद्धेय शुक्लचन्द्र जी महाराज शान्ति, क्षमा की मूर्ति तथा जैन आगमों के प्रकांड विद्वान् थे। आपका हर उपदेश आपके आचरण में ढल चुका था। जैन समाज आपको खोकर अपने को अनाथ पा रहा है।

—श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूका।

नसीराबाद—श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नसीराबाद शोक प्रस्ताव पास करता है, परम श्रद्धेय प्रसिद्ध वक्ता श्री सोहनलाल जी महाराज साहब के नेतृत्व में ता० ६-३-६८ को कि पं० मुनिवर श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के देहावसान पर शासनदेव से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—ताराचन्द मुणोत, मंत्री

मन्दसौर—जैन प्रकाश के अंक में श्रमणसंघ के प्रवर्त्तक पं० मुनि श्री शुक्लचन्द्र जी म० के समाचार पढ़ कर संघ को अपार दुःख हुआ। एक महीने पूर्व प्रवर्तक पं० मुनि श्री पन्नालाल जी का स्वर्गवास हो गया था उस अपार क्षति के दुःख को भुलाया ही नहीं गया था कि फिर समाज पर यह दूसरा वज्रपात हो गया। विराजित पं० मुनि मूलचन्द जी म० ठा० २ एवं महासतीजी श्री हीरकंवरजी म० ठा० १२ के सान्निध्य में शोक सभा की गई। व्याख्यान बन्द रक्खा गया। पं० मुनि श्री मूलचन्दजी म० ने प्रवर्त्तक जी म० के जीवन पर अपने विचार रखते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात् श्री चान्दमल जी मारू ने प्रवर्त्तक श्री के अनेक संस्मरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि पंजाब प्रान्त में आप श्री का बड़ा प्रभुत्व था, अजमेर अधिकारी सम्मेलन के समय २५ दिन में चार सौ मील का लम्बा विहारकर संगठन को मजबूत बनाने के लिए पधारे—यही एक ताजा संस्मरण था जो प्रवर्त्तक श्री की श्रमण संघ के प्रति अटूट श्रद्धा का परिचायक था। अन्त में शोक प्रस्ताव स्वीकृत करते हुए चार लोगस्स का ध्यान किया गया और शासनदेव से प्रार्थना की गई कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति एवं शिष्य परिवार को धैर्य प्रदान करे। पं० तिलोकचन्द जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

—प्रतापसिंह मारू

टेलीफोन के द्वारा श्री शुक्लचन्द्र जी के परलोक होने की सूचना मिली और दोपहर को तार द्वारा, यहाँ जितने श्रावक भाई थे उनको चार लोगस्स का काउसग्ग श्री सुमित्त मुनि जी ने कराया और श्री मुनि पुष्फभिक्खू जी ने स्वयं किया, और व्याख्यान बन्द रहा। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि इस महीने में जो प्रवर्त्तक जी का स्थानकवासी समाज से वियोग हो गया उसकी पूर्ति होना कठिन है। —स्थानकवासी जैन संघ, गुड़गांवाँ।

बरनाला—श्रद्धेय प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० साहब के दर्दभरे स्वर्गवास की तार द्वारा खबर पाकर एक सभा की गई जिसमें अत्र विराजित पूज्य गुरुदेव महातपस्वी श्री पन्नालाल जी म०, कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी म० ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पंजाब का दृढ़ संयम व्रतधारी, प्रखर सूर्य आज अस्त हो गया और सज्जनों ने भी अपने श्रद्धा भरे उद्‌गार पेश किए।

शासनेश से प्रार्थना की कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति लाभ हो। उनके शिष्य-मण्डल को उनके असामयिक वियोग को सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

– वैद्य अमरचन्द्र जैन, बरनाला (पंजाब)

नई दिल्ली—श्री एस० एस० जैन बिरादरी, नई दिल्ली की सेठ आनन्दराज सुराणा की अध्यक्षता में आयोजित यह बैठक स्वर्गीय प्रवर्त्तक सरल स्वभावी, शान्तिप्रिय, प्रगाढ़ विद्वान्, जैनागम व्याख्याता पं० रत्न श्री शुक्लचन्द जी म० सा० के दुःखद स्वर्गवास पर गहरा शोक प्रकट करती है तथा स्वर्गीय प्रवर्त्तक श्री जी द्वारा समाज एकता तथा श्रमणसंघ की सुदृढ़ता के लिए उनका गौरव करती है। श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी उच्चकोटि के साहित्यिक मृदुभाषी और सौजन्यता की मूर्ति थे। आपके निधन से समस्त भारत के स्थानकवासी जैन समाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना कठिन है। उनके प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

खाचरोद—स्थानीय श्रावकसंघ को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि श्रमणसंघ के प्रवर्त्तक, पं० रत्न सरलस्वभावी, महान् सन्त, पं० मुनिवर श्री शुक्लचंद जी महाराज सा० का स्वर्गवास हो गया। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे संघ के बड़े २ सन्त एक-एक करके स्वर्गवास हो रहे हैं और उनकी पूर्ति होना संभव नहीं है, पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० ने श्रमणसंघ के संगठन के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है। गत अजमेर के सम्मेलन के समय पं० श्री शुक्लचन्द जी म० सा० वृद्ध एवं अस्वस्थ होते हुए भी अम्बाला शहर से

विहार करके अजमेर पहुंचे थे और संगठन विषयक कार्य किया। वर्तमान समय में जब कि कुछ लोग संघ का विघटन करना चाहते हैं ऐसे समय में हमारे बीच से ऐसे सन्त का उठ जाना बहुत दुःख का विषय है, शासनदेव से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो तथा उनके शिष्यमण्डल को धैर्य प्रदान करे तथा श्रमण संघ के अनुयायी दिवंगत आत्मा के बताए हुए मार्ग पर चलकर संगठन को मजबूत बनाने में प्रयत्नशील रहे। —बद्रीलाल जैन एडवोकेट, मंत्री।

श्री युत् मंत्री महोदय, लालभवन
एस०एस० जैन सभा, जयपुर।
जालन्धर। ६-३-६८

मान्यवर महानुभाव,

आपके यहाँ विराजित परम पूज्य प्रवर सन्तों की सेवा में हमारी तथा जयपुर संघ की सविधि वन्दना अर्ज कर सुखसाता पूछें। यहां पर १००८ श्री नेमीचन्द जी महाराज साहिब ठाणा २ से तथा १००८ श्री वल्लभवती जी महासतियांजी ठाणा ३ से सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। आज श्री सत्येन्द्र मुनि जी ठाणा ३ से किशनगढ़ से ग्रामानुग्राम विहार करते हुए पधारे हैं। धर्मध्यान में वृद्धि हो रही है।

ता० १-३-६८ को प्रवर्त्तक पंडित रत्न १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज साहिब के देवलोक हो जाने के समाचार सुनकर समस्त श्रावक श्राविकायें शोक विह्वल हो गए व २-३-६८ को प्रातः ९ बजे प्रवर्तक श्री को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु सभा में एकत्रित हुए। श्री पारसमल जी कुचेरिया, चुन्नीलाल जी ललवानी, शीलकुमार जी पंजाब वाले, गुमानमल चोरड़िया, महासतीयाँ श्री वल्लभवती की शिष्याओं ने एवम् नेमीचन्द जी महाराज साहब ने प्रवर्त्तक जी की जीवनी पर प्रकाश डाला, संस्मरण सुनाए एवम् त्याग मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा दी। तत्पश्चात् सभा में निम्न शान्ति प्रस्ताव पारित किया गया।

शांति प्रस्ताव

श्री वर्धमान श्वे० स्था० श्रावक जयपुर संघ, जयपुर की यह सभा श्री वर्धमान स्था० श्रमण संघ के प्रवर्त्तक पंडित रत्न १००८ श्री शुक्लचंद्र जी महाराज साहब के देवलोक हो जाने पर श्रद्धांजलि अर्पित करती है एवम् शासनदेव से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो। भवदीय—

मंत्री, श्री वर्धमान स्था० श्रावक संघ, जयपुर।

श्रीमान् धर्मप्रेमी मंत्री जी साहब — चौथका बरवाड़ा

सादर जय जिनेन्द्र ! — ता० ५-३-६८

चौथका बरवाड़ा जैन श्रावक संघ श्री श्री १००८ परम प्रतापी, पूज्य श्रद्धेय पं० रत्न प्रवर्त्तक श्री श्री शुक्लचन्द्र जी म० के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करता है। आपके स्वर्गवास से समाज में जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति निकट भविष्य में होना असम्भव है। हम जिन शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गस्थ प्रवर्त्तक श्री जी म० सा० की महान् आत्मा को शान्ति प्रदान करें। और उकके सब शिष्य परिवार को वियोग दुःख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो।

लड्डूलाल जैन, मंत्री
श्री वर्द्धमान स्था० जैन श्रावक संघ
चौथका बरवाड़ा।

श्रीमान् मंत्री जी, — श्री वर्द्धमान स्था० जन श्रावक संघ (रजि०)
एस०एस० जैन सभा, जालंधर। — सवाई माधोपुर (राजस्थान)

सादर जयवीर। — दिनांक ५ मार्च १९६८

आज दिनांक ४-३-६८ को जैन प्रकाश द्वारा प्राप्त समाचारों से ज्ञात हुआ कि श्रमण संघीय प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० का आपके यहाँ दिनाङ्क २१-२-६८ को सायं ७ बजे देहावसान हो गया है। समाचार सुनते ही संघ में शोक लहर दौड़ गई तथा सायं ७ बजे एक शोक सभा की गई। जिसमें ५ मिण्ट का मौन रखकर सभी महानुभावों ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वो दिवगंत मुनि श्री की आत्मा को परम सुख शान्ति प्रदान करें तथा श्रमण संघ को उनकी क्षति पूर्ति हेतु साहस प्रदान करें। विनीत—

बजरंगलाल श्रीमाल, मन्त्री।

सैक्रेट्री एस. एस. जैन सभा, — एस. एस. जैन सभा, मुलाना,
जालन्धर। — जि० अम्बाला। २-३-६८

पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी म० के स्वर्गवास का तार मिला। पढ़कर बहुत दुःख हुआ। मुनि जनक विजय जी की अध्यक्षता में जैन सभा की मीटिंग हुई जिसमें पंडित जी के स्वर्गवास के विषय में शांति प्रस्ताव पास किया गया। मुनि जी ने पंडित शुक्लचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डाला। जैन समाज का एक और तारा सदा के लिए लोप हो गया। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दे। —मन्त्री

एस० एस० जैन सभा,
जींद।
दिनांक २-३-६८

आदरणीय प्रधान जी,
एस० एस० जैन सभा, जालन्धर।
श्री राजकुमार जी,

सादर जैजिनेन्द्र

यहाँ पर श्री श्री श्री १००८ स्वामी फूलचन्द जी महाराज, जैनभूषण श्री श्री श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज आदि मुनिराज सुख शान्ति से विराजमान हैं— महाराज श्री जी आज ही २-३-६८ को जींद पधारे हैं समाचार पत्र से श्री श्री श्री १००८ पंजाब प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री श्री श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के देवलोक होने का समाचार पढ़ा और फिर आज ही दिन में तार भी आया—सब मुनिराजों को अत्यन्त दु:ख हुआ। पंडित श्री जी महाराज के इस दु:खद अवसान से श्रमण संघ को बड़ी भारी क्षति हुई है—उनकी शान्ति और सरलता की सदा याद बनी रहेगी। पंडित श्री जी महाराज संयम जीवन में कई उच्च पदों पर सुशोभित रहे। उनके साथ के मुनिराजगण से पूरी पूरी सहानुभूति और हार्दिक संवेदना है। स्व० आत्मा को शांति प्राप्त हो यही शासनदेव से प्रार्थना है।

निवेदक—
बैजनाथ जैन
मंत्री, एस० एस० जैन सभा, जींद।

शांति प्रस्ताव

श्री महावीराय नम:

श्री श्री श्री १००८ प्रवर्त्तक पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के स्वर्ग होने की सूचना तार द्वारा मिलने पर समस्त बिरादरी को हार्दिक दु:ख हुआ।

स्वर्गीय श्री गुरुदेव जी शान्त शोभावी, विशाल हृदय धारक, एवं एक सुन्दर साधुता के जीवन धारक थे। आप समाज तथा साध मण्डल के रत्नों में से एक रत्न थे।

यहाँ पर विराजित वयोवृद्ध महासती श्री हंसादेवीजी आदि ठाने ५ को भी यह दु:खद समाचार सुन कर बड़ा दु:ख हुआ। शान्त आत्मा, गुणों के सागर, त्याग मूर्ति श्री जी का चले जाने क जो दु:ख हुआ है वह लेखनी लिखने में असमर्थ है। अन्त में हम तथा सती जी प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गीय गुरुदेव की आत्मा को शासन देव

शान्ति प्रदान करे। ऐसी आत्माओं के जाने से जो समाज जो क्षति हो रही है उस पर यह सभा शोक प्रगट करती है।

आपका दर्शन अभिलाषी सेवक

सूरजभान जैन

उप-प्रधान, एस० एस० जैन सभा, मण्डी रोहतक।

S.S. Jain Sabha, Chandigarh
Sector 18-D
Dated 2nd March, 1968.

S.S. Jain Sabha, Chandigarh places on record its profound sense of grief on the sudden and untimely death of His Holiness Shri-shri 1008 Jain Parvartak Pandit Shukul Chand Ji Maharaj.

Resolved that a copy of this may be sent to S.S. Jain Sabha, Jullundur.

—**Bhushan Kumar Jain**
General Secretary.

श्रीमान् सैक्रेटरी साहिब जी, डेरावसी
जयजिनेन्द्र। २-३-६८।

हमारे यहाँ पर श्री श्री १००८ श्री नौबतराय जी तथा श्री श्री १००८ पं० जगदीश मुनि जी महाराज ठाणे ४ सुख शान्ति से विराजमान हैं। कल रोज़ जब आप का तार मिला और गुरु महाराज के चरणों में पढ़ कर सुनाया गया। जब उन्होंने सुना कि पं० श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तो अति दु:ख हुआ और जैन समाज में शोक की लहर छा गई। उसके बाद एस. एस. जैन गर्लज हाई एण्ड जे. बी. टी. स्कूल में गुरु महाराज के शोक में एक शोक सभा हुई जिसमें जैन सभा और गुरु देव श्री नौबतराय तथा पं० श्री जगदीश मुनि जी ने उनके चरित्र पर प्रकाश डाला और भगवान महावीर स्वामी से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा जैन समाज को उनके बिछुड़ने की शक्ति दें। उसके बाद उनके शोक में जैन स्कूल बन्द रहा और गुरु महाराज का व्याख्यान भी बन्द रहा। रात को जैन सभा की तरफ से शांति प्रस्ताव पास किया गया। आगे वहाँ पर समस्त मुनि मण्डल के चरणों में जगदीश मुनि जी ने प्रार्थना की कि इतनी बड़ी हस्ती का उठ जाना मुनि मण्डल के लिए तथा समाज के लिए अति दु:ख की बात है। परन्तु क्या किया जाए काल

के आगे किसी की नहीं चलती। अब तो हमारा और आपका यही कर्त्तव्य है उनकी शिक्षाओं पर चलते हुए संयम का पालन करें।

आपका—
गंगा सागर जैन, सेक्रेटरी
एस०एस० जैन गर्लज़ हायर एण्ड जे०वी०टी स्कूल, डेरावसी।

सेवा में,
मंत्री महोदय,
श्री एस० एस० जैन सभा, जालन्धर।

ओसवाल ट्रेडर्ज़,
अलवर (राज०)
दि० २-३-६८

तार द्वारा जालन्धर में प्रवर्त्तक श्री पंडित रत्न श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज सा० के स्वर्गारोहण के समाचार प्राप्त कर अलवर के जैन समाज में शोक की काफी घटा छा गई।

ता० २ को सवेरे ८॥ बजे श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए एक शांति सभा का आयोजन किया गया तथा निम्न शांति प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किया गया—

"पं० रत्न शांत मूर्ति प्रवर्त्तक श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी म० साहिब महान् त्यागी-तपस्वी व उत्कट संयमी व चरित्र निष्ठ संत थे। श्रमण संघ की एकता तथा संवर्धन के लिए सतत जागरुक थे। विद्वता उनकी अनुपम थी। ऐसे महान् संत का वियोग समाज की अपूर्णीय क्षति है।

शासनदेव से प्रार्थना है कि समाज उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहे।

तत्पश्चात् स्वर्गस्थ महानात्मा के सम्मान में ५ मिण्ट का मौन रखा गया तथा नवकार महामन्त्र के जाप के साथ मुनिश्री के जयकार के साथ सभा विसर्जित हुई।

भवदीय—
अभय कुमार जैन, मन्त्री।

सेवा में,
श्रीयुत सचिव महोदय,
श्री एस० एस० जैन सभा, जालन्धर।

नौजवान शाकाहार सभा,
बंगा (जालन्धर)
१-३-६८

मान्यवर महोदय,

आज का दिन कितना भाग्यहीन है कि यह सुनने को मिला कि श्रमण संघ

में संघटन और जैन समाज में जैनत्व के महान ऋषि का स्वर्गवास हो गया है। स्वामी श्री श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज जिस सरलता और सौम्यता की मूर्ति थे, समाज को ऐसी मूर्ति मिलनी असंभव है। ऐसे महापुरुष के चरणों में हम श्रद्धायुक्त श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आपका
इन्द्रजीत जैन, सचिव।

श्रीमान् जी, सेक्रेटरी साहब, गुड़गावां छावनी
सादर जयजिनेन्द। ४-३-६८

महाराज श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के देवलोक होने की खबर पाकर यहाँ की जैन बिरादरी को बड़ा दु:ख हुआ। चुनाचे इस वक्त एक शांति सभा मुंतकद हुई जिसमें महाराज श्री को श्रद्धाँजलि अर्पित की गई।

न्याजमंद
मेहर चन्द जैन
प्रधान, एस० एस० जैन सभा, गुड़गांवा।

शांति-सभा

एस० एस० जैन सभा, अमृतसर।
दि० १-५-६८

आज मोरखा १-३-६८ बरोज शुक्रवार वक्त साढ़े आठ बजे रात जैन बिरादरी अमृतसर की एक शांति सभा जैन भवन नजदीक बाग जलियांवाला में ज़ेरे सदारत ला० हंसराज साहब एडवोकेट के मन्तकद हुई जिसमें मंदरजाजेल शोक (शांति) का रेज्युलेशन इत्तफ़ाक राय से पास हुआ—

"आज की यह शांति सभा श्री श्री श्री १००८ पंडित रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के देवलोक हो जाने पर गहरा शोक प्रकट करती हुई उनकी पवित्र आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पण करती है और यह महसूस करती है कि पंजाब भर के साधु समाज के रहनुमा के अचानक जुदा हो जाने से जो खला पैदा हुआ है इसका पुर होना निहायत मुश्किल है। — लालचन्द जैन, जनरल सेक्रेटरी

श्रीमान् प्रेज़िडेण्ट,
एस० एस० जैन सभा, जालन्धर।

जयजिनेन्द्र! आज बरोज एतवार जेरे सदारत चौधरी दिवानचंद जैन एक

मीटिंग जैन बिरादरी गिदड़बाहा जैन स्थानक में हुई, जिसमें सब सरकरदा साहेबान जैन बिरादरी शामिल हुए। जिसमें श्री श्री १००८ जैन रत्न पूज्य पंडित श्री शुक्लचन्द जी महाराज के मृत्यु पर इजहारे अफ़सोस किया गया और सब साहेबान ने मिलकर दुआ की कि भगवान ! उनकी आत्मा को मुक्ति-शांति प्राप्त हो। तमाम बिरादरी की तरफ से जो उनके शिष्य जालन्धर में विराजमान हों उनको बिरादरी की तरफ से अफ़सोस जाहिर करें और सबकी वन्दना नमस्कार करें और उनके नक्शे कदम चलने की दुआ करें।

चौधरी दिवानचंद जैन —सेक्रेटरी, एस० एस० जैन सभा,
प्रेज़िडेण्ट गिदड़वाह (फिरोज़पुर)

श्रीमान् मान्यवर सेक्रेटरी साहब, एस० एस० जैन सभा,
एस० एस० जैन सभा, मोती बाज़ार, मालेरकोटला (संगरूर)
जालन्धर शहर। दि० १-३-६८

जयजिनेन्द्रदेव !

सेवा में निवेदन है कि आपके यहाँ क्षेत्र में विराजमान महा भागवान श्री श्री १००८ स्वामी सुरेन्द्र मुनि जी म० नि० व० श्री सुमन मुनि जी म० श्री श्रीचंद जी म० जुमला ठाणा और जुमला आरजगान के चरण कमलों में मालेरकोटला बिरादरी की ओर से वंदना नमस्कार अर्ज करे सुखसाता मालूम करें। नेज़ आपका दुःख से भरा तार बावत देवलोक समाचार अखिल भारतीय जैन श्रमण संघ प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी म० का मिला, जिसको सुनकर समाज में शोक की लहर दौड़ गई। आप समाज के महान् उज्जवल नक्षत्र, एक महान् हस्ती थे। आपकी छत्रछाया में जैन समाज सदा ही उन्नति करता रहा। गुरु महाराज की तो मलेरकोटला पर सदा ही कृपा दृष्टि रही है। फौरन ही एक इजलास जैन स्थानक मोती बाज़ार में बुलाया गया, जिस में मुन्दरजाज़ैल शांति प्रस्ताव पास किया—

शांति प्रस्ताव

"अखिल भारतीय जैन श्रमण संघ प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के देवलोक होने का समाचार सुनकर शोक की लहर दौड़ गई और सभा हिजा का एक फौरी इजलास बुलाया गया। बाइतफ़ाक उनके देवलोक होने का बहुत ही गहरे दुःख के साथ शांति प्रस्ताव पास किया गया। नवकार मंत्र के जाप से उनकी आत्मा को शांति के लिए शासन देव से प्रार्थना की गई। आप समाज की महान्

हस्ती थे आपके निधन से समाज को जो हानि हुई है उसका पूरा होना बहुत ही कठिन है। मलेरकोटला बिरादरी की तरफ से तमाम मुनि मण्डल और आरजगान के चरणों में वंदना नमस्कार अर्ज करके सुखसाता पूछें। —ओमप्रकाश, सेक्रेटरी।

सेक्रेटरी साहब, अमृतसर
एस० एस० जैन सभा, जालन्धर। ३-३-६८

जयजिनेन्द्र !

मोरखा १९-२-६८ बरोज वीरवार शाम के वक्त सुनकर बहुत दुःख हुआ कि पंजाब के प्रवर्त्तक पंडित श्री श्री श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज स्वर्गवास हो गए। महाराज श्री जी बहुत आलम फ़ाजल थे। आपने जैन रामायण जैन महाभारत और बहुत सी किताबें लिखकर जैन समाज की बहुत सेवा की है। महाराज श्री जी की दीक्षा अमृतसर में पूज्य श्री काशीराम जी महाराज के चरणों में हुई थी। इसका अमृतसर निवासियों को गौरव है। महाराज श्री जी २८ साल तक पूज्य सोहनलाल जी महाराज के चरणों में सेवा भक्ति करते रहे। महाराज आलमाना व्याख्यान करते थे। स्वभाव शीतल था। उनके चेहरे पर हर वक्त मुस्कराहट रहती थी। महाराज श्री के स्वर्गवास होने से जो नुकसान जैन समाज को हुआ है वो पूरा होना बहुत कठिन है। हम सबको महाराज श्री जी के स्वर्गवास होने का बहुत दुःख है।

नोट—मेहरबानी करके यह पत्र श्री सुमन मुनि जी को सुना देवें।

बाल कृष्ण जैन, मंत्री। मेम्बरान श्री जैन धर्म सभा, अमृतसर।

हुशियारपुर—श्रद्धेय प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी महाराज का स्वर्गवास होना ऐसे असमय में समाज के लिए अति दुर्भाग्य की बात है। आप स्वभाव से शांत, सौम्य एवं नम्र थे। शास्त्रीय ज्ञान के धनी, साधु मर्यादा के मानी, समाज के कर्णधार तथा प्रभावशालि मुनिराज थे। अनेक उच्च पदों पर रहकर भी आपको कभी अहंकार तथा अधिकार भावना छू तक नहीं गई थी। हुशियारपुर नगर पर तो आपकी वर्षों से ही अपार कृपा दृष्टि रही है। आपके रिक्त स्थान की पूर्ति निकट भविष्य में कठिन है। शासन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को स्थाई शांति प्राप्त हो और शिष्य परिवार को धैर्य धारण की शक्ति दे।

—मंत्री, रामचंद्र जैन, बी०ए०, हुशियारपुर।

कांधला—स्थानकवासी जैन बिरादरी कांधला (मुज्जफर नगर) को तार द्वारा जब सूचना मिली तो यहां शोक की लहर दौड़ गई। स्वर्गीय प्रवर्त्तक प० श्री शुक्लचन्द्र जी म० के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके लगभग तीन चार चतुर्मास हमारे क्षेत्र में हो चुके थे। उनकी बड़ी कृपा रही है। स्व० जैनाचार्य पंजाब केसरी श्री कांशीराम जी म० के आप सुशिष्य थे। आप स्वभाव से शांत, गंभीर और धैर्यवान थे। अपने जीवनकाल में आप अनेक उच्चपदों पर आसीन हुए।

कांधला निवासी आपकी आत्म शांति के लिए शासन देव से प्रार्थना करते हैं। समाज को आपके निधन से अपार क्षति हुई है। —परजन कुमार जैन

श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रचारक समिति
अमृतसर।

Camp ; Rup Mahal N.H. 2,
Faridabad N.T.I.
12th September, 1968

"This 62nd meeting of the Managing Committee of Shri Sohanlal Jain dharma Pracharak Samiti on 4.8.1968 under the chairmanship of its Vice-President places on record its profound sense of sorrow and loss at the demise of Pravartak Muni Shri Shuklachandra ji the disciple of late Acharya Puj Shri Kanshiram ji who was the disciple of Acharya Shiromani Shri Sohanlal ji of Punjab Sampradaya, and extend their sympathy and condolence to the whole bereaved Samaj for the common loss." —**Secretary.**

सेवा में, श्री सुमन मुनि जी,

सादर वन्दे, ऊपर स्व० प्रवर्त्तक मुनि श्री पडित शुक्लचन्द्र जी के निधन पर जो प्रस्ताव समिति की मैनेजिंग कमेटी ने अपने रिकार्ड में लिखा है, उसकी प्रति आपके अवलोकन भेज रहा हूँ। वन्दे और नमस्कार। विनीत—

हरजसराय जैन, मंत्री।

गुलाबपुरा—६-३-६८, हमारे संघ को जैन प्रकाश द्वारा कल श्रमण संघ के प्रवर्त्तक पंजाबी संत श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० के स्वर्गवास का सम्वाद पढ़कर गहरा आघात लगा। हमारे यहां विराजित वयोवृद्ध स्थविरपद विभूषित सेवा भावी गुरुदेव श्री छोटमल जी म० सा० आदि ठाणा ३ को सूचना मिलते ही परिनिर्वाण निमित्तक ४ लोगस्स का ध्यान कर व्याख्यान बंद कर दिया एवं उपस्थित जनता को स्वर्गस्थ आत्मा के गुणों का परिचय कराते हुए श्रद्धांजलि

अर्पित की एवं उनके द्वारा ज्ञान, दर्शन, चरित्र की प्रज्वलित ज्योति को अंतेवासी संत निरन्तर अक्षुण्ण बनाए रखेंगे ऐसी कामना अभिव्यक्त की। अन्त में हमारे संघ ने २ मिनट का मौन रखकर स्वर्गस्थ आत्मा को अक्षय शांति मिले, ऐसी भावना प्रकट की। —मदनलाल धुपिया, मंत्री

पाली (राजस्थान)—शांत-मूर्ति प्रभावशाली संत का स्वर्गवास

अभी हम प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालाल जी म० सा० महान् एवं ज्योति तपस्वी मुनि श्री जगजीवन जी म० सा० का स्वर्गवास का दुख तो भूल ही नहीं पाए इतने में ही एकाएक अचानक प्रवर्त्तक पं० रत्न, सरल स्वभावी, शान्त मूर्ति, प्रभावशाली, मुनि श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० स्वर्गवास ता० २९-२-६८ को जालन्धर शहर में होने का समाचार सुनने में आ गया। यह समाज के लिए दुर्भाग्य है।

आपका हृदय अति कोमल, स्नेहशील तथा शान्त था। साहित्य व कविता में आपका नाम बहुत ही उच्च व आदर्श रूप में है। आप द्वारा रचित जैन रामायण जैन समाज में प्रसिद्ध है।

आपके स्वर्गवास से समाज में भारी खामी पड़ी है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शांति प्राप्त हो व ऐसी महान् आत्मा की समाज में शीघ्र क्षति पूर्ति करें यही मेरी कामना है। —मुन्नालाल लोढ़ा, पाली

शांति–प्रस्ताव

बरकतराम जैन हॉल, फरीदकोट
२ मार्च, १९६८ शनिवार।

एस० एस० जैन सभा फरीदकोट का इजलास श्री श्री १००८ परम पूज्य पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज प्रवर्त्तक पंजाब प्रदेश के देवलोक हो जाने पर गहरे दुःख और रंज का इजहार करता है। इनके अचानक और बेवक्त देवलोक हो जाने न सिर्फ पंजाब प्रान्त बल्कि अखिल भारतीय श्रमण संघ और श्रावक संघ को अध्यात्मिक नुकसान पहुँचा है जिसकी पूर्ति इस समय पूर्ति होती दिखाई नहीं देती। इनकी विद्वता, सहनशीलता, गंभीरता और आदर्शचरित्र अमिट छाप देश भर अंकित है। पंजाब प्रान्त को इनसे जो महान अध्यात्मिक लाभ प्राप्त हुआ है इसकी गणना नहीं की जा सकती और इस लाभ से वंचित होकर समाज का कण-कण रो रहा है।

फरीदकोट का संघ यह भावना भाता है पंडित श्री जी महाराज को परम शांति और उच्च देवलोक प्राप्त हो और इनकी शिष्य मंडली इनके पदचिह्नों पर चलकर समाज का गौरव बढ़ाए। —मंत्री, फरीदकोट।

देहली सदर—यहाँ तार द्वारा समाचार मिलते ही कि श्रमण संघीय प्रवर्त्तक पण्डित रत्न श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी म० सा० का जालन्धर में स्वर्गवास हो गया है। श्री संघ में शोक छा गया। प्रातः साढ़े आठ बजे व्याख्यान में शोक सभा का आयोजन हुआ। जिसमें महास्थविर गुरुदेव श्री भागमल जी म० सा० स्वयं पण्डित श्री ज्ञान मुनि जी म० के साथ नीचे पधारे और स्वर्गीय प्रवर्त्तक म० श्री जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन के गुणों की सराहना की और उनकी आत्मा की शान्ति हेतु चार लोगस्स का ध्यान करते हुए शासनदेव से प्रार्थना की। पं० श्री ज्ञान मुनि जी और अन्य वक्ताओं ने प्रवर्त्तक श्री जी के निधन से समाज में होने वाली क्षति का वर्णन किया। —सुशीलकुमार जैन

सुलतानपुर लोधी—प्रवर्त्तक रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० की निधन की सूचना मिलते ही स्थानीय श्री संघ को हार्दिक दुःख हुआ। महाराज श्री जी अपने युग के महान संत, वक्ता एवं अनुशास्ता थे। आपकी छत्रछाया में पंजाब जैन समाज (साधु और श्रावक) को एक बहुत बड़ा आधार और सहारा था। आपके निधन से श्रमण संघ की ही नहीं बल्कि जैन समाज को एक बहुत बड़ी हानि हुई है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति होनी कठिन है। गुरुदेव के चरणों में सेवा करने का अनेक बार अवसर मिला है। आप स्वभाव से शांत, सरल होते हुए भी अति धीर और गंभीर थे। सुलतानपुर नगर पर तो आपकी बड़ी कृपा दृष्टि रही है। अंत में शासनदेव से यही प्राथना है कि महान आत्मा को महान शांति प्राप्त हो। —मंत्री, सोमप्रकाश जैन

अम्बाला शहर—टैलीफून और तार द्वारा इस हृदय विदारक सूचना के मिलते ही अम्बाला जैन बिरादरी में शोक की लहर दौड़ गई। आबाल वृद्ध सब आवाक् से रह गए। यह अनहोनी कैसे हुई जिसकी कोई अभी आशा नहीं थी। पंजाब केसरी जैनाचार्य श्री काशीराम जी म० सा० की अनमोल निशानी आज सदा के लिए रूपोश हो गई।

यहाँ क्षेत्र में विराजित वयोवृद्ध श्रद्धेय श्री कपूरचन्द जी म० तथा साध्वी श्री स्वर्णा जी ने स्वर्गीय प्रवर्त्तक श्री जी के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। बिरादरी की ओर से शान्ति प्रस्ताव करते हुए उस महान आत्मा को स्थायी शांति

प्राप्ति के लिए प्रार्थना की। अन्य वक्ताओं ने प्रवर्त्तक श्री जी के जीवन की महानता पर प्रकाश डाला। —मंत्री, किशोरीलाल जैन

जण्डियाला गुरु—जालन्धर से तार द्वारा सूचना मिलते ही स्थानीय जैन विरादरी को प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० साहब के अचानक स्वर्गवास से अत्यन्त दुःख का अनुभव हुआ कि पंजाब के महान सन्त जो कि समाज के स्तम्भ हैं एक-एक करके हमारे से विदा हो रहे हैं। स्वर्गीय पण्डित जी म० महान सन्त, विद्वान और आला हस्ति थे। अपने आप में वे एक ही उदाहरण थे। स्वभाव से नरम, शीतल, शान्ति के सागर। उनके स्वर्गवास से स्थानकवासी जैन समाज को और विशेष तौर पर पंजाब श्रमण संघ को बहुत बड़ी क्षति पहुँची जिसका पूर्ण होना कठिन है। शासनदेव से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए यही कामना है। —मंत्री, रत्नचन्द जैन

कपूरथला—स्वर्गीय प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० सा० के स्वर्गवास का समाचार मिलते ही यहाँ विराजित महाभाग्यवान स्वामी रघुवरदयाल जी म० तथा जैन विरादरी को हार्दिक दुःख पहुँचा। न जाने समाज के भाग्य में क्या बदा है कि एक-एक करके महान हस्ति हमारे से विदा हो रही है। व्याख्यान में श्री भद्र मुनि जी म० एवं अन्य वक्ताओं ने महाराज श्री जी के जीवन एवं गुणों का परिचय देते हुए उनकी आत्मशान्ति के लिए चार लोगस्स का ध्यान करके सभा विसर्जित की। स्वर्गीय पण्डित श्री जी के रिक्त स्थान की पूर्ति अति दुर्लभ है। —मंत्री, त्रिलोकचन्द जैन

मेरठ—तार द्वारा सूचना मिलने पर कि श्रमण संघीय प्रवर्त्तक पं० रत्न श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी म० सा० का जालन्धर शहर में स्वर्गवास हो गया मेरठ जैन विरादरी को बहुत आघात पहुँचा कि यह अनायास ही क्या हो गया। स्थानीय जैन संघ की एक शोक सभा हुई जिसमें जैन भूषण श्री प्रेमचन्द जी म० पं० श्री शांतिस्वरूप जी म० और अन्य सन्त तथा वक्ताओं ने उनकी महानता पर प्रकाश डालते हुए उनके दिव्य गुणों की सराहना की तथा फरमाया कि जितना-जितना उनको मान-सम्मान मिला उतने ही वे विनम्र और सौम्य होते गए। शान्ति-समता-क्षमा-सरलता-मधुरता आदि गुण तो स्वभाविक थे ही साथ ही आगमो के भी एक प्रकाण्ड पंडित थे। वे अपने जीवन में कई उच्च पदों पर रहे। उनके निधन से समाज को जो गहन क्षति हुई है उसकी पूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो यह शासनेश से प्रार्थना की

गई और चार लोगस्स के ध्यान के पश्चात् सभा विसर्जित की ।

—मंत्री, जैन सभा मेरठ

रायकोट—तार द्वारा सूचना मिली कि पं० रत्न प्रवर्त्तक श्री स्वामी शुक्लचन्द्र जी म० का स्वर्गवास हो गया । हमारे समाज के एक-एक करके अनमोल रत्न विदा होते जा रहे हैं । यह बड़े ही दुख की बात है ।

आप सरल स्वभावी, शांति के सागर, मनोहर वक्ता, विनम्र एवं मधुर भाषी थे । रायकोट क्षेत्र पर महाराज श्री जी की अपार कृपा रही है ।

रायकोट जैन समाज की एक शोक सभा हुई जिसमें शासनदेव से प्रार्थना की गई कि महान आत्मा को महान शांति मिले ।   —चुन्नीलाल जैन, प्रधान

लुधियाना—स्वनामधन्य, अहिंसा के पुजारी, जैनागमवारिधि तपोनिष्ठ, बालब्रह्मचारी त्याग और तपस्या की अजग मूर्ति, विद्वन्मूर्धन्य पंजाब प्रवर्त्तक श्री श्री १००८ पण्डित रत्न श्री शुक्लचन्द जी महाराज के स्वल्पकालीन बीमारी के कारण २९ फरवरी १९६८ अचानक स्वर्गवास का दुःखद समाचार जालन्धर बिरादरी की ओर से टैलीफोन पर सुनकर लुधियाना की एस. एस. जैन बिरादरी शोक-समुद्र में डूब गई । महाराज श्री जी अज्ञानान्धकार में भटकते प्राणियों के लिए आलोक स्तम्भ थे । प्रवर्त्तक श्री जी के निधन से श्रमण संघ में जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी क्षति पूर्ति कठिन ही नहीं अपितु असंभव है । स्थानीय एस. एस. जैन बिरादरी शासनेश भगवान से हार्दिक प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान हो तथा आप श्री जी के शोक संतप्त शिष्यानुशिष्यों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है ।

—मंत्री, हंसराज जैन

दि. १-३-६८   एस. एस. जैन बिरादरी (रजिस्टर्ड) लुधियाना ।

इन सम्वेदना पत्रों और प्रस्तावों के अतिरिक्त अन्य भी नगरों में शान्ति सभायें और प्रस्ताव पारित हुए । जैसे कि—करनाल, कैथल, सोनीपत, जम्मू, पानीपत, साढौरा, उगाला, बड़ौत, मुकेरियां, टांडा, संभालका, चर्खी दादरी, नारनौल, दड़ौली, मलोट, अबोहर, भटिंडा, संगरूर, अहमदगढ़ मंडी, भिखी, सुनाम, हांसी, हिसार, सरसा, बंगा, फगवाड़ा, राहों, खरड़, रोपड़, नवां शहर, बलाचौर, अम्बाला छावनी, लुधियाना, समाना, नाभा, मुज्फ्फर नगर आदि । इनके अतिरिक्त पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली के प्राय: सभी क्षेत्रों के श्रद्धालु जालन्धर शहर आकर स्वर्गीय श्रद्धेय के देहदर्शन कर अपनी वैयक्तिक तथा सामाजिक दुशाला आदि परिधान और चन्दन अर्पित कर हार्दिक श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत कीं । यहाँ उन सब का देना हमारे लिए कठिन था अत: मात्र नामों का उल्लेख किया गया है ।



श्रद्धा-सुमन



पूज्य

साधु

एवं

साध्वी

तथा

श्रावक

वर्ग

[पद्य]

पूज्य सोहनलाल जी दे लाल सोहणे,
कीदे नाल मैं देवां नजीर तेरी ।
जद वी याद आंवदे तेरे कारनामे,
अखां सामने फिरे तस्वीर तेरी ॥
पंजाव केशरी दे वाग दी शान सी तू,
वत्ती शास्त्रां नाल सी रोशन जमीर तेरी ।
वाल ब्रह्मचारी योगी संयमी प्रवर्तक युवराज,
गुरू रत्नलाल दे रतना नाल चमकी तक़दीर तेरी ॥

—श्री विलायतीराम जैन, जालन्धर ।

हो गए क्यों हो जुदा ?

श्री अमरेन्द्र मुनि जी

मुनि जी स्व० श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी के लघु शिष्य हैं, सेवा और ज्ञानाभ्यास ही इनके जीवन का लक्ष्य है। साथ ही छोटी सी आयु में कविता की रुचि है। ये होनहार संत हैं, समाज को इनसे बड़ी आशाएँ हैं।

अय मेरे भगवान मुझ से हो गए हो क्यों जुदा।
आंखों के मेरे सामने रहते गुरुवर सर्वदा ॥
ये विदाई की वेला सहारि न हर्गिज जाएगी।
जो घड़ी बीती वो फिर वापिस कभी ना आएगी ॥
मान था तुझ पर हमें और तू हमारी शान था।
संसार सागर पार करने को सभी का यान था ॥
इतनी जल्दी थी अभी क्या हो गए हो तुम विदा।
अय मेरे भगवान..... ......

संघ की वीणा के सब तार टूटे हैं पड़े।
ए महायोगी बता ? हम इन को पुन: कैसे जड़ें ॥
द्वेष को कभी द्वेष से तुमने कभी मारा नहीं।
कर्म भूमि में कभी संघर्ष से हारा नहीं ॥
दृगों के मेरे सामने रहते खड़े हो तुम सदा।
अय मेरे भगवान...........

लुट गया है भाग्य सारा देख लो पांचाल का।
क्या भरोसा है यहां इस काल महा विकराल का ॥
सन्त शिरोमणि थे गुरुवर सुर शिरोमणि हो गए।
आई उन्नतीस की घड़ी और भाग सब के सो गए ॥
अमरेन्द्र मुनि भी शिष्य प्रभुवर भूल न जाना कदा।
अय मेरे भगवान मुझ से हो गए हो क्यों जुदा ॥

मम हृदय सम्राट्

श्री संतोष मुनि जी 'दिनकर'

ये भी श्रद्धेय स्व० प्रवर्त्तक श्री जी के शिष्यों में से हैं। प्रवचन एवं कविता में रुचि लेने वाले संत हैं। संत-सेवा के लिए प्रति समय तत्पर रहते हैं। युवक संत से इस परिवार को बड़ी आशाएँ हैं।

मम हृदय सम्राट् मुझ से, क्यों जुदा तुम हो गए।
मान था तुम पर हमें, तुम भी विदा अब हो गए॥
सूना लगे यह भुवन सारा, तेरे बिना हे पूज्यवर।
छा गया काला अन्धेरा, आँखों आगे हे मुनीश्वर॥
है सहारा कौन अब, मुझ को नजर आता नहीं।
वियोग का मेरु गिरी सम, दुःख सहा जाता नहीं॥
चान्द सूरज रो पड़े, तेरी जुदाई से प्रभो!
काँपने नभ तल लगे, तेरी विदाई से विभो!
मेरे धर्माचार्य तुम थे, गौड पैगम्बर खुदा।
अधीश्वर मंडल मुनि थे, कौम के थे रहनुमा॥
तेरे विरह में नाथ! मेरे नयन दोनों रो रहे।
मम हृदय हम्राट्! मुझ से क्यों जुदा तुम हो गए॥ १॥
तेरे ज्ञानालोक से, सर्व विश्व में प्रकाश था।
तेरी वाणी पर अखिल, संसार को विश्वास था॥
जैनागम साहित्य दर्शन, तत्त्व नय का आभास था।
प्यार से दिल जीतने का, मन्त्र तेरे पास था॥
शान्ति समता और क्षमागुण, ज्ञान का भण्डार था।
शिरोमणि श्रमण संघ, भूलोक का शृंगार था॥
कर्म भूमि में सदा, तूने विजय पाई गुरु।
हे भुवन के भास्कर! न हार कभी खाई गुरु॥
शोकाकुल हो आँसुओं से, चरण तेरे धो रहे।
मम हृदय सम्राट्! मुझसे, क्यों जुदा तुम हो गए॥ २॥
साधन बनाऊँ क्या भला, मैं दर्श पाने के लिए।
नयन पलकों के पलंग पर, तुझको बिठाने के लिए॥

आपको अपने हृदय से, निकट लाने के लिए।
चरण सरोजों में श्रद्धा के, सुमन चढ़ाने के लिए॥
जिस्म के हर रोम अन्दर, शोक गहरा छा रहा।
मधुमास भी मेरे लिए, पतझर बन कर आ रहा॥
वेदना में भी अधर पर, रहता हरदम हास था।
मधुरता-सरलता-नम्रता, अनुकम्पा गुण खास था॥

सन्देश से अपने जगा, मोह नींद में सब सो रहे।
मम हृदय सम्राट् ! मुझ से, क्यों जुदा तुम हो गए॥ ३॥

हे ! परमाराध्य देव मेरे, तुम ही सिर के ताज थे।
त्याग की तस्वीर, करुणा मूर्ति महाराज थे॥
रो रहा है संघ गुरुवर, धीर अब आकर बँधा।
महावीर का पैगाम अद्भुत, इक बार फिर घर २ सुना॥

सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य गुण संयमी अणगार थे।
चार तीर्थ संघ के, भगवान तुम आधार थे॥
अखिल भारतीय श्रमण संघ के, एक तुम भी प्राण थे।
तप त्याग से भरपूर जीवन, सकल गुण यशखान थे॥

मेरे लिए तो फूल भी अब, काँटों से तीक्ष्ण हो गए।
मम हृदय सम्राट् ! मुझसे, क्यों जुदा तुम हो गए॥ ४॥

नाम "शुक्लचन्द्र" स्वामि, पंजाब के तुम शहन्शाह।
हे देशभूषण ! महावेदना की, तुमने कभी न की परवाह॥
पद विभूषित प्रवर्त्तक से, पंडित आप महान थे।
धर्म दिवाकर, दिव्य ज्योति, जैन जगत की शान थे॥

कैसे करूँ वर्णन गुणों का, शक्ति इतनी है नहीं।
बेचैन मन है हो रहा, अब क्या कहूँ और क्या नहीं॥
भूल नहीं सकता कभी, तेरा किया उपकार मैं।
धन्य-धन्य हो गया था, तुम सा गुरु अवतार मैं॥

पर हो गया महा रंक अब तो, तुम रत्न भी खो गए।
मम हृदय सम्राट् ! मुझसे, क्यों जुदा तुम हो गए॥ ५॥



जग वल्लभ हमारा

तपस्वी श्री प्रीतमचन्द जी म०

स्व० प्रवर्त्तक श्री जी म० के आज्ञानुवर्ती बाबा श्री माणकचंद जी म० के ये मूल में वैरागी रहे हैं और प्रवर्त्तक श्री जी के कृपापात्र। उन्हीं की कृपादृष्टि से श्री नौबत राय जी म० के पास दीक्षित होकर लगभग ९ वर्ष तक सेवा की है। तपस्वी जी का जीवन सादा और निश्छल है। वृद्ध संतों की सेवा करना ये अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं।



छुप गया जग वल्लभ हमारा,
हाय बिछुड़ा शुक्ल चन्द प्यारा,
छिप गया भानु सबका आनन्दा,
डूबा जगत का हितकर चन्दा,
सब अहिंसा का टूटा सितारा, हाय...

संसार भर में बिछीं सफें मातम,
चल बसा अपने आलम का हातम,
गिर गया एकता का मिनारा, हाय...

तेरे बच्चे निहारेंगे किसको,
पूज्य गुरुदेव पुकारेंगे किसको,
कौन देगा हमें अब सहारा, हाय...

तेरी दया दृष्टि ने जगती बचाई,
जीते जी आपने ज्वाला बुझाई,
संघ में एकता का लगाया था नारा, हाय...

फानी संसार जब तक रहेगा,
नाम गुरुवर आपका जपता रहेगा,
तेरे आदर्श होंगे इशारा, हाय...

"मुनि प्रीतम" अर्ज गुजारे,
झूलें स्वर्गों में अब गुरु प्यारे,
मिल सकेगा न सानी तुम्हारा, हाय ..



ज्ञान दिवाकर अस्त हुआ

श्री रमेश मुनि जी

ये स्व० प्रवर्त्तक श्री जी के शिष्य हैं। अपनी मस्ती में रहने वाले संत हैं। इन्हें कविता में रुचि है। संगीत के साथ २ दो तीन चरित ग्रन्थों का भी हिन्दी भाषा में कविता में ही रूपान्तर किया है। सति मृगलेखा, गुणावली आदि प्रकाशित हो चुकी हैं।

निस्तेज हो गया आज रवि क्यों धरा धवल मटमैली सी,
क्यों बुझी बुझी ज्योति तारों की छाई चहुं तरफ उदासी सी।
मधुवन के सुन्दर पादप भी कुमलाये हुए से लगते हैं,
क्यों आज विरानी हर गुल में जो मुरझाये हुए से लगते हैं॥

आह! सभी यह आज शोक के महासागर में पड़े हुए,
गुरुदेव शुक्ल के विरह में, निस्तेज व निश्चल खड़े हुए।
शुक्लचन्द्र थे पूर्ण शुक्ल, ज्ञान का तेज बरसता था,
सौम्य मूर्ति की छाया में आ, हर कोई सुख पाता था॥

वह तेज पुन्ज वह तपस्पुन्ज, वह ज्ञान दिवाकर अस्त हुआ,
इस महा प्रलयंकर घटना से दिल सबका ही सन्तप्त हुआ।
इसी संतप्त में रवि धरा, और ज्योति सब तारों की,
मुरझाई सूरत दिखती है, वन पादप और गुलजारों की॥

वह चला गया सब चला गया, आधार सभी का छूट गया,
मानो कि इक अमृत प्याला, मुख स्पर्श से पहले छूट गया।
आधार क्या छूटा सच मानो, कि भाग्य हमारा सोया है,
चिन्तामणि सम रत्न गुरुवर हाथ से अपने खोया है॥

वह शुक्ल का चन्द्र चला गया, हम तारागण को विसार कर,
तस ज्ञान विना अन्धकार हुआ है, शून्य कक्ष वसुंधरा पर।
जिन धर्मोद्यान की फुलवारी में आज उदासी छाई है,
जब बाग का माली नहीं रहा, हर कली-कली मुरझाई है॥

जब फूल था सुन्दर खिला हुआ, तब भंवरे आ रस लेते थे,
त्यूं ज्ञान पिपासु गुरु चरण में ज्ञान की प्यास बुझाते थे।

पुष्प नष्ट से भंवरों की जो मनस्थिति बन जाती है,
त्यूं ज्ञानार्थी का मनस्थिति यहाँ स्पष्ट दृष्टि में आती है ॥
गुरुदेव तो कल्पतरु सम थे जो भी शरण में आता था,
वह स्नेह प्रेम की जलधारा में पूर्ण शान्ति पाता था।
परम दयालु महा कृपालु, धीर वीर गम्भीर गुरु,
भव सागर गोते खाते हुओं के बने हुए थे तीर गुरु ॥
ओ मेरे हृदय के भगवन् ! ओ मेरे जीवन के आधार,
तुम बिन मुझको दीख रहा है, अन्धकारमय सब संसार।
बसे हुए हृदय में हो तुम, बसे सुगन्ध ज्यूं चन्दन में,
नमस्कार तुच्छ दास का गुरुवर बार बार की चरणन में ॥
मन मन्दिर के देव तुम्हीं, जीवन की सरस बहार तुम्हीं,
बहते हुए जलधारा में थे, मेरे लिए पतवार तुम्हीं।
अकस्मात् पर मझधारा में, गुरुवर कहां विलोप हुए,
तुम्हारे बिना हे ! ज्ञान दिवाकर सूने तीनों लोक हुए ॥
मुझ पामर पर भी गुरुवर कृपा दृष्टि बरसा देना,
सेवा चरण की कर न सका, भारी अपराध भुला देना।
जन जन के भगवन् गुरुवर का सदा-सदा जयकारा हो,
ध्यान रहे सदा श्री चरण में जीवन सफल हमारा हो ॥



पूर्णिमा का मयंक

साध्वी श्री प्रमोद कुमारी जी म०

ये तरुण साध्वी स्व० स्वनामधन्या श्री पद्मश्री जी म० की सुशिष्या श्री पवन कुमारी जी म० की शिष्या हैं। अध्ययन और सेवा रुचि वाली साध्वी जी से समाज को बहुत आशाएँ हैं। विराग भाव से प्रेरित होकर दीक्षित होना और संयम मार्ग में सतत गमन करना गौरव की बात है।



क्या पुनीतात्मा जग से विदा हो गई ?
अवलोकन करते २ दृष्टि से ओझल हो गई।
हा दुराव ! पूर्णिमा का मयंक, निशा हो गई।
अकस्मात् गुरुदेव से जुदाई हो गई ॥१॥

जि० गुड़गावां में ग्राम एक दड़ौली है निराला।
रहता था बलदेव विप्र वैभव वाला।
महताव कुंवर के आत्मज शंकर नौनिहाला।
ब्राह्मण कुल के थे वो उजाला ॥२॥

बाल्यकाल में धर्म से लौ लागी,
यौवन वय में संयम की भावना जागी।
स्व० गुरु काशीराम जी के हो गए चरणानुरागी,
सम, दम, खम, युक्त बन गए त्यागी ॥३॥

फाल्गुण शुक्ला वार गुरु द्वितीया आई,
अन्तस्तल विदारक सन्देश वो लाई।
जन क्रन्दन से वसुन्धरा थर्राई,
हा गुरुदेव! विश्व से ले गए विदाई ॥४॥

फूटा सहसा! वह चला गम का फव्वारा,
नयनों से वह रही सब के अश्रुधारा,
राजेन्द्र-महेन्द्र आदि के थे केवल एक सहारा,
हा छिप गया! जैन का दिव्य सितारा ॥५॥

बड़ौत शहर (मेरठ)
५-४-१९६८

दिव्य सितारा टूट गया

मुनि श्री महेन्द्र 'कमल'

बाल कवि मुनि महेन्द्र की रचनाएँ उपनाम 'कमल' से प्रकाशित होती हैं। दीक्षा और आयु से लघु संत होते हुए भी 'कमल' प्रतिभा और प्रकृति से आदरणीय हैं। ये उपप्रवर्तक श्री मोहन मुनि जी के शिष्य हैं। इनका विचरण क्षेत्र मेवाड़ है। समाज को इनसे आशाएँ हैं।

तर्ज — दिल लूटने वाले जादूगर ... ..

जिन शासन का एक दिव्य सितारा, [illegible]।
एक शुक्लचन्द्र [illegible] ॥
पंजाब भूमि का एक [illegible]।
था श्रमण संघ का एक [illegible] ॥
सच्चा साथी था [illegible]......

अमृतमय वाणी सुनने को, ये कान सदा अकुलाएँगे।
वह ओज पूर्ण व्यक्तित्व कहो, कैसे हम उसको पाएँगे॥
एक भ्रमणशील, अमृत घट था वो, फूट गया जी फूट गया......
हे कोटि कोटि जन मन नायक, हे विरल विभूति धर्मप्राण।
हे सरल स्वभावी संत रत्न, हे संघ प्रवर्त्तक हे महान्॥
मुनि 'कमल' समर्पित श्रद्धांजलि है, और खजाना खूट गया......



गुस्ताखी करना हमें माफ।
किया आपने धोखा साफ॥

६ मानो चाहे मत मानो भले।
हम दिलकर दखल स्वर्गो चले॥
बात की बात में बात चली गई।
बस 'शुक्ल' की शुक्ल* सोभा रह गई॥
अजमेर के बाद दर्शन हम नहीं है।
७ "रज़त" के नैन तरसते ही रह गए॥
शान्तितम है वर आत्मा तुम्हारी।
यह साकार बने लहरें हमारी॥

१ अप्रैल, १९६८



शुक्लचन्द्र की कलाएँ तो सदा अविनाश हैं

मुनि श्री 'कुमुद, (मेवाड़ी)

उदीयमान तरुण कवि मुनि श्री सौभाग्यचन्द्र 'कुमुद' जी अच्छे मिलनसार और भावुक प्रकृति के व्यक्ति हैं। प्रचलित गीत आदि लिखने की पद्धति में एक साहित्यिक भाव और भाषा की दृष्टि से नया मोड़ देने वाले प्रथम तरुण संत हैं। आयु, विचार एवं प्रकृति आदि सब में एक नूतनता है। श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री अम्बालाल जी म० के सुशिष्य हैं। हिन्दी, संस्कृत, राजस्थानी आदि भाषा पर आधिपत्य है आपका।



एक रेखा खिंच गई, स्वर्णिम क्षितिज के पार तक।
भर गया आलोक नव, "भू" से त्रिदिव संसार तक॥
एक ज्योति जो यहां पर, कोटि जब मन मोहती।
चल पड़ी कुछ अंश लेकर, दिव्य मय अवतार तक॥
उठ रहा आलोक का एक, चक्र सा नभ के उधर।
रिक्तता कुछ आ गई देखो, जरा भू के इधर॥

---

*श्वेत

देह जिसमें भव्यता थी, ओज था आभा अनूठी।
ढल गई किन्तु अलौकिक, ज्योति तो उसकी अमर ॥

आवरण था मूर्त्त का, केवल उसी का नाश है।
शुक्लचन्द्र की कलाएँ, तो सदा अविनाश है॥

शोक मत कर ए धरा के, व्यक्ति अपने स्वार्थ से।
ज्योतियां कब कैद होकर, रह सकीं गर पास है॥

स्वर्णिम प्रभा के पुञ्ज औ; अवतार गुण के ज्ञान के।
संघ के आजन्म प्रहरी, पात्र सर्व सम्मान के॥

चल पड़े, हम रोक भी सकते नहीं, विवश हैं।
दो फूल श्रद्धा के "कुमुद" के, लीजिए कुछ जाग के॥



दमकता सितारा

मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज "यश"

ये युवक संत श्रद्धेय तपस्वी श्री श्री चंद जी म० के सुशिष्य हैं। उपाध्याय प्रवर श्री अमरचन्द जी म० कि पारिवारिक संत हैं। स्वभाव से मिलनसार और विनम्र हैं। प्रवक्ता एवं कवि हैं।



दीन दुखियों का तू सहारा था,
सन्त मुनियों का प्राण प्यारा था।
दिल में बहता था प्यार का दरिया;
तू दमकता सा इक सितारा था ॥१॥

× × ×

दिल में रहता था दर्द दुखियों का,
लब पे उल्फत का इक तराना था।
इसी से तो "शुक्लचन्द्र" तेरा;
सारा आलम ही तो दीवाना था ॥२॥

× × ×

चहकती बुलबुल तो सिर्फ है बहारों में,
तू खिजां में भी चहक लेता था।

ऐसा गुल था तू आलमे-मुसर्रत का;
जो तोड़ने पर भी महक देता था ॥३॥

× × ×

अश्क को ढालता था नग़्मों में,
सोज़ को साज़ में बदलता था।
ऐसा आलम से तू निराला था;
जो ज़ख्म खाकर भी फूल उगलता था ॥४॥

× × ×

राहें-उल्फत का सफीर तू ही था,
रोशनी का ज़मीर तू ही था।
तू निराला था, पाक दामन था;
एक सच्चा फकीर तू ही था ॥५॥

× × ×

मिला जिसको तेरे प्यार का साया,
उसको आफत न फिर सताती थी।
देखा जिसको मेहर की नज़रों से;
उसकी किस्मत ही जाग जाती थी ॥६॥
याद में तेरी आज ऐ मुनिवर!
खोया सा हर उदास चेहरा है।
भर सकेगा जिसको कोई न मरहम;
लगा ज़ख्म दिल पे ऐसा गहरा है ॥७॥

× × ×

तेरे औसाफ की शमा दिल में,
लेके यादों को हम जलायेंगे।
तेरा जो भी मिशन था ऐ मुनिवर!
उसको आगे ही हम बढ़ायेंगे ॥८॥

मालेरकोटला—२३.५.६८।



शुक्ल पक्ष का चाँद कहां है!

श्री साध्वी प्रेम कुमारी जी म०

स्वनामधन्या श्रद्धेया श्री पन्नीदेवी जी म० पंजाब के साध्वी वर्ग में अपना एक भिन्न स्थान रखती थीं। आप व्याख्याता, विदुषी एवं करुण हृदय की थीं।

आपका अधिकतर विचरण क्षेत्र उ०प्र० एवं दिल्ली रहा है। साध्वी श्री प्रेम कुमारी जी उन्हीं की योग्य शिष्याओं में से एक हैं। आप भी स्वभाव से शांत एवं मिलनसार हैं। व्याख्याता एवं विदुषी साध्वी हैं। ⊙



हाय ! अचानक यह कैसा तूफान है आया ?
जैन गगन में मातम बादल बनकर छाया ।।
गई रोशनी, घोर अंधेरा फैल गया है।
आज धरा से स्वर्ग लोक को देख गया है ।।१।।

अरे हृदय ? क्यों पागल सा तू इधर घूमता ?
उधर विधाता तेरे गुरु के प्राण लूटता ।।
देख आज इस धरती का इक दीप बुझ गया !
ज्ञान उठा, वैराग्य उठा, इक चान्द उठ गया ।।२।।

जैन गगन का एक सितारा टूट गया है।
श्रमण संघ की आंख का तारा रूठ गया है ।।
लघुतर, लघुतम, संत, साध्वी, छोड़ चल दिया।
महा शुक्ल था शुक्ल पक्ष की ओर चल दिया ।।३।।

अन्त समय गुरुवर ने तब तो यही विचारा।
समाधिस्थ हो, मृत्यु लोक से करूँ किनारा ।।
फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को रात्रि में आकर।
चुरा ले गया काल चोर सा 'प्राण' छुपाकर ।।४।।

गाम्भीर्य को देख स्वयं सागर थर्राया।
धैर्य शक्ति को देख सुमेरु पर्वत शर्माया ।।
बैठ साधना-अंक विश्व को भूल गया तू।
क्षमा-नाव से जीवन-नदिया तैर गया तू ।।५।।

तरुणाई तेरे जीवन में ही आई थी,
तभी मिल गया तुझे एक वैराग्य सारथी।
मोड़ दे दिया तेरे जीवन रथ को उसने,
आत्म-राधना मंत्र तुझे सिखलाया उसने ।।६।

तूने दुखियों के दुःखों को दूर कर दिया,
तूने उनकी आंखों में अनुराग भर दिया।

गहन तत्त्व की गहराई को मापा तूने,
कविता की सरसाई को भी आँका तूने ॥७॥

विषय-वासना को मथ डाला ज्ञान-योग मथनी से,
छान दिया अभिमान छाछ सम, क्षमा योग की छलनी से।
तेरा रूप झूलता मेरी आँखों में अविराम वहाँ,
पंजाब केसरी पूज्य श्री काशीराम चश्में नूर जहाँ ॥८॥

शुक्लचन्द्र महाराज आपका ध्यान शुक्ल था,
सत्य, अहिंसा, जीवन का अविराम लक्ष्य था।
गूँजी थी आवाज देश के हर कोने में,
भूले भटकों को दिखलाया सत्पथ जग में ॥९॥

मिथ्या, पाखंड-कारा का गढ़ तोड़ गिराया,
किंचित् भी तू तर्कवाद से नहीं घबराया।
अम्बर नीचे ज्योतिर्मय रवि बनकर चमका,
उग्र-साधना की लपटों में तपकर दमका ॥१०॥

दुनियाँ को उपदेश सुनाता स्वयं सो गया,
सानी था तू ज्ञान-कक्ष में स्वयं खो गया।
घोर निशा में हाय ? सितारे तुझे ढूँढते,
'शुक्ल-पक्ष का चाँद कहाँ है ?' सभी पूछते ॥११॥

श्रद्धा के बीजों का तूने वपन किया था,
सींच-सींचकर शुष्क हृदयों को सरस किया था।
मानव के हृदयों का तू सम्राट् विरल था,
रूप, रंग और वाणी से तू देव तुल्य था ॥१२॥

आज तुम्हारी शिक्षा भी कुछ बोल रही है,
मानव-मन की गहराई को तोल रही है।
पूछ रही है 'कहां गया मेरा परमेश्वर' ?
सूनी करके देह स्वयं यह पार्थिव नश्वर ॥१३॥

देव ! तुम्हारे चरणों में ये अश्रु-पुष्प हैं,
करो इन्हे स्वीकार, हृदय के टूटे स्वर हैं।
आज मेरे अरमानों से रक्त निकलता,
तेरे बिन ओ देव ! मेरा मन हाय पिघलता ॥१४॥

तेरे मन की निश्छलता जैसे हो झरना,
रुकना नहीं साधना-रत औ बढ़ते जाना।
और पहुँचना अन्तिम दम तक ऊँचाई पर,
जन्म-मरण से छूट बनें "प्रेम" तीर्थंकर ॥१५॥

भावभरी श्रद्धाञ्जली

उपप्रवर्त्तक कविरत्न श्री चन्दन मुनि जी म०

श्रद्धेय कवि श्री जी तपस्वी श्री पन्नालाल जी म० के सुशिष्य हैं। आप पंजाब प्रदेश के प्रमुख संतों में से हैं। हिन्दी, संस्कृत भाषा के साथ आप प्रदेश की लोक भाषा पंजाबी में निष्णात हैं। स्वभाव से मिलनसार पर अपनी अनख के धनी हैं। प्रवचनकार और कवि हृदय हैं। हिन्दी के साथ साथ आपकी पंजाबी भाषा में चरित्र ग्रन्थ और संगीत की रचनाएं दर्जनों ही प्रकाशित हो गई हैं। जैन साहित्य में आपकी रचनाएं अपना एक स्थान रखती हैं।



१ शुक्लचन्द्र महाराज गुणी थे, पहुंचे ज्ञानी-ध्यानी थे।
प्रवर्त्तक, पण्डित रत्न कवि थे, अद्‌भुत निराभिमानी थे॥
२ सदा भलाई चाहते सब की, नहीं किसी की हानि थे।
जप-तप की वैराग, त्याग की, ऐसी नेक निशानी थे॥
३ करुणा के थे सागर सुन्दर, दया, दान के दानी थे।
हित, मित, सरल, सत्य, सुखदाई, कोमल-कोमल वाणी थे॥
४ बड़ा भले हो छोटा सब पे, रखते मेहरबानी थे।
रहन-सहन से, बोल-चाल से, सच्चे हिन्दोस्तानी थे॥
५ मारवाड़-मेवाड़ गए फिर, भारत की रजधानी थे।
कच्छ-काठियावाड़ पधारे, ऐसे सन्त सैलानी थे॥
६ ज्ञान भरे दे भाषण करते, सफल जगत-ज़िन्दगानी थे।
पावन चरण कमल में उनके, झुकते राजा-राणी थे॥
७ संघ-ऐक्य के उनके अपने बड़े विचार लासानी थे।
कहना चाहिये प्रेम-प्यार की, इक वह अमर कहानी थे॥

८ सन्त मिलेंगे बहुत मगर उन जैसा मिलना मुश्किल है।
किसी सती को, साधु को लख, खुश हो खिलना मुश्किल है॥
९ जो भी मिला स्नेह से फ़ौरन, अपना उसे बनाते थे।
खूबी खास यही थी वह भी, उसके ही बन जाते थे॥
१० दुनिया के प्रपंचों से था, उनको कोई काम नहीं।
द्वेष, दम्भ, छल-छन्द, कुटिलता, का था लेते नाम नहीं॥
११ जन्म बिताया अधिक जागने, और बहुत कम सोने में।
दया, सत्य-सन्देश पहुँचाया, जग के कोने-कोने में॥
१२ गौड़, ब्राह्मण वंश, ज़िला गुड़गांवां के उजियारे के।
बलदेवराज, महताब कुंवर के प्यारे राजदुलारे थे॥
१३ जैनाचार्य काशीराम जी, जो कि सन्त निराले थे।
शिष्य उन्हीं के आप श्री जी, भारी भोले भाले थे॥
१४ जैन रामायण कविता में तो, भाषा जैन महाभारत।
और अनेकों ग्रन्थ लिखे हैं, एक-एक से जो अद्‌भुत॥
१५ जन्में नगर रिवाड़ी में तो, गए स्वर्ग जालन्धर से।
अन्तिम दर्शनहित नर-नारी, उमड़े एक समुन्द्र से॥
१६ मुनिरत्न पंजाब देश के, दुनिया रोती छोड़ गए।
चारों तीर्थ से निज नाता, सदा-सदा को तोड़ गए॥
१७ दोसहस चौवीस तजा तन, जन्मे उगनी सौ बावन।
उगनी सौ तेहत्तर दीक्षा, वर्ष बहत्तर कुल जीवन॥
१८ भरी गुणों से जीवन-गाथा, कोई नहीं भुलायेगा।
बच्चा-बच्चा आप श्री की, महिमा मुख से गायेगा॥
१९ सींचा आप श्री का महके, जैन संघ का यह गुलशन।
'चन्दन' चरण कमल में रखता, अर्द्ध खिले ये श्रद्धा-सुमन॥

साथी की याद में

स्व० प्रवर्त्तक श्री जी के साथी श्रद्धेय श्री अम्बालाल जी म० ने जो कि श्रमण संघीय प्रवर्त्तक हैं अपने हृदय के उद्‌गार निम्न संक्षिप्त रचना कलेवर में प्रस्तुत किए हैं। भाषा राजस्थानी है क्योंकि प्रवर्त्तक जी का विचरण क्षेत्र अधिकांश रूप से मेवाड़ एवं राजस्थान ही है।



१ कठै सुहाणो संत वो, कठै अनोखी आव।
शुक्लचन्द्र के जावतां, सूनो व्यो......पंजाब॥

२ गुण रसियो मन में वस्यो, शुक्लचन्द्र अणगार।
धिक् धिक् काल कुलक्षणो, हर्यों संघ सिणगार॥

३ वाणी गणी जु मोवणी, इमरित री डलिया ह्।
कान पियासा वहेर्या, ढूंढे किण गलियाह॥

४ गगण चंद पिण कलकयुत, शुक्ल रफटिक नहीं चंद।
पै दो गुण मिलदेह धरि, भयो जु शुकल चंद॥

५ मिलन्ता मन हरखता परपूठे हित चिन्त।
'अम्बा मुनि' ने कद मिले, ये लाखीणा मिन्त॥



शुक्ल-वियोगाष्टक

प्रवर्त्तक मरुधर केसरी पं० रत्न श्री मिश्रीमल जी म०

मरुधर केसरी जी महाराज से कौन अपरिचित होगा। ये एक सेनानी मुनिराज हैं। जिन्हें अपने सम्मान से पहले श्री संघ का सम्मान प्रिय है, उसके लिए सर्वस्व त्याग करने को कटिबद्ध रहते हैं। अ०भा०वर्द्ध०स्था० जैन श्रमण संघ के तो वे प्राण ही हैं। आगम ज्ञान के साथ संस्कृत, प्राकृत एवं राजस्थानी भाषा पर अधिकार है। आपको कविता का प्रेम है, स्वयं कवि भी हैं। आपकी कविताएँ पुरातन पद्धति को लेकर चलती हैं। स्वभाव से निश्छल, स्पष्टवादी तथा अनेक संस्थाओं के प्रेरक। स्व० प्रवर्त्तक जी म० के विशेष साथियों में से हैं।



दोहा

१ श्वेत-हृदय तन श्वेत पट, श्वेताचार-विचार।
श्वेत सुगुन सित ध्यान शुभ, धन्य 'शुक्ल' अणगार॥

सवैया

२ 'सोहन' को जु सुशोभित शासन, मोहन 'काशियराम' सु-पायो।
थोहन थंभ सुधर्मः सुगच्छ को, खोहन पाप को वीर कहायो॥

द्रोह न थो उर-वीच जरा अरु, क्रोह न लोह न आप जरायो।
जोहन जैन दिपाय दिवाकर, 'शुक्ल' मुनीश्वर स्वर्ग सिधायो ॥
३ 'जैन प्रकाश' पढ़यो पुर सोजत, तहिसे चित्त घरणो अकुलायो।
मोहन मित्र सु 'शुक्ल' मुनि' तन-नश्वर छोरि के आज विलायो ॥
नेउ की साल से नेह वढ़यो अति, उज्जवल संत हमें दरसायो।
काल कराल करी तु धिक, संत समाज को दीप वुझायो ॥
४ साधु-समेलन पच किये नहि, खंच करी अति टंच रहायो।
रंच टि फूट गमी न तुम्हें, संत-मंच पँ मौन सदा लख पायो ॥
नाहि कियो परपंच वृथा जिन शांति-सुधारस ही वरसायो।
ज्योति गई जु जलंधर में, नद पंच प्रदेश सु शून्य लखायो ॥

दोहा

५ ध्यान शुक्ल विन शिव कहाँ— शुक्ल विना तम-नाश।
श्रमण-संघ विन 'शुक्ल' के, कैसे करे उजास ॥
६ रत्न अमोलक आप-सो मिले फिर मुश्केल।
करसी कुण पंजाब में, सन्त-संघ में मेल ॥
७ 'श्रीमल' मुनिवर गो प्रथम, फिर गो 'पन्नालाल'।
शुक्ल सिधावत संघ हा ! भयो दुखित वेहाल ॥
८ अन्तेवासी आप के, चले आपकी राह।
रहे मगन मुनि-मार्ग में, वाजे जग वा-वाह ॥
९ आत्म-शान्ति अनहद मिले, मम इच्छा यह मिन्त।
विनय यही जिन वीर से, श्रद्धा-युत निश्चिन्त ॥

अस्त हो गया

मुनि श्री दाताराम जी म०

मुनि जी स्व० प्रवर्त्तक श्री जी के पौत्र शिष्य हैं। विराग भाव से दीक्षा ग्रहण करके तप और सेवा में लीन रह संयम पालन में रत हैं।

जैन धर्म का अस्त हो गया दिव्य सूर्य आज,
पूज्य शुक्लचन्द्र महाराज !
सौम्य मूर्ति कहाँ पुकारे रो रो जैन समाज, पूज्य... ॥१॥

धन्य-धन्य महताव कुंवर, माता का लाल कहाया,
संवत् उन्नीसो इकावन में, जन्म दड़ौली पाया।
शुक्लचन्द्र से शुक्ल चन्द्र हां पिता बलदेव श्रीराज, पूज्य... ॥२॥
भर यौवन में संयम धारा, अमृतसर मंझधार,
संवत् उन्नीसो वर्ष तिहत्तर, जय जय करे नर नार।
दीक्षा गुरु जैनाचार्य सोहनलाल महाराज, पूज्य... ॥३॥
पंजाव केसरी गुरु आपके, पूज्यवर काशीराम,
युगों-युगों तक अमर रहेगा, जिनका मंगल नाम।
प्रखर वक्ता भारत भूषण जैन धर्म सिरताज, पूज्य... ॥४॥
बत्ती शास्त्र पढ़े आपने, अमृत मयी थी वाणी,
प्रभावशाली व्यक्तित्व अद्भुत, जीवन था लासानी।
प्रान्त मंत्री प्रवर्तक, पण्डित रत्न युवराज, पूज्य... ॥५॥
डगमग-डगमग संघ नावा के सफल एक पतवार,
अखिल भारतीय श्रमण संघ के दृढ़ स्तम्भ आधार।
चाँद से निर्मल फूल से कोमल, तारणतरण जहाज, पूज्य... ॥६॥
चरम चौमासा जालन्धर में, किया आपने भारी,
देह त्याग हां स्वर्ग पधारे, गुरुवर बाल ब्रह्मचारी।
तप त्याग उज्जवल संयम से सफल किए सब काज, पूज्य... ॥७॥
रो-रो आंखें सूज गई हैं दर्श दिखा इक बार,
बरबाद हो रहा उपवन तेरा आकर इसे सुधार।
मुनि 'दाता' के जीवन के तुम हो उतम साज, पूज्य... ॥८॥



श्रद्धा कुसुम

प्रवक्ता पं० श्री शांतिस्वरूप जी महाराज

श्रद्धेय श्री जी आचार्य सम्राट् श्री सोहन परिवार एवं पंजाव के मान्य संतों में से हैं। घोर तपस्वी, सरलात्मा श्री निहालचन्द्र जी म० के सुशिष्य हैं। प्रवक्ता, लेखक एवं निपुण चर्चावादी संत हैं। स्वभाव से गंभीर, ज्ञान के धनी एवं योगाभ्यासी श्रमण हैं। पंजाव प्रदेश में तेरापंथ शास्त्रार्थों में आप का नाम अग्रणी रहा है। आजकल लगभग २० वर्ष से मेरठ (उत्तर प्रदेश) में पूज्य

गुरुजनों की सेवा में रत हैं। आधुनीकरण के पक्षपाती होते हुए भी आप आगम मर्यादा के धनी हैं।

जन्म मरण के घोर चक्र पर आवर्तित जग सारा,
पुनः पुनः बन्धन में लेती यह कर्मों की कारा।
शुक्लचन्द्र ! चिरधन्य, आपने स्वपुरुषार्थ के द्वारा,
आस्रव के गढ़-कोट गिराये, संयम को स्वीकारा ॥

ओ विशिष्ट यात्री ! अमरों का लोक आपने पाया,
वीराचरित त्रिरत्न मार्ग से भव को बोध सिखाया।
अनुपम ऋण आपका, अनन्य उपकार विभूति असीमित,
अखिल लोक के लिए पुण्यनिधि अहो ! आपके सुकृत ॥

शुक्ल स्मृति के वर्णसमुच्चय अमृत की अंजलियां,
शब्द-शब्द पर यशोव्योम की अर्पित तारावलियां।
ब्राह्मणकुल, स्वभाविक ही जो ब्रह्मनिष्ठ, आत्मार्थी,
भंगुर इन संसार सुखों का रहा नहीं क्षण प्रार्थी ॥

सोहन गुरु प्रशिष्य, न हों फिर शोभन वृत्ति सहित क्यों ?
साध्वाचार परायण, दुर् अतिचार विचार रहित क्यों ?
ज्ञानार्जन, स्वाध्याय, ध्यान-सामायिक महाव्रती थे,
सुधासिक्त वाणी के वक्ता, शुक्ल चन्द्र सुकृती थे ॥

शुक्लचन्द्र में कृष्णचन्द्र की क्षमता कहाँ समाती,
नित्य पूर्णिमाओं का गौरव तिथियाँ तुमसे पातीं।
ज्ञानामृत वर्षण करते वक्तृत्व कलाओं द्वारा,
कैसे भूलेंगे श्रावक धर्मामृत स्नेह तुम्हारा ॥

यह पंचम (कलि) काल, भोग आच्छादन निरत जन,
विलासिता के सहस्र माया प्रपंच हरते तन मन।
दुष्कर, अति दुष्कर निवृत्ति का मार्ग, योग, संयम, तप,
अहो ! वीर के अनुयायी ने सहज लिया वीरव्रत ॥

धर्मछत्र ! तुम पाप ताप का विनिवारण करते थे,
शुक्लचन्द्र ! अज्ञान तिमिर में ज्ञान किरण धरते थे।
कुमुद विकासनशील हुए तुम कुमुद तिरस्कारी भी,
विधु दोषाकर, तुम गुण-आकर तुल्य वर्णधारी भी ॥

ओस वेले दा इहदा मैं त्याग दसां,
इक मित्र नूं मिलन गए ओहदे मकान अन्दर।
माता मित्र दी वेख के रोन लग पई,
बैठी होई सी जेहड़ी देलान अन्दर॥

इहना पुच्छया माता कि होइया,
तूं क्यों इहना कुरलान लग पई।
कि मेरे आवने दा कोई दुख होया,
या किसे दी याद सतान लग पई॥

ओह रोई जावे कुछ न बोले,
हौके भरदेयां उन्हांने इह गल सुना दित्ती।
काका जिस कुड़ी नाल इहदी सी होई मंगनी,
उन्हां इहदी छड के तेरे नाल करा दित्ती॥

सुनदेयां नाल हैरान हो गए,
कहंदे इस गल वल मेरा ध्यान ही नहीं।
रिश्तेदारियां, मंगनीयां, टंगनीयां दा,
माता मैंनूं बिल्कुल ज्ञान ही नहीं॥

मेरा मन है वीर दीदार अन्दर,
मैं नहीं फसना विषय विकार दे विच।
सच्चा संत जैन दा बनना मैं माता,
मैं नहीं रहना गृहस्थ संसार दे विच॥

अच्छा तेरे चरणा विच माता मैं प्रण करनां,
किसे नाल वी नहीं व्याह करावांगा मैं।
उमर सारी रवांगा ब्रह्मचारी,
मर जान तक प्रण निभावांगा मैं॥

भाग घर दे ड्योढियों स्थय पेंदे,
छोटी उमर विच ई कर कमाल दित्ता।
जो कुछ कहया तोतली जबान विचों,
वड्डे हो के कर विखा दित्ता॥

ववंजा साल विचरदे रहे स्वामी,
नगर-नगर विच खूब प्रचार किता।

युवराज, प्रवर्तक पंडित रत्न संयमी आखिर,
जालन्धर शहर विच आ उपकार किता ॥
बिमारी आई सी ते गई सी कई वारी,
पर दौरा दिल दा नागवार आया ।
आया छाती विच पहली वार जालिम,
फड़न बुलबुल नूँ जिवें स्याह आया ॥
सुती कौम दी किस्मत ने अख खोली,
बुझदा दीपक फिर टिमटिमा उठ्या ।
होली-होली फेर जालन्धर शहर पुज्जे,
सूर्य ज्ञान दा उत्थे जगमगा उठ्या ॥
शीतल लेश्या दी सुन्दर महक वाला,
मर-मर के हर इक नूँ जान मिलया ।
आनन्द ऋषि जी चल के इंज आये,
जिवें भरत नूं आन के राम मिलया ॥

फरवरी ६८ विच फिरो गजब होइया,
दौरे दिल नाल बलड प्रैशर ने वी वार किता ।
दवा दारू आया न कम कोई,
आक्सीजन ने वी न कोई सुधार किता ॥
सेवा मिल के सारेयां ने बड़ी किती,
पर पापन मौत ने डाढा लाचार किता ।
२१ फरवरी शामी प्रतिक्रमण करदे,
शुक्ल गुरु जी ने अन्तिम विहार किता ॥
सुनदयां नाल ही हाहाकार पै गई,
छोटा वड्डा सी हर नर-नार रोया ।
रोई धरती ते नाले आकाश सत्ते,
जालन्धर शहर दा दरो दिवार रोया ॥

२०० तारां ते टेलीफून वज्जे,
जगहां-जगहां ते फौरन पहुँचा दित्ते ।
रेडियो बोल उठ्या अखबारां ने लिख दित्ता,
तीर वियोग दे होनी ने चला दित्ते ॥

शहर-शहर दे लोग सी होए इकट्ठे,
दो मार्च नूं जलूस तैयार किता।
विमान तैयार इक बेनजीर करके,
शुक्ल पक्ष विच शुक्ल नूं स्वार किता॥

चन्दन २० मन दोशाले होए चाली,
वाजे गाजेयां दा उथे शुमार कोई न।
भजन मंडलीयां दा वी उथे अन्त कोई न,
नर नारीयां दा पारवार कोई न॥

जलूस तुर पिया वड्डे बाज़ार अन्दर,
महिमा गुरु जी दी लोग पये गांवदे सन।
थां-थां ते छबीलां लगीयां सन,
लोग चबीरा ते फुल वरसांवदे सन॥

फोजी बैंड ने मातमी धुन करके,
सरदा भगती नाल आदर सत्कार किता।
हवाई जहाज ने किती पुष्प वर्षा,
ओन्हांने आकाश विचों ई नमस्कार किता॥

गांधी पार्क विच चिता जद होई रोशन,
दो लख अख उथे जारोजार रोई।
वहदीयां अखीयां ते रोंदे दिलां विचों,
पंडित रत्न जी दी जय जयकार होई॥

सोहने पूज दी ओह निशानी सोहनी,
जीवन अपना सफल बना गई ए।
पंजाब केसरी जी दे बाग गुलज़ार अन्दर,
शीतल लेश्या दी महक फैला गई ए॥

जम्बु स्वामी ते शुक्ल रामायण लिख के,
विद्वता आपनी ओह दर्शा गई ए।
साडीयां अखां तों होके ओह ओझल,
तीर विछोड़े दा सानूं ला गई ए॥

उह भागवान हस्ती हुन अमर हो गई,
विच ज्योति दे ज्योति समा गई ए।

वलैती राम ने लिखी एह श्रद्धाँजलि ए,
रहदीं दुनियां तक नां चमका गई ए ।।

—ला० विलायतीराम जैन 'कसूरवाले' जालन्धर शहर ।

श्री शुक्लचन्द्र उपकारी

(तर्ज —सावण का महीना...)

१ श्री शुक्ल चन्द्र उपकारी पूर्ण सी ब्रह्मचारी ।
इस दुनियां नूं छड के कीती स्वर्गपुरी दी त्यारी ।।
२ पूज्य सोहन लाल दी शमा दा परवाना ।
तेरे गीत गावे अज सारा जमाना ।
पंच महाव्रत धारे और कीती करनी भारी..... ...
३ तप त्याग संयम दी चढ़ गई खुमारी ।
पूज्य कांशीराम तेरी बिगड़ी सुधारी ।
रक्खी जैन फकीरी और जाने दुनियां सारी.........
४ थां थां अहिंसा दी जोत जगाई ।
वीर प्रभु दी मिठी वानी सुनाई ।
तुसां लखाँ पापी तारे, कई तारे नर और नारी.......
५ शुक्ल चन्द्र तेरी है धन कमाई ।
धर्म लेखे सारी है उमर लगाई ।
चैनलाल जैसे सेवक तेरे चरणा तो बलिहारी.. ......

—श्री चैन लाल जैन, चूड़ियां वाले, श्री जैन मित्र मंडल, अमृतसर ।

"आज साया उठ गया है"

आंधियां कुछ आ रहीं हैं, ये घटा गहरा रही हैं ।
आज उफना है समुन्दर, नाव है लहरों के ऊपर ।।
ना खुदा भी चल बसा है, आज साया उठ गया है ।।१।।
जिन्दगी बेचैन है अब, फिक्र ही दिन रैन है अब ?
किसका लेवेंगे सहारा, किससे पूछेंगे इशारा ।
अब रहा नहीं आसरा है, आज साया उठ गया है ।।२।।

जब कभी छाया अंधेरा, था किया उसने उजेरा,
जब कभी भी खाई ठोकर, तब संभाला बनके रहबर।
अब नहीं कुछ भी रहा है, आज साया उठ गया है ॥३॥

जो भी ये कुछ जिन्दगी है, जो मिली कुछ भी खुशी है,
कुछ समझते हैं धरम को, कुछ निकाला है भरम को।
ये सभी उसकी दया है, आज साया उठ गया है ॥४॥

रोते बच्चे हैं सिसक कर, जा रही धरती खिसक कर,
आज किस गोदी में सोएँ, सामने किसके जाकर रोएँ।
अब कहां सब का पिता है, आज साया उठ गया है ॥५॥

ठहर दिल ! अब रोक ले गम, पास हैं वो तेरे हरदम,
जब थी सच्ची याद आई, तब मिलेगी रहनुमाई।
बस यही अब सोचना है, आज साया उठ गया है ॥६॥

हे कृपालु शुक्ल गुरुवर ! रोशनी की लौ मुनव्वर,
संघ के प्रवर्तक मुनि जी ! शान्त मुद्रा पण्डित श्री जी !
याद मन करता सदा है, आज साया उठ गया है ॥७॥

—श्री केसरदास जैन,
ता० ३.३.६८ वांसां वाला बाजार, जालन्धर शहर।



तुम्हें कहता है मुर्दा कौन ?
तुम जिन्दों के जिन्दा हो।
तुम्हारी नेकियां बाकी,
तुम्हारी खूबियां बाकी।

—लाला अमरनाथ जैन, शाहकोट।



श्र

द्धा



श्रं

ज

लि

यां



[गद्य]

स्व० प्रवर्त्तक श्री जी

प्रवर्त्तक श्री जी महाराज पंजाव प्रान्त के एक लब्ध प्रतिष्ठ, शांत स्वभावी मिलनसार संत थे। आपके दिल में श्रमण संघ विषयक अत्यन्त प्रेम था। प्रान्तीय श्रमण संघ में संत-सति वर्ग के लिए प्रवर्त्तक श्री जी म० आधारभूत थे और अपने हर एक को अपनी शीतल छाया में शाँति पहुँचाई थी।

—आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी म०

वास्तव में वे श्रमण संघ के एक महाप्राण निष्ठावान संत थे। मधुर प्रवक्ता और मूक सेवाभावी। उन्होंने समाज और धर्म की वहुत २ सेवा की है, पर सेवा करके भी वे सदा विनम्र और मधुर वने रहे।

—उपाध्याय प्रवर श्री अमर चन्द्र जी म०

प्रवर्त्तक श्री जी म० हमारे पंजाव श्रमण गण के सहारे थे और खास तौर पर स्व० आचार्य सम्राट् संत-शिरोमणि पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के महामुनि कुल के एक प्रतिष्ठित, यशस्वी तथा विशाल छत्र थे, उनकी छाया तले सव ने शांति पाई थी।

—श्री कपूरचन्द्र जी म०

(स्व० आचार्य सोहन परिवार के प्रमुख)

इससे वढ़कर और क्या क्षति हो सकती है? पूज्य श्री जी के पश्चात् जो पंजाव के वातावरण को उन्होंने संभाल कर अपनी दृढ़ता का परिचय दिया था।

— उपप्रवर्त्तक श्री रघुवरदयाल जी म०

वे शांत आत्मा थे सवको सांत्वना देने वाले थे, वे ज्ञान की मूर्ति थे। वे पंजाव में अनूठी शान से विचरते थे।

—उपप्रवर्त्तक श्री हेमचन्द्र जी म०

समाज की विभिन्न कड़ियों को सहिष्णुता एवं आत्मीयता के धागे में जोड़े रखना ही दिवंगत श्री शुक्लचन्द्र जी म० का सवसे महान कार्य था।

—मुनि श्री सुशील कुमार जी म०

एक लब्ध प्रतिष्ठ संत

आचार्य सम्राट् श्री आनन्द ऋषि जी म०

अ०भा० वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के आप आचार्य हैं। स्व० प्रवर्त्तक श्री जी से वर्षों पूर्व आपका परिचय रहा है। श्रद्धेय आचार्य श्री जी एक अनुभवी, विद्वान्, तथा कुशल अनुशास्ता संत अधिनायक हैं। स्व० प्रवर्त्तक श्री जी की विनति पर ही आचार्य श्री जी ने पंजाब प्रदेश म पदार्पण किया किन्तु किसे मालूम था कि आपका यह आग्रह और आचार्य श्री जी का आगमन अन्तिम ही है।

प्रवर्त्तक श्री जी महाराज पंजाब प्रान्त के एक लब्ध प्रतिष्ठ शान्त-स्वभावी, मिलनसार संत थे। आपके दिल में श्रमण सघ विषयक अत्यन्त प्रेम था, इसी कारण समाज सगठन प्रीत्यर्थ शारीरिक असमर्थता होते हुए भी सादड़ी, भीनासर तथा अजमेर साधु सम्मेलनों में पधार कर अपना पूर्ण सहयोग दिया था।

अम्बाला के स्वागत समारोह के प्रसंग पर प्रवर्त्तक जी म० ने विशाल हृदय से श्रमण सघ के उत्थान में अपना प्रवर्तक पद के त्याग करने की भी उदारता प्रकट की थी। वह सद्भावना संगठन प्रेमी आत्माओं के अन्तःकरण में प्रशंसनीय एवं स्मरणीय है।

पंजाब प्रान्तीय श्रमण संघ में सन्त-सती वर्ग के लिए प्रवर्त्तक जी म० आधार भूत थे। और आपने हर एक को अपनी शीतल छाया मे शाँति पहुंचाई थी। आपके आकस्मिक वियोग से श्रमण संघ की बड़ी भारी क्षति हुई है। इस समय श्रमण संघीय विचारणा में आपकी उपस्थिति आवश्यक थी।

श्री प्रवर्त्तक जी म० के स्थान की क्षति पूर्ति शीघ्र होकर संघ की शोभा बढ़े, ऐसी शासनेश से प्रार्थना है।

मोगा, जैन स्थानक
दि० १-३-६८

प्रेषक—
पं० नारायणप्रसाद शास्त्री



एक विनम्र, सौम्य मूर्ति

उपाध्याय प्रवर श्री अमरचन्द्र जी म०

श्रद्धेय श्री उपाध्याय म० 'कवि जी' महाराज के नाम से समाज में विख्यात हैं। स्थानकवासी आम्नाय के साथ समस्त जैन समाज के यशस्वी जैन संत हैं। इनके

जीवन में दार्शनिकता, धार्मिकता एवं मानवता के साकार दर्शन होते हैं। कवि श्री जी कुशल प्रवक्ता, व्याख्याकार एवं विद्वान और कवि पुरुष हैं। प्रवचन और साहित्य में समन्वय एवं तर्क को स्थान देकर युगपुरुष बने हैं। स्वभाव से उदार, नम्र, मिलनसार एवं समन्वयवादी हैं। आपकी साहित्यिक कृतियों का सर्वत्र आदर है। स्व० प्रवर्तक श्री जी के प्रति कवि श्री जी के विचार पठनीय हैं।

एक बार श्रमण भगवान् महावीर ने अपने प्रवचन में मानव-स्वभाव पर विश्लेषण करते हुए कहा—कुछ ही मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य होते हैं, उनका जीवन आदर्शों से अनुप्राणित एक ज्योतिर्मय जीवन होता है। वे जहां जन्म लेते हैं वह धरा उनसे कृतार्थ होती है, जिस राष्ट्र और समाज को वे अपना कर्म क्षेत्र बनाते हैं, वे राष्ट्र और समाज उनके गौरवमय कर्तृत्व से तथा प्राणवान व्यक्तित्व से तेजस्वी बन जाते हैं। वे प्रज्वलित ज्योति होते हैं, एक दीप शिखा! जो जीवन भर अन्धकार से लड़ती रहती है, अपने परिपार्श्व को आलोकित करती रहती है, किन्तु कभी अपने कर्तृत्व का पैमाना बनाकर किसी को दिखाने नहीं जाती। भगवान् महावीर के मूल शब्दों में—**अट्ठ करे णामं एगे, णो माणकरे!**" वे अर्थ अर्थात् सेवा आदि महत्त्वपूर्ण कार्य निरन्तर करते जाते हैं, मौन और शान्त, निस्पृह भाव से, किंतु कभी भी उसके फल की आकांक्षा नहीं करते, अपने कर्तृत्व पर कभी अभिमान नही करते।

भगवान् महावीर के इस व्यक्तित्व-विश्लेषण पर मैं सोचता हूँ तो प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का जीवन चित्र मेरे समक्ष उभर जाता है। आप लोग आज उनकी स्मृति सभा में उपस्थित हुए हैं। मुझे ऐसा लगता है कि उनकी पुण्य स्मृतियां पुञ्जीभूत होकर हमारे समक्ष आज उनके आदर्शों की जीवन कथा गा रही हैं।

पंजाब उनका विशेष कर्म क्षेत्र रहा है। और वहाँ की जनता की अगाध श्रद्धा उनके तेजस्वी और कर्मयोगी व्यक्तित्व को प्राप्त हुई थी।

बहुत से व्यक्ति थोड़ी-सी जन-श्रद्धा पाकर गदरा जाते हैं। निन्दा को जहर बताया गया है, किन्तु मैं मानता हूँ, निन्दा से भी अधिक उग्र जहर है श्रद्धा का। श्रद्धा यों जहर नहीं है, किन्तु उसकी दुष्पाच्यता की दृष्टि से ही मैं आपको बता रहा हूँ कि निन्दा का उग्र विष पचाने वाले भी श्रद्धा को नहीं पचा सकते। वे गदरा जाते हैं, दर्प और जन-श्रद्धा के अभिनिवेश में वे अपने को सातवें आसमान से भी ऊँचा गिनने लग जाते हैं। परन्तु प्रवर्त्तक शुक्लचन्द्र जी महाराज को मैंने बहुत निकट से देखा, जैसे-जैसे जन-श्रद्धा, लोक-भक्ति और आदर सत्कार

उन्हें प्राप्त हुआ, वे वैसे-वैसे विनम्र, सरल एवं सौम्य बनते गए।

उनका वचन मधुर था, मन भी मधुरतर! उनका दैहिक वर्ण भी काफी साफ—शुक्ल—उजला था और मन तो और भी शुक्ल!

वास्तव में वे श्रमण संघ के एक महाप्राण निष्ठावान् संत थे। मधुर प्रवक्ता और मूक सेवाभावी! उन्होंने समाज और धर्म की बहुत-बहुत सेवा की है, पर सेवा करके भी वे सदा विनम्र और मधुर बने रहे। सादड़ी सम्मेलन में जब स्थानक वासी जैन श्रमण संघ के ऐक्य संगठन का दिव्य घोष ध्वनित हुआ, तो उन्होंने अपने निर्मल मन से अपना पूर्व साम्प्रदायिक युवाचार्य पद त्याग दिया। प्रसंगवश मनुष्य किसी बड़ी चीज का त्याग कर देता है, किन्तु अन्दर में कुण्ठा घर कर लेती है। परन्तु स्वर्गीय प्रवर्त्तक श्री जी को इसके लिए सर्वथा निर्लिप्त देखा गया। वे युवाचार्य जैसा महान पद, जिसके लिए कितने जोड़-तोड़ लगाए जाते हैं, दौड़ धूप की जाती है, सर्प-कंचुकवत् त्यागकर सदा प्रसन्न रहे। कोई भी मलाल मुख तथा वाणी पर कभी नहीं देखा। वे कहा करते थे, संघहित एवं संघ संगठन के लिए मुझ से जो भी अपेक्षा है, वह मैं सहर्ष करने के लिए सदा प्रस्तुत हूँ। ऐसे थे विलक्षण दिव्यजीवन के धनी प्रवर्त्तक श्री जी यथा नाम तथा गुण। यही 'सत्यं शिवं सुन्दरं' उनके जीवन का आदर्श रूप हमें उनके पश्चात् भी प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन करता रहेगा।

अमर विभूति

उपप्रवर्त्तक श्री रघुवरदयाल जी म०

स्वनामधन्य, वादीमानमर्दक श्रद्धेय श्री गणी उदयचन्द्र जी म० के आप ज्येष्ठ शिष्य हैं। स्वभाव से नम्र और मिलनसार संत हैं। पंजाब श्रमण वर्ग के प्रतिष्ठित संतों में से हैं। आप पहले गणावच्छेदक पद पर भी प्रतिष्ठित रहे हैं।

श्रद्धेय प्रवर्त्तक पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० जिनका २९ फरवरी बृहस्पतिवार के सायं ७ बजे के लगभग स्वर्गारोहण हुआ जैन समाज के विशाल उद्यान के एक ऐसे ही प्रफुल्लित एवं विकसित सजीव पुष्प थे; जिन्होंने अपने जीवन के मधुमय सौरभ से जैन जगत को सुवासित कर दिया था। सं० १९७२ में गृहस्थ जीवन के संकीर्ण घेरे को तोड़ कर अपने पूर्ण त्याग-वैराग्य के साथ जैनेन्द्री दीक्षा धारण की और "उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" भारतीय संस्कृति के इस उज्जवल प्रतीक को हृदयंगम करके विश्व सत्य एवं अहिंसा का मंगलमय संदेश

देकर ५२ वर्ष पर्यन्त जिन शासन को फैलाते रहे। किन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि काल के क्रूर हाथों ने हम से उस दिव्य विभूति को सहसा सदा के लिए छीन लिया।

जैन समाज के आप एक ज्योतिर्धर मुनिराज थे। पंचनदीय श्रमण-समाज के आप ही एक ऐसे कर्णधार थे जो संघ की नैय्या जब भी डगमगाती थी तो आप ही उसे बड़ी सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता से गतिशील करते थे।

आत्म निष्ठ एवं दूरदर्शी होने के साथ साथ आप का प्रखर पाण्डित्य भी इतनी उच्च कोटि का था कि जैनतर विद्वान भी जो आप के सम्पर्क में आ जाता था वह आप से पूर्ण प्रभावित हुए बिना न रह सकता था। इतना होते हुए भी आपका विनम्र एवं शान्त स्वभाव देखते बनता था। संघ के अनेक झंझावतों में पड़कर जो मीठा एवं कटु अनुभव होता है उसे आप अमृत पान करके अपने चेहरे पर जरा सा बल नहीं आने देते थे। शांति के तो मानो अवतार ही थे।

आप श्री द्वारा समय २ पर जो पद्य और गद्य रूप में साहित्य प्रकाश में आया है और उसे पढ़ने से पता लग जाता है कि आप चिन्तन की कितनी गहराई में उतर जाते थे कारण कि साहित्य ही लेखक का ज्वलन्त परिचय प्रदाता होता है या यूं कहिये कि साहित्य ही कवि की आत्मा होती है, कवि उसमें समस्त भावों को उंडेल कर रख देता है।

आप रात दिन समाज का कल्याण हो इस पर निरन्तर ही विचार मग्न रहते थे और अपने स्नेही साथियों से सदा ही मशवरा लेते रहते थे।

सरलता एवं मधुरता उनके जीवन में कूट कूट कर भरी हुई थी। छोटे से छोटे मुनियों से भी वह किस सरसता से बातें किया करते थे। यह तो वही जान सकते हैं जिन्हें कभी उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। छोटे २ मुनि हर समय उनकी सेवा में खड़े रहा करते थे। और सदा ही प्रसन्न चित्त रहा करते थे। किसी को जरा सा कष्ट देना भी हिंसा की कोटि में समझते थे। रह रह कर मेरे मन में यही बात आती है :—

> सरल मति: सरल गति: सरल शील सम्पन्न:
> सर्वं पश्यति सरलं सरल सरलेन भावेन्।

एक सच्चे साधक का जीवन जैसा होना चाहिए ऐसे जीवन की झलक मुझे उस महान विभूति में देखने को मिली। उनकी आत्म साधना कितनी उच्चकोटि की थी, इसके विषय में कुछ कहना एक बाल प्रयास से अधिक महत्व नहीं रखता

अधिक क्या कहूँ उनके चले जाने से जो स्थान रिक्त हो गया उसकी पूर्ति महान असंभव है। इस समय तो पंजाब संघ में प्रकाश की किरण कहीं भी नजर नहीं आती अस्तु उनके द्वारा बतलाया हुआ मार्ग ही अब हम सबके लिए प्रकाश स्तम्भ है। अस्तु, जहां कहीं भी हों उनके पवित्र चरणों में हमारी यही प्रार्थना है—

"इहेसि उत्तमो भन्ते पच्छा होहिसि उत्तमो!"

एक वास्तविक जीवन

उपप्रवर्त्तक पं० श्री हेमचन्द्र जी म०

आप स्व० आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म० के ज्येष्ठ शिष्य हैं। स्वभाव से शांत, प्रकृति से मधुर एवं सेवा वृत्ति के संत हैं। स्वाध्याय के धनी पंडित श्री जी विद्वान पुरुष हैं। संस्कृत और प्राकृत भाषा के प्राध्यापक ही हैं। पंजाब के श्रमण वर्ग में आप श्री जी का गुरुस्थान है।

स्वर्गीय पण्डित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज!

शरीर, धन, ऐश्वर्य जो कुछ भी भौतिक है, विनाशी है। वह एक दिन उत्पन्न होता है, और एक दिन विनष्ट। उत्पत्ति और विनाश के बीच में बंधा हुआ है यह जीवन।

स्वर्गीय पण्डितराज श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का जीवन एक वास्तविक जीवन था, वह कलात्मक जीवन था। उनकी मृत्यु भी कलात्मक थी। प्रतिक्रमण करते २ आप श्री की मृत्यु अत्यन्त शांतरूप से हुई, कलात्मक रूप से हुई। ऐसी मृत्यु उन्हें ही प्राप्त होती है जिनका जीवन अत्यधिक शान्त रहा हो।

आप श्री ने जैन रामायण की अद्भुत ढंग से रचना की है, जिसे साधारण हिन्दी जानने वाला हर कोई व्यक्ति सुगमता से पढ़ सकता है तथा व्याख्यान में सुना सकता है। इसके अतिरिक्त आप श्री ने और रचनाएँ भी की हैं।

आपका जीवन परम पुरुषार्थमय था। वे एक महान सन्त एवं महानयोगी थे। आप श्री एक प्रसिद्ध व्याख्यानदाता थे। सब से महान गुण आपका यह था कि आप किसी कलह में भाग न लेते थे। पारस्परिक कलहों को आप शान्त करने में ही सदा अभिरुचि रखते थे। ऐसे शान्त-दान्त, निर्मम, तपस्वी एवं संयमी मुनिराज को मैं हृदय से शतशः अभिवन्दन करता हूँ।

एक महा मानव को :

हार्दिक श्रद्धाञ्जली

पं० मुनि श्री फूलचन्द्र जी महाराज 'श्रमण'

श्रमण' जी म० पंजाब श्रमण वर्ग के मान्य सतों में से हैं। ये स्वभाव से शांत और नम्र हैं किन्तु वस्तु स्थिति के पूर्ण ज्ञाता । स्वाध्याय एवं साधना ही इनके जीवन का लक्ष्य रहा है। पर आज संघ नीति की ओर भी झुकाव आरम्भ हुआ है। ये विद्वान्, लेखक एव आगम सम्पादक श्रमण हैं।

यह विश्व विष और पीयूष दोनों से व्याप्त है। ज्ञानीजन विष का परित्याग कर मात्र पीयूष को ही ग्रहण करते हैं। जब कि अज्ञानीजन पीयूष को तो अभी तक भी नहीं ढूंढ पाए केवल मधुर विष को ही पीयूष समझकर ग्रहण कर रहे हैं, यही दोनों में अंतर है। यह संसार अथाह जल की तरह है वह डूबने वाले व्यक्ति को जैसे डूबोने के लिए सहयोग देता है वही जल तैराक को तैरने के लिए भी सहयोग देता है। इसी प्रकार यह विश्व जहां ज्ञानी की उन्नति, उत्थान, सुख, विकास, त्याग, संवर, निर्जरा में सहयोगी है किन्तु दूसरी ओर अज्ञानी को अवनति, पतन, दुःख ह्रास, भोग, प्रेय आश्रव और बंध में सहयोगी है। ज्ञानी का प्रत्येक क्षण शुभानुबंधी होता है इस से विपरीत अज्ञानी का प्रत्येक क्षण अशुभानुबंधी माना जाता है। अज्ञानी का जन्म, जीवन और मृत्यु सब कुछ नगण्य है किन्तु ज्ञानी का जन्म जीवन और मरण स्व-पर कल्याण के लिए होता है।

इस जगतीतल पर जितने भी महामानव हुए हैं वे अपने जीवन का सौरभ सदा के लिए छोड़ गए। जैसे पुष्प वाटिका में अनेक तरह के फूल विकसित होते हैं फिर भी उनका सौंदर्य और सौरभ एक सा नहीं होता किन्तु होता है मन को आह्लादित करने वाला ही। वैसे ही महामानव भी अनेक-अनेक लोकोत्तरिक गुणों से सम्पन्न हुए और हैं। उनमें से हमारे परम श्रद्धेय प्रवर्तक पद विभूषित पंडित रत्न स्वनामधन्य श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज भी एक महामानव हुए हैं। वे शरीर से जितने सुडौल एवं सुन्दर थे, उतने ही वे भीतर से भी सत्यं, शिवं, सुन्दरम् थे। उन्होंने दीक्षा ग्रहण करते ही संयम और तप की साधना प्रारम्भ कर दी। संयमी जीवन में वे सदा जाग्रत रहते थे। जरा-जरा सी बातों में भी अपने संयम का ध्यान रखते थे, विवेक से चलते, विवेक से बैठते, विवेक से उठते, विवेक से बोलते अपनी प्रत्येक क्रिया विवेक से ही करते थे। वे शास्त्राभ्यासी और गंभीर

को सदा-सर्वदा बढ़ावा ही दिया है ।

जैन-जगत पर आप का असीम उपकार है, जो युग-युग तक जैन समाज ऋणि रहेगा । आपको मैंने बहुत ही समीप से देखा है, आप वास्तव में महान् थे । आप जहां बड़े सन्तों का सत्कार करते थे, वहाँ लघु मुनियों से प्यार भी करना न भूलते थे । कई अनाथ सन्तों को आपने सनाथ बनाया है, इस उदारता को कौन भूल सकता है !

अन्त में मेरी मंगल कामना है कि आप श्री जी का शिष्य वर्ग भी आप जैसी ही जीवन चर्या तथा हृदय की विशालता को धारण कर संयम पथ के सच्चे पथिक बनें और चतुर्विध संघ की बढ़ोतरी करें ।

शांति के अमर संदेशवाहक

प्रवर्त्तक पं० श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज

पं० श्री ज्ञानचन्द्र जी महाराज

स्व०आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म० के शिष्यों में श्री ज्ञान मुनि जी म० का प्रमुख स्थान है । स्वभाव से मिलनसार एवं विचारों से समन्वयवादी, व्याख्याता तथा संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि भाषा के विद्वान, आगम के अनुवादक और अन्य ग्रन्थों के लेखक हैं । कविता में भी आपकी अच्छी गति है । संगीतिकाएं तथा अन्य पुस्तकें प्रकाशित हो भी चुकी हैं ।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के महामान्य प्रवर्त्तक, मंगलमूर्ति, स्वनामधन्य, परम श्रद्धेय पण्डित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज एक तेजस्वी एवं ओजस्वी सन्त थे । जैन श्रमण-जगत में आप का एक आदरास्पद, मूर्धन्य स्थान था । आप त्याग, वैराग्य की सजीव प्रतिमा, क्षमा, दया, शान्ति, सहिष्णुता, गंभीरता तथा उदारता के अखूट भण्डार, सेवाव्रत के महान आराधक, आशुकवि, साहित्यसर्जक, विद्वान एवं गुणवान मुनिवर थे । प्रवर्त्तक होने के नाते पञ्चनदीय मुनिमण्डल के तो आप सेनानी मुनिराज माने जाते थे । आकृति से जैसे आप भव्य, सौम्य तथा गौर वर्ण थे, वैसे प्रकृति से भी आप शान्त-दान्त, सन्तहृदय और भव्य महापुरुष थे । आप के जीवनशास्त्र की प्रत्येक पंक्ति, पंक्ति का प्रत्येक शब्द, शब्द का प्रत्येक अक्षर आप की आचार-विचार गत समुज्जवलता एवं आदर्शता का प्रतीक था ।

श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी म० का जन्म वि०सं० १९५१, भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के पवित्र दिन हरियाणा के प्रसिद्ध जिले गुड़गांव की तहसील रिवाड़ी के निकट

दहोली फतहपुरी नामक गांव में हुआ था। पूज्य पिता ब्राह्मणकुलभूषण पण्डित श्री बलदेव राज जी थे, श्रद्धेय मातेश्वरी का नाम श्रीमती महताब कुंवर था। बचपन में आप शंकरदास के नाम से पुकारे जाते थे, किन्तु जैनसाधु बनने के अनन्तर हृदय की शुद्धि के कारण अन्दर से तथा श्वेत वस्त्र धारन करने के कारण बाहिर से शुक्ल दिखाई देने लगे थे, अतः पूज्य गुरुदेव ने आपका नाम श्री शुक्लचन्द्र रखा। जीवन भर आप इसी नाम से विख्यात रहे।

महामान्य प्रवर्त्तक श्री जी म० बालब्रह्मचारी महामानव थे। स्वर्ग जैसी सुन्दर कन्याओं की प्राप्ति होने पर भी आपने अपने को वासना की दासता से उन्मुक्त रखा। २२ वर्ष की भरी जवानी में जगत के सुख-वैभव को ठुकरा कर आपने वि०सं० १९७२, आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के शुभ दिन अमृतसर नगर में सन्तशिरोमणि, चारित्रचूडामणि, महामहिम, आचार्यसम्राट् पूज्य श्री सोहनलाल जी महाराज के पवित्र चरणों में जैनसाधु बनकर भगवती अहिंसा की पुण्य साधना आरम्भ कर दी। आपके दीक्षागुरु नव-युग-सुधारक, समाजोद्धारक, पंजाबकेसरी पूज्य श्री काशीराम जी महाराज थे। एक तो आप जन्मना ब्राह्मण परिवार से सम्बन्धित थे, दूसरे संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती आदि अनेक विध भाषाओं के विद्वान थे, तीसरे आप जैन, बौद्ध तथा वैदिक साहित्य का गहरा ज्ञान रखते थे, चौथे आप पण्डा-सूक्ष्म बुद्धि के धनी थे। इन सभी कारणों से आप छोटे-बड़े सभी सन्तों में "पण्डित जी महाराज" इस उपनाम से ही अभिहित होने लगे थे, और जीवन के अन्तिम क्षण तक इसी नाम से प्रसिद्ध रहे।

हमारे सम्मानास्पद प्रवर्त्तक श्री जी महाराज का जीवन एक सुन्दर उपवन था, उस में सन्तसेवा, समाजसेवा, साहित्यसेवा, संघसेवा आदि ऐसे अनेकों सुगन्धित पुष्प खिल रहे थे, जिनके सौरभ से समस्त जगतीतल सुरभित हो उठा था। आज उनका पार्थिव शरीर हमारे मध्य में नहीं है तथापि उन के पावन-चरणों में अपने-अपने ढंग से अपने-अपने श्रद्धासुमन समर्पित करने का अहमहमिकता जो हम प्रयास कर रहे हैं, इसका क्या कारण है? उत्तर स्पष्ट है यह सब कुछ श्रद्धास्पद प्रवर्त्तक श्री जी महाराज द्वारा कृत अनेकविध सत्-सेवाओं का ही प्रतिफल है। सेवा का आकर्षण किस से भूला हुआ है?

सन्तसेवा : माननीय प्रवर्त्तक श्री जी म० ने भगवती सेवा की आराधना खूब की थी। जीवन का अधिक भाग इन्होंने इस पुनीत कार्य ही में लगा दिया था। प्रवर्त्तक श्री जी महाराज ने हृदयसम्राट् पूज्य श्री सोहनलाल जी म०,

तपोमूर्ति श्रद्धेय श्री गैण्डेराय जी म०, तपस्वी श्री केसरीसिंह जी म०, पंजाब-केसरी पूज्य श्री कांशीराम जी म० और तपस्वी श्री निहालचंद जी महाराज इन महापुरुषों की सेवा का सौभाग्य तो स्वयं अपने हाथों से प्राप्त किया था। इसके अतिरिक्त समय-समय पर आप श्री वयोवृद्ध, पुण्यात्मा श्रद्धेय श्री स्वामी नारायणदास जी म०, भण्डारी श्री कुन्दनलाल जी म०, वयोवृद्ध मनिराज श्री बेलीराम जी म० श्रद्धास्पद वयोवृद्ध श्री भागमल जी म०, श्रद्धेय श्री स्वामी ताराचन्द्र जी म०, श्रद्धेय श्री कपूरचन्द्र जी म० आदि मनिराजों की सेवा अपने शिष्यों प्रशिष्यों द्वारा करवाते रहे। 'सेवा धर्म' की आराधना में आप ने कभी उदासीनता या उपेक्षा भाव से काम नहीं किया, प्रतिहारी की भांति आप इस सत्यकार्य के लिए सदा सतर्क एव जागरूक रहे।

साहित्यसेवा : श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी म० का व्यक्तित्व साहित्य-साधना-क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। "अन्धकार है वहां, जहां आदित्य नहीं है, अन्धकार है वहां, जहां साहित्य नहीं है" इस सत्य को आप खूब समझते थे। परिणाम स्वरूप गद्य और पद्य दोनों पद्धतियों को अपना कर आपने अनेकों पुस्तकें लिखीं। जैनरामायण, जम्बूकुमार, वीरमती जगदेव चरित्र आदि आपकी पद्यमयी रचनाएं हैं। जैन महाभारत, धर्मदर्शन, तत्त्वचिन्तामणि आदि ग्रन्थों की रचना आपने गद्य में की। आपके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि वह सर्वथा सरल है, सुवोध है, भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से बड़ा रोचक है। जैनरामायण आदि पद्यग्रन्थ तो इतने सर्वजनप्रिय बन गए हैं कि व्याख्याता लोग अपने व्याख्यानो में उनका सादर उपयोग करने लग गए हैं।

समाजसेवा : समाजसेवा की दृष्टि से भी वन्दनीय प्रवर्त्तक श्री जी म० का बड़ा सम्मानास्पद योगदान रहा है। लड़के और लड़कियों के लिए आचार्य श्री आत्माराम जैन शिक्षा निकेतन अम्बाला शहर, पूज्य श्री कांशीराम स्मृति ग्रन्थमाला, अम्बाला शहर, आचार्य श्री कांशीराम जैन औषधालय होशियारपुर, जैन सिद्धान्तशाला पंजाब, श्री जैनभवन मानसामण्डी, महावीर जैनभवन दड़ौली, जैन उपाश्रय हिसार, जैन स्थानक चिराग देहली, आदि अनेकों ऐसी ज्ञानवर्धक तथा समाजसेवी संस्थाएं हैं, जिनके निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आप श्री के उपदेश, उद्‌बोधन, मार्गदर्शन विशेप रूप से प्रेरक रहे हैं।

श्रमणसंघसेवा : पञ्चनदीय तथा अखिल भारतीय श्रमणसंघ की उन्नति एवं प्रगति के लिए आप सदा पूरा-पूरा सहयोग देते रहे हैं। स्वास्थ्य खराब है, पांवों में सूजन है, यात्रा लंबी है, समय स्वल्प है आदि किसी बात की चिन्ता न

व्यक्तित्व कुछ निराला ही व्यक्तित्व था। इनके चरणों में बैठकर प्रत्येक व्यक्ति को शान्ति प्राप्त होती थी। मन में कितना भी क्लेश हो, विक्षोभ हो, खेदानुभूति हो, उथलपुथल हो किन्तु इस महापुरुष के चरणों का सान्निध्य पाकर हृदय अपने को सुखी एवं निश्चित अनुभव करता था। पतञ्जलि ऋषि के—

"अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः"

(साधनापाद, सूत्र ३५)

इस कथन के अनुसार अहिंसा की प्रतिष्ठा होने पर जैसे वैरविरोध की समाप्ति हो जाती है, वैसे शान्ति के दिव्य सरोवर प्रवर्तक श्री की चरण-सेवा हृदय-संताप को शान्त कर डालती थी।

जीवन-गत शुक्लता : शुक्ल का अर्थ है— उज्जवल, शुद्ध। हमारे गौरवास्पद प्रवर्त्तक श्री जी म० बाह्य तथा अन्तर दोनों दृष्टियों से उज्जवल थे। इनका गौर वर्ण, विशाल-ललाट, और राजीव जैसे नयन इनकी बाह्य सुन्दरता को प्रकट कर रहे थे, और शान्त, सरल, मधुर तथा सर्व-जन-प्रिय स्वभाव इनके आन्तरिक सौन्दर्य का परिचायक था। मिश्री जिधर से खाओ, उधर से ही मिठास देती है। प्रवर्त्तक श्री का जीवन भी मिश्री की तरह सद्गुणों की मिठास से ओत-प्रोत रहता था। आध्यात्मिता के शिखर पर आसीन इस दिव्य महाशक्ति के आध्यात्मिक चमत्कारों की घटनाएं भी कुछ विलक्षण ही थीं, जब हम उन्हें सुनते है तो आश्चर्यचकित रह जाते हैं। किस-किस-गुण का वर्णन करें, शान्त मूर्ति प्रवर्त्तक श्री जी म० का जीवन इतना विराट् है कि उसे शब्दों की सीमित रेखाओं में बांधा नहीं जा सकता।

ऐसे प्रवर्त्तक अब कहाँ? ई०स० १९६८, की २९ फरवरी का सायंकाल पंजाब श्रमणजगत के भाग्य का मानो सायंकाल ही था। इस सायंकाल ने जो समाज की क्षति की है निकट भविष्य में उसकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती। प्रवर्त्तक तो बहुत हो सकते है और भविष्य में होते भी रहेंगे, परन्तु इन जैसा शान्ति प्रिय तथा सर्वजनप्रिय प्रवर्त्तक मिल सकेगा, यह कहना कठिन है। यह वह प्रवर्तक था, जिसने कभी किसी को निराश नहीं होने दिया था, ऐसा कल्पवृक्ष रूप प्रवर्त्तक हमें भविष्य में सम्प्राप्त हो सकेगा? ज़रा शान्त हृदय से समाज की वर्तमान दशा का गंभीरतापूर्ण अध्ययन करते हुए अपनी ही अन्तरात्मा से पूछिए।

अन्तिम निवेदन : कहने को, बहुत कुछ निवेदन कर सकता हूँ, परन्तु अधिक कुछ न कहकर अन्त में अपने आराध्य प्रवर्त्तक श्री के चरणों में इतना ही

निवेदन किए देता हूँ—

"इहेसि उत्तमो भंते !, पच्छा होहिसि उत्तमो"

—भगवन् ! आप यहां भी उत्तम थे, प्रकाशमान जीवन लेकर चल रहे थे, और आगे भी उत्तम ही रहोगे, विश्व को अहिंसा सत्य के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित करते रहोगे।

उस जाने वाले के चरणों में :

श्रद्धा के दो सुमन

श्री मनोहर मुनि जी म० 'कुमुद'

पंजाब के सार्वजनिक प्रवचनकारों में मुनि श्री स्थान अपना है। स्वभाव से उदार पर अपने स्वाभिमान के दृढ़, धुन में पक्के, आचार्य श्री आत्माराम जी जैन शिक्षा निकेतनों के सूत्रधार, विद्वान्, कवि एवं लेखक संत हैं। आंग्ल और संस्कृत भाषा में प्रवीण मुनि जी उदार विचारों के हैं।

परम श्रद्धेय पंजाब प्रवर्त्तक पं० प्रवर श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का देवलोक महाप्रयाण का दुखद हृदय विदारक समाचार सुन कर मन की वेदना की कोई सीमा न रही।

पंजाब ने अपना वह रत्न खो दिया जिसके बिना सारा पांचाल प्रान्त ही नहीं समस्त श्रमण संघ निष्प्रभ तथा निर्धन हो गया है। आप शुक्ल चन्द्रमा की तरह संयम में नितांत शुभ्र थे, शुक्ल थे। आपकी संघ सेवा अविस्मरणीय रहेगी। आपकी सेवाएँ अनगिनत हैं। आपकी अद्वितीय साहित्य सेवा सदा अमर रहेगी। आपका सरलता तथा दयापूर्ण मानस किस २ को आकर्षित नहीं कर लेता था आपकी तेजस्वी मुखमुद्रा के दर्शन मात्र से दर्शक के मन को अनुपम शांति प्राप्त होती थी।

हा ! आज वह समाज की महान विभूति कहाँ है ! कहाँ है !! यह हूक हृदय से निकलती ही रहेगी। कहना ही होगा—

"अय दस्त गुलचें हाय तुमसे कैसी नादानी हुई।
फूल वह तोड़ा जिससे गुलशन भर में वीरानी हुई॥"

हे महावीर के अमर सेनानी ! तू सदैव अमर है। हे श्रमण संघ के गौरव ! तुझे मैं शत २ प्रणाम करता हूँ। तेरी दिवंगत आत्मा को शांति वारिधि का अमर विहार प्राप्त हो ! बस दो आंसू श्रद्धा से भीगे हुए अर्पण हो तेरे परम पावन पाद पद्मों में। हे करुणेश ! स्वीकार कीजिए इन्हें कि वहुना !

दिवंगत युगपुरुष

मुनि श्री सुशील कुमार जी म० "भास्कर" शास्त्री

श्रद्धेय श्री छोटेलाल जी म० के शिष्य रत्न श्री सुशीलकुमार जी म० का पंजाब के श्रमण वर्ग में अपना स्थान है। वैसे तो भारतीय स्तर पर सार्वजनिक प्रवचन-कारों एवं विश्व धर्मों के व्याख्याताओं में प्रमुख स्थान है। आप संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी, अँग्रेजी आदि भाषाओं के विद्वान, सर्वधर्म समन्वय एवं समभाव के समर्थक और विश्व धर्म संगठन के प्रेरक, प्रवर्त्तक हैं। व्याख्याता के साथ ही आप अच्छे लेखक भी हैं। श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी की आप पर अपार अनुग्रह दृष्टि थी। उन्हीं के शब्दों मे पढ़िए—दिवंगत युगपुरुष।

समाज की विभिन्न कड़ियों को सहिष्णुता एवं आत्मीयता के धागे में जोड़े रखना ही दिवंगत श्री शुक्लचन्द्र जी म० का सबसे महान् कार्य था।

आत्मप्रदर्शन, स्वप्रशंसा तथा बाह्याडम्बर उन्हें पसंद नहीं था। एक महान् संत, एक महान् क्रान्तिकारी एवं महान् प्रभु उपासक आध्यात्मयोगी थे वे।

उनके जीवन में मानवीय असाधारण गुण एवं दैवी शक्तियों की आभा झलका करती थी, उनकी आत्मिक साधना विलक्षण थी। उन्होंने इच्छाओं की निवृत्ति के लिए और कर्म प्रवृत्ति परहित के लिए की थी। वे परदुःख कातरता से ही करुणाशील बने, करुणा ने ही उनके अहंकार को खा लिया था क्योंकि देहासक्ति के नष्ट हो जाने से प्रवृत्ति केवल सर्वहितकारी या लोककल्याणार्थ ही हुआ करती है। ऐसे साधक की संसार को बड़ी आवश्यकता है जो अपना सर्वस्व दूसरों के अस्तित्वसंरक्षण के लिए ही समर्पित किए हो।

हमारे अपने साधुसमुदाय में महाराज हमारे प्रेरणास्रोत थे क्योंकि उनका जीवन समाज संगठन तथा साधुता निर्माण के लिए अनुपम था उन्होंने समाज के लिए श्रम एवं संयम को विवेक व अहंकार शून्यता को दृढ़ आस्था एवं सर्वतो-भावेन सच्ची प्रीति को अपने जीवन में साकार करके दिखाया था।

उनके चले जाने से ऐसा लगा कि जैसे एक नक्षत्र अस्त हो गया और एकता तथा त्याग व प्रेम के सम्बल पर आभान्वित होने वाला दीपक बुझ गया। हम उनके अभाव को सहन करने के लिए न तय्यार थे और न ही सक्षम। किन्तु इस वज्र प्रहार के आगे किसी की आवश्यकता एवं उपयोगिता की कोई कीमत नहीं। वही होता है जो प्रकृति के नियम के अनुसार परिवर्तन नियत होता है।

आज हमें उनकी याद आती है आयेगी किन्तु इसमें उनके अभाव का दुःख अधिक खलेगा। यद्यपि किसी संत महापुरुष के प्रति श्रद्धाँजलि का प्रकार दूसरा ही ठीक होता है कि संकल्प करें कि उनकी मर्यादाओं की रेखाओं को छोटा नहीं होने देंगे। परहित एवं समाजकल्याण के लिए ही विवेकयुक्त प्रवृत्ति करेंगे, समाज के सभी घटकों को आपस में जोड़ रखने के लिए सेवावृत्ति एवं प्रेमवृत्ति पर स्वार्थ को शासन नहीं करने देंगे।

इन्द्रियाधीनता पर जितेन्द्रियता के संकल्प को अक्षुण रखेंगे, स्वप्रशंसा एवं परनिंदा को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। तब तो हम अपने दिवंगत महापुरुष के लिए शुभचिंतन एवं उनके दिव्य जीवन से सात्विक प्रेरणा ले सकते हैं।

मेरे मन पर विगत १५ वर्षों में अगर किसी संत पुरुष का मार्मिक प्रभाव एवं समाज संगठन बनाये रखने की सतत इच्छा का असर पड़ा है तो वह केवल हमारे अविस्मरणीय युगपुरुष पं० रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी म० का है।

नम्र रहना किन्तु अपने उच्च सिद्धान्तों पर अडिग खड़े रहना समाज की एकता के लिए काम करना किन्तु, अपना कोई स्वार्थ नहीं रखना, ये आदर्श उस महापुरुष के जीवन में साक्षात् जीवित थे आज उनके चले जाने से समाज की विभिन्न कड़ियों को एक सूत्र में जोड़े रखना कठिन दिखाई दे रहा है इसी से उनके असाधारण गुणों का परिचय पा सकते हैं। हम में वह शक्ति आये कि हम भी महाराज की तरह परदोष सहिष्णु बन कर प्रभु महावीर के अहिंसा एवं अनेकान्त को विश्वव्यापी रूप से फैलाएं तथा आत्मरति में समस्त अभिलाषाओं को समर्पित कर दें तो मुझे विश्वास है कि फिर हम सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकेंगे।

सर्वप्रिय प्रवर्तक

पं० श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज

श्री सुदर्शन मुनि जी म० स्व० व्याख्यानवाचस्पति श्री मदनलाल जी महाराज के प्रमुख शिष्यों में से हैं। पंजाब श्रमण वर्ग के प्रतिष्ठित, क्रियाशील एव व्याख्याता संतों में इनका स्थान है। स्वभाव के नम्र किन्तु आत्म गौरव के धनी-मानी संत हैं। स्व० प्रवर्त्तक श्री जी इनके शब्दों में पढ़िए।

"स्वर्गीय पण्डित श्री जी महाराज के स्वर्गवास से समाज को बहुत क्षति पहुंची है। श्री राजकुमार जी प्रधान के नाम पत्र भी संवेदना का लिखवा दिया था। महाराज श्री जी तो व्याख्यान में ही श्रद्धांजलि आदि अर्पित कर देते हैं।

प्रवर्त्तक जी महाराज के लिए महाराज श्री जी के दिल में बहुत इज्जत रही है और रहेगी।

वे शान्त मुद्रा और सरल आत्मा थे। और यह उनके पुण्य का अतिशय था कि कई ऊँची पदवियों पर सुशोभित रहे। उन जैसा शान्त तथा पंजाब मुनि-मंडल को ऐसा सर्व प्रिय प्रवर्त्तक मिलना अब दुर्लभ ही है। अपनी सहज और कोमल प्रकृति से वे समाज के लिए वरदान रहे। और साधु समाज ने भी उनकी शीतल छाया में रह कर अपने मनोरथों को सफल किया।"

प्रेषक—बी. आर. जैन गोहाना



विनम्र समन्वेता : दो शब्द

पं० मुनि श्री रामप्रसाद जी म०

श्रद्धेय स्व० व्याख्यानवाचस्पति श्री मदनलाल जी म० के शिष्यों में से एक सुशिष्य हैं। स्वभाव से नम्र, स्वाभिमानी तथा दृढ़ संकल्प के धनी हैं। तरुण संत रत्न ज्ञान एवं तप के सतत उपासक हैं। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत आदि भाषा तथा आगम, न्याय, व्याकरण आदि के विद्वान् और विचारक हैं। उक्त गुणों के साथ आप चर्चावादी एवं प्रवचनकार भी हैं। पिता एवं गुरु भ्राता के पद-चिह्नों का अनुसरण करने वाले विचारक संत से समाज को बड़ी आशाएं हैं।

पंजाब के मुनि-वर्ग में तीन रत्न रत्न-त्रय की भान्ति चमकते रहे हैं। व्या० वा० गुरुदेव श्री मदन लाल जी म०, पण्डित श्री शुक्ल चन्द्र जी म० तथा जैन भूषण श्री प्रेम चन्द्र जी म०। दीक्षा क्रम से मैंने ये नामोल्लेख किया है। वैसे इन में कौन बड़ा या छोटा है—ये लेखा जोखा मेरा विषय नहीं है। इन तीनों में से मध्यवर्ती मुनिवर के अभी-अभी होने वाले निधन से पंजाब के साधु-वर्ग का एक बहुमान्य व्यक्तित्व अतीत तथा इतिहास की वस्तु बन गया है। मैंने उनके प्रथम दर्शन पंजाब केसरी आचार्य प्रवर श्री काशी राम जी म० के बम्बई प्रवास से लौटने पर दिल्ली-प्रवेश के समय किए। आप श्री आचार्य श्री जी के शिष्य प्रशिष्य मण्डल में ओजस्वी, तेजस्वी, धीर गम्भीर तथा प्रमुख कार्यवाहक सन्त थे। ये मेरी दीक्षा के पहले का प्रसंग था। मेरे दीक्षित होते ही आचार्य श्री जी का स्वर्गवास हो गया। तथा चतुर्मास अनन्तर पं० श्री शुक्ल चन्द्र जी म० का सूनक पदार्पण हुआ। तब आप श्री को देखने का मुझे अधिक अवसर मिला।

मैं नया ही साधु था। सामाजिक चर्चाओं में मुझे कुछ रस न था न होना ही चाहिए था फिर भी इतना तो संलक्षित कर ही पाया कि गुरुदेव तथा पण्डित जी म० एक दम नजदीक आते जा रहे हैं। मनुष्य को एक दूसरे के समीप लाने वाले कुछ Intrests अथवा मनोरुचियां होती हैं। साधु वर्ग भी इस नियम का अपवाद नहीं है भले ही कहने को इन्हें कितना ही संसारातीत कह दिया जाए। उस समय कुछ ऐसी मनोरुचियां चल रही थीं जिनके कारण दोनों युग-पुरुष परस्पर खिंचे चले जा रहे थे और इसी के फलस्वरूप पं० श्री शुक्ल चन्द्र जी म० को पंजाब प्रान्त का युवाचार्य-पद प्रदान किया गया। उसके बाद कुछ दिनों तक हमारी सह-यात्री तन और मन से चलती रही। तभी उनके जीवन का और अध्ययन हो पाया। वे उदार थे। हर एक के साथ निभा लेते थे। उनकी संविभाग-कुशलता पूर्वोक्त दोनों गुणों के बीच की एक कड़ी थी उदारता के प्रेरित तथा निभाव का मूलाधार। वे हर एक को अपना सहयोग देने की तत्परता दिखलाते थे। अपनी सेवा की परवाह न करके जहां मांग होती वहीं अपने साथ के सन्तों को भेज देते, कोई अकेला या असहाय होता उसे अपना साहाय्य या सान्निध्य देते। भाषा आप की मधुर तथा चुटकीली थी। बड़ों के प्रति अतिशय विनीत रहते थे पर छोटों की ओर से विनय की अपेक्षा विशेष न रखते थे।

सन् १९४६ की लाहौर तथा अमृतसर की हमारी सम्मिलित यात्रा एक अतीत रोचक संस्मरण है। दोनों क्षेत्रों के विवादों को समाप्त करने में दोनों महापुरुषों ने मिल कर एक जुट प्रयत्न किया था। गुरु महाराज जो कहते या करते युवाचार्य श्री जी उनका अनुसरण करते। ठीक उसी प्रकार जिस तरह कवि कुलगुरु कालिदास ने दिलीप-कर्तृक नन्दिनी विषयक अनुसरण का चित्रण किया है—'स्थित: स्थितामुच्चलित: प्रयातां निसेदुपीयासन बन्ध धीर:।' गुरुदेव तथा युवाचार्य श्री जी का वो स्नेह ऐसा था कि 'न भूतो न भविष्यति' इससे पहले या बाद में जो कभी न रहा हो।

विनम्र समन्वेता :—श्रमण संघ बनने पर आप श्री प्रान्त मंत्री बने और बाद में उसी पद को प्रवर्तक पद में बदल दिया गया। इस पद के लिए आप श्री में सबसे उत्कृष्ट जो गुण था वह है विनम्र तथा सरल समन्वय। मेरे गुरुदेव भी बहुत समय तक समन्वय साधक रहे हैं पर धीरे-धीरे वे इससे पीछे हटते गए। दोनों महानुभावों के इस अन्तर को थोड़ा सा विश्लेषण करने की इच्छा [illegible] समन्वय के लिए नियमों की कठोरता को छोड़ना होता है। निय[illegible]

आग्रह हो तो समन्वय से हाथ खेंचना पड़ता है। इन दोनों प्रक्रियाओं में एक तरह की अनवस्था सी है। मर्यादा की ढील देते जाइये और समन्वय बढ़ाते जाइये। जहाँ कहीं अनुशासन में कठोरता आई कि समन्वय टूटा। दूसरी ओर नियमों तथा मर्यादाओं का आग्रह करते जाइये तथा समन्वय सूत्र तोड़ते जाइये। जहाँ कहीं समन्वय भावना आई कि उस आग्रह को शिथिल करना ही होगा। ये दोनों अन्त ऐसे हैं जो धीरे-धीरे परस्पर से दूर दूर चलते चले जाते हैं तथा उनके साथ २ व्यक्ति भी विच्छिन्न होते चले जाते हैं। दोनों में अनेकान्त की प्रतिष्ठा हो नहीं पाती। गुरुदेव तथा प्रवर्त्तक श्री जी भी इसी प्रकार दूर होते चले गए। इस दूरी में दोनों अन्तों या पक्षों के व्यक्ति कसूरवार न होकर दोनों की पूर्वोक्त भिन्न-भिन्न प्रणालियां ही उत्तरदायी हैं। उदाहरणार्थ ध्वनियन्त्र को ही लें। प्रवर्त्तक श्री उसको त्याज्य या अकल्पनीय मानते हैं अतः स्वयं प्रयोग नहीं करते पर समन्वय के लिए अपने शिष्यों को नहीं रोकते। गुरुदेव इस समन्वय से खीभते थे। उनका दृष्टिकोण था संघ की रीति नीति एक हों। आचार्य कुछ करें अन्य कुछ उनकी दृष्टि में ये समन्वय का मज़ाक था। गुरुदेव की दृष्टि आज की बहुत सी जनता की दृष्टि से भिन्न थी परन्तु प्रवर्तक श्री जी की समन्वय प्रणाली अधिक जन प्रिय रही है। श्रमण संघ का वर्तमान ढांचा तो उनकी प्रणाली का अधिकाधिक समर्थन तथा प्रशंसक रहा ही है। श्रद्धेय महापुरुष के सम्बन्ध में इतना ही लिखने की अन्तःस्फुरणा हुई है। इससे अधिक और बहुत अधिक भी लिखा जा सकता था, पर न लिख कर थोड़ा ही लिखा है। इसी लिए शीर्षक भी रखा है—दो शब्द।

आदर्श पुरुष

मुनि श्री ज्ञानचन्द जी म० [छोटे]

● दिल्ली सदर स्थित वयोवृद्ध स्थविर भू० पू० प्रवर्तक श्रद्धेय श्री भागमल जी म० के शिष्य रत्न पण्डित श्री त्रिलोकचन्द जी म० अर्द्धशतावधानी जी म० के लघु शिष्य श्री ज्ञान मुनि जी हैं। कुलीन एवं सम्पन्न परिवार से दीक्षित हो कर स्व० गुरुदेव के मार्ग पर चलने के सतत प्रयासी हैं। स्वभाव से नम्र, एकान्त वासी, सेवाभावी संत हैं। ज्ञान दृष्टि से आगम अभ्यास एवं संस्कृत, प्राकृत आदि भाषा में निपुण। तरुण विद्वान् संत से समाज को बड़ी आशाएं हैं।

वृक्ष की डाल पर हंसता फूल मानव को अपकी ओर आकर्षित करता है। अपने समीप आने वाले मानव को निज सौरभ से आमोदित करता है। अपने

समीपस्थ वातावरण को भी सुरभित बनाता है परन्तु यह दशा उस हँसते फूल की कब तक है जब तक उसका सम्बन्ध उस शाखा से है। पवन के एक झोंके से कुसुम धराशायी हो कर कुछ क्षण अपनी सुगन्ध मिट्टी को देकर मृन्मय बन जाता है अब न फूल है और न उसकी उस मानव, भ्रमर आदि को अपनी ओर बलात् आकर्षित करने वाली सौरभ। क्या महापुरुषों के जीवन को उस कुसम से उपमित कर सकते हैं? नहीं नहीं, महापुरुषों का जीवन उस महकने वाले फूल से बहुत ऊंचा होता है। वे इस धरातल पर अपने इस पार्थिव शरीर को उत्सर्ग कर आनन्द के महासागर में तिरोहित हो जाते हैं। परन्तु निजगुण सौरभ जन-मानस के लिए छोड़ जाते हैं। महापुरुषों के जीवन को सूर्य चन्द्रमा से भी उपमित नहीं किया जा सकता क्योंकि सूर्य चन्द्र को ग्रहण लगता है, परन्तु महापुरुषों का जीवन पाप ग्रहण से मुक्त होता है। ऐसे ही महापुरुषों में हमारे परम पूज्य प्रात:स्मरणीय शान्त मुद्रा पं० रत्न बालब्रह्मचारी श्री श्री १००८ श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज थे। उन्होंने शैशव से अपने इस मानव जीवन को कर्तव्यपथ पर लगाया था। आप कभी भी दूसरे को दुखी नहीं देख सकते थे। आप अपने ऊपर संकट लेकर दूसरे के दु:ख को दूर करते थे। मैं आपकी शैशव की एक घटना से अतीव प्रभावित हुआ हूँ जो कि आपने अपने मित्र की माता की सजल आँखें देख कर कारण जानने पर जो आपने प्रतिज्ञा की थी उसी प्रतिज्ञा से आपके जीवन में इतनी महानता आई कि जिसका वर्णन यह मेरी लेखनी नहीं कर सकती। आपने न केवल जैन समाज का उत्थान किया अपितु जनता जैनेतर समाज का भी। आपने एक आदर्श साधु जीवन को स्वीकार कर जैनागम, जैन दर्शन, जैनेतर विपुल साहित्य, संस्कृत प्राकृत आदि विविध भाषाओं और साहित्य पर अपना आधिपत्य जमाया। समाज संगठन में आपका अतीव महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आपके मृदु सरल स्वभाव से कौन परिचित नहीं। अब समाज में आपके रिक्त स्थान की पूर्ति होना दुष्कर है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं भी अपनी श्रद्धा के पुष्प आपके चरणारविन्द में समर्पित करता हूं। ●●

श्रद्धेय की स्मृति में : श्रद्धाँजलि

मुनि श्री टेकचन्द जी म० 'ब्रह्मर्षि जी'

●ब्रह्मर्षि जी म० स्व० आचार्य सम्राट् श्री सोहनलाल जी महाराज के लघु शिष्य हैं। आजकल आप श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री आनन्द ऋषि जी म० के

आज्ञानुयायी श्री भानु ऋषि जी म० के साथ हैं और दक्षिण भारत में इन दिनों विचरण कर रहे हैं। आप अपने ही स्वभाव एवं व्यक्तित्व के सत हैं। वर्षों तक वृद्ध संतों की सेवा का अवसर मिला है।

श्री प्रवर्त्तक पण्डितरत्न, आगम रत्नाकर, प्रवचन दिवाकर, कविराज, शान्त मुद्रा, विशुद्ध विचारक, शास्त्रार्थ के योगेश्वर, अखण्ड संयम, संघरक्षक, सर्व-गुण सम्पन्न, पूर्ण चन्द्रसम प्रतिभा, शान्त-दान्त, गुण गाम्भीर्य, क्षमाशील श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज उनके स्मृतिरूप श्रद्धाँजलि अर्पित की है।

श्री जीवन में अलौकिक दिव्य प्रकाश द्वारा आत्म-धर्मप्रतिबोधक जीवन ही श्रेयकर है। अर्थात् उनके जीवन से आत्म-संसार अटवी—विभाव से विमुक्त होकर निश्चल मार्ग के अनुगामी बने।

शुक्ल—जीवन ही आत्म-उत्थान की प्रेरणा देता है। इस लिये विशुद्ध जीवन के लिये ही आत्म-संयम जीवन का प्रतीक है। अर्थात् उनके जीवन की आत्मा को प्रकाश की प्राप्ति होती है। घोर अन्धकार से निकल कर अद्वितीय प्रकाश की ओर आत्मा अग्रसर होती है। ऐसे ही आपने अपने जीवन को जागृति के मार्ग पर चलाया था। वह चिर स्मरणीय रहेगा।

चन्द्र—चन्द्र का प्रकाश बहुत ही शीतल होता है। इसी प्रकार से आपके मन में, वचन में शीतलता का भाव प्रदर्शित होता था। अर्थात् आपके सम्पर्क में जो आया उसको अपूर्व शान्ति मिली और मन को विश्राम मिला, जीवन की अलौकिक शान्ति को प्रदान करने वाला था आप श्री जी का जीवन चन्द्र।

जी—जितेन्द्रिय जीवन में ही आत्मा की रक्षा की जाती है क्योंकि इन्द्रियां तो जीवन को ऐसे बहाव में अर्थात् नरक में ले जाकर फैंकती हैं। अनन्त संसार की गति में जिस प्रकार मदमस्त हस्ती-गजराज मदान्ध होकर जीवन पर्यन्त नाना प्रकार की होती है। इसी तरह आपने अपने इन्द्रिय रूपी अपने अधिकार में किया। भर यौवन में निकल कर आत्म-आराधना के उच्च मार्ग पर चलकर जीवन को सार्थक किया।

महा—गुण समुद्र ! जिस प्रकार से समुद्र में नदियों का अथाह रूप से प्रवाह आकर के गिरता है परन्तु वह अपनी मर्यादा से विचलित नहीं होता इसी प्रकार आपके जीवन में अनेक प्रकार से बाधाएं, पीड़ाएं और परिषह आए, परन्तु आपने समुद्रसम गम्भीर बन कर उनको सहन किया। अपनी मर्यादा से विचलित नही हुए।

राज—राजा जिस प्रकार से अपनी प्रजा की रक्षा करता है, इसी प्रकार आपने प्रजा का संपालन किया स्वयं और पर की अर्थात् अन्य संयमी आत्माओं के आप संपालक रक्षक थे।

की—यह सम्बन्धवाचक विभक्ति है। आपने भी प्राणीमात्र से अपना मैत्री सम्बन्ध रखा था।

जय—अर्थात् जिस प्रकार से सुभटों के सामने वासुदेव जय को प्राप्त करता है, उसी ही प्रकार आपने भी शत्रुओं को शास्त्रार्थी के द्वारा पराजित किया और आप श्री को जय की प्राप्ति हुई।

विजय—आपका जीवन ध्येय विजय की तरफ था। अर्थात् कर्मों से विजय प्राप्त करना और इसी ही में अपने जीवन की सार्थकता समझी थी।

रत्न—त्रिविध रत्न से ही कर्मों से छुटकारा मिल सकता है।

दृढ़ निष्ठा—यथार्थ-विश्वास, यथार्थ-समझ और यथार्थ आचरण ही जीवन का साध्य होता है। अर्थात् सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चरित्र यही तीन रत्न आत्माओं के मुख्य साधन हैं। इसी को आप श्री ने अपनाया था।

काल—काल बड़ा विशाल है। काल का प्रकोप प्रत्येक जड़ के ऊपर प्रहार कर रहा है। परन्तु आत्म निश्चय के लिए काल पराजित हो जाता है। अर्थात् काल की शक्ति वहां पर नहीं चल सकती है उसी को नवीन कहा जाता है। आप अपूर्व निर्वाण ही के परम साधक थे, उसी पथ के आप दृढ़अनुगामी बने।

लक्ष्मी—जीवन का लक्ष्य ज्ञान लक्ष्मी की प्राप्ति करना। लक्ष्मी दो प्रकार की होती है, भौतिक एवं अभौतिक। लक्ष्मी से आत्म सिद्धि नहीं होती। पौद्-गलिक पर्यायों में आत्मा पर्यटन करती रहती है। भाव लक्ष्मी से ही अपूर्व ज्ञान की प्राप्ति होती है, जिसको केवल ज्ञान कहते है। इस ज्ञान के लिए तप, जप, ध्यान, सेवा ही मुख्य कार्य होता है, इसी ध्येय को लेकर आपने अपने जीवन का यही ध्येय बना रखा था।

सेवा में ज्येष्ठ लघु का भेद भूले हुए थे, जिस प्रकार से पानी का प्रवाह अप्रतिबद्ध गति से बहता है सरिता का इसी प्रकार से आपका जीवन स्वच्छ है।



कहां छुप गए ! प्रेम के देवता

मुनि श्री भागचन्द जी 'विजय'

●स्वनामधन्य श्रद्धेय स्व० गणावच्छेदक स्वामी श्री बनवारी लाल जी म० जोकि पंजाब श्रमण वर्ग के वरिष्ठ संतों में से थे। उन्हीं के शिष्य श्री टेकचन्द

म० के ये प्रिय अंतेवासी हैं। स्वभाव से नम्र, शान्त, सरल और सौन्दर्य प्रेमी संत हैं। सेवा तो इनका जन्मसिद्ध अधिकार है।

उन्नतीस फरवरी की वह मनहूस सांय वेला जिसने हमारे शान्ति के देव-दूत, प्रेम के देवता को अपने क्रूर काले आंचल में छुपा लिया। वह महापुरुष जब प्रभु वन्दना-प्रार्थना में तल्लीन थे तीन हिचकियां आईं और सदा के लिए हमसे जुदा हो गए। चिर निद्रा में सो गए। उनका जीवन जितना महान था उनका निधन भी उतना ही महान हुआ। प्रतिक्रमण करते-करते स्वर्गवासी हो गए। सूर्य अस्त हुए को अभी आध घण्टा भी नहीं हो पाया था कि जैन समाज का, जैन समाज का ही नहीं सारी मानव जाति का वह तेजस्वी सूर्य देखते देखते एकदम अस्त हो गया। चारों तरफ अँधेरा छा गया। दिल जारोजार रो पड़ा। इधर फरवरी महीने का अवसान था उधर हमारे सम्माननीय हृदय सम्राट् पण्डित जी महारज के यशस्वी जीवन के मधु माह का अवसान हो गया। आशा तो यही थी कि महाराज श्री तो स्वस्थ हो जाएंगे लेकिन विधि को यह बात मंजूर नहीं थी। महाराज श्री का अकस्मात् ही स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास का दुःखद समाचार सुन कर हजारों नर-नारी अपने प्रेम के देवता के चरणों में अपनी श्रद्धा-प्रेम के फूल चढ़ाने, अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन करने देश के कोने कोने से पहुँच गए। उस महापुरुष का अन्तिम संस्कार भी पूरे सम्मान के साथ शाही ठाट बाट से किया गया। हजारों नर नारियों की आंखों से सावन मास की झड़ी की तरह आंसू धारा बह रही थी। जनता अपने प्रेम रूपी भगवान के वियोग में रो रही थी किन्तु उस महापुरुष के चेहरे पर अनन्त मुस्कान थिरक रही थी। हत्यारी मृत्यु भी इस मुस्कान को समाप्त नहीं कर सकी। मृत्यु हार गई थी। इसी का नाम तो जीवन है। किसी कवि ने कहा है—

जब तू आया जगत में, जगत् हँसा तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोय॥

इस विश्व के साधना मंच पर अनेकों साधक आए और अपनी साधना के चमत्कार दिखा कर चले गए और आगे भी आएंगे, अनेकों बड़े २ विद्वान, कवि, वक्ता, क्रिया काण्डी। किन्तु हमारे श्रद्धेय परम प्यारे पण्डित रत्न प्रवर्तक श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज की कोटि का, उनकी तुलना का महाराज भविष्य में असम्भव तो नहीं कठिन तो अवश्य होगा। महाराज श्री एक निराले साधक बन कर साधना मंच पर संसार के सामने आए। आकर संयम साधना, मानवता की साधना, ज्ञान साधना का शानदार पार्ट अदा कर गए हैं जो युग-युगान्तरों तक साधकों को

प्रकाश स्तम्भ का काम देगा। इससे साधना का पथ प्रशस्त और आलोकित होता रहेगा।

उस महापुरुष नें मानवता से सच्चा प्यार किया था। वह भाग्यशाली, महापुण्य शाली महापुरुष प्रशान्त महासागर की तरह गम्भीर और शान्त थे। मेरु गिरी की तरह अचल थे। विरोधियों के विरोध के आंधी तूफान, कष्टों के अँधड़, झँझावात उनको अपने गन्तव्य पथ से उनके कदम नहीं डगमगा सके। विरोधी हार गए वह जीत गए। क्योंकि उनके दिल में सब के प्रति सच्चा प्रेम था। वह ऐसे समुद्र जिसमें तमाम छोटी बड़ी नदियां समाहित हो जाती थीं यानि जिस किसी का कोई नहीं होता था वह उसके बन जाते थे। वे महापुरुष अशरण के शरणदाता, बेसहारों के सहारे सबके रक्षक थे। उस युग प्रधान पुरुष ने कभी भी पापियों पतितों से नफ़रत नहीं की। किसी को ठुकराया नहीं बल्कि प्रेम से सबको गले लगाया। वह तो इस युग के प्रेम के भगवान ही थे।

महाराज श्री जहाँ प्रेम के देवता थे वहाँ विद्वान और मधुर वक्ता भी थे। उनके व्याख्यान बड़े सरस, रोचक, सारगर्भित एवं पांडित्यपूर्ण होते थे। साथ में संगीत की मधुर वीणा भी झंकृत हो उठती थी मानो महाराज श्री के मुखारविन्द से अरविन्दों की वर्षा हो रही हो या अमृत वर्षा हो रही हो। सुनने वाले मन्त्र-मुग्ध से हो जाते थे।

महाराज श्री वक्ता होने के साथ साथ गद्य और पद्य के भी बहुत बड़े लेखक थे। उनके लेखक होने के दो बड़े प्रमाण हमारे सामने हैं। गद्य में 'महाभारत' और पद्य में 'रामायण महाकाव्य'। लाखों वर्ष के बीते हुए इतिहास की बिखरी हुई कड़िओं को, घटनाओं के मनकों को कविता की सुन्दर लड़ियों में पिरो देना उनकी काव्य कला की कौशलता के परिचायक हैं।

उनकी संघ संगठन के लिए भी कुर्बानी कम नहीं है। संघ एकता के लिए उस महापुरुष ने तीन चार बड़ी लम्बी-लम्बी पद यात्राएं सादड़ी, सोजत, बीकानेर, अजमेर सम्मेलनों की कीं। अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं की। जैन समाज उस महापुरुष का बहुत आभारी रहेगा।

उनका हृदय बच्चे जैसा सरल और विनम्र था। अमीर हो, गरीब हो, बूढ़ा, जवान, बच्चा बच्ची कोई भी हो. बिना कहे ही मंगल पाठ सुना देते थे। ऐसे थे वह दयालु, कृपालु और शान्ति के अवतार। श्री पंडित जी महाराज की महिमा असीम और अपरिमित है। यह जड़ लेखनी उनकी अनन्त गुणावली को शब्दों की सीमा में नहीं बांध सकती। उनकी गौरव गरिमा अमिट अमर रहेगी। वह महा-

पुरुष अपने पीछे ऐसी मधुर याद—अमर स्मृति लोगों के दिलों में छोड़ गए हैं जो कभी भी भुलाई नहीं जा सकेगी।

जालन्धर शहर में एक ज्योति जगी एक ज्योति बुझी यानि श्री पार्वती जैन हाई स्कूल में कुछ दिन पूर्व एक संयम त्याग की पवित्र ज्योति जगी थी। उसके कुछ दिन बाद ही एक दूसरी प्रेम की ज्योति बुझ गई। अनन्त अतीत में विलीन हो गई।

भारत के उस जन्म जात योगी ने बीस वर्ष की आयु में जो मदमाती, इठलाती जवानी युवावस्था में संसार के मधुर लुभावने वैभव को छोड़ कर भगवान महावीर के शासन में दीक्षित हो गए। जहाँ ऐसी बेकरार, तूफानी वेगवती चंचल उमर के युवक-युवतियां वासना की अँधेरी गलियों में भटकते फिरते हों वहाँ ऐसी आयु में योग के कठोर महापथ पर चल पड़ना कोई बच्चों का खेल नहीं। जब तरुणाई अँगड़ाई ले रही हो। धन्य है उस योगी महा-पुरुष को जिसने जवानी के मोड़ को योग साधना में लगा दिया।

पंडित जी महाराज का शिष्य परिवार भी भरपूर है जिसमें तपस्वी सुदर्शन जी महाराज और श्री महेन्द्र मुनि जैसे मस्त फ़कीर हैं। श्री सुमन और अमरेन्द्र मुनि जैसे मधुर वक्ता और गायक हैं। जिनकी वक्तृत्व कला पर और गायन कला पर जैन समाज के हर नर नारी को फखर, नाज़ और गौरव है।

वीर परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को शाश्वत शान्ति प्राप्त हो। यह भी विनती है कि जहाँ उनकी मुझ गरीब पर जैसी यहाँ पर निगाहे मेहर, कृपा दृष्टि थी वो ही कृपा दृष्टि वैसी ही वहाँ स्वर्ग में बनी रहे। किसी जन्म में फिर इसी रूप में शुभ दर्शन नसीब हों। वही प्यार भरा हाथ मेरे सिर पर रखें जैसे यहाँ पर रखते थे। इसी आशा के साथ पंडित रत्न श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज की जय हो ! विजय हो !!

हमारे सर्वस्व

मुनि श्री जौहरीलाल जी म०

मुनि जी स्व० पंजाब केसरी आचार्य श्री काशीराम जी म० के शिष्य एवं स्व० प्रवर्त्तक श्री जी के गुरुभ्राता हैं। कुलीनपरिवार आगरा से विरागभाव से दीक्षित हुए संत है। संत महापुरुषों के चरणों में वर्षों तक सेवा में रहने का अवसर मिला है।

गहन ज्ञान के अखूट भंडार।

ब्राह्मण कुलक, पंजाब जैन-मुनि मंडल की शान,

भगवान महावीर के सिद्धान्त—अहिंसा के अनूठे पुजारी,

अखण्ड ब्रह्मचर्य के सफल साधक,

ज्ञान रूपी पुष्प पिटारी को सुसज्जित करने वाले,

जिनेश्वर देव के कथनानुसार जैन शुक्ल रामायण के निर्माता,

जैनागम के आज्ञानुसार ५२ वर्ष से पूर्व के पाद विहारी,

शुक्ल दूज के चन्द्रमा की मानिन्द नित्य आदर्श जीवन की वृद्धि करते हुए फाल्गुण सुदि दूज को अनित्य-नश्वर-शरीर के त्यागी।

अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्थानक वासी श्रमण संघ के पंजाब प्रान्तीय प्रथम प्रवर्त्तक।

क्षमा-शान्ति, गम्भीरता, समता, सहिष्णुता निःस्वार्थ सेवा, श्रमण गुण के पथिक।

मेरे ३२ वर्ष के सम्पर्क को पलक में ही आँख मीच कर लुप्त कर जाने वाले।

पंजाब केसरी आचार्य गुरुदेव पूज्य श्री काशी राम जी म० के अनोखे श्रेष्ठ सुशिष्य कहलाने वाले।

मुनि मंडल शिरोमणी, जौहरी मुनि के गुरुभ्राता, तेरे पावन सुकोमल उज्ज्वल चरणों में शत शत प्रणाम।

शान्ति के देवता

मुनि श्री हरिचन्द्र जी म० 'केशरी शिष्य'

आप भी स्व० पंजाब केसरी आचार्य श्री जी के लघु शिष्य हैं। अम्बाला से कुलीन परिवार से दीक्षित हुए हैं। वर्षों तक आप श्री ने उक्त महापुरुषों एवं अन्य सन्तों की सेवा की है। आप थानेदार जी के नाम से विख्यात हैं।

फकीरों की निगाहों में अजब तासीर होती है,
निगाहे करम से देखें तो खाक अकसीर होती है।

संसार में अनेक मनुष्य जन्म लेते हैं और चले जाते हैं। जो मनुष्य यहां अपने सद्‌गुणों की महक छोड़ जाते हैं उनको संसार याद करता है और वे सदा संसार में जीवित हैं। उनमें से श्रमण संघ के प्रवर्त्तक, शान्ति के देवता, शान्त मुद्रा, सर्वहितैषी, कविरत्न पंडित श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज एक दिन गुड़गावां

प्रवर्त्तक श्री के स्वर्गवास से भारी आघात लगा। श्रद्धेय गुरुदेव जी ने फरमाया—खेद की बात है कि कठोर हृदय क्रूर काल ने सरल स्वभावी मुनिराज को हम से छीन लिया। अनादि काल से जन्म मरण का अजस्र प्रवाह चल रहा है जहां संयोग है वह वियोग अवश्यंभावी किन्तु ऐसे आदर्श महापुरुष के वियोग से मुझे ही नहीं वरन् प्राणी मात्र को दुःख होना स्वभाविक है। गुरुदेव जी ने पुनः कहा—खेद है प्रवर्त्तक श्री जी हमारे मध्य में नहीं रहे आज इस समय आप श्री की समाज को अति आवश्यकता थी किन्तु क्या किया जाए "कालस्य कुटिला गति" विधि का विधान विचित्र है, प्रवर्त्तक श्री जी के विषय में क्या कहूँ वे क्या थे? आप श्री के गुण गान करने में सहस्र रसन मिलकर भी असमर्थ है। आप पंजाब के ही नहीं वरन् श्रमण संघ के महान् विचारक संत थे एवं प्रखर वक्ता भी। आप संगठन प्रिय महात्मा थे अहर्निश आपकी यही मंगलमय भावना रहती संगठन सुदृढ़ हो—"श्रमण संघ हो अविचल मंगल"!

भौतिक देह से आप नहीं रहे किन्तु आध्यात्म रूप से मर कर भी अमर हैं—

इत्र की मिट्टी में मिलकर भी महक जाती नहीं।
तोड़ डालो तो हीरे की चमक जाती नहीं॥

अंत में यही कहूंगा कि प्रवर्त्तक श्री का इस समय स्वर्गवास हो जाना संघ की भाग्य मंदता ही है। मेरे प्रति उनका कितना स्नेह था जड़ लेखनी व्यक्त करने में कहां समर्थ है? ऐसे आदर्श महापुरुष की निकट भविष्य में पूर्ति होना असंभव है दिवंगत आत्मा को चिरशांति प्राप्त हो यही शासनेश से अभ्यर्थना है। ●●

वह अन्तर्मुखी साधक

श्री मोहन मुनि जी म० लुधियाना

● स्व. प्रवर्तक श्री जी के चरणों में बाल्यावस्था से विराग और संत-प्रेम से प्रेरित होकर दीक्षित होने वाले श्री मोहन मुनि जी ने वर्षों प्रवर्त्तक श्री जी की सेवा की है और उन से कृपा दृष्टि के पात्र रहे हैं। आज कल ये पं० श्री ज्ञान चन्द्र जी म० के अन्तेवासी हैं। ○

हरियाणा प्रांत के अन्तर्गत दडोली ग्राम तहसील रिवाड़ी-जिला गुड़गांव-ब्राह्मण वंश-भूषण-पिता श्री बलदेव राज शर्मा, माता श्री महताब कुंवर के आंखों के तारे ही नहीं जो तारे से शंकर के भाल पर राकापति बन गए। शुक्ल पक्ष के चांद के समान अन्तरंग साधना रूपी नभ पट पर प्रशस्त यात्री बन कर अग्रसर हुए। इक्कीस वर्ष के यौवनोभार में साधुत्व की निर्मल शान्त रश्मियां पृथ्वीतल को चमत्कृत करने आ पहुँची। तब से सतत् बिना किसी उकताहट के लोकैषणा से दूर, मौन भाव से सद्गुरु-प्रदत्त अध्यात्मिक पथ पर अग्रसर हुए सुख-दुःख के झंझावातों में कहीं रुके बिना यौवन के अंधकार को विवेक एवं वैराग्य की मशाल लेकर जिस जीवट और साहस से जीवन और जगत में प्रकाश फैला सके, मंजिले मकसूद पर निर्बाध गति से पहुँच सके, वह अपने आप में एक आदर्श उदाहरण स्वरूप एवं नित्य स्मरणीय हैं।

गृहस्थ हो या श्रमण सभी साधकों की साधना का मूल मन्त्र, क्षमा, सरलता और निष्कपटता है। आप के जीवन में इन तीन गुणों का संगम गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम था जो पावन प्रयाग राज तीर्थ से भी अधिक महत्व रखता था। आप की यह त्रिवेणी रूप तीव्र गामिनी सरिता में बड़े २ मानियों के मान रूपी कलिमल को वहा कर ले जाने में सफल हुई।

मान्यविभो ! :—ज्ञान की अखण्ड लौ से आपने अपने जीवन-पथ में प्रकाश पाया। चरित्र की कठोर साधना—स्वाध्याय, त्याग और तप की अखण्ड आराधना के फलस्वरूप आपका स्वभाव अत्यन्त नम्र बना। स्व और पर सन्त परिवार की भेदक दीवारों को लांघ कर सब से स्नेह व सौजन्यपूर्ण व्यवहार यहां तक कि जो आयु भर आपका विरोध करते रहे उनको भी गले लगाया। आप नये युग की उजली रेखा की कल्पना की आंखों से भविष्य दृष्टा की तरह देखते थे। आप पुराने युग के सन्त कहलाते थे। साधुत्व की मर्यादा और सीमा रेखा में खड़े रह कर भी भविष्य में समाज को किस प्रकार का आचार विचार का प्रतिपाद्य प्रिय होगा इस के आप ने बखूबी अपनी गद्य-पद्य रचनाओं में संकेत दिये हैं। आप सुधारक भी प्रथम कोटि के थे। कुछ पुस्तकें विभिन्न नामों से आपके जीवन काल में प्रकाशित हुई हैं। आपने समाज से कुछ लिया नहीं अपितु दिया ही है। सन्त सरिता और तरु देने के लिये ही महितल पर शरीर धारण करते हैं।

श्रद्धेय गुरुवर्या :—आप सरल भाव की ज्योतिर्मय मूर्ति थे। आप आलंकारिक भाषा में नख-शिख सरल थे। निर्दम्भ थे। मैंने उन्हें बहुत निकट से देखा-परखा है। जोधपुर, देहली, जालन्धर, अम्बाला तथा कांधला आदि शहरों के

चतुर्मास उनके सतत् सानिध्य में व्यतीत किये हैं, आप शत-प्रतिशत सरल और अदम्भ भाव की कसौटी पर खरे उतरे हैं, आचार सरल, विचार सरल परस्पर का सब व्यवहार सरल, जो किया वह साफ, जो कहा वह भी साफ, कहीं भी तो छुपाव तथा दुराव को स्थान नहीं, अतः स्पष्ट शब्दों में अगर हम कहें तो यूं कह सकते है कि आप टेढ़ी-मेढ़ी राह पर चलने के आदी नहीं थे।

हे दिव्यात्मा :—आज आप अपने पार्थिव देह में हम सब के बीच नहीं हैं। तथापि आप का यशः शरीर आज भी हम सब के मध्य विराजमान है, आप महासन्त की पुनीत पुष्पवाटिका से समस्त देश सौरभान्वित हो रहा है।

पूज्यवर :—श्रमण के जिन गुणों द्वारा आपने अपनी आत्मा को उत्कृष्ट बनाया श्रमणगण स्वामी जी के गुणरत्नों की समाराधना से अपनी आत्मा की झोली भरने की प्रेरणा प्राप्त करे इसी भावना के साथ आप परम श्रद्धेय महान् साधक के चरणकमलों में अपने श्रद्धा के पुष्प समर्पित करता हूँ।

जैन जगत की दिव्य विभूति

साध्वी श्री साधना कुमारी जी

श्री साधना जी गुणसम्पन्ना साध्वी हैं। संयम साधना में लीन हैं इन दिनों। ये स्वनामधन्या वयोवृद्धा, स्थविरा श्री पन्नादेवी जी म. की प्रशिष्या तथा साध्वी श्री सरला जी म. की शिष्या हैं। उदायमान बाल साध्वी से समाज को बड़ी आशाएँ हैं। स्वभाव से सेवाव्रती और नम्र हैं।

भारत की आर्य भूमि कितनी सौभाग्य शालीनि है जिसकी गोद में से सैंकड़ों महान् आत्माएँ जन्म लेकर अपना सर्वस्व लुटा करके जनता जनार्दन को सुपथ पर लगा गई है। इन महान् विभूतियों ने समय समय पर जन्म लिया जब कि देश में सुधार की आवश्यकता हुई। जनता कुमार्ग गामी हुई और कुरीतियों की शृंखला में जकड़ गई। ऐसे ही समय मे इन महान् विभूतियों ने जनता को सुमार्ग दिखाया। क्योंकि कहा भी है—

आपको नाना प्रकार से समझाया। साधक पथ में आने वाली कठिनाइयों से अवगत कराया और कष्ट भी दिये। लेकिन ये वीर बालक अपने संकल्प पर अडिग रहा। जिस प्रकार से स्वर्ण अग्नि में तप कर और भी आभा को प्राप्त करता है उसी प्रकार ये भी अपने उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न रहे। किसी शायर ने ठीक ही कहा है—

चट्टानें हिल नहीं सकती कभी आंधी के खतरों से।
कि शोले बुझ नहीं सकते कभी शबनम के कतरों से॥

स० १९७३ में वह शुभ वेला भी आई जिस दिन आपके सुनहले स्वप्न साकार हुए, और इस संसार का त्याग कर साधना के पथ पर अपने कदम बढ़ा दिए। अपनी विद्वत्ता और निर्मल ज्ञान प्रभा के द्वारा शीघ्र ही श्री संघ में ख्याति को प्राप्त किया। इस प्रकार ५२ वर्ष तक आपने भारत में भ्रमण करके अनेक जीवों का उद्धार किया और अपनी अमृतमयी वाणी विश्व को प्रदान की।

सरलता एवं मधुरता तो उनके जीवन के कण २ में विद्यमान थी। अपनी ओर से किसी को तनिक कष्ट देना भी हिंसा की कोटि में समझते थे। ऐसे समय कवि की अमर वाणी हृदय मन्दिर में गूंज जाती है—

सरलमति: सरलगति: सरलात्मा सरल शील सम्पन्न।
सब पश्यति सरलं सरल सरलेन भावेन॥

उनका जीवन एक सच्चे साधक का जीवन था। उनकी आत्म साधना कितनी उच्च कोटि की थी यह कहना दुष्कर है। उनका जीवन आदर्श की कसौटी पर परखा हुआ एक सफल जीवन था। सफल जीवन वही होता है जो "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" हो और इसकी पूर्व प्रतिच्छाया उस पवित्र आत्मा में स्पष्ट झलकती थी।

२९ फरवरी का दिन जैन समाज के लिए अशुभ सन्देश लेकर आया। जिस समय सूर्य अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा था यामिनी गहन तिमिर से समस्त विश्व को आच्छादित करने का प्रयास कर रही थी ठीक उसी समय जैन समाज पर भीषण वज्राघात हुआ और जैन समाज से एक महान विभूति लोप हो गई। उस महान् विभूति ने इस नश्वर शरीर का परित्याग कर जैन समाज को अनाथ बना दिया। ऐसे समय में अनायास ही हृदय तन्त्री झंकृत हो उठती है—

हाथ बिना नाड़ी के जैसे जल बिन तालाब हैं,
फूल बिन खुशबू और प्रकाश बिन महताब है।
चांद बिन जैसे अंधेरा और सूनी रात है,
इस तरह बिन आपके आज जैन समाज है॥

यह अपूर्यमान क्षति है। इसकी पूर्ति होना अत्यन्त दुष्कर है। अब हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम उनके बताये हुए पथ का अनुसरण कर उनके स्वप्नों की

पूर्ति करें और जैन समाज के भविष्य को उज्जवल बनायें ।

भौतिक शरीर तो किसी का भी स्थिर नहीं रहता है । लेकिन महापुरुषों के गुण और गौरव गाथाएँ हमेशा इस विश्व में अमर रहती हैं और विश्व को सच्चे पथ से अवगत कराती हैं । शासनदेव से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो । और अन्त:करण के आलवाल से श्रद्धा के पुष्प चुन कर आपके चरणों में समर्पित करती हूँ ।

अनूठे मार्ग दर्शक

साध्वी श्री स्वर्णा जी म०

स्वनामधन्या साध्वी रत्न संयम मूर्ति प्रवर्तिनी स्व० राजमति जी म० की शिष्य परम्परा में साध्वी श्री ईश्वरा देवी जी म० की प्रशिष्या हैं । प्रवक्ता, विदुषी एवं दीर्घद्रष्टा साध्वियों में आपका स्थान है । स्वभाव नम्र एवं उदार है । पुरातनता को नवीनता में मर्यादापूर्ण ढंग से परिवर्तन करने की आप पक्षपाती हैं । कुलीन परिवार से वैराग्य भाव से दीक्षित हुई साध्वी—"संयम एवं मर्यादा की सीमा रेखा में रह कर ही जीवित रहना अनिवार्य है" ऐसी दृढ़ निष्ठा वाली हैं ।



यशस्वी संत !

प्रात:स्मरणीय पंडित राज, पूज्य प्रवर्त्तक गुरु देव श्री शुकल चन्द जी महाराज एक तेजस्वी सन्त थे । जिनके मन में सद् विचार, सद् चिन्तन एवं सद् भावना, वचन में सत्यता, सरलता एवं मधुरता और कर्म में संयम तथा सदाचार की सुगन्धि आती थी । आप शान्ति की प्रतिमा और क्षमा के अवतार थे । सरलता और मृदुता आप के जीवन की सहचरी थी । सद्गुणों से सम्पन्न तेजस्वी जीवन, प्रसन्न एवं सौम्य मुख मुद्रा, ब्रह्मचर्य के तेज से दमकता चेहरा, बच्चों जैसा सरल स्वभाव, महान् तेजस्वी व्यक्तित्व जिसकी ओर अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति भी सहज ही आकर्षित हो जाता था । गुरु देव का जीवन साधना पथ के यात्रियों के लिये एक प्रेरणा का मधुर स्रोत तथा स्पृहा एवं अनुकरण की वस्तु रहा है ।

शान्ति के अमर दूत !

हे शान्त मुने ! आप ऐसे विशिष्ट सन्त रत्न थे कि जिन्होंने अपने निर्मल और निश्चल व्यक्तित्व से अनेक हृदयों पर शान्ति की अमिट छाप अंकित की । आप की उदात्त स्नेह एवं सरलता की वही छाप मेरे मन पटल पर बहुत गहरी

पड़ी है। वे मधुर क्षण आज भी स्मृत्याकाश में आकाश दीप की भान्ति जगमग जगमग कर रहे हैं। विस्मृति के काले कजरारे सघन घन उन्हें विलीन करने की रत्ती भर भी सामर्थ्य नहीं रखते हैं। उनका वह मधुर स्नेह से परिपूरित निश्चल मानस मेरे हृदय की एक थाती बन कर रह गया है। एक विचारक सन्त के बारे में लिखता है जो गुरु देव पर ठीक २ घटित होता है—

A Saint is such a treasure of truth and reality where everyone gets the real contentment which is never achieved by him even by roaming through every nook and corner of the world just as a baby gets real happiness in the lap of his mother even after roaming about amidst numberless women for any length of time.

हे सरल मुने !

सरलता एवं भद्रता तो आप के जीवन के कण २ से मुखरित हो रही थी। जो अन्दर वही बाहर. न किसी का दुराव न छिपाव, मति भी सरल, गति भी सरल, कहनी और करनी भी सरल, वार्ता-व्यवहार भी सरल, सरल आत्मा का सब कुछ सरल, अन्दर और बाहर की दुरंगी चालों से वह घृणा करते थे। शब्दों तथा भाषा का हेर फेर उन्होंने सीखा ही न था। सरल जीवन सचमुच अपनें में एक जादू रखता है। और जादू भी ऐसा जो दूसरों के सिर चढ़ कर बोले। सम्पत्ति और ज्ञान का आकर्षण लघु जिन्दगी ले कर आता है। जब कि हृदय की निखालसता मन की सरलता दूसरों को हमेशा हमेशा के लिये अपना बना लेती है।

जीवन झलक—मुझे जब कभी गुरु देव के चरणों में बैठने का सुअवसर मिला, मैंने मां की ममता, पिता का प्यार, गुरु की कृपा, इष्टदेव की उपास्यता उनके पवित्र जीवन में पाई। जो कुछ हम पूछते, स्पष्ट बताते, उनके उलाहने में प्यार की गन्ध प्रतिभासित होती, सन्तप्त हुआ हृदय कभी उनके दरबार से निराश नहीं लौटा। वहां सर्वत्र प्यार की ही मंदाकिनी प्रवाहित होती दिखाई देती। जिसमें हृदय का सम्पूर्ण मनो-मालिन्य वह जाता और हम हलके होकर वापिस लौट आते। ऐसा था गुरु देव का ऊंचा और सच्चा व्यक्तित्व। ऐसे संत के बारे में विचारक लिखते हैं :—

A Saint is living in a light house which emanates real light of truth under which demoralised and deteriorated souls leave the path of evil and adopt the path of righteousness.

उदार हृदय !

आप की साधना में प्रेम था, ममत्व था, स्नेह था, तथा अपनत्व था और साथ ही थी, दूसरे के ताप-सन्ताप बुझा देने की अमर साध। एकदा मन भारी था केवल एक प्रति उत्तराध्ययन शास्त्र के लिये। मेरी शिकायत महासति प्रवर्तनी श्री राजमति जी महाराज ने उनके पास रखी। उन्होने सब कुछ सुना और हँसते हँसते मेरी ओर मुड़ कर कहने लगे स्वर्ण शास्त्रों के अम्बार तक लगाए जा सकते हैं केवल विद्यार्थी चाहिए पढ़ने के लिये। कुछ ही दिनों पश्चात् कई तरह के शास्त्र नवीन नवीन लेखकों के लिखे हुए मेरे लिये भेज दिये। पुनः जब कभी उनके दर्शन प्राप्त होते, वह शास्त्रों के बारे में अवश्य पूछते। गुरुदेव सरीखी उदारता, अनुकम्पा, दयालुता और करुणा के दर्शन अब कहां।

हमारा कर्त्तव्य—श्रद्धेय गुरु महाराज के स्वर्गवास पश्चात् हमारा अब यही कर्त्तव्य बन जाता है, कि गुरु देव जो ज्ञान एवं आचरण की जलती हुई मशाल हमारे हाथों में थमा गए हैं, हम उन्हें प्रज्जवलित रखें, उसकी आभा कभी धूमिल न होने दें, उसका तेल कभी समाप्त न होने दें। तथा ज्ञान का शीतल निर्झर जो गुरु देव अपनी महान् आत्म साधना के द्वारा प्रवाहित कर गए हैं, उसमें निमज्जन उन्मज्जन कर अपना जीवन पवित्र एवं निर्मल बनाएं। तथा जिस मिशन के लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग एवं समर्पित कर दिया है हम भी उसी मिशन को आगे और आगे बढ़ाएं और चलाएं।

अपने श्रद्धेय के प्रति

साध्वी साविन्नी देवी जी म०

साध्वी श्री सावित्री जी स्वनामधन्य महामान्य विदुषी, व्याख्याता स्व० श्रद्धेय श्री चन्दा जी म० की सुशिष्या श्री लज्जावती जी म० की अन्तेवासिनी हैं। आप कलीन परिवार से विराग भावना से दीक्षित हुई हैं। ज्ञान, तप और सेवा-गुणत्रय से जीवन शोभित है। पंजाब के मान्य साध्वी सिंघाड़े में प्रमुख स्थान है। आप की गुरु बहिन श्री अभय कुमारी जी म० हैं।

हे जगदगुरु ! आप श्री समस्त जग के शृंगार और अलंकार थे। आप व्यक्ति विशेष के नहीं, समष्टि के थे। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर आपने ब्राह्मणवंश को गौरवान्वित कर दिया।

सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति ! जहां आप ने आत्म वैभव प्राप्त किया था वहां शारीरिक वैभव भी कम न था। आप का सदैव मुस्कराता हुआ दिव्य भव्य-मुखचन्द्र तेजस्वी आंखें विशाल ललाट दर्शकों को अनायास ही आकर्षित कर लेता था।

अय वाणीभूषण ! आप श्री जी की ओजस्वी वाणी में विलक्षण प्रभाव था, एक २ शब्द में मधुरता सरलता धीरता गंभीरता शान्ति प्रियता निर्भयता नम्रता आदि के साक्षात् दर्शन होते थे। आप श्री की पीयूष वर्षिणी वाणी सन्तप्तों के लिये शीतल जल थी।

समाज की नाड़ी के कुशल वैद्य ! आप श्री में यह विशेषता थी कि आप वर्तमान स्थिति के कुशल पारखी थे। आपने कभी हठ या अत्याग्रह से किसी से कोई बात मनाने का प्रयास नहीं किया। आपके बुद्धि कौशल पर या सत्यप्रियता पर मुग्ध होकर स्वयं हठाग्रही भी अपना अभिमान छोड़ कर श्री चरणों में नतमस्तक हो आप की सत्य बात का ग्राहक बन जाते थे।

हे संघ की नैय्या के रक्षक-प्रवर्तक प्रवर ! आप साधना के पथ पर निरन्तर जागरूक रहकर आजीवन चलते रहे। आप श्री का संयम जीवन अति प्रशंसनीय और सराहनीय रहा है। परिणामत: आप के लोकप्रिय गुणों ने आपको लोकमान्य सिंहासन पर बैठा दिया। समाज सेवा में आपने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। जैन समाज के आप एक ज्योतिर्धर मुनिराज थे। एक ऐसे कर्णधार थे जो संघ की नैय्या को भयंकर तूफानों से बचाते हुए बड़ी सुगमता और कुशलता-पूर्वक गतशील कर रहे थे।

हे परिश्रमी वीर ! आपने दूर देशान्तरों में भ्रमण करके भूली भटकी जनता को धर्म का मार्ग बताया। आप की ख्याति की सुगन्धि यत्र तत्र सर्वत्र फैली हुई है। आप अद्वितीय कर्मठ वीर थे। आप श्री जी की अमोघ वाणी का झरना जब बहता था तो मिथ्यात्व ग्रस्त प्राणी उसका स्नान और पान करके अपने आपको कृतकृत्य मानते थे।

सच्चे पराक्रमी योद्धा ! आपने अपनी इच्छाओं और वासनाओं को इस प्रकार परास्त कर दिया था जैसे—अर्जुन ने दुर्योधन को। जैसे दैवी शक्ति के समक्ष आसुरी शक्ति ध्वंस हो जाती है ऐसे ही आपके प्रभाव और पराक्रम को देखकर दूषित वृत्तियां दुम दबा कर भाग जाती थीं।

हे विद्वद्रत्न ! आप का अध्ययन इतना विशाल था जिस का अनुमान लगाना कठिन है। आप शास्त्रों के पारगामी थे, गभीर से गंभीर विषय भी आपके लिये अत्यन्त सुगम था। आपकी रचनाशैली में अद्‌भुत चमत्कार था। आपके लिखे हुए महाभारत, रामायणादि ग्रन्थों को पढ़कर विद्वान लोग वाह २ कर उठते हैं।

समता पुञ्ज ! आदि से अन्त तक आपका जीवन सफल और सार्थक रहा है। आपने इस धरातल पर अवतरित होने का लक्ष्य पूर्ण कर लिया। आपने

जीने और मरने के अर्थ को सम्यक्रूप से समझ लिया था फलतः अब आपके लिये जीवन; मृत्यु दोनों सम थे। रुग्णावस्था में भी आपके वदन पर कभी खेद की रेखा दिखाई नहीं देती थी। अनुमान समता के बल से कर्म मुक्त होना ही आपका मुख्य उद्देश्य रहा है। चलते समय भी आपने यही कहा—

"अय फूल ! दुख तज दे मिटने का गम न कर तू ।
कर्त्तव्य जो था तेरा पूरा वह कर चला तू ॥

हमारा दुर्भाग्य है कि आज हम आपको अपने निकटतम नहीं देख रहे। कराल काल ने अपने नियमानुसार आपको भी अपना कवल बना लिया। हमारे दुर्बल हाथों से अनमोल रत्न छीन लिया।

अन्त में—अधीर मन शासनेश से यही प्रार्थना करता है कि आपकी पावन आत्मा को अमर शान्ति लाभ हो।

अमर ज्योति

साध्वी श्री प्रवेश कुमारी जी म०

आप स्वनामधन्या साध्वी गौरव श्री रत्न देवी जी म० की पौत्र शिष्या हैं और साध्वी श्री सुभाष वती जी की सुशिष्या हैं। गुरुणी शिष्या दो माता पुत्री भी हैं। कुलीन परिवार से दीक्षित हुई हैं और अपने पूर्वजों के पद चिह्नों पर चल रही हैं। पंजाब के साध्वी कुल के सिंघाड़ों में आप का अपना स्थान है। स्वभाव से नम्र, समय कुशल और विदुषी एवं वक्ता साध्वी जी से समाज को आशाएं हैं।

सन्त जीवन एक पवित्र जीवन है। भारतीय संस्कृति में सन्त जीवन को पवित्र इस आधार पर माना गया है, कि वह त्यागमय, तपमय और वैराग्यमय होता है। भारतीय संस्कृति संत और सम्राट की सन्तुलना में सन्त जीवन को ही श्रेष्ठ मानती है, क्योंकि उसका लक्ष्य है भोग से योग की ओर अग्रसर होना। त्याग और वैराग्य तथा संयम और सदाचार सन्त जीवन के विशेष गुण हैं। तप, जप और संयम यदि सन्त जीवन में नहीं हैं तो वस्तुतः वह सन्त जीवन नहीं कहला सकता। जीवन क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति विजय की इच्छा को लेकर चलता है। भौतिक ऐश्वर्य को प्राप्त करने से मानव महान् नहीं बनता उसकी महानता ऐश्वर्य के त्याग से है। भौतिक बल से नहीं, किन्तु अध्यात्मिक बल से है। मनुष्य के जीवन की जो वास्तविक विभूति है, सच्ची समृद्धि है। वह यह अध्यात्मिक बल ही है।

साधना के क्षेत्र में इसी बल को तोला जाता है। साधना का थर्मामीटर त्याग है वैराग्य है। आत्म संयम और इन्द्रिय निग्रह है। यही उसकी महत्त्व की कसौटी है।

श्रद्धेय पंजाब प्रवर्त्तक, महान् त्यागी, घोर संयमी, सरल, उदार पंडित रत्न स्वर्गीय श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन साधनामय था। महान् योगी पंडित रत्न जी का जन्म दड़ौली जिला गुड़गांवा में हुआ था आपके पिता पंडित बलदेव जी थे और माता महताब देवी थीं। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण पंडित शुक्ल चन्द्र जी एक के बाद एक परीक्षा उत्तीर्ण करते रहे। अभी १३वें वर्ष में पदार्पण किया था कि प्रकृति ने भयंकर वज्रपात किया और उनके पिता पंडित बलदेव जी शर्मा अपनी इहलोक लीला समाप्त करके स्वर्ग सिधार गए। परन्तु शुक्ल चन्द्र जी विचलित न हुए। उनके पालन पोषण का भार उनके चाचा पं० चुन्नी लाल जी ने सम्भाल लिया।

बाल्यावस्था से ही आपका मन वैराग्य से ओत-प्रोत था उस जन्म जात योगी ने बीस वर्ष की इठलाती मदमाती यौवनावस्था में इस संसार को छोड़कर संयम के पथ पर अपने कदमों को बढ़ाया और तब से जीवन में साधना की जो विमल ज्योति जलाई थी उसे अन्तिम क्षणों तक सतत प्रज्वलित रखे बढ़ते रहे जीवन पथ पर। जीवन लीला के अन्तिम पटाक्षेप में प्रायः साधारण मनुष्य अन्धकार में भटक जाता है दिग्मूढ़ हो जाता है। किन्तु वे ऐसे प्रचण्ड साधक निकले जो इस ज्योति में निरन्तर त्याग वैराग्य का घृत सिंचन करते रहे और प्रकाश की ओर बढ़ते रहे बढ़ते ही चले गए।

लगभग सात मास तक उनके समीप बैठकर मैंने देखा कि उनके जीवन के हर कण २ में मधुरता छलक रही थी वृद्ध होने पर भी उनका मन वचन मधुरता से भरा हुआ था। आम तौर पर कहा जाता है कि फल पकने पर मधुर होता है, मगर आदमी कड़वा हो जाता है, परन्तु उनके जीवन में यह बात नहीं थी। वे तो जीवन में मधुर से मधुरतर होते चले गए। जो भी उनकी शरण में आया उसको भी मधुर बनाने का प्रयत्न किया। जिन्दगी में किसी के दिल को नहीं दुखाया। प्रत्येक प्राणी के लिये शरण भूत बने रहे। अपने कर्त्तव्य बोध के पथ पर निर्मल, निश्छल, निःसंकोच भाव से बराबर बढ़ते ही रहे।

२९ फरवरी की रात कितनी भयानक थी जब दिवाकर ने संसार में अन्धकार फैलाया तो उसके कुछ समय पश्चात् ही श्रमण संघ का सूर्य भी पंजाब में अन्धकार करने के लिए अस्त हो गया। इस दुःखद समाचार को

सुनकर चारों तरफ सन्नाटा छा गया। आपके उपकारों का वर्णन करने के लिए ज़बान में शक्ति ही नहीं। आपकी गंभीरता, सरलता, सहिष्णुता, उदारता, नम्रता, विद्वता, सौम्यता, सराहनीय थी।

काल इतना क्रूर, भयंकर, निर्दय है कि जिसने आपको हमसे छीन लिया। आपका नाम भी शुक्ल था, आत्मा भी शुक्ल थी, संघ में काम भी शुक्ल करके दिखलाए। शुक्ल पक्ष में ही इस भौतिक नश्वर शरीर को छोड़कर आप अगाध सुखों में विराजमान हो गए।

हे शान्ति के अमर देवता!

आपने जिस स्थान को रिक्त किया है, उसकी पूर्ति होना दुर्लभ ही नहीं असंभव है। संघ की नैय्या के खेवन हार आप जहाँ पर भी विराजमान हैं वहाँ से ही हमारे पर मेहर की नजर रखें। इन शब्दों के द्वारा हमारी सबकी सादर सभक्ति कोटि कोटि श्रद्धाञ्जली।

महान् योगी

साध्वी श्री मोहन माला जी

कुलीन जैन परिवार में उत्पन्न हुई साध्वी माला जी श्री प्रवेश कुमारी जी की सुशिष्या हैं। नव युवतियों को धर्म की ओर लाने में आप सदा सक्रिय रहती हैं। स्वाध्याय और सेवा आप के जीवन का मुख्य लक्ष्य है।

"हमेशा के लिए जीता वही इस दौरे फ़ानी में।
मेहर बन कर अजब चमके जो अपनी जिन्दगानी में॥"

संसार कहता है कि युग के अनुसार व्यक्ति को चलना पड़ता है किन्तु महापुरुष युग बदलते हैं। युग के साथ ही साथ वह संसार को परिवर्तन के चक्र पर चढ़ा कर नव चेतनामय संसार का निर्माण खड़ा कर देते हैं। युग उनके पीछे चलता है, परिस्थिति बदलती है, जमीन और आसमान के रङ्ग परिवर्तित हो जाते हैं। हमारे चरित नायक भी इन्हीं महापुरुषों में अपना स्थायी आसन प्राप्त किये हुए थे किन्तु काल का क्रूर चक्र उन्हें भी अपने साथ लपेट ले गया और वह भी अपने साथ क्षण भंगुर शरीर को त्याग हमेशा के लिए अपनी आत्मा को अमर बना गये।

हा! वे आज संसार में नहीं। पूज्यवर! हम आपके उपकारों को भुला नहीं सकते, परन्तु यह तो बता दीजिये कि इस अनाथ समाज को किस के सहारे छोड़ चले।

कृपालु ! आपने हमसे नाता तोड़ लिया। अब आपके अमृतमय वचन सुनने असम्भव किंतु हम आपके आदर्श जीवन से अवश्य कुछ सीखेंगे। आज हम ही नहीं हमारी समाज अनाथ हो गई।

कौम के एक ज्वलन्त सरदार, अहिंसा के अवतार, शान्ति के सागर, क्षमा के भण्डार, आगम निधि, चरित्र चूड़ामणि, कौम के चमकते सितारे पंजाब प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज देखते देखते सदा के लिए हमें अकिञ्चन और असहाय छोड़ गये। उस अमर देवता की सरलता, सतत कार्य-शीलता तथा निरन्तर राष्ट्रीय जीवन में धार्मिक जीवन का सामञ्जस्य करने की जागरूकता हमारे लिए प्राण बन कर नव चेतना सर्जन करती रही है।

मुझे मालूम है कि उनका निष्कपट प्रभावपूर्ण उपदेश कठोर से कठोर हृदय के धरातल पर कोंपल बनकर फूटता था और जीवन तथा जगत् के प्रति एक इन्कलाब करके रख देता था।

हम सब उनकी मधुर नम्र और उपदेश भरी वाणी की खोज में हैं। उनकी उपदेश भरी वाणी कानों के लिए वीणा का काम और दिल के लिए संयम तथा आत्मा के लिए सुधार का एक बार में ही काम कर देती थी।

उनका जीवन हमारे लिए हमारी समाज के लिए आदर्श था, प्रकाश स्तम्भ था। उनके स्वर्गवास से मुझे ही नहीं, बल्कि समूची समाज को एक गहरा धक्का लगा। वह ज्ञान सूर्य हम से अलग होकर स्वर्ग लोक में चला गया। आज हम उसके साक्षात् दर्शन नहीं कर सकते। परन्तु धर्म प्रवचन के रूप में प्रसारित ज्ञान किरणें आज भी हमारे सामने चमक रही हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन ज्ञान किरणों के प्रकाश में सत्य का अनुसन्धान कर जीवन को सफल बनाएँ। हम विवश निरुपाय उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती हैं और आशा करती हैं कि उनका अशीर्वाद भरा हाथ सदा हमारे सिर पर रहेगा और हमें सदा सुपथ दर्शन करायेगा।

महान्-ज्योति

साध्वी श्री राजेश्वरी जी महाराज

उक्त लेखिका साध्वी दिल्ली स्थित वयोवृद्ध श्रद्धेया साध्वी रत्न स्व० श्री मोहन देवी जी म० की शिष्या हैं। विराग भाव से प्रेरित हो कर कुलीन परिवार से दीक्षित हुई हैं। सेवा और तप इन के जीवन की विशेषता रही है।

पंजाब प्रवर्त्तक रत्न श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज का भौतिक शरीर हमारे समक्ष नहीं रहा परन्तु उनकी यशः-कीर्ति विश्व में गूँज रही है और इतिहास में

उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया है जोकि आगन्तुक सन्तति को भी मार्ग प्रदर्शित करता रहेगा। ऐसा क्यों ? इसलिए कि उनका जीवन अपने लिए ही नहीं था अपितु जगहिताय था।

आप का जन्म हरियाणा पंजाब के एक लघु ग्राम में हुआ था। आप संयम के महान् साधना के पथ पर आरूढ़ हुए, विश्व की विभूति बने। आपने त्याग पथ को अपनाया भोग पथ को ठुकराया तो आप को जैन समाज तथा जैनेतर समाज का बच्चा २ जानता है। महापुरुष विश्व की दिव्य ज्योतिपुंज होते हैं। वे चार दीवारी में नहीं रह सकते उन्हें विशाल क्षेत्र की अनिवार्यता होती है। किसी ने कहा भी है :—"दिलावर देवता दाता छिपाये छिप सकते नहीं"। जैन समाज का अहोभाग्य है जो उन्हें यह गुदड़ी का लाल उपलब्ध हुआ। आप बाल्यकाल से ही कुशाग्रबुद्धि थे। यही कारण है आप ने दीक्षित होकर शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। अध्ययन ही नहीं, आपका चिन्तन मनन भी गहन था। आगमों के आप धुरन्धर विद्वान थे। चर्चा वार्ता करने में भी आप निष्णात थे। आप जैन समाज के महाकाश के देदीप्यमान शशि थे। गगन मंडल का शशि तारागणों के मध्य सुशोभित होता है और अपनी रश्मियों से जग को शीतलता प्रदान करता रहता है। इसी प्रकार आप भूमण्डल के शशि थे और अपनी पीयूषमयी समधुर वाणी के माध्यम से जन मानस के हृदयों पर शीतलता उड़ेलते थे। आप की सौम्य आकृति से मानव भाव विभोर हो उठता था। बरबस ही आप की ओर आकर्षित हो जाता था।

आप सुयोग्य सात्विक थे। आप की प्रवचन शैली अद्वितीय थी। मानव मात्र के मन में मोहन मंत्र फूंक देती थी। जीवन को झंकृत कर देती थी। जन जीवन में जागरण की ज्योति जग जाती थी। आप की वाणी में माधुर्य एवं ओज था। आप में क्षमा, धैर्यता, सहिष्णुता अनुपम थी। आप उदार हृदयी थे। परहिताय अपने सुखों का भी उत्सर्ग कर देते थे। आप पुरुषार्थी थे सुदूर वर्ती देशों का देशाटन कर भगवान की वाणी को दूर दूर तक प्रसार किया। आप लेखक और कवि भी थे। वाग्देवी आप को मानो पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई हो। आपने महाकाव्य रामायण की सुन्दर सरस और सरल भाषा में रचना की। अन्य भी गद्य-पद्य ग्रन्थों की भी रचना की थी। आप अनेक सद्गुणों से अलंकृत थे। यदि सर्व गुणों का वर्णन करें तो एक विशालकाय ग्रन्थ बन जाये। अन्ततोगत्वा यह कहूं कि हमारे से ऐसा अमूल्य रत्न छिन गया है जो कोटि २ प्रयास करने पर भी अप्राप्य है। इस युग में रिक्त स्थान की पूर्ति होना असंभव सा प्रतीत होता है। ❀❀

धैर्य एवं सरलता के प्रतीक :

स्व० प्रवर्तक श्री जी म०

साध्वी श्री ओम प्रभा जी म०

स्वनाम धन्या साध्वी श्री धन्न देवी जी म० की सुशिष्या श्री कैलाशवती जी म० की ओमप्रभा जी लघु शिष्या हैं। अम्बाला के कुलीन परिवार से विराग भाव से दीक्षित होने वाली उदीयमान तरुण साध्वी दसवीं श्रेणी के साथ २ हिन्दी प्रभाकर तथा जै. सि. विशारद हैं। अध्ययन, सेवा और तपश्चरण की त्रिवेणी इनका जीवन है।

"अकसर सुनते हैं बदलता है जमाना।
मर्द वे हैं जो जमाने को बदलते हैं।।"

यह संसार एक सुन्दर उपवन है। इसमें प्रतिदिन सूर्य देवता की किरणों के साथ-साथ असंख्य मानव रूपी पुष्प विकसित होते हैं परन्तु बिना सुगन्धि अथवा आकर्षण के साधारण सा जीवन व्यतीत करके इस संसार रूपी वाटिका की धूल में ही रम जाते हैं परन्तु कुछ सुमन ऐसे खिलते हैं कि वे अपनी सुगन्धि से सम्पूर्ण वाटिका को सम्मोहक और आकर्षण की वस्तु बना देते हैं। प्रवर्त्तक पण्डित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज एक ऐसे ही अलौकिक असाधारण और तेजस्वी सुमन थे। जिनके सद्‌गुणों की महक सम्पूर्ण विश्व भर में फैल गई। ऐसे महापुरुष स्वयं ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर अपनी आत्मा के अन्धकार को दूर करते हैं तथा समस्त मानव जाति के लिये प्रकाश स्तम्भ बनकर आते हैं। एक अंग्रेज़ विचारक ने भी लिखा है कि :—

There are men and men,
But every man is not a gem.

क्षमा के अवतार, धैर्य की प्रतिमा, धीर और गम्भीर विशाल हृदयी, परम पूज्य पंजाब प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का जीवन भी ऐसा ही महान् जीवन था। वे केवल जैन समाज के नहीं, बल्कि समस्त जगत के लिये ही प्रकाश स्तम्भ थे। संयम-साधना के महान् क्षेत्र में वे, सामान्य साधकों से आगे, बहुत आगे थे। संयम एवं त्याग के महामार्ग पर उन्होंने जीवन के प्रथम चरण में ही अपने अडिग चरण बढ़ा दिये थे। एक सफल सैनानी की भान्ति, वे अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक इस मार्ग पर अटल, अडोल और अकम्प रहे। तभी तो अजर, अमर रूप से वे जनहृदयों में महत्त्वपूर्ण सर्वोच्च स्थान पा सके।

श्रद्धेय गुरुदेव एक ऐसे अमर साधक थे, जिसका समस्त जीवन ही, सद्गुण समूह से परिव्याप्त रहा है। आप में इतनी विशेषताएँ थीं, जिनकी गणना साधारण बुद्धि का व्यक्ति कर नहीं सकता। आपके जीवन में सरलता, विनम्रता, गंभीरता सौम्यता, धैर्य, त्याग, संयम और सेवा भाव आदि सभी सद्गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

आपने देश की, समाज की, संघ की, तथा साहित्य की जो सेवाएँ की हैं, वे अवर्णनीय हैं। आपके शरीर में असह्यय वेदना होने पर भी आपने जरा भी परवाह न की और जन कल्याण के लिये देश-देशान्तरों का परिभ्रमण किया। अज्ञान में भटक रहा अनेक आत्माओं को ज्ञान का प्रकाश दिया, भूली भटकी आत्मा को सही रास्ते पर लगाया।

हे शान्ति के अग्रदूत! जिस प्रकार की शान्ति आपके सौम्य मुख मण्डल पर टपकती थी, उससे भी कहीं अधिक आपके हृदय में थी। आपके चरणों में अमीर, गरीब, बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, राजा, रंक, सब समान थे। आपके चरणों में बैठ कर सभी लोग एक अपूर्व शान्ति का अनुभव करते थे। जीवन में एक बार भी जो व्यक्ति उस सौम्य मूर्ति के पवित्र दर्शन कर लेता, उसके सभी संकट दूर हो जाते। आपके चरणों में जिस व्यक्ति ने भी अपने मनोविचार रखे, आपने बहुत धैर्य और शान्ति भाव से श्रवण किया। आपके जीवन में बड़ी से बड़ी, छोटी से छोटी समस्याओं को बहुत ही सुन्दर और सरल ढंग से सुलझाने की एक कला थी।

पूज्य गुरुदेव की मुझ पर भी असीम कृपा रही है। मुझे अपने ही जीवन की एक घटना याद आ जाती है जबकि मेरे मन में वैराग्य भावना उत्पन्न हुई और मैंने अपने अभिभावकों से जब दीक्षा की अनुमति माँगी, तो उन्होंने इन्कार कर दिया। मैंने श्रद्धेय गुरुदेव जी के पवित्र चरणों में अपने विचार रखे, तथा संसार रूपी बन्धन से मुक्त होने के लिये नम्र निवेदन किया। गुरुदेव जी ने मुझे विश्वास और सान्त्वना दिलाते हुये कहा कि—"तुम चिन्ता मत करो सब काम ठीक हो जायेगा।" उसके पश्चात् गुरुदेव जी ने उन सब लोगों को इस सुन्दर ढंग से समझाया, जो व्यक्ति इस शुभ कार्य में रुकावट बने हुये थे, सभी ने सहर्ष मुझे दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की। जो समस्या उलझ रही थी, उसे सहज रूप से ही सुलझा दिया। आज गुरु महाराज की कृपा से ही मैं भगवती दीक्षा अंगीकार कर गुरुजी जी महाराज के पावन चरणों में जीवन यापन [illegible] रही हूँ।

खेद है कि आज के कुछ समय पहले २९ फरवरी १९६८ का दिन न मालूम कैसा उदय हुआ, जैन समाज के भाग्य में मालूम नहीं क्या बदा था, जबकि जैन समाज का एक चमकता हुआ सूर्य अस्त हो गया, हमारे हाथों से एक अनमोल रत्न छीन लिया गया। जैन समाज को आज जो क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है। भले ही आज हमारे श्रद्धेय हमसे ओझल हो गये हैं किन्तु आज भी आप अपने यशः शरीर और सुकृतियों से सब के समक्ष विद्यमान हैं तथा सदा के लिये रहेंगे। किसी ने सत्य ही कहा है :—

"सूरत से कीरत भली, बिना पंख उड़ जाये।
सूरत तो जाती रहें, कीरत कभी न जायें।"

अन्त में उस दिवंगत आत्मा के चरणों में श्रद्धा पुष्प अर्पित करती हुई, उनके चरणों में कोटि-२ वन्दन करती हूँ।

"प्रवर्त्तक थे पंजाब के, सन्तों के सरताज।
शान्त, सौम्य थे, सरल थे, शुक्लचन्द्र महाराज ॥
उत्तम करनी खूब कर, पहुँचे स्वर्ग द्वार।
'ओम प्रभा' का चरण में, वन्दन बारम्बार ॥"



पुण्यश्लोक महात्मा

साध्वी श्री सत्यावती जी म०

आप स्वनामधन्या, विदुषी, प्रवक्ता स्व० श्री पद्म श्री जी म० की सुशिष्या है। स्वभाव से सरल और नम्र। संयम एवं धर्म ध्यान में लीन रहना ही आपकी दिनचर्या है। गुरणी जी के गौरव को आपने अक्षुण्ण रखने का पूर्ण प्रयास किया है।

पुण्य श्लोक महात्मा शुक्ल चन्द जी महाराज के निधन से जो जैन जगत की धार्मिक संसार की क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना महान् कठिन है, नियति के नियम के आगे हम सब विवश हैं।

प्रवर्तक श्री जी ज्ञान-विज्ञान की राशि, संस्कृति के आधार, कर्त्तव्याकर्त्तव्य बोधक, शुभाशुभ निर्देशक, सत्य के स्वरूप, सदाचार के संचारक, सुख शान्ति के साधक, ज्ञानालोक प्रसारक, नैराश्यनाशक, शुभाशा के चतुर्वर्ग-प्राप्ति के सोपान, विश्वहित सम्पादक, और सरलता की साक्षात् मूर्ति थे। उनमें दिव्य, धैर्य,अद्भुत धार्मिक शौर्य, परिष्कृत मेधा, प्रकृष्ट प्रज्ञा, दया दाक्षिण्य की एकत्र स्थिति, भक्ति-वैराग्य का दिव्य समन्वय, शील प्रताप का बेजोड़ मेल के साथ-साथ सभा पाण्डित्य और वाद पाटव भी आश्चर्यजनक थे।

ऐसे दिव्य महात्मा के बताए सन्मार्ग का अनुसरण करने से और उनके पद-चिह्नों पर चलने से धर्म प्राण जैन जाति को अवश्य ही अभ्युदय निःश्रेयस् की प्राप्ति होगी जिससे इस लोक में सर्व प्रकार की शुभोन्नति के साथ-साथ परलोक भी सध जाएगा।

प्रवर्तक श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज जब तक इस संसार में रहे सर्वोत्कृष्ट महापुरुषों में रहे और नित्य शुद्ध-बुद्ध होने के कारण परलोक सच्चिदानन्द स्वरूप रहेंगे। मानव की यही पटुता है जो दोनों लोकों को साध ले।

"या लोक द्वयी साधिनी चतुरता सा चातुरी चातुरी"।

यथा नाम तथा गुण

साध्वी श्री वल्लभवती जी म०

साध्वी जी संयम एवं स्वाध्यायनिष्ठ स्वभाव की हैं, हरियाणा के कुलीन परिवार से सम्बन्धित हैं। अपने संयम जीवन में असहयोग की ठोकरों का अत्यधिक सामना करके भी आज संयम जीवन में स्थित है। ये वयोवृद्ध साध्वी श्री पन्नादेवी जी म० की शिष्या श्री प्रियावती जी की अंतेवासिनी हैं।

दिवंगत श्रद्धेय गुरुवर महामहिम, पण्डित रत्न प्रवर्त्तकराज श्री शुक्लचन्द जी महाराज पंजाब क्षेत्र को पावन बनाने वाले, "यथा नाम तथा गुणः" को सफल करने वाले पूर्ण प्रयत्नशील तथा गुणशील पुरुष थे। जैसे कट कट भी चन्दन सुन्दर सुगन्ध से वातावरण को सुरभित करता है। वैसे आप भी चैतन्यरूप चन्दन थे, अतः जनता को अपनी महक या ज्ञान रूप सौरभ से आकृष्ट कर लेते थे।

चन्द्रमा भले ही पूर्णिमा का हो, लेकिन मेघों से जब घिरा हुआ रहता है, तब अपनी पूर्ण कलाओं से सम्पन्न ज्योत्सना को प्रसारित करने में असफल हो जाता है लेकिन प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद श्री शुक्ल चन्द जी म० मोह, प्रमाद, कषायादि मेघों से निरावरण होने के कारण अपनी विद्वत्ता दीर्घ दर्शिता एवं समता, वात्सल्यता रूप ज्योत्सना से युक्त समय २ पर हम सब को शिव मार्ग में अग्रसर करने हेतु परम सहायक थे, पथ प्रदर्शक थे।

आप सम्पूर्ण जैन समाज के साधु साध्वियों के ऊपर ज्ञान दर्शन चरित्र तीनों रत्नों का समन्वय कराने वाले साधुओं में एक थे। आपके जीवन की सर्व-श्रेष्ठ विलक्षणता और महनीयता यह थी, कि "परोपकाराय सतां विभूतयः" अर्थात् सन्तों की सत्ता परोपकार के लिए ही है। प्रकृति से शांत, हृदय

और विचार से उच्च थे। सहृदयता और सेवा भावना श्री जी में कूट कूट कर भरी हुई थी। संक्षेप में आप सुकुशल हृदयी महात्मा थे।

हमारे गुरुजनों के द्वारा ही उस रिक्त स्थान की शीघ्रातिशीघ्र पूर्ति उन सद्गुणों के धारक सन्तों द्वारा ही हो, यही शासनदेव से प्रार्थना करती हूँ और उस रिक्त पद को पदानुयुक्त करने में सफलीभूत बनें यही हार्दिक भावना है। यही एक अन्य अनिश्चित भावी बातों में निश्चित है कि जो भी जीव इस असार संसार आया, उसे क्रूर काल के गाल का आश्रय लेना ही पड़ा। यह पौद्गलिक शरीर मोक्ष साधन के लिए उपादेय होता हुआ भी अवसरानुसार हेय हो ही जाता है। संसार के अन्य प्राणियों के सदृश संत-महात्माओं का भौतिक शरीर भले ही न रहे परन्तु उनकी गुण गाथाएँ इतिहास के पृष्ठों पर सदैव के लिए ही अमर हो जाती हैं यही संत जीवन की विशेषता है।

अंत में अपने संत समुदाय के सहारे, धैर्य गुण धारक संत शिरोमणी श्री शुक्ल चन्द जी म० की एक अल्पबुद्धि अनुयायिनी, पथानुगामिनी श्री—श्री वल्लभवर्ता जी महाराज तथा उनकी छत्रछाया में आश्रय पाई हुई श्री कृष्ण कुमारी व श्री सुरेश कुमारी जी की ओर से पण्डितराज म० श्री जी को कोटि २ भाव वन्दन सहित श्रद्धाञ्जली समर्पित हो॥

श्रद्धा-निवेदन :

श्रमण-संघ के उज्ज्वल शुक्ल तारे !

जैन साध्वी सरोज कुमारी

धरती तल पर मानव जन्म लेते हैं, कोई एक रूप में तो कोई दूसरे रूप में।

मानव, संसार का सर्वोत्कृष्ट अंग है। उसे ऐसी पूर्ण शक्ति प्राप्त है कि वह अपने जीवन को सुगन्धित पुष्प बनाकर जगत को सुरभि प्रदान करे।

माता पुत्र को प्राप्त कर विचार करती है 'मेरा लाल कुल का दीपक बने। इसका जीवन आनन्दमय हो।' बात भी ठीक है। निजी जीवन आनन्दमय होगा तो वह सहयोगी जनों को और अन्य प्राणी वर्ग को आनन्द की सुधा-धारा से आप्लावित कर सकने में समर्थ होगा।

श्रमण संस्कृति के उज्ज्वल तारे, योगनिष्ठ, महामानवीय गुणों से परिपूर्ण श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज ने इस तथ्य को सिद्ध कर दिखाया।

आप ज्ञान-दर्शन के आराधक एवं अहिंसा के उपासक तो रहे ही, साथ ही आपमें एक विशेष गुण—सरलता था, जो समस्त संघ के लिए अनूठी देन रहा।

जब-जब मुझे आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ तब-तब आपने अपने उपदेशामृत से संयम-जीवन की प्रशस्त राह दिखायी।

मानव के चोले में रहते हुए भी आपश्री दैवीगुणों से पूर्ण थे। आपके संयमी जीवन का प्रत्येक क्षण "तिण्णाणं तारयाणं" की बात को सिद्ध कर रहा था।

आपका उपदेश था—'आत्मा को पहचानो, अंतर्मुख होकर आत्मा की गवेषणा करो।'

यह क्या ? कलम को भी क्या यही मंजूर है कि आज उनके परोक्ष में उनका संस्मरण लिखा जाए ? क्या किया जाए ? आयुष्य कर्म की प्रबलता के आगे सभी असमर्थ हैं। धैर्य इसी बात पर आता है कि आज उसी महापुरुष का स्थूल शरीर हमारे समक्ष नहीं है तथापि उनकी उपदेश-ज्योति और आदर्श जीवनी हमारी पथ-प्रदर्शिका बनी रहेगी।

उस तपोधन, संयम-परायण आत्मा को मेरा कोटि-कोटि वन्दन !

उनके लिए शान्ति की कामना क्या ? वह तो इस लोक में रहते हुए भी उन्हें उपलब्ध थी तो परलोक में उसका प्राप्त होना तो स्वाभाविक ही है।

गुरुदेव ! आपका जीवनादर्श हमें बल प्रदान करता रहे और हमारा पथ प्रशस्त करता रहे। ◎◎ [जैन प्रकाश से संकलित]

कालजयी व्यक्तित्व :

महामना श्री शुक्लचन्द्र जी म०

साध्वी श्री प्रेम कुमारी जी म०

दिव्य व्यक्तित्व :

जन्म काल ही महापुरुषों का, जब करता है जग कल्याण।
तो फिर समझ लीजिये उनका, कैसा होगा भविष्य महान् ॥

डाली पर फूल खिलता है, तो वह इधर-उधर चारों ओर अपनी सुगन्ध बिखेर देता है। अपनी महक से आस-पास के वातावरण को सुगन्धित कर देता है। किन्तु कब तक ? जब तक उसका अस्तित्व है। जब तक वह मौजूद है। जब तक वह खिला हुआ है। वह मुर्झाया, डाली से गिरा, मिट्टी में मिला तो उसके अस्तित्व के साथ ही उसकी सुगन्ध का वह भंडार भी लुप्त और महकती हुई दुनिया भी खत्म। परन्तु इस जगति के मञ्च पर कुछ आत्माएँ, एक ऐसे महकते फूल की तरह अवतरित होती हैं कि जब तक वह मौजूद रहती हैं तब तक तो उनका व्यक्तित्व, और उनका अस्तित्व, जन गण मन को अपने गुणों की महक से महकाता ही रहता है। अपने सौरभ दान से जन मानस को एक ताजगी देता ही रहता है। किन्तु आँखों से ओझल हो जाने पर भी, उनके

जीवन के गुणों का मधुर-मीठा सुवास-जन-जन के मन को एक नव जागृति एवं एक नये जीवन का संचार करता रहता है।

श्रद्धेय प्रवर्तक पं० श्री शुक्ल चन्द्र जी म० का व्यक्तित्व भी एक महान् प्रकाश पुञ्ज था। दुर्भाग्य से आज वे हमारी आँखों के सामने नहीं हैं। परन्तु उनके जीवन की अपनी अनेक विशेषताएँ और उनकी सौम्यता, सहिष्णुता, व्यक्तित्व की कुछ ऐसी क्षमताएँ थीं, जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क को जागृति का सन्देश दे रही हैं। और रह रह कर हमें उनकी स्मृति दिला रही हैं। और यही तो जीवन का वास्तविक लक्षण है। किसी पद को प्राप्त कर लेना इतना कठिन नहीं अपितु उसका पालन करना ही सुदुष्कर है।

किसी कवि ने क्या ही अच्छा कहा है—

हो सकता है मनुष्य बड़ा पंडित बन जावे,
हो सकता है उपाधियाँ वह नाना पावे।
सन्मुख उसके भय से जनता शीश झुकावे,
चारों दिशि में विजय केतु उसका फहरावे॥
पर मनुष्य बनना नहीं मित्र वर काम है,
वह मनुष्य है वस्तुतः जिसका चरित्र ललाम है॥

मनुष्य होना कठिन नहीं, किन्तु मनुष्यत्व को पाना अति कठिन है किन्तु श्रद्धेय गुरुदेव तो सचमुच वह पंचनदीय श्रमण संघ के सन्तों के, विमल परम्परा के, उज्ज्वल सन्त रत्न थे। वे निर्मल आचार के गौरी शंकर, विचारों के सुमेरु, और साधुत्व के शिखर थे। उन्होंने जीवन के उषाकाल में ही जैनत्व की धर्म दीक्षा ग्रहण कर ली थी। जगत के माया पाश से दूर रह कर शासनपति श्री महावीर के आदेशों का निष्ठापूर्वक पालन करने में, उनकी आत्मा का कण-कण परम-परमानन्द का अनुभव करता था। यही कारण है कि सम्पर्कस्थ सन्त साध्विओं में भी वे इसी पवित्र आचार की ज्योति की आभा देखना चाहते थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक भव्य प्राणियों को मुनि धर्म में दीक्षित कर उनकी अन्तरात्मा में रत्न-त्रय की ज्योति जगाई थी। इसके अतिरिक्त महामना प्रवर्तक श्री शुक्ल चन्द्र जी म० सरलता भद्रता निष्कपटता और निर्मल चरित्र निष्ठा के परम हामी थे। महावीर की वाणी उनके जीवन का साकार रूप थी—

अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो माणो पराजिओ।
अहो निरक्किया माया, अहो लोभो वसी कओ॥

अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं।
अहो ते उतमा खन्ती, अहो ते मुत्ति उतमा ॥

क्रोध-मान-माया और लोभ से वे सदैव दूर रहते थे, क्षमा-शान्ति के वे सच्चे पुजारी थे। और पाखंड के कट्टर विरोधी थे, साधुता की पूजा उनकी आत्मा का आनन्द था। साधुत्व एवं मुनि भाव देख कर चाहे वह साधु दीक्षा-लघु ही क्यों न हो। किसी भी ग्रुप व सम्प्रदाय का हो उनका मन श्रद्धानत हो जाता था।

निर्भीक साधुत्वः

पंजाब के महाप्राण श्रद्धेय गुरुदेव की यह ध्रुव धारणा थी कि मुनि जीवन में और सब कुछ क्षमा योग्य हो सकता है, किन्तु साधुता का पतन, साधु भाव में स्थिर को अस्थिर बनाना उनकी दृष्टि में अक्षम्य अपराध था। कवि के शब्दों में—

हा ! शोक है ऐसे जीवन पर जिसमें साधुत्व का खंडन हो।
हिंसा, असत्य, अस्तेय, अब्रह्मादि, का मंडन हो ॥

उक्त प्रकार के साधुओं के सम्बन्ध में वे कहा करते थे, ऐसे साधु रंगे हुए मक्कार हैं। वे अपना जीवन तो भ्रष्ट करते ही हैं किन्तु वे हंसों की पंक्ति में बगुले की तरह, अलग ही दिखाई देते हैं। उन्हें कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता, क्यों कि सौरभहीन पुष्प बेकार ही होता है। उसकी कोई कीमत नहीं होती। देखिये कवि क्या कह रहा है :

वो फूल नहीं कंटक है, जिसमें सौरभ का सार नहीं।
मत कहो उसे वीणा हर्गिज, जिसमें मधुर स्वरों का झंकार नहीं ॥
भरे हुए है भावों से बहती, जिस में रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें संयम का कुछ प्यार नहीं ॥

श्रद्धेय गुरुदेव श्री पं० शुक्ल चन्द्र जी म० अनेक वार अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि श्रोताओ ! तथा सन्त साध्विओ ! मैं साधुता का तो पुजारी हूँ किन्तु घर छोड़ कर दर-दर भटक-भटक कर रोटी के टुकड़े मांग मांग कर उदर पूर्ण करने वालों को मैं साधु नहीं मानता। मुनिधर्म, संयम, त्याग, तितीक्षा, तप एवं इन्द्रिय गोपन का पथ है।

महाप्राण का संघ एकता में योग : सन् १९५०—५१ का समय

परे का विषय है। मैं तो उनकी सरलता, विमलता, निर्मलता, निष्कपटता, और अमल-विमल साधुता के प्रति श्रद्धानत हूं। उस साधुता के शिखर महामनि को मेरे कोटिशों नमन हैं। मैं विश्वास करती हूं, उस दिव्य व्यक्तित्व के अनुरूप ही उनका परवर्ति साधु समुदाय चरण चिह्नों पर चरण-न्यास करते हुए अग्रपद होकर उनकी कीर्ति को कालजयी बनाएगा।

श्रद्धा कुसुमांजलि

पं० रत्न श्री लक्ष्मी चन्द्र जी म०

श्रद्धेय पं० श्री जी म० स्व० स्थविर श्री सुजान मल जी म० के सुशिष्य हैं। ज्ञान एवं क्रिया मार्ग के हामी विद्वद् रत्न पं० जी व्याख्यानी और लेखक, अन्वेषक भी हैं। ऐतिहासिक सामग्री के अन्वेषण और लेखन में आजकल संलग्न हैं। समाज को आप पर गर्व है। मरुधरा के संतों में आपका अपना स्थान है। श्रमण संघ में आप प्रवर्त्तक पद पर रह चुके हैं।

जैन आगमों में छह लेश्याओं में शुक्ल लेश्या का तथा चार प्रकार के ध्यानों में शुक्ल ध्यान का विशद् वर्णन किया गया है। आत्मा के शुभाशुभ अध्यवसाय परिणाम विचार एवं संकल्पों को लेश्या कहते हैं। लेश्याओं में सबसे निकृष्टतम लेश्या कृष्ण लेश्या है, और सबसे उच्चतम एवं निर्मल पवित्र शुक्ल लेश्या है, शुक्ल लेश्या का वर्णन शास्त्रकारों में शंख, स्फटिकरत्न, गोक्षीर तथा रजत के समान श्वेत बताया है। शुक्ल ध्यान आत्मा की वह निर्मल दशा है जिससे आध्यात्मिक विकास की साधना करते हुए साधक कैवल्य तथा निर्वाण पद को प्राप्त करता है। शुक्ल लेश्या प्रथम गुणस्थान से तेरहवें गुणस्थान तक होती है। शुक्ल ध्यान अष्टम गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक होता है। शुक्ल लेश्या के साथ शुक्ल ध्यान का योग होने से ही आत्मा परमात्मा बनती है।

स्वर्गीय प्रवर्त्तक पंडित मुनि श्री शुक्ल चन्द जी महाराज ने ब्राह्मण संस्कृति में जन्म लिया था। सव्यसक होने के बाद आपको स्वर्गीय आचार्य श्री काशी राम जी महाराज का शुभ समागम मिला और उनका उपदेश सुनकर आपको जैन धर्म के प्रति श्रद्धा एवं अभिरुचि जगी। अन्त में आपने उनके चरणों में श्रमण दीक्षा स्वीकार की। आप अपने गुरु के विनम्र एवं श्रद्धाशील शिष्य थे। और आपने वर्षों गुरु महाराज की सेवा में रह कर जैन आगमों का गहन अध्ययन एवं चिन्तन किया। आपने विभिन्न प्रान्तों में घूम कर जैनधर्म का व्यापक प्रचार किया। विक्रम सं० २००९ में सादड़ी मारवाड़ में स्थानकवासी मुनियों का वृहत् सम्मेलन निश्चित हुआ। उसमें आप पंजाब से अपनी शिष्य मंडली सहित पधारे।

वहाँ जोधपुर श्री, संघ का विशेष आग्रह होने से २००८ का वर्षावास जोधपुर नगर में किया, उस समय स्वर्गीय गुरुदेव श्री सुजान मल जी म० वृद्धावस्था के कारण सरदार पुरा में विराजमान थे। आपने गुरुदेव से नम्र शब्दों में निवेदन किया कि 'अगर आपको कष्ट नहीं हो तो आप भी शहर में पधारें।' उस समय गुरुदेव के साथ आप श्री को रहने तथा सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप की सरलता, नम्रता एवं सेवा का अटल प्रभाव आज भी मेरे हृदय पर अंकित है और भविष्य में भी चिरस्मरणीय रहेगा।

२०२५ कृष्ण जन्माष्टमी   प्रेषक
जैन स्थानक भोपाल गढ़, जोधपुर (राजस्थान)   पारस मल प्रसून एम० ए०

हार्दिक अभिनन्दन

प्रवक्ता कवि श्री केवल चन्द्र जी म० 'साहित्यरत्न'

● राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के श्रमण वर्ग में श्री केवल मुनि जी म० का अपना स्थान है। आप एक लोकप्रिय प्रवक्ता एवं कवि भी हैं। स्व० प्रसिद्ध वक्ता सन्त गौरव श्री चौथमल जी म० के योग्य शिष्य हैं। समाज को आपसे बड़ी आशाएं हैं। ●

फूलों की मधुर गन्ध में जीवन गला देने वाला भ्रमर उसकी महेकता से अनभिज्ञ नहीं होता, तथापि उसे व्यक्त नहीं कर पाता। केवल उसके सुरभित मदक मोदक माधुर्य पर अपना जीवन न्यौछावर करके ही उसका सही मूल्यांकन करता है।

चरित्र नायक ! आपके सुवासित जीवन पुष्प का चरित्र रसपान करने वाला मेरा मन मधुप उस अलौकिक अनुभूति को शब्दों में भला कैसे व्यक्त कर सकता है। आपके आदर्शों का प्रतिरूप वाणी की शक्ति में नहीं, श्री चरणों में अर्पित श्रद्धा में ही प्रतिबिम्बित हो सकता है।

कुशल कलाकार ! आप ही तो थे, जिन्होंने कि ज्ञान और चारित्र के औजार से पाषाण खण्ड को भव्य सौंदर्यमयी प्रतिमा में बदलने वाले कलाकार की तरह जन मानस को दिव्य रूप में परिणत किया।

प्रकाश पुंज ! आपने अपने ज्ञान प्रकाश से सागर के प्रकाश स्तूप की तरह जन जीवन कल्याण का मार्ग प्रकाशित किया।

हृदय रत्न ! आपका जीवन वाह्यान्तर रूप से एक था। आपके सान्निध्य में सब को माधुर्य मिलता था। जो भी आपके समीप आया उसका जीवन आपके

गुणालोक से आलोकित हो उठा।

सरल चेत्ता ! सत्य, सरलता, एवं नम्रता आदि गुण आपके जीवन में साकार थे। युवाचार्य तथा प्रवर्त्तक जैसे पद पाकर भी आपका हृदय अभिमान तथा श्लाघा निष्ठा से दूर था।

सच्चे सेनानी ! एक योद्धा की भान्ति, जीवन संग्राम में अपना शौर्य दिखा कर आप हम से दूर चले गए। केवल तन से, अपने गुणों की अमिट छाप जन मन पर अंकित करके।

साधक ! आपकी सफल साधना का कोटिशः अभिनन्दन !

मद्रास
दि० २ अक्तूवर, ६८

प्रेपक —
पार्श्व कुमार जैन



श्रद्धा-स्मारिका

उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म्हाराज

श्रद्धेय पं० रत्न श्री जी के नाम से कौन अपरिचित होगा। आप मरुधरा के जाने माने प्रमुख संत हैं। श्रमण संघीय उपाध्याय पद से पूर्व आप श्री रत्न-सम्प्रदाय के आचार्य भी रहे हैं। ज्ञान और क्रिया का समन्वय ही आपका जीवनादर्श है। वक्ता, लेखक तथा ज्ञान भण्डार जैसी समाजोपयोगी संस्था के संस्थापक होने के साथ योगसाधनाके अभ्यासी हैं। साधु जीवन के आचार पक्ष के आप कट्टर समर्थक हैं।

पूज्यवर श्री काशीराम जी म० सा० के सुशिष्य प्रवर्त्तक पं० र० श्री शुक्ल चन्द जी महाराज सा० का परिचय सादड़ी सम्मेलन के पश्चात् विशेप रहा, नामानुकूल आप अन्तर-बाहर शुभ्र, मृदु, एवं शान्त स्वभावी थे। जैन धर्म की श्रद्धा आप में कूट-कूट कर भरी थी। आपके स्नेहपूर्ण व्यवहार आज भी स्मृति पटल पर अंकित हैं।

आप अच्छे कवि और मधुर व्याख्यानी थे। जैन रामायण, जैन महाभारत आदि कृतियां आज भी आपके साहित्य प्रेम का परिचय प्रदान कर रहे हैं।

आपके स्वर्गवास से श्रमण वर्ग ने एक अनमोल रत्न गंवाया है। हम आशा करते हैं—मुनि राजेन्द्र जी, महेन्द्र मुनि, सुमन मुनि आदि स्वर्गीय प्रवर्त्तक जी म० के गुणों का अनुसरण कर आचार्य श्री सोहन लाल जी म० सा० की संयम निष्ठसंस्कृति को चमकाते हुए स्व० पं० श्री जी के रिक्त स्थान की पूर्ति करेंगे।

पाली (राजस्थान)
दि० ४-८-६८

प्रेपक—
तारा चन्द, मन्त्री



शुक्ल की शुक्लता : एक संस्मरण

श्री गणेश मुनि जी, शास्त्री, साहित्यरत्न

● श्री गणेश मुनि जी मरुधरा के प्रसिद्ध सन्त श्रद्धेय श्री पुष्कर मुनि जी म० के सुशिष्य हैं। ये प्रकृति से भद्र और मिलनसार एवं स्नेही सन्त हैं तरुण सन्त वक्ता के साथ विचारक एवं लेखक भी हैं। कई पुस्तकें आपकी प्रकाशित हो चुकी हैं, जो जैन साहित्य की देन रहेंगी। समाज को आपसे बड़ी आशाएं हैं। आपका विचरण क्षेत्र (मेवाड़, मारवाड़) राजस्थान होते हुए भी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र प्रदेश रहा है। ●

गुलाब बन कर महक तुझको जमाना जाने।
तेरी भीनी भीनी महक अपना बिगाना जाने॥

परम श्रद्धेय प्रवर्तक श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का जब मैं स्मरण करता हूँ, तो मुझे सहज ही उस फूल की कल्पना हो जाती है जो नगर के उपवन के बीच अपनी अनन्त सौन्दर्य राशि को बिखेरता हुआ खिलता है, महकता है। और हजारों जन-मुख से प्रशंसा संप्राप्त कर एक दिन अनन्त धूल के रज कण में विलय हो जाता है। सचमुच प्रवर्त्तक जी म० का जीवन भी एक लहकता महकता फूल था। वह समाजरूपी उपवन में खिला, विकसित हुआ और अपनी मधुर सुरभि से चहुँ-दिशाएं सुरभित करता हुआ अनन्त काल के गर्भ में अन्तर्निहित हो गया।

श्री प्रवर्त्तक जी म० एक कर्मठ योगनिष्ठ सन्त थे। फक्कड़ प्रकृति के एक मधुर वक्ता थे। मुझे उस महापुरुष के सहवास में रहने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था, सर्व प्रथम सादड़ी सम्मेलन की सुनहरी घड़ियों में उसके पश्चात् सोजत मन्त्रिमण्डल की बैठक में, और आज से चार वर्ष पूर्व अजमेर-शिखर-सम्मेलन के पावन प्रसंग पर। इस प्रकार कई स्थानों पर प्रवर्तक जी म० का मधुर मिलन होता ही रहा था। उनके मधुर मिलन की मधुर स्मृतियां आज भी मेरे दिल और दिमाग में चल-चित्र की भान्ति उद्‌बुद्ध हो रही हैं। अतीत की स्मृतियां कितनी महान् व सुहावनी होती हैं कि वे कभी भुलाई नहीं जा सकतीं।

मेरे विचारों की अनुभूति के ये मधुर घूँट हैं कि प्रवर्तक जी म० जैसे बाहर से थे वैसे भीतर से भी थे। उनका आन्तरिक जीवन गुलाबी सन्ध्या की तरह क्षणिक चमक-दमक वाला नहीं था, वरन् प्रखर दिनकर की तरह प्रभावान् था। जिसका ज्वलन्त प्रमाण है—वे आद्य से इति तक संयम के राज-पथ पर अपने मुस्तैदी कदमों के साथ अविरल गति से बढ़ते रहे। बढ़ते रहना जीवन है

और रुक जाना मृत्यु है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने एक स्थान पर ठीक ही कहा है—

"सक्रियता ही जीवन है, जिस व्यक्ति में सक्रियता के स्थान पर निष्क्रियता आ जाती है, तब वह व्यक्ति, व्यक्ति न रह कर एक प्रकार से मिट्टी का ढेला बन जाता है।"

कविन्द्र रविन्द्र के शब्दों में यदि कहें तो—"फूल चुनने के लिए ठहरो मत ! आगे बढ़े चलो ! तुम्हारे मार्ग में निरन्तर फूल खिलते रहेंगे"। इसी बात को स्वामी विवेकानन्द ने इस प्रकार कहा है—"हमारे पीछे कोई आता है या नहीं यह विचार भी न लाओ, बराबर आगे बढ़ो"।

उक्त दृष्टि से चिन्तन की चाँदनी में जब विचार करते हैं तो साधिकार की भाषा में कहा जा सकता है कि प्रवर्तक जी म० अपने साधना के पथ में कभी रुके नहीं आगे बढ़ते ही रहे थे। उनके विचार और आचार में कभी शैथिल्यता दृष्टिगत नहीं हुई। सुख के दिलकश नजारों पर और दुःख के नुकीले कांटों की राहों पर वे कभी अटके नहीं उलझे नहीं। यही तो महापुरुषों के जीवन की विशेषता है। जीवन में आने वाले विघ्न-बाधाओं के बवण्डर व तूफानों से वे कभी कायल नहीं होते। सदा-सर्वदा उनसे संघर्ष करते रहते हैं। यद्यपि महापुरुष अपने जीवन में विघ्न-बाधाओं को नहीं चाहते, तथापि जीवन में बरबस वे कभी आ जाती हैं तो उनका वे बड़े प्रेम से स्वागत करते हैं। राष्ट्र कवि श्री मैथिली शरण गुप्त की भाषा में—

प्रद प्रवचन जनता के दिलों को गद्-गद् बना देते थे। आप श्री के कई प्रवचन मैंने सुने, कुछ प्रवचन के अंश मैंने लिपिवद्ध भी किए। आज भी मैं अपनी प्रवचन डायरी खोल कर देखता हूँ तो उसमें प्रवर्त्तक जी म० की आत्मा का स्वर स्पष्ट बोलता हुआ सुनाई पड़ता है।

वक्तृत्व कला के साथ आप में काव्य कला भी बेजोड़ थी। शुक्ल रामायण आदि कवि-कर्म की श्रेष्ठ प्रतिकृति है, जिसका समस्त क्षेत्रों में समान-समादर हुआ है।

श्री प्रवर्त्तक जी म० को मैंने निकटता से देखा है। वे प्रेम, स्नेह व वात्सल्य की प्रतिमूर्त्ति थे। उनके जीवन में स्नेह की लताएं बिछी पड़ी थीं। वे आचार में, विचार में और व्यवहार में सर्वत्र प्रेममय थे। यदि यों कह दें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रवर्त्तक जी म० श्रमण-समाज की एक मूल्यवान् मणि थे। जिनका प्रकाश यत्र-तत्र-सर्वत्र फैला हुआ था। खेद है कि आज वह मणि हमारी आँखों से ओझल हो चुकी है, पर यथा नाम तथा गुण के अनुसार शुक्ल की शुक्लता जन-जन के अन्तर्मानस में आज भी चमक-दमक रही है। उनकी शालीनता, मनमोहकता और भव्यता आज भी बरबस स्मरण दिला रही है, मुझे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जैन समाज को भी। ऐसी ज़िन्दा दिली ज़िन्दगी के लिए ही तो कवि का स्वर इस रूप में मुखरित हुआ है:—

ज़िन्दगी ऐसी बना ज़िन्दा रहे दिलशाद तू।
जब न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद तू॥

श्रमण संघ शिरोमणे

साध्वी श्री आज्ञावती जी 'विशारद'

साध्वी आज्ञा जी स्वनामधन्या श्री मथुरादेवी जी म० की शिष्या वयोवृद्धा श्री सत्यवती जी म० की अंतेवासी परम्परा में से हैं। आपकी दीक्षा पट्टी (अमृतसर) पंजाब में साध्वी वयोवृद्धा———————— —के पास हुई थी। आप वक्ता एवं विदुषी साध्वी हैं। पंजाब के साध्वी वर्ग में आपका भी अपना स्थान है।

परम श्रद्धेय, पूज्यपाद, आगम वारिधि, विश्ववन्द्य, स्वनामधन्य, पण्डित-रत्न स्वर्गीय श्री शुक्ल चन्द्र जी म० यद्यपि आज जैन जगत में प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान नहीं हैं, तथापि उनका उज्ज्वलतम यश, शान्तमुद्रा, गहनचिन्तन, समाजोत्थानादि विशिष्ट गुण परोक्ष रूप में जैन समाज के हृदय में सुनिहित है। कहने को यूं कहा जा रहा है कि—समाज का उदीयमान 'शुक्लचन्द्रास्त' हो गया है। व्यवहारिक रूप से चन्द्र अस्त हो जाता है, वस्तुतः चन्द्रास्त न हुआ है, न होता है,

उसकी अपनी शीतलमयी ज्योत्स्नाओं का प्रकाश किसी न किसी लोक में प्रकाशित होता ही है। फिर आपके श्रद्धालु कुमुदवृन्द का मुरझा जाना स्वभाविक ही है। आपकी प्रचण्ड मार्तण्ड गुणावली के आगे यह मेरे कतिपय श्रद्धा सुमन अभिनन्दन स्वरूप हास्यास्पद ही प्रतीत होंगे, पर मम मानसिक विचारों के प्रवाह से प्रेरित होकर यह लेखनी आपके गुणानुवाद करने में कुछ उद्यत हुई है।

हे जैन धर्म निष्णात !

आपका शुभ नाम है 'शुक्लचन्द्र' जिसका स्थूलरूप भाव है कि श्वेत चन्द्र, वास्तव में जैसे अन्धकार की कालिमा से व्याप्त रात्रि में चन्द्रमा का उदय अन्धकार कालिमा विनष्ट कर संसार को प्रकाशपुन्ज बनाता है तथा व्याकुल संसार में शीतलता का सरस संचार करता है, एवं परम मान्य गुरुदेव के व्यक्तित्व से संसार की अज्ञानता का विनाश, कलूषित आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियों को जैसे शान्त किया हैं, इसका ज्वलन्त प्रमाण तो स्वयं ही आपका जीवन रहा है। निस्सन्देह अनादि नियमानुसार जाने वाला प्राणी चला ही जाता है, रह जाती हैं केवल उनकी अमर कृतियां इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर। सचमुच वे पार्थिव शरीर से हमारे मध्य नहीं हैं, परन्तु उनका व्यक्तित्व, साहस, वीरत्व की संस्मृति लिए मधुर याद दिलाती ही है। सत्य तो यह है कि—

बुझ गई है जीवन ज्योति, स्मृतियां सदा ही अमर हैं।
अब कहां सुलभ हो सकते, उन जैसे शिव शंकर हैं।
युग २ तक यहां अमर रहेगी, गुरुवर तेरी जीवन गाथा।
अब तो केवल वाणी से ही, गाएगी तेरी गुण गाथा॥

हे पांचाल देश गौरव महात्मन् !

नीति के उक्त गुण आप श्री में पूर्णतया पाए जाते थे।

विपदि धैर्य मथा भ्युदय क्षमा, सदसि वाक्पटुता अविविक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृति सिद्धीमदमहि महात्मनाम् ॥

परमपूज्य !

गत दो वर्ष पूर्व अम्बाला क्षेत्र में आप श्री जी के सानिध्य में वर्षावास के अतिरिक्त चिरकाल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह स्वर्णावसर कितना मंगलमय था जब प्रतिदिवस प्रभात वेला में आप महानुभाव का शुभ दर्शन एवं पावन वाणी को प्राप्त करते हुए यह जीवन आनन्दानुभूति में लीन रहता था। तत्पश्चात् चण्डीगढ़ क्षेत्र में भी आप श्री के शुभ दर्शन प्राप्त हुए, सचमुच आपकी वाक्पटुता, वक्तृत्व कला में दर्शक व श्रोतवृन्द प्रभावितहुए बिना नहीं रहता था। ऐसा तो स्वप्न में भी आभास न था कि यह महानातमा का अब अन्तिम ही साक्षात्-कार होगा। अब तो मानसपटल पर केवल अतीत की स्मृति मात्र ही शेष रह गई हैं। ओ निर्दयी क्रूर काल ! तू समाज के कोष में से अनमोल निधि छीनता जा रहा

है, अभी तो पूर्व के रिक्त स्थान की पूर्ति में न हो पाए थे, कि यह सहसा वज्रपात हुआ ! समाज के हाथों एक अनमोल रत्न लुट गया। जिस क्षति की पूर्ति निकट भविष्य में कठिन ही नहीं अपितु असम्भव ही प्रतीत होती है। बस ! अब तो आपके सद्गुणों की अमिट छाप रहेगी, युग युगान्तरों तक समाज के मानस पटल पर। आपने जो वैराग्य संयम की हितशिक्षा, शान्ति व प्रेम का सन्देश जनहित में प्रदान किया है, उसी का अनुसरण ही एक मात्र कर्तव्य रह जाता है। पूर्णतः उसका परिपालन करना एवं उनकी प्रिय संघैक्य भावना संगठन प्रेम सूत्र को विस्तृत करना ही सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी। अन्त में—

दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हो, एवं आप श्री के शोकाकुल संतप्त परिवार तथा शिष्य समुदाय को धैर्य धारण की क्षमता प्राप्त हो, जैन जगत में भी पूर्णरूपेण समस्त प्राणियों हृदय में आपके सद्गुणों का समावेश हो, शासनेश से यही मंगल कामना है—

इसी भान्ति महीतल पर सहस्त्रों प्राणी जन्म लेते तथा मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उनके जीवन का कोई यथार्थ ध्येय नहीं होता है, उनके संयोग अथवा वियोग से न हर्ष होता है न विषाद। जन्म उन्हीं का श्रेष्ठ एवं सार्थक है, जो अवनीतल पर सुरभित पुष्प सदृश अवतरित हों, जिनका जीवन विश्व के कल्याण हेतु अर्पित हो।

हाँ तो, ये सुरभित पुष्प थे, गुरुदेव श्री "शुक्लचन्द जी" महाराज। जो भारतीय संस्कृति के महर्षियों में सर्वोच्च स्वर्णिम नक्षत्र थे।

"छिपाए से न छिप सकतें कभी यह लाल गुदड़ी में"।

आप यथार्थतः 'गुदड़ी के लाल' ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं। आप श्री का जीवन "रत्नत्रय' की त्रिवेणी का सतत प्रवाह था। उस महान ज्योतिर्धर की महान साधना की प्रतिभा किसी भी सम्प्रदाय या देश की सीमा में न रहकर भास्कर के प्रकाश की भान्ति दशों दिशाओं में व्याप्त थी। उस संयम निष्ठ आत्मा के, सम्पूर्ण गुणों का वर्णन करना मेरे लिए दुष्कर ही नहीं अपितु असम्भव भी है। सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। आप श्री गुणों के भण्डार थे, और मैं असमर्थ, अल्पज्ञ और शक्ति हीन।

महान साधक में अन्तस्तल को स्पर्श करने की नैसर्गिक (natural) योग्यता थी जिसके कारण ही उनका जीवन जन-जन पर अमिट प्रभाव डाल सका। कठिन से कठिन विषय को सरल शब्दों में प्रकट कर देना ही आपके पाण्डित्य का प्रमाण है। जो भी आपके सम्पर्क में आया उसने स्नेह पाया, और ज्ञानामृत का पान किया।

"अहो ते अज्जवं साहु, अहो ते साहु मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खंती, अहो ते मुत्ति उत्तमा॥"

(सू० उ०, अ० ९)

आपके दिव्य सद्गुणों के समक्ष प्राणी मात्र का मस्तक नत हुए बिना नहीं रह सका। आप श्री में अद्वितीय सौम्यता, प्रखर पाण्डित्य, अदम्य पुरुषार्थ के साथ निश्छल-संयम, तप त्याग आदि गुण प्रशंसनीय थे। इन्हीं गुणों ने आपको उच्च पद पर अधिष्ठित किया।

इस विशिष्ट निधि ने जैन समाज की ही नहीं अपितु मानव मात्र की महान सेवा की। अनेक ग्रन्थों एवं रचनाओं द्वारा उन्होंने प्रभु की वाणी का सर्वत्र प्रसार किया। वस्तुतः प्रवर्त्तक श्री जी किसी व्यक्ति के नहीं थे, सर्व प्राणी मात्र के समदर्शक थे। "यथा नाम तथा गुण" के अनुसार आपका हृदय विशाल था, उज्ज-

वल था और नवनीत की भान्ति सुकोमल था। सभी के लिए आपका जीवन अनुकरणीय है।

२९ फरवरी के दिन इस महान ज्योति स्तम्भ का अन्तर्धान हो गया। "दैवी विचित्रा गति" इस सबल के समक्ष विश्व को परास्त होना पड़ता है। ऐसे अनमोल 'रत्न' के अभाव की पूर्ति सर्वथा असम्भव है।

यद्यपि ये महान संत आज इस पार्थिव लोक में नहीं है तथापि, उनका अध्यात्मिक तेज, उनकी जीवनी, आज भी हमारे लिए मार्ग दर्शक के रूप में विद्यमान है। अध्यात्मिक रूप से वे जन हृदय में सदैव अमर रहेंगे, और उनके उत्कट आचार विचार का अविरल स्रोत सहस्राब्दियों तक प्रवाहित रहेगा।

उस शान्ति के देवता, ज्ञान सुधाकर व संत शिरोमणी के अद्वितीय गुणों को कोटि-कोटि भाव भीनी वंदना करते हुए मेरी यही कामना है, उनकी साधना के दिव्य पथ का हम सुचारू रूप से अनुसरण कर सकें। इन्हीं अल्प शब्दों के साथ पतित-पावन गुरुदेव के प्रति मेरी भावमयी श्रद्धांजलि है।●●

एक महकती जिन्दगी

श्री देवेन्द्र मुनि म० शास्त्री "साहित्यरत्न"

○मुनि जी श्रद्धेय प्रसिद्ध वक्ता पं० श्री पुष्कर मुनि जी म० के सुशिष्य हैं। आप स्वभाव से बड़े मिलनसार एव स्नेही संत हैं। लेखक और सम्पादन आपके जीवन का विशेष उद्देश्य है। अब तक आपके हाथों अनेकों पुस्तकों का लेखन, सम्पादन हो चुका है।●

भारतीय विचारक अतीतकाल से ही जीवन के सम्बन्ध में गम्भीर विचार और गहन विश्लेषण करते रहे हैं। वह जीवन क्या है जो चोट खाकर ढेले की तरह शान्त हो जाए? वह जीवन क्या है जो जरा सा प्रतिकार करने पर बांध की तरह बन्ध जाए? वह जीवन क्या है जो जरा सी आपत्ति आने पर श्रृगाल की तरह पीछे मुड़ जाए? वह जीवन क्या है जो सदा मुहर्रमी सूरत बनाकर दिन-रात बिलखता रहे और गली-कूचों में शूकर और कूकर की तरह घूमता रहे? जीवन वह है जो गेन्द की तरह जमीन पर गिर करके भी दुगने वेग से ऊपर उछलता है। जीवन वह है जो एक निर्मल निर्झर की तरह चट्टानों से टकरा कर और उसे तोड़ करके भी आगे बढ़ता है। जीवन वह है जो आपत्ति को भी सम्पत्ति मान करके भी शेर की तरह गरजता है। जीवन वह है जो गुलाब के फूल की तरह कांटों की शय्या पर भी मुस्कराता है और अगरबत्ती तथा मोमबत्ती की तरह जल करके भी प्रकाश और सुगन्ध देता है।

एक घण्टे तक संस्कृत भाषा में होती रही। उस समय मेरी उम्र बहुत ही छोटी थी—दस वर्ष की। मैं वार्तालाप से और स्नेह सौजन्यता पूर्ण सद्व्यवहार से इतना ही समझ सका कि श्री शुक्लचन्द्र जी म० एक प्रतिभा सम्पन्न स्नेह और सौजन्य मूर्ति सन्त-रत्न हैं।

उसके पश्चात् सादड़ी-सन्त-सम्मेलन के अवसर पर उनसे पुनः अवसर प्राप्त हुआ। पर सम्मेलन के भीड़-भड़क्के के वातावरण में उनसे उतना निकट का परिचय न हो सका, जितना हम चाहते थे। पर सोजत मन्त्रि-मण्डल की बैठक के पहले ही बवासीर की चिकित्सा हेतु पं० शुक्लचन्द्र जी म० अपने शिष्यों सहित वहां आ चुके थे, श्रद्धेय गुरुदेव भी वहां पधार गए, एक महीने तक दोनों एक ही स्थान पर ठहरे, उस समय एक दूसरे को अत्यन्त निकटता से देखने का अवसर मिला, ज्यों ज्यों मैं उनके निकट सम्पर्क में आया त्यों त्यों मेरी श्रद्धा उनके प्रति अधिक जागृत होने लगी। मैंने अनुभव किया कि उनका मानस मक्खन सा मृदु है, उनकी वाणी मधु सी मधुर है और जीवन अंगूर की तरह रसदार है। वे बालकों में बालक हैं, युवकों में युवक हैं और वृद्धों में वृद्ध हैं। उनमें अपार जोश है और कार्य करने की ग़ज़ब की निष्ठा है।

उसके पश्चात् अजमेर शिखर-सम्मेलन के अवसर पर पुनः मिलने का सौभाग्य मिला, उस समय उनका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था, तथापि लम्बा मार्ग तय कर संगठन की भावना से समाजोत्थान के विचार से वे अजमेर पहुँचे। यह थी उनमें संगठन की भव्य भावना। उनका जीवन गुणों का गुलदस्ता था। वे पण्डित थे, मधुर-वक्ता थे और सफल कवि थे, सुधारक थे। सिद्धान्तवादी थे और थी मानवता की मंजुलमूर्ति। उनके प्रवचनों का एक सुन्दर संकलन 'धर्म दर्शन' के नाम से प्रकाशित हो चुका है। शुक्ल रामायण और महाभारत उनके प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ रहे हैं।

आज वे नहीं रहे हैं वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ उनको खोकर एक रिक्तता का अनुभव कर रहा है। भौतिक दृष्टि से यह प्रकथन सत्य हो परन्तु अध्यात्मिक दृष्टि से ऐसा नहीं माना जा सकता। उनके गुण आज भी चमक रहे हैं। भौतिक देह से भले ही वे स्नेह साथियों को छोड़ कर चले गए हैं, परन्तु महाकवि कालिदास की काव्यमयी वाणी में "यशः शरीरेणाद्यापि जीवति" उनके वे मधुर संस्मरण उनके स्नेही-साथी कैसे भूल सकते हैं और वे सदा स्वर्णाक्षरों की तरह चमकते रहेंगे। उनके पावन संस्मरण सदा चमकते रहें, यही उनके तेजस्वी जीवन की सार्थकता का प्रबल प्रमाण है।

तुम्हें कहता है मुर्दा कौन, तुम जिन्दों के जिन्दा हो।
तुम्हारी नेकियां बाकी, तुम्हारी खूबियां बाकी ॥

जैनत्व के परमोपासक

साध्वी श्री सुन्दरी देवी जी म०

पंजाब और हरियाणा प्रदेश की व्याख्याता साध्वी श्री सुन्दरी जी स्वनामधन्या श्री मथुरा देवी जी म० की शिष्या हैं। पंजाब के साध्वी परिवार में उनका अपना स्थान था और आज इस व्याख्याता साध्वी जी का भी। स्वभाव से नम्र, पर अनंग की धनी, साध्वी ने लघु आयु में दीक्षित होकर पूर्वजों का नाम रोशन किया है। आप हरियाणा प्रान्त में अति लोक प्रिय हैं।

बीसवीं शताब्दि के अनेक विशिष्ट सन्तों में पं० रत्न श्री शुक्ल चन्द जी महाराज का नाम सदैव चिर-स्मरणीय रहेगा। अपनी तरुणावस्था में ही आपने जैन मुनि दीक्षा ग्रहण की और पंजाब केसरी जैनाचार्य्य श्री काशी राम जी महाराज के शिष्य रूप में प्रसिद्ध हुए। आप की प्रतिभा विलक्षण और स्मरण शक्ति अतिशय तीव्र थी अतः गुरु जनों की कृपा और अपनी प्रखर बुद्धि के कारण स्वल्प समय में ही आपने हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत और जैनागमों का गंभीर अध्ययन कर लिया।

सच्चे श्रमण-:—जैन श्रमण के रूप में आपका जीवन अग्नि में तपे हुए स्वर्ण की भान्ति शुद्ध, स्वच्छ एवं निर्मल था, तभी तो पंजाब जैन सम्प्रदाय में एक से एक उच्च कोटि के शास्त्रज्ञ, तत्वज्ञ, मुमुक्षु, व्याख्याता एवं विचारक सन्तों के होते हुए भी युवाचार्य की महान पदवी के लिए आपको सन्मानित किया गया। आपके प्रकाण्ड पाण्डित्य और चित्ताकर्षक व्यक्तित्व के कारण धर्म विमुख लोगों में भी आपके सहज सरस उपदेश से धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा उत्पन्न हो उठती थी। पंजाब, हरियाणा देहली, यू० पी०, राजस्थान, बम्बई, गुजरात और खानदेश, मालवा आदि प्रान्तों में पैदल भ्रमण कर आपने जिन शासन की पताका को जिस शान से लहराया वह प्रशंसनीय है। संस्कृत के एक विद्वान ने आप जैसे महापुरुषों का वर्णन एक श्लोक में इस प्रकार से किया है :—

नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभाः
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभाः ॥

अर्थात् प्रथम तो मनुष्यत्व का मिलना इस संसार में बड़ा कठिन है, मनुष्यत्व के साथ २ विद्या प्राप्ति हो जाय तो यह और भी कठिन है। मनुष्यत्व

और विद्वत्व के साथ २ यदि कवित्व शक्ति भी आ जाय तो क्या कहना परन्तु इन तीनों शक्तियों के साथ भी एक व्यक्ति के लिए सत्व सम्पन्न होना तो अत्यन्त दुर्लभ है। परन्तु श्रद्धेय गुरुदेव श्री शुक्ल चन्द जी महाराज में इन चारों गुणों का समावेश भली भान्ति देखा जा सकता था।

कुशल लेखक :—विविध विषयों पर आपने अनेकों पुस्तकें लिखीं जिनमें सरसता, सरलता और सुस्वरता की त्रिवेणी ठाठें मारती प्रतीत होती है। जटिल से जटिल विषयों को भी आपने अपनी लेखनी द्वारा सरल बना दिया हैं। आपके द्वारा रचित तमाम साहित्य स्वान्तःसुखाय के साथ २ बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की कोटि पर खरा उतरता है। आपका काव्य प्रायः भाव, भाषा और शैली सभी दृष्टियों से प्रांजल एवं प्रौढ़ है।

स्वाध्याय प्रेमी :—स्वाध्याय तो आपके जीवन के कण २ में अपना स्थान बना चुका था। मैंने जब २ भी आप को एकान्त में खाली बैठे देखा तो सदैव आपके कर कमलों में कोई न कोई शास्त्र अथवा अन्य धार्मिक पुस्तक को पाया। पढ़ते-पढ़ते थक जाते अथवा उकता जाते तो एक महान दार्शनिक की भान्ति अपने अन्तस्तल की गहराई में गोता लगाए हुए दिखाई देते। गंभीरता तो जैसे आपकी चिर संगिनि बन गई थी। इतने अमूल्य गुणों के धनी हमारे हृदय सम्राट्, सन्त शासक आज हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु उनका दिया हुआ सन्देश, उनकी अमर वाणी, त्याग और संयम में दृढ़ निष्ठा तथा संघ ऐक्यता के प्रति प्रबल उत्कंठा जब याद आती है तो हृदय आत्म विभोर हो उठता है। काश ! उनकी छत्रछाया में रहने का और जीवन से आलोक ग्रहण करने का हमें और अधिक समय मिल जाता।

अन्त में शासन देव से यही प्रार्थना है कि काव्य कला प्रेमी एवं ज्ञान तथा कला के सतत उपासक ऐसे सन्त युग २ में उत्पन्न हों और जिन शासन की उज्जवल प्रभा को भास्कर की भान्ति चहूं ओर प्रद्योतित करें।

> जैन जाति के सितारे, कौम के ऐ पास्वां,
> तेरी हिम्मत और अजमत को करूं कैसे बियां,
> जिसकी खातिर हँसते २ थी लुटाई जिन्दगी,
> बन बेदर्दी क्यों चला, फिर छोड़ कर वह आशियां" ●●

उस उपकारी महापुरुष के चरणों में :

श्रद्धांजलि

तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी म०

● राजस्थान के कुलीन राजपूत घराने से सम्बन्धित सूरज सिंह आचार्य सम्राट् श्री सोहन लाल जी म० के हाथों दीक्षित होकर, स्व० प्रवर्तक श्री जी म० के शिष्य बनकर तपस्वी सुदर्शन बने गये। आप स्वभाव से नम्र, सरल तथा मिलनसार एवं सेवाभावी संत हैं। वर्षों से आचार्य और गुरुदेव तथा अन्य वृद्ध पुरुषों की सेवा में लीन हैं। आप स्व० प्रवर्तक श्री जी के ज्येष्ठ शिष्य हैं उन्हीं के शब्दों में पढ़िए—●

स्वर्गीय पंडित रत्न गुरुदेव स्वामी श्री श्री शुक्ल चन्द्र जी म० का देहावसान हमारे और समाज के लिए अति खेद तथा क्षति का विषय है। किन्तु काल के आगे किसी का बस नहीं। स्वर्गीय गुरुदेव जैसी महान आत्मा का मिलना अति दुष्वार है। आप स्वभाव से अति शांत, नम्र तथा गंभीर थे। करुणा और दया के आप भंडार ही थे। पंजाब श्रमण वर्ग के प्रत्येक साधु-साध्वी को अपने शिष्य के समान ही मानते थे और प्रत्येक को प्रति समय सहयोग देने के लिए तत्पर रहते थे। उदारता आपके हृदय का सर्वश्रेष्ठ गुण था। समय २ पर समाज में आने वाली विघटन की शंकाओं तथा भर्त्सना के तूफानों और कार्य प्रणाली की कटु आलोचना को आप अपने धीर, वीर व सम स्वभाव से सम्यग प्रकार से सहन करते रहे। आप सचमुच शिव शंकर ही थे। जन्म नाम शंकर और दीक्षा नाम शुक्ल था। ये दोनों ही गुण सम्पन्न नाम थे—"यथा नाम तथैव गुण:" शंकर की भांति गरल पायी और शुक्ल की तरह हृदय से निर्मल।

भगवान् श्री जी के आदेश, निर्देश और ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य से हमारे पतित जीवन का उद्धार करने वाले उस कुशल मार्ग दर्शक, सर्वस्व को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित है।

मुझे पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में वि० सं० २०१४ में ग्राम दड़ौली फतेहपुरी में ही प्रथम वार दर्शन करने का मौका मिला था। उनके प्रभाव शाली व्यक्तित्व, शान्त और तपोयुक्त मुद्रा को देखकर ही मन में चरण सेवा करने का संकल्प उत्पन्न हो गया। अन्त में यह अवसर लगभग ५ मास के वाद प्राप्त हो ही गया। उन्हीं के श्री चरणों में रह कर पंजाव, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि की पद यात्रा की पर अम्वाला से जालन्धर की यात्रा का सौभाग्य मुझे नहीं मिल सका। मुझे आज्ञा प्राप्त हुई अम्वाला में रह कर स्थविर, वयोवृद्ध श्री कपूर चन्द जी म० की सेवा करने की। मैं रह गया और गुरुदेव ने प्रस्थान किया। मन में संकल्प भी नहीं था ऐसा अभी होगा किन्तु असाता वेदना का उदय हुआ। किसी प्रकार चतुर्मास पूर्ण हुआ और श्रद्धेय गुरु जनों के निर्देश से पुनः चार दिन पूर्व ही अन्तिम दर्शन और सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्राकृतिक विवशता भी व्यक्ति के लिए साधक और वाधक दोनों रूपों में सामने आती है। यह वाधक रूप है। मन में मात्र दो ही संकल्प शेष रहे थे कि सेवा और सामाजिक व्यवस्था का अवसर प्राप्त होता यदि वे कुछ काल और विराजित रहते।

उनके अपार अनुग्रह का वरद हस्त तो सिर पर रहा ही है जीवन काल में अब उनके उपदेशों का अमृत अमरत्व के लिए सहायक होगा इसी कामना के साथ।

श्री तपस्वी छज्जू राम जी म०

तपस्वी जी पंजाब में "देहाती प्रोग्राम' डोई महाराज" आदि नाम से विख्यात हैं। आप स्व० प्रवर्तक श्री जी म० के संसार पक्ष के चाचा संत श्री निरंजन दास जी म० के शिष्य हैं। कुम्हार जाति में धर्म संस्कार जागृत करने में आपकी अधिक रुचि रहती है। सेवा, तपस्या ही आपके जीवन का ध्येय है।

श्री श्री १००८ पं० र० श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज! महान् आत्मा तो होती ही अनुपम है फिर भी—वे गहन गंभीर, धीर, वीर, असहारों के सहारे थे, जैसा नाम वैसा ही काम था उनका। क्योंकि शुक्ल ध्यान, शुक्ल लेश्या आत्मा की शोभन परणति होती है अतः आपकी शरीर-आत्मसंज्ञा—नाम ही शुक्ल था और वर्ण भी शुक्ल, जन्म पक्ष भी।

महापुरुषों में तो अनन्त गुण होते हैं, वे लिखे और कहे नहीं जा सकते

और न ही वे गुण हर एक आत्मा में पाये जा सकते हैं। मुझ पर किये उपकार उनके सदा ही स्मृत रहेंगे।

तपस्वी मुनि श्री विकास चन्द्र जी

● तपस्वी जी कवि श्री सुरेन्द्र मुनि जी म० के शिष्य हैं। सेवा कार्य आपका मुख्यलक्ष्य है। तपश्चरण—मौन, उपवास, शीत सहन, ग्रीष्म आतापना तथा दीर्घ-कालीन अनशन व्रत तथा अन्य अनुष्ठान में सदा ही लीन रहना आपका जीवन गुण बन गया है। ●

स्व० प्रवर्तक पं० श्री जी म० की आत्मा महान् थी। उनकी गुण-गरिमा शुक्ल पक्ष के चन्द्र की भाँति दिन प्रति दिन वृद्धिगत होकर प्रकाश मान हो गई। उनका जहां विचरण होता था वहीं उनका सुयश आबाल वृद्ध गाता था।

चन्द्र का प्रकाश अमा की रात्रि में लुप्त रहता है। किन्तु उनका यशः प्रकाश सर्वत्र और सर्वदा विद्यमान रहता था। चन्द्र के लोक को ग्रहण भी लगता है किन्तु आपको कोई भी विपत्ति-आपत्ति रूप बादल, ग्रहण तथा अंधेरा नहीं ग्रसता था सदा ही शांत, मुखरित, प्रसन्न वदन ही रहते थे।

वे चले गये पर उनके गुण भक्त हृदयों में अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं। वे मिटकर भी अमर हैं। मेरे इस जीवन के वे सम्बल थे। तपश्चरण की प्रेरणा और निर्देश मेरे लिए आपका वरदान और आशीर्वाद सिद्ध हुए हैं। उनके उपकारों से मैं उऋण नहीं हो सकता।

उपकारी गुरुदेव

कवि श्री सुरेन्द्र मुनि जी म०

● श्रद्धेय मुनि श्री जी पंजाब के सार्वजनिक प्रवचनकारों में से हैं। कविता आपका शौक है। स्वभाव से मिलनसार एवं शांतिप्रिय हैं। रादौर जि० करनाल के एक कुलीन सैणी परिवार में समुत्पन्न आप स्व० पंजाब केसरी आचार्य श्री काशीराम जी म० के शिष्य हैं। धर्म प्रचार एवं रचनात्मक कार्यों में आपकी विशेष रुचि रहती है। आपकी व्याख्यान शैली अनुपम है। ●

(तर्ज—धीरे २ चलने वाले..........)

आपने मुझपर गुरुवर जो किए उपकार थे।
कर नहीं सकता जवां से कैसे तारणहार थे॥
पट हृदय के बन्द पड़े थे, जानता कुछ भी न था।
सूझ भी कुछ न रहा था, छा रहे अन्धकार थे॥१॥

वासना और कामना के, कूप में था गिर रहा ।
सत्य की ज्योति जगाई, धर्म के पतवार थे ॥२॥
ज्ञान-दर्शन व चरित के, वे जलाए दीप थे ।
कर दिया घट में उजाला, ज्ञान के भंडार थे ॥३॥
वाणी थी मीठी सरल, और दिल बड़ा गंभीर था ।
बेकसों और बेसहारों के लिए आधार थे ॥४॥
यह बड़ा है यह है छोटा, भेद दिल में था नहीं ।
प्रेम करते एक जैसा, सब के ही दिलदार थे ॥५॥
जिन पे तेरी थी कृपा वे, भाग्य शाली बन गये ।
दुख संकट मिट गए, और बेड़े उनके पार थे ॥६॥
महिमा तेरी गा नहीं सकता 'सुरेन्द्र' भी कभी ।
दुनियां वाले तेरे चरणों पर सदा बलिहार थे ॥७॥

हार्दिक श्रद्धांजली

पूज्य गुरुदेव, सतीजी महाराज, उपस्थित भाईओ और बहनों ! आज हम उस महान आत्मा की आखिरी रस्म अदा करने के पश्चात् सब भाई और बहिनें उस पवित्र आत्मा के चरण-कमलों में अपनी अपनी श्रद्धांजली अर्पण करने के लिये, यहां एक शांति सभा के रूप में एकत्रित हुये हैं, जिस महान-आत्मा का सूर्य प्रकाश दो-तीन दिन पहले इस जालन्धर क्षेत्र पर हो रहा था, और जिन का अंतिम-संस्कार कल हम अपने कांपते हाथों और भरे दिलों से कर चुके हैं, वह दिव्य ज्योति पिछले ६-७ मास से हमारे इस क्षेत्र में विराजमान हो कर अपने मंगलमय दर्शनों से हमारी आत्माओं के कल-मल को धो रही थी। वह महान-आत्मा परम-श्रद्धेय पंजाब प्रवर्त्तक, पंडित रत्न श्री श्री १००८ बाल ब्रह्मचारी श्री स्वामी शुक्ल चन्द्र जी महाराज ९ फरवरी से Heart-Attack के कारण अस्वस्थ चले आ रहे थे। बिमारी का Attack शुरू में ही भयानक था। परन्तु कुछ तो समय पर इलाज के कारण और अधिक उन के निजी आत्मबल के कारण, दिन निकलते रहे, इलाज चलता रहा : शहर और छावनी के बड़े बड़े डाक्टर : डा. सेठी, डा० पसरीचा, डा० अग्रवाल, छावनी के डा० कर्नल गोपी नाथन, डा० इन्द्र सिंह, और अमृतसर के हार्ट स्पैशिलिस्ट डा० मल्होत्रा और हमारे प्रिय डा० आनन्द, जिनका एहसान हम कभी ना भूल पायेंगे : जो अन्य डाक्टरों की सलाह अनुसार महाराज श्री जी का इलाज अपने तन-मन और पूरी श्रद्धा-भक्ति से, निशुल्क करते रहे, और जिन के कारण हमें महाराज श्री जी का स्वास्थ्य काफी सुधार पर नज़र आया। यहां तक की डाक्टरों ने भी हमें कुछ तसल्ली दी। डाक्टरों की तसल्ली से अभी हम चितामुक्त होने भी ना पाये थे, कि १८-२० दिवस पश्चात्, मंगलवार के दिन फिर महाराजश्री पर बिमारी का भयानक Attack हुआ और फिर वह चिर निद्रा में सो गये। वीरवार सायं सवा सात बजे, वह महान प्रकाश, वह दिव्य ज्योति इस संसार में अंधेरा कर, सदा-सदा के लिये उस महान प्रकाश में विलीन हो गई और मुनिमंडल तथा अपने भक्तों को निस्हाय, रोता छोड़ गई।

मैं उस महानआत्मा के चरणों में किन शब्दों से श्रद्धांजली अर्पण करूं। मेरे में तो ना इतनी बुद्धि तथा बल है, कि उनके महान व्यक्तित्व की गाथा कह सकूं। मेरा दुर्भाग्य था, कि मैं उनके अंतिम दर्शनों के लिए भी यहां पर उपस्थित

नहीं था। एक शादी पर मेरठ गया था। शाम को साढ़े आठ बजे टेलीफोन पर यह मनहूस खबर मिली। उधर मिलनी का समय हो रहा था। और इधर मेरा मन गुरुदर्शन के लिये बेचैन हो रहा था। क्या करता मजबूर था।

आखिर शादी की सभी रस्मों को छोड़, रात १२ बजे की गाड़ी पकड़ी और शुक्रवार दोपहर १२ बजे जाल्लधर पहुंचा : और उस चिर निद्रा विलीन, निशचेष्ट महानआत्मा के दर्शन किए।

दूसरे दिन भाई के घर राजपुरा शादी पर जाना था, परन्तु न गया। अगर जाता तो अपने पद की अवहेलना करता और अपने आप से धोखा करता। जहां तक मुझ से हो सका, और जो काम मुझे सौंपा गया, दूसरे भाईओं के सहयोग से मैंने भी निभाने का प्रयत्न किया, जिसके लिए मैं सब का अभारी हूं।

इन शब्दों के साथ मैं एस. एस. जैन सभा की ओर से श्रद्धांजली अर्पण करता हुआ एक शांति प्रस्ताव आप के सम्मुख रखता हूं, और आप सब से शांति पूर्वक सुनने की तथा स्वीकृति की कामना करता हूं।

प्रतुल चन्द जैन
मंत्री, एस. एस. जैन सभा जालंधर

मेरे गुरुदेव

पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय गुरुदेव की पावन स्मृति में जरजरित हृत्तन्त्री के अस्फुट स्वर :—

"तुम्हें गुरुवर कहीं पाकर, हृदय मन्दिर में लाऊं मैं।
करूं परदा मैं पलकों का, और तुम्हें अन्दर छुपाऊं मैं॥"

२९ फरवरी की संध्या हमारे लिए घोर अमावस्या वन कर अवतरित हुई। पूजनीय गुरुदेव सहसा हृदय गति के रुक जाने से जीवन नाटक के अन्तिम पट-पात के पीछे तिरोहित हो गए। कराल काल का कोमल हृदयों पर यह अकाल वज्रपात था। सुरेन्द्र, महेन्द्र, अमरेन्द्र के सिर का छत्र गिर गया। रमेश निर्निमेश रह गए। सन्तोष का तोष जाता रहा। विकास का खिलना जाता रहा। सुमन मुरझा गया। सन्त सुध भूल गए। आदर्श दिव्य ज्योति अलक्षित हो गई। चारों ओर आंखों के आगे अंधकार ही अंधकार छाया हुआ दिखाई देता है। कुछ भी समझ नहीं आता कि अब मझधार में पड़ी हुई हमारी नौका को कौन पार लगाएगा। होठों तक पहुंचा अमृत का प्याला छूट गया है। हमारी क्या दशा है। यह तो कोई भुक्त भोगी ही जान सकता है क्योंकि—'घायल की गति घायल जाने।' यह ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति असंभव सी प्रतीत होती है।

पूज्य गुरुदेव का जीवन तो एक खुली पुस्तक था। विचार करते ही मुझे उन आंखों का स्मरण आता है, जिन्हें देखने और जिन में झांकने का मुझे अवसर मिला। उनकी स्मृति आते ही मैं व्याकुल हो जाता हूं। जो उनमें देखा है, वह अब अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलेगा।

प्रथम साक्षात्कार :—तेज पुंज, तप वेश, गुरुदेव सन् १९५४ में जालन्धर में पधारे थे। मैं दर्शन करने गया। अभी पांच सात गज़ दूर ही था कि गुरु महाराज की आंखों से दिव्य प्रकाश निकल कर मेरे शरीर पर पड़ा। मुझे पसीना आ गया और विस्मित सा रह गया।

अन्तिम भेंट :—तेरह वर्ष पश्चात् पुनः गुरुदेव जान्धर पधारे। मैं दर्शन करने गया और भी दर्शनार्थी बैठे थे। गुरुदेव का ध्यान लगा हुआ था। स्फटिक के समान चमकते चेहरे में पीतवर्ण की ज्योति लहरों के समान तरंगित हो रही थी।

गुरुदेव की महिमा अपरंपार थी। पूज्य श्री के मस्तक पर दिव्य तेज की छटा सदैव विद्यमान रहती थी। आपने साधना की कला का पूर्ण अभ्यास किया हुआ था। आपकी यह कला दूसरे साधकों की कला से सर्वथा भिन्न थी। वैपम्य होने पर भी अन्य लोग प्रभावित हो जाते थे। जो व्यक्ति एक बार उनके सम्पर्क में आ जाता था, उसके अन्तःपटल पर उनके महान् व्यक्तित्व की छाप अंकित हुए विना रह नहीं सकती थी उन्होंने आत्मा का उत्थान करने में, उसे अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचाने में अपना सारा जीवन, अपनी सारी साधना, अपनी सारी शक्ति अर्पित कर दी थी। भावना, ज्ञान और कर्म का यह समन्वय ऐसे महान् व्यक्तियों का ही आश्रय खोजता है। मस्तिष्क, हृदय और आत्मा-तीनों का ऐसा सामंजस्य दुर्लभ ही होता है। ऐसी अविचल दृढ़ता ही किसी महान् साधक का अपरिहार्य गुण होता है।

महाभारत की कहानियां सुनकर ही शिवाजी एक साधारण व्यक्ति से छत्रपति महाराज शिवराज हुए। वीरों की गाथा सुनकर प्रताप "प्रताप" हुए। महात्मा गान्धी को जगत्पूज्य बनाने वाली वस्तु यही थी। पूज्य गुरुदेव भी महान् साधक सम्राट् पूज्य सोहन लाल जी तथा आचार्य सम्राट् पूज्य काशीराम जी के सम्पर्क से महामानव बने।

आप श्री द्वारा रचित जैन रामायण, महाभारत, धर्म दर्शन अदि ग्रन्थ हृत्तन्त्री को झंकृत कर देने वाले, भ्रान्त धारणाओं को समूल नष्ट कर देने वाले,

देश, को अमर देन हैं, जिन से खोई हुई मानवता लौटायी जा सकती है। विस्मृत ज्ञान पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

गुरुदेव का साधना कार्य जीवन के अन्तिम क्षणों तक निर्बाध गति से भली भान्ति होता रहा, महासौभाग्यशाली थे वे। कहा है :—

"पानी भरन पनिहारियां रंगा रंग घड़े।
उसदा भरया जानिए जिसदा तोड़ चढ़े" ॥

आज वे अपने कर्त्तव्य का पालन कर संसार से सहर्ष विदा हो गए हैं। मुझे विश्वास है कि इस निराशा के अन्धकार में भी पूज्य गुरुदेव का अलक्ष्य प्रताप और सद्भाव हमारा मार्ग दर्शन करता रहेगा।

अरिहन्त देव से यही प्रार्थना है कि हमें उनके दिखाए हुए मार्ग पर चलने की शक्ति और शौर्य प्रदान करें।

सन्तराम शास्त्री
जालंधर शहर।

शत, शत वन्दन हो !

पंजाब प्रवर्त्तक, पंडित रत्न श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज जैन जगत् के एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ थे जिनके तप, त्याग, संयम, शान्ति और सहिष्णुता के तेजस्वी और ओजस्वी किरणों के प्रकाश में भूले भटके मानव बहुत समय से अपना मार्ग ढूंढते हुए चले आ रहे थे। २९ फरवरी की सायं को इस ज्योति स्तम्भ के बुझ जाने से महान् अन्धकार फैल गया।

प्रवर्त्तक जी महाराज एक सुलझे हुए और महान् व्यक्तित्व से ओत प्रोत सन्त थे। उन्होंने जीवन भर जैन भिक्षु के कठिन महामार्ग पर चलते हुए अपनी आत्मा रूपी शुक्ल चादर पर कोई धब्बा नहीं लगने दिया। उनके काल-ग्रस्त हो जाने से जैन समाज का पिछले पचास वर्षों से चले आ रहे एक अध्याय का सूत्रपात हो गया है। मुझे स्पष्टतया भविष्य में इसकी क्षतिपूर्ति संभव मालूम नहीं होती। ऐसे शांतस्वभावी, परमतेजस्वी, बालब्रह्मचारी, योगीराज को मेरा शत शत वन्दन हो।

जीवनदास जैन, मैनेजर
श्री पार्वती जैन हाई स्कूल जालन्धर।

श्रद्धा-पुष्पाञ्जलि

प्रवर्तक श्री जी महाराज का जन्म यद्यपि पंजाब के आंचल हरियाणा प्रान्त में हुआ परन्तु महान् उदारता तथा प्राणि मात्र से प्रेम करने वाली इस विभूति

ने जाति-पाँति के संकीर्ण विचारों को छोड़ प्रायः समस्त भारत में भ्रमण किया। तथापि अपने मधुर ज्ञानामृत में लाखों अज्ञानान्धकार में जकड़ी फंसी पतितात्माओं का उद्धार किया। वैसे तो आपके पवित्र जीवन के गुणों को दर्शाना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है, परन्तु अपनी सन्तप्त भावनाओं को शान्त करने के लिए आपके जीवन ज्योति की कुछ किरणें जनता के सम्मुख प्रसारित कर रहा हूँ।

आप बहुत बड़े प्रकांड विद्वान तथा प्रभावशाली वक्ता थे। आपकी मधुर वाणी में मोहक-मोहनी शक्ति थी। आप पूर्ण वैरागी, सरल तथा उच्च विचारों के सच्चे मुनि थे। आप प्रतिक्षण ओम की भक्ति में लीन रहते।

आपने अपने कल्याण के साथ २ समाज सुधार के कार्य को भी बहुत बुद्धिमत्तापूर्वक निभाया और युवा आचार्य जैसी बड़ी पदवियों को कौम की खातिर त्याग दिया। यह थी आपकी सच्ची त्याग वृत्ति।

जिन महानुभावों ने आपके सच्चे दर्शन किए वे भला आपकी सौम्यमूर्ति को कैसे भुला सकते हैं। हां, अब शुक्ल की शुक्ल प्रभा के लिए तरसते ही रहेंगे।

आपकी जीवन ज्योति का प्रकाश संसार में सदा जगमगाता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को मार्ग प्रदर्शन कराता रहेगा।

इन नीचे लिखी हुई पंक्तियों के साथ मैं आपके श्री चरणों में अपनी श्रद्धा पुष्पाञ्जलि समर्पित करता हूँ :—

पंजाब हिन्दोस्तान का बाग वीरां हो गया,
शुक्ल जब अपनी शुक्ल प्रभा में खो गया
रूहानी रहनुमा यह यों था दिल का सखी
मौत जालिम ने ना छोड़ा दुश्मने जां हो गया।
ऐसे बैठे शाम को फिर आसन से न उठे
पल में पुर रौनक जालन्धर शहरे खामोश हो गया
आह! प्रवर्त्तक तेरी जुदाई ने हमको किया सौदाई
पानी था मुश्किल मगर अब खून अरजां हो गया
२९, फरवरी के मनहूस दिन का है 'टेक' यह असर
सिंध से गंगा तलक मातम का साहमा हो गया।

टेक चन्द जैन

रायकोट (लुधियाना)। टेक चन्द साधु राम जैन ब

दिव्य ज्योति

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ।
हर दिल है सोगवार तो हर आंख अशकबार ।
यह कौन आज बज़म से उठ कर चला गया—

आज कितना दुख-अफ़सोस और ग़म का समय है—काल की अजीब गति है—जिस महान अथवा पुन्य आत्मा के नेतृत्व में—जिसके पावन चरणों में बैठ कर इस महान संस्था (श्री पारवती जैन हाई स्कूल) के प्रति उनका आशीर्वाद हासिल करने के लिए एक बड़ा जशन अथवा जलसा करने की प्रतीक्षा में थे—उसी दिव्य ज्योति के बुझ जाने पर आज हम शोक सभा मना रहे हैं। मुझे वह दिन याद आ रहा है जब हम जालन्धर बिरादरी के सदस्य स्वर्गीय गुरुदेव के पवित्र चरणों में जालन्धर पधारने की विनती लेकर बलाचौर पहुँचे थे और यहां के श्री संघ की ओर से यह अरज़ की थी कि भगवन् ! हम आप द्वारा शास्त्रों अथवा आगमों का वह गूढ़ रहस्य जानना चाहते हैं और आपकी मधुर अथवा हृदय स्पर्शी वाणी से उस अमृतपान के इच्छुक हैं जिसका समुद्र आपके मनो-मस्तिष्क में हिलोरे ले रहा है और पूर्व आचार्य देवों की कृपा से जिसे आप अपने दिलो दिमाग़ में समेटे हुए हैं।

प्रतापी गुरुवर ने जालन्धर की ओर विहार किया। जालन्धर छावनी पहुँचते ही आप पर फॉलिज का भयंकर आक्रमण हुआ। डाक्टर रोग की तीव्रता से परेशान थे परन्तु आप थे कि अपने आत्मिक बल से उस पर ऐसी विजय पाई कि सब हैरान रह गए। आप जालन्धर पधारे लेकिन यहां पर आपको दूसरे रोगों ने आ घेरा। पांव और टांगें आपके शरीर का बोझ उठाने से जवाब दे गए। लेकिन फिर भी आप सोटी के सहारे उठने और चलने की लगातार कोशिश करते रहे। मन में अभी भी चलने और विहार करते रहने की ही लगन थी। शरीर बिल्कुल साथ छोड़ रहा था परन्तु मनोबल मज़बूत से मज़बूत तर होता चला गया। टांगें कहतीं कि बस, अब हम से चला नहीं जाता। मन कहता, नहीं, तुम्हें चलना होगा। वह ही अपने चरण रज से स्कूल की इस भूमि को पवित्र करना न चाहते थे बल्कि कुदरत उनकी चरण स्पर्शता से इसे वंचित न रहने देना चाहती थी। किसी को इस राज का क्या पता था कि वह क्यों बीमारी और शारीरिक निर्बलता के बावजूद यहां पधार गए। उस समय सब के मन में यह

भाव थे :—

पहले चमन को अपनी वहारों पे नाज़ था
वह आ गए तो सारी वहारों पे छा गए ।

हमारी मनोकामना पूरी न हो सकी । हम उस दिव्य मूर्ति को सामने पा उनके चरणों में अपने श्रद्धा के फूल भेंट न कर सके । जलसा न हो सका परन्तु भावी ने हमारे दिल में यह हसरत भी न रहने दी कि महाराज जालन्धर पधारे पर उनके चरण स्कूल में नहीं पड़े । वह जानती थी कि वह अव हमेशा के लिए जा रहे हैं। इसी लिए वह उन्हें ९ फ़रवरी को यहां उठा लाई । ९ से २९ फरवरी तक उनके स्वास्थ्य में कई उतार चढ़ाव आए और आख़िर २९ की शाम को ७ वजे वह सारे जैन समाज को रोता और विलखता छोड़ स्वर्गवासी हो गए ।

'मरने वाले, तुझे रोएगा ज़माना वरसों'—

आज भी उनकी दिव्य मूर्ति आंखों के सामने है । आज भी उनका ओजस्वी पुरनूर चेहरा और हंसमुख आकृति वैसे ही नज़र आ रही है और सदैव नज़र आती रहेगी । परन्तु—

कल जो था मौजूद सव में, आज वह मादूम है ।
कल जो था ज़िन्दा सलामत आज वह मरहूम है ।।

३० मार्च १९६८

सतीश कुमार जैन
मंत्री, श्री पार्वती जैन हाई स्कूल, जालंधर

शुक्ल चादर लेकर चले गए

जन समाज के अमूल्य कोप से लाल छिनते जा रहे हैं । विगत कुछ वर्षों में ही आचार्य पूज्य श्री आत्माराम जी, उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी, प्रधानमन्त्री स्वामी मदनलाल जी महाराज का विछुड़ना जैन समाज के लिए काफ़ी दुर्भाग्यपूर्ण रहा । अभी इस क्षति का अनुभव किया जा रहा था कि एक और महान विभूति प्रवर्त्तक पंडित रत्न श्रद्धेय श्री शुक्लचन्द जी महाराज अचानक ही जालन्धर में काल धर्म को प्राप्त हो गए । यह समाचार लोगों ने जहां कहीं भी सुना, पहले पहल विश्वास नहीं हुआ । अन्ततः इस कठोर सत्य को डूवते हुए दिल और अश्रु-पूर्ण नयनों से स्वीकार करना पड़ा । पंडित जी महाराज के देवलोक हो जाने से एक ऐसी क्षति पैदा हो गई है जिसकी पूर्ति नितान्त असम्भव प्रतीत हो रही है ।

प्रवर्त्तक जी महाराज कैसे सन्त थे, उनका जीवन कैसा था ? शब्दों द्वारा इसे व्यक्त करना काफ़ी दुष्कर है । जीवन क्या होता है और उसको उच्चता की

परम चोटी पर कैसे ले जाया जा सकता है ? इस प्रश्न के उत्तर में ही उनके समग्र जीवन का अवलोकन किया जा सकता है। इस महान विद्वान, प्रकांड तेजस्वी कर्मयोगी भव्यात्मा ने पंडित बलदेवराज जी के घर, माता महताब कुंवर की गोद से जन्म लेकर अपने साथ २ अपने माता पिता, कुल तथा परिवार को भी धन्य कर दिया और अमर बना लिया। इसके साथ गुड़गांव जिला के अन्तर्गत दडौली फतेहपुरी गांव की भूमि के कण २ को अपनी महानता से पवित्र बना दिया। बचपन से ही मन में करुणा की वेगवती धारा उर में बहने लगी थी। परिवार की समृद्धि और मोह ममता भी आपको आकर्षित न कर सकी। मनमें एक ही धुन समा गई थी कि संसार असार है, इस जीवन को सन्मार्ग पर चलाना चाहिए। आत्मकल्याण और जनकल्याण के मार्ग से और कोई उत्तम मार्ग उन्हें दृष्टिगोचर न हुआ। चाचा ने एक अच्छे घर में सगाई कर दी थी पर वह भव्यात्मा जिसने सूर्य बनकर अध्यात्मिक प्रकाश से समस्त विश्व को आलोकित करना था, भला वह इन सांसारिक बन्धनों और भोग विलास के जीवन को कैसे अपनाता ? मन में करुणा भाव ने जोर मारा, एक मां के आंसू पोंछने के लिए हमारे चरितनायक ने इस कलयुग में आज से केवल पच्चास वर्ष पूर्व आज के ब्रह्मचर्य व्रत को अपनाने की भीष्म प्रतिज्ञा कर ली और चल पड़े उस कठिन राह पर, जैन फकीरी के उस मार्ग पर जिसे तीक्ष्ण तलवार की धार के समान बताया गया है। मार्ग की कठिनाइयों और आपत्तियों से डर कर धीर पुरुष कभी अपना पग पीछे नहीं हटाते। आपके पग भी अपनी मंजिल पाने के लिए सदा आगे ही आगे बढ़ते चले गए।

भारत का यह महान, योग्य, शान्त मूर्ति, पंडित रत्न, साधु जीवन स्वीकार करने के पश्चात् आत्मकल्याण और जनकल्याण में जुट गया। पूज्य सोहनलाल जी महाराज तथा पूज्य श्री काशीराम जी जैसे महान सन्तों के चरणों में रहकर आप ने अपनी आत्मा को निखार लिया और अपनी झोली ज्ञान रूपी मोतियों से भर ली। जीवन भर इन ज्ञान मोतियों को विशाल हृदय और खुले हाथों से लुटाते रहे। भारत के कोने कोने पर नंगे पांव और नंगे सिर घूम कर सत्य, अहिंसा और शान्ति का सन्देश प्राणी मात्र तक पहुँचाते रहे।

सम्वत् २०२४ का चतुर्मास जालन्धर में बिताना स्वीकार किया। अनेक रोगों से ग्रसित होते हुए भी समयानुसार होशियारपुर से जालन्धर की ओर विहार कर दिया। जालन्धर छावनी में एकाएक पक्षाघात का भीषण आक्रमण हो गया। आप ने इस आक्रमण का आत्मिक शक्ति से मुकाबला किया। सभी

आपकी महान शान्ति और अध्यात्मिक शक्ति को देख कर चकित थे। थोड़े ही दिनों में कुछ स्वस्थ हो जाने के पश्चात् धीरे २ जालन्धर पहुँच गए। चतुर्मास सुख शान्ति से व्यतीत हुआ। स्वास्थ्य में कुछ सुधार दिखाई दे रहा था। एका-एक ९ फरवरी की प्रातः को दिल का दौरा पड़ा जो काफ़ी उतार चढ़ाव के बाद घातक सिद्ध हुआ। २९ फरवरी की सायं को सूर्यास्त के आधा घण्टा पश्चात् ही जैन जगत का यह सूर्य समस्त समाज को अन्धकार में छोड़ कर अस्त हो गया।

देवलोक होने से केवल एक मास पूर्व आप ने श्री जैन नवयुवक मण्डल के एक पाक्षिक सतसंग की अध्यक्षता की और अध्यक्ष पद से युवकों के सम्मुख लग-भग आधे घण्टे तक धर्म के चार साधनों की व्याख्या करते रहे। जालन्धर में यह उनका प्रथम और अपने जीवन का अन्तिम प्रवचन था। उस समय कौन कह सकता था कि जैन समाज का यह रत्न हम से एक मास के पश्चात् छिन जाएगा।

प्रवर्त्तक जी महाराज ने अपनी जीवन यात्रा में अपनी शुक्ल चादर में एक भी दाग़ नहीं लगने दिया। सन्त कबीर के इन शब्दों को 'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया' सार्थक करते हुए अपने नाम को भी अर्थपूर्ण बना गए। ऐसे महापुरुष कभी मरा नहीं करते, प्रवर्त्तक श्री जी का रचित साहित्य तथा उनका मार्ग हमारे लिए सदा प्रेरणादायक रहेगा। युवकों को विशेषकर, उनका जीवन एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य देता रहेगा। इस प्रकाश में अपना मार्ग बनाकर ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की जा सकेगी। उनके शरीर को समेट कर जालन्धर की यह भूमि भी आज धन्य हो गई है। —: विमल कुमार जैन, जालन्धर।

महान् आत्मा

जिन्दगी में नहीं हमारी दुनिया में एक भयानक तूफान बवण्डर और भीषण आँधी का वेग चला था, जिसमें हम, हमारा समाज भयानक वन की कण्टकाकीर्ण अटी सटी पगडंडियों में पथभ्रष्ट होकर भटक गया था। हमारी हालत तूफान में हिचकोले खा रही नौका के समान डगमगा रही थी। भूले हुए यात्री के समान हम अथवा डूबते हुए जहाज़ के यात्रियों की घबराहट के समान बिल्कुल परेशान थे।

मस्तिष्क में सूझ नहीं थी, दिल में साहस नहीं था। ऐसी असहाय अवस्था में हमें आवश्यकता थी एक पथ प्रदर्शक की। उस समय हम किसी पथ प्रदर्शक के अभिलाषी पूर्व दिशा की ओर देख रहे थे। यकायक एक लालिमा दृष्टिगोचर हुई। शनैः शनैः वह काले-काले बादलों को चीर कर बाहर निकली। उसका

हृदय हमारे परिपीड़न को देख कर सिहर उठा । उसी ने तो हमें कर्म शत्रुओं से बचाया हमें मार्ग दर्शाया । ऐसा करने के लिए ही तो आप कर्माङ्गण में कूदे थे न । थोड़े ही समय में आप अपने चमत्कारों से संसार को चमत्कृत करके सफलीभूत हुए ।

हमें समय की कठोर शिक्षा देते हुए अपना आसन जा कहीं जमाया । हम देखते रह गए । आखिर हमारी ज़िन्दगी में वह भी दिन आया जिस दिन हम नहीं हमारी सारी कौम एक सुयोग्य नेता से अनाथ और वंचित हो गई । सब ओर अन्धेरा था । दिल में, दिमाग में, और सारी दुनिया में । जहां तक नज़र फेंकते और जहां तक दिल भागता वहां तक उससे भी दूर अन्धेरा ही अन्धेरा सब ओर मुंह फैलाए बढ़ा आ रहा था । दिल उदास था । नेत्रों में आँसू थे, मन में हूक सी उठ रही थी, खून ठंडा हो रहा था क्योंकि आज हमारे एकमात्र सहारे, धर्म सहायक, सत्पथ प्रदर्शक, संबल प्रदाता भगवान् पंजाब प्रवर्त्तक पंडित श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज को काल क्रूर ने छीन लिया था । आत्मा इस बात से प्रसन्न भी थी उनके समाधि मरण से, संयम का तप तथा धर्माराधन का अन्तिम उद्देश्य आत्म शान्ति और मृत्यु से छुटकारा है । मैं नतमस्तक होकर हार्दिक प्रार्थना करती हूँ । हे प्रभो ! हे अरिहंत भगवान् ! दिवंगत आत्मा को परम शान्ति प्राप्त हो और वे सदा हमें नव जीवन, नव चेतना और नव प्रेरणा का सम्बल प्रदान कर इस कठोर संसार पर अरिहंत प्रसृत निर्ग्रन्थ सत्पथ पर चलने का साहस प्रदान करते रहे । यह ठीक है कि उनका शरीर बदल गया, देह विलीन हो गई, किन्तु उनकी आत्मा अधिक उज्जवल है और सदा जागरूक है वे अवश्य अपने शिशुओं पर अनुग्रह कर तथा शक्ति सम्वर्धन कर हमारे सदा सहायक बने रहेंगे । आपके विषय में लिखने का लेखनी दुस्साहस नहीं कर सकती और जिह्वा ने आपके गुणगान करने के लिए अपनी असमर्थता कर ली है । परन्तु हृदय का अनुरोध आपके कमल चरणों में पुष्प समर्पित करता है ।

हे अहिंसा धर्म प्रचारक ! तुमने सैंकड़ों को नहीं सहस्रों मनुष्यों को हिंसा

हे साहस के पुंज ! आपने सामाजिक रूढ़ियों को नष्ट भ्रष्ट करके नूतन मार्ग दर्शाया।

निर्मल जैन,
सेक्रेट्री श्री जैन महिला मंडल (जालन्धर)

श्रद्धा के पुष्प

प्रातः स्मरणीय पंजाव प्रवर्त्तक पं० श्री शुक्ल चन्द्र जी महाराज जैन समाज के उच्च कोटी के सन्त थे। आपका वहुत लम्वा जीवन संयम साधना में गुजरा। आपकी संयम साधना अतीव पवित्र एवं उत्कृष्ट थी। ज्ञान ध्यान के नाते आपका व्यक्तित्व वहुत ऊँचा था। आप सदा मौन रूप से कार्य करने में विश्वास रखते थे।

मेरा आपके सम्पर्क में आने का सौभाग्य तव प्राप्त हुआ जव कि मैं पूज्य गुरुदेव श्री रघुवर दयाल जी महाराज के दर्शन करने के लिए जालन्धर छावनी गया। आपका स्वभाव परम शान्त तथा दूसरों के लिए अत्यन्त आकर्षक था। आपके निकट छोटा-वड़ा हर कोई वरावर का प्रेम तथा सद्भाव पाता था। आपके परिचय में जो भी आया उसके हृदय में आप की भव्य प्रेम मूर्ति अंकित हो गई।

आप दृढ़ निश्चय वाले थे। आप अस्वस्थ होने के वावजूद भी जालन्धर शहर में पधारे। आप अनेक गुणों के भण्डार थे। आप में एक विशेषता यह थी कि स्वयं सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी अन्य गुणी जनों को देखकर प्रमोद प्रकट करते थे। गागर में सागर भरना असम्भव है—उनका वखान तो शेषनाग अपनी संहस्त्र जिह्वाओं से भी नहीं कर सकता। और अधिक न कह कर उनकी दिवंगत आत्मा के लिए श्रद्धा के पुष्प समर्पित करता हूँ।

पुष्पेन्द्र खन्ना

मेरे आराध्य

परम पूज्य, पंजाव प्रवर्त्तक पंडित रत्न गुरुदेव जैन समाज के उज्जवल नक्षत्र थे। मेरे पर उनकी अपार कृपा दृष्टि थी। मुझे २० वर्ष तक इनके चरण सरोज़ों में वैठने का सुअवसर मिलता रहा। वह शांति और करुणा की दिव्य मूर्ति थे। उनके समक्ष जो भी आता था प्रभावित हुए विना नहीं रहता था। इन जैसा प्रतापी संत मिलना दुर्लभ है। उनके स्वर्गवास से समाज को जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है।

36-F. कमला नगर, देहली। प्रीतम चन्द जैन

एक महान् आत्मा

श्री १००८ श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज का नाम कौन नहीं जानता ? उनका जन्म पं० घराने में श्री बलदेवराज के घर मेहताब कुँवर की गोद में विक्रम संवत् १९५२ को दड़ौली फतेहपुरी गाँव रिवाड़ी तहसील तथा गुड़गाँव जिला में हुआ। कहाजाता है उसी दिन से आपके चेहरे पर सूर्य का प्रकाश तथा चन्दा सी शीतलता थी। आपके पिता उच्च कोटि के किसान तथा व्यापारी थे। उनका व्यापार बहुत दूर-दूर तक था। आपके पिता की छत्रछाया आप पर अधिक समय तक न रही तथा आपका पालन-पोषण आपके चाचा के द्वारा हुआ। आपकी सगाई २० वर्ष की आयु में हुई। पर जो सूर्य था उसे प्रकाश से संसार को उज्ज्वल बनाना था। चन्दा ने अपनी शीतलता से संसार को मोहना था। आप २२ वर्ष की आयु में अमृतसर में आचार्य सम्राट पूज्य श्री सोहनलाल जी के चरणों में श्री युवाचार्य काशीराम जी म० के शिष्य बने।

आप अपने जीवन के ५२ वर्ष इसी प्रकार लोकभलाई के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान, देश-विदेश में जाकर डूबते संसार को बचाने की हर कोशिश करते रहे। लेकिन हम पापी आपको पहचान न पाए। आपके हर उपदेश में धर्म का सच्चा मार्ग होता था। पर जनता को मालूम न था कि यह सूर्य और चन्दा एकदम अन्धेरा कर देगा। यह वृक्ष जिसकी छाया में बैठते थे, वह एकदम टूटकर गिर जाएगा। वह अभागा दिन आ ही गया कि जिस दिन गुरु महाराज सुबह से ही होने वाली घटनाओं को बताते रहे। पर हम मूर्ख थे, अज्ञानी थे, कुछ समझ न पाए। जैसे २९ फरवरी का एक मिनिट बीतता था, उनके संकेत उसी प्रकार बढ़ते जाते थे। पर समय प्रबल था। काल ताकतवर था। वह आ ही गया। उन्होंने गुरुवार शाम को ५ बजे सन्तों को आहार आदि देखने को कहा तथा प्रतिक्रमण करने को कहा। सूर्य बहुत था। सन्तों ने कहा पर उन्होंने आखिरी संकेत देते हुए कहा कि सूर्य आज डूबेगा भी और निकलेगा भी। पर तुम्हारा प्रतिक्रमण पूरा न होगा। उन्होंने अपना प्रतिक्रमण प्रारम्भ कर दिया तथा ७ बजकर १० मिनिट पर फिर पुकारा तथा सन्तों को बुला गुरुवन्दना प्रारम्भ कर दी तथा उसके पश्चात् गुरुदर्शन का समाचार देते हुए अपना चोला छोड़ इस संसार से हमेशा-हमेशा के लिए चले गए। इसका समाचार देश प्रदेश में दिया गया— इस योगी की शवयात्रा २ मार्च शनिवार को एक बजे दुपहर को प्रारम्भ होकर शहर के बड़े-बड़े बाजारों में होती हुई बलटन पार्क में अन्तिम संस्कार के लिए

पहुँचाई गई। जनता ने पैसों तथा हवाई जहाज़ों से फूलों की वर्षा तथा सेवकों ने शोक मनाते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट की।

सचमुच ठीक ही कहा गया है—

तुम्हें कहता है मुर्दा कौन, तुम जिन्दों के जिन्दा हो।
तुम्हारी नेकियां बाकी, तुम्हारी खूबियां बाकी॥

शाहकोट (जालन्धर) अमर नाथ जैन

एक व्यक्तित्व—एक विभूति

भारतीय संस्कृति के निर्माण में सन्तों का बहुत महत्त्वपूर्ण सुयोग है। धर्म, दर्शन तथा साहित्य के क्षेत्र में उनके मूल्यवान दान के लिए न केवल भारतवर्ष अपितु अखिल विश्व सदैव आभारी रहेगा। वास्तव में सन्तों की दीर्घकालिक परम्परा ने इस देश को असाधारण गौरव प्रदान किया।

उसी सन्त परम्परा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में प्रवर्त्तकादि अनेक पदों से अलंकृत स्वर्गीय मुनिवर श्री शुक्लचन्द्र जी म० सदा स्मरणीय रहेंगे। वे 'यथा नाम तथा गुण' वाले सन्त थे। जिन्होंने निकट से उनके जीवन को परखा है, वे भली भान्ति जानते हैं कि उनके संयम तपोमय जीवन की साधना दिनानुदिन शुक्लपक्ष के चन्द्र की तरह वृद्धिगत होती रही।

प्रवर्त्तक श्री सन्त जीवन के मूर्तिमान आदर्श थे। उनकी विद्वत्ता श्लाघनीय थी। समग्र व्यक्तित्व में असाधारण आकर्षण था पर उनकी सरलता जन जन के मानस को श्रद्धावनत करने वाली थी। निस्सन्देह कहा जा सकता है कि वे अपने समय की एक महान विभूति थे। पंजाब के जैन समाज के धार्मिक जीवन की आधारशिला उन्हें कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं।

प्रवर्त्तक श्री ने राजस्थान को भी पावन किया और उनके मधुर व्यक्तित्व ने राजस्थानी समाज को मुग्ध कर लिया था।

उनके स्वर्गवास से जैन समाज को जो क्षति हुई, उसका शब्दों द्वारा उल्लेख नहीं किया जा सकता। स्वर्गीय आत्मा को मेरी कोटिशः श्रद्धांजलि।

चम्पा नगर, ब्यावर। शोभाचन्द्र भारिल्ल

स्व० प्रवर्तक श्री जी : श्रद्धान्जलो

जब मुझे मार्च १९६८ के प्रथम सप्ताह में यह दारुण समाचार मिला कि

दो मास के लगभग दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। कितनी शान्ति, नम्रता एवं गम्भीरता और निच्छल स्वभाव देखकर एवं अनुभव कर स्थानीय निवासियों में आत्म समर्पण वृत्ति की भावना उत्पन्न हो गई। उन्हें १९९२ का वर्ष स्मरण आ गया जब कि पंजाब केसरी आचार्य श्री काशीराम जी म० को पंजाब श्री संघ की ओर से यहां आचार्य पद प्रदान किया गया था।

आप होशियारपुर श्री संघ को दर्शन, धर्म कथा आदि के साथ एक अनुपम और अन्तिम देन दे गए। पुस्तकालय और स्मारक समिति (औषधालय) का प्रारूप जो श्री सुमन मुनि जी के अथक प्रयास से अपने पहले चरण में आ सका है।

अन्त में जीवन पर्यन्त इस दुख भरे संसार में हजारों लाखों प्राणियों को अध्यात्म के अकथ आनन्द का आस्वादन करा कर अनन्त में विलीन होने वाले महापुरुष, आपको मेरी तथा सभा की श्रद्धा अर्पित है।

रामचन्द्र जैन बी०ए०, प्रभाकर,
मंत्री, एस० ए० जैन सभा,
होशियारपुर।

श्रद्धा-सुमन

मात वसुन्धरा का सौभाग्य रवि अस्त हो गया। भला गगन-रवि गगन में कैसे रह सकता था। मां वसुधा के वियोग शोक को कम करने के लिए शुक्ल रवि के अस्त होने से पहले ही भास्कर देवता बादलों की पालकी में छुप कर आंसू बहाते हुए दुखित मन सहित क्षितिज की गोद में विलीन हो गया।

ठीक कहा है—

जिस तरह चन्द्र सारे सितारों में एक है
यूं ही तो शुक्ल भी हजारों में एक था।

परमपूज्य, श्रद्धेय 'वन्दनीय' प्रातः स्मरणीय श्री श्री शुक्लचन्द्र जी म० के असंख्य गुणों को शब्दों की सीमा में बांधने की कोशिश करना एक निरर्थक प्रयास है। और अपनी अज्ञानता का परिचय देना है। आपका अन्तःकरण अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी था। प्रेम, दया, भक्ति, क्षमा, सरलता, विनय, विश्व बन्धुत्व और उच्चादर्शों का एक ऐसा निर्मल तथा प्रशान्त झरना था जहां से मानवता अपने शुष्क ओष्ठों की प्यास बुझाती रही है। आपकी देवोपम मुद्रा में करुणा और चरम शान्ति का मिलन था। दर्शन मात्र से ही व्यथित चित्त को सान्तवना और अखंड हर्ष का आभास होता था। आपके मुखारविन्द पर सूर्य की प्रखर किरणों और चन्द्र की शीतलता के अक्षय ज्योति-कण को देखकर कठोर से कठोर हृदय भी स्वयमेव नत हो जाता। आपका कंठ तो सरस्वती का वास-स्थल था। आपके शान्त, धीर, गम्भीर, सुधारस सने दिव्य उपदेशों के श्रवण का जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ है धन्य हैं। सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के प्रतीक आपका पुनीत चरित्र अनन्त काल, युग, युगान्तरों तक अनास्था से आस्था की ओर अग्रसर होने का अमर सन्देश देता रहेगा।

हे! करुणानिधि! यही है इन परिमित शब्दों में हमारी अपरिमित श्रद्धा के सुमन!

जैन भवन, १६-८-६८

बालकिशन जैन, भारत भूषण जैन
मंत्री, श्री जैन धर्म सभा, अमृतसर

हार्दिक श्रद्धांजली

योगी! आपने यौवन की उन्मादभरी उमंगों को योग का संबल बनाया। वासना विकारों को समूल जला कर उस भस्म से अपने जीवन को विभूषित करके सच्चे योगी बन गए। मन, वचन और काया के योगों पर नियंत्रण करने वाले योगी आपको हमारा कोटिशः वन्दन! पंजाब केसरी आचार्य श्री काशीराम जी म० के शुक्ल आदर्श तुम्हें त्रिकाल प्रणाम है।

पथिक ! संयम साधना के ज्वलन्त मार्ग पर सतत आगे बढ़ने वाले पथिक ! अदम्य है आपका साहस। मार्ग की कठिनाईयों को, आपने सुख का प्रतिरूप समझ कर हमेशा उनका स्वागत किया। कंटकाकीर्ण पगडंडी पर बढ़ते हुए आपके पग एक दिन आपको अनन्त की ओर ले चले. और पीछे रहा हमारे लिए स्मरणरूप आपका चरैवेति का मधुर उद्गान। संयम के सच्चे पथिक ! हम करते हैं आपका साधुवाद।

ज्योतिर्धर ! आपने अपने जीवन में संयम के साथ साथ ज्ञान की ज्योति भी जलाई। प्रखर वक्ता बन कर अपनी ओजस्वी वाणी से, जीवन में चरित्र एवं ज्ञान के समन्वय का सुन्दर सुझाव दिया। एक साहित्यकार के रूप में कवि और लेखक बन कर विपुल जैन साहित्य को प्रकाश में लाने का, सराहनीय साहस किया यह आपकी साहित्य सेवा ही नहीं अपितु हमारे समाज को आपके ज्ञान का महान अनुदान है। अतः ज्ञान के ज्योतिर्धर ? आपके इस कार्य से गौरवान्वित सारा जैन समाज आपका चिर ऋणि रहेगा।

आपकी पावनता को अर्पित है हमारे समाज की छोटी सी श्रद्धांजली।

गोरेलाल जैन, मंत्री   **अमरनाथ जैन, प्रधान**
एस० एस० जैन सभा पंजाब

दो शब्द : प्रवर्तक श्री जी

अजमेर बृहद सम्मेलन के अवसर पर स्वर्गीय श्री काशीराम जी महाराज के साथ श्रद्धेय गुरुदेव शुक्लचन्द्र जी महाराज सा० से भी परिचय हुआ, उनका व्यक्तित्व महान, एवं वे कर्त्तव्यपारायण और निष्ठावान संत थे। श्रमण संघ मजबूत बना रहे इसके लिए जीवन के अन्तिम समय तक प्रयास करते रहे। सरलता-दया तो उनके जीवन की अंग बन गई थी। उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर हम उनको श्रद्धांजली अर्पण कर सकेंगे। शत शत, वंदन

लाखन कोटरी, अजमेर   गणेशमल सरदारमल बोहरा

स्वर्गीय प्रवर्त्तक श्री जी महाराज

महापुरुष का जीवन ही उनका अपना परिचय होता है, इसलिए उनका परिचय देना कठिन ही नहीं असंभव है, चाहे कोई कितना ही निकटतम बन कर क्यों न रहे। जैसे कि फूल का परिचय उसकी सौरभ से मिल जाता है किन्तु उसके मधुर गन्ध युक्त मीठे रस को पीने वाला भ्रमर उसे कह कर व्यक्त नहीं कर सकता।

श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी महाराज का जीवन भोग-क्षोभ, विभ्रम-विलास, सत्ता-महत्ता, एवं मोह माया से ऊपर उठकर हमें जीवन के सत्य दर्शन कराता रहा है। गुरुदेव ने जीवन का सच्चा कलाकार बनकर सिर्फ अपना ही नहीं दूसरों के जीवन का भी निर्माण किया।

जैसे आप का नाम शुक्ल था वैसे ही आपका हृदय भी स्फटिक रत्न की तरह उज्ज्वल ज्ञान प्रकाश से भरा हुआ तथा शंख की तरह पापों की वासनाओं की कालिमा से रहित पूर्णतया शुक्ल था।

वे मानव मन की श्रद्धा के आकर्षण केन्द्र थे। प्रवर्त्तक पद का अभिमान जिनके जीवन को स्पर्श भी न कर पाया था। उनके जीवन में तो सरलता, सौजन्यता एवं मधुरता की त्रिवेणी सतत प्रवाहित होती थी।

परम श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी तेजस्वी तथा शीतल स्वभावी एक महान संत होने के अलावा वह प्रकृति के सरल सौम्य और उनमें अनुकम्पा भाव होने के कारण वे एक सच्चे और महान इन्सान भी थे ऐसी महान आत्मा का संसार में मिलना अति दुर्लभ है। —**श्री राजकुमार जी जैन (लाहौर वाले)**

हमारे भाग्यवान पंडितराज, शांत सरोवर पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी म० की जुदाई हम सब के लिए असह्य है। उनका हमें बड़ा ही आधार था। उनकी तारीफ़ करने के लिए हमारी जबान में ताक़त नहीं है। तमाम समाज के लिए बड़ी हानि हो गई है। —**श्री हरिचन्द जैन एवं परिवार, रोपड़**

प्रात: स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रवर्त्तक श्री जी महाराज की असीम कृपा की छत्र छाया में जो परम आनन्द व शांति मिलती रही है जो अकथनीय है। प्रवर्त्तक श्री जी महाराज हमें ही नहीं समस्त समाज को अपनी अक्षय निधि उदारता पूर्वक दे गये हैं जिसका ऋण हम किसी भी प्रकार से चुका नहीं सकते।

—**राजकुमार जैन, प्रधान,**
एस. एस. जैन सभा, आदर्श नगर, जयपुर

प्रवर्त्तक पं० श्री जी महाराज महाभागवान, संयमी तथा नम्र एवं सरल प्रकृति के संत थे। आचार्य सम्राट् श्री सोहनलाल जी म० के हाथों दीक्षित होकर उनके नाम को उज्जवल किया। इस समय आप जैसे संत अधिकारी की समाज को अति आवश्यकता थी। —**हंसराज जैन**
उपप्रधान, एस. एस. जैन सभा, जालन्धर

नम्रता, शांति और सरलता में वे जोड़, समाज के परम हितैषी एवं रक्षक, बड़े-छोटे, अमीर-गरीब तथा जान-अजान सभी को सम दृष्टि से देखने वाले पंडित श्री जी के गुण और उनकी याद हमारे दिल से कभी विस्मृत नहीं हो सकती। —**ला० दीनानाथ जैन, जालन्धर**

अ० भा० वर्द्ध स्था जैन श्रमण संघ प्रवर्त्तक, पंजाब श्रमण वर्ग के छत्र, समाज के उज्ज्वल चन्द्र पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के गुण, उनकी दिव्य शरीर मुद्रा का चित्र जब भी स्मृति पट पर आता है हृदय भर जाता है। उनका वरद हस्त हमारे पर रहता, इसकी अभी अति आवश्यकता थी। उनके बिना समाज में निराशा है। —**श्री किशोरी लाल जैन मंत्री, अम्बाला शहर**

परम श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी तेजस्वी तथा शीतल स्वभावी एक महान संत होने के अलावा वह प्रकृति के सरल सौम्य और उनमें अनुकम्पा भाव होने के कारण वे एक सच्चे और महान इन्सान भी थे ऐसी महान आत्मा का संसार में मिलना अति दुर्लभ है। —श्री राजकुमार जी जैन (लाहौर वाले)

हमारे भाग्यवान पंडितराज, शांत सरोवर पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी म० की जुदाई हम सब के लिए असह्य है। उनका हमें बड़ा ही आधार था। उनकी तारीफ़ करने के लिए हमारी ज़बान में ताक़त नहीं है। तमाम समाज के लिए बड़ी हानि हो गई है। —श्री हरिचन्द जैन एवं परिवार, रोपड़

प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी प्रवर्त्तक श्री जी महाराज की असीम कृपा की छत्र छाया में जो परम आनन्द व शांति मिलती रही है जो अकथनीय है। प्रवर्त्तक श्री जी महाराज हमें ही नहीं समस्त समाज को अपनी अक्षय निधि उदारता पूर्वक दे गये हैं जिसका ऋण हम किसी भी प्रकार से चुका नहीं सकते।

—राजकुमार जैन, प्रधान,
एस. एस. जैन सभा, आदर्श नगर, जयपुर

प्रवर्त्तक पं० श्री जी महाराज महाभागवान, संयमी तथा नम्र एवं सरल प्रकृति के संत थे। आचार्य सम्राट् श्री सोहनलाल जी म० के हाथों दीक्षित होकर उनके नाम को उज्जवल किया। इस समय आप जैसे संत अधिकारी की समाज को अति आवश्यकता थी। —हंसराज जैन
उपप्रधान, एस. एस. जैन सभा, जालन्धर

नम्रता, शांति और सरलता में बे जोड़, समाज के परम हितैषी एवं रक्षक, बड़े-छोटे, अमीर-गरीब तथा जान-अजान सभी को सम दृष्टि से देखने वाले पंडित श्री जी के गुण और उनकी याद हमारे दिल से कभी विस्मृत नहीं हो सकती। —ला० दीनानाथ जैन, जालन्धर

अ० भा० वर्द्ध स्था जैन श्रमण संघ प्रवर्त्तक, पंजाब श्रमण वर्ग के छत्र, समाज के उज्ज्वल चन्द्र पंडित श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज के गुण, उनकी दिव्य शरीर मुद्रा का चित्र जब भी स्मृति पट पर आता है हृदय भर जाता है। उनका वरद हस्त हमारे पर रहता, इसकी अभी अति आवश्यकता थी। उनके बिना समाज में निराशा है। —श्री किशोरी लाल जैन मंत्री, अम्बाला शहर

तपरूपी विश्वव्यापी धर्म का सन्देश पहुंचाने के लिए अत्यन्त सरल, सुबोध शैली का आश्रय लिया।

मैं समझता हूं कि उनके साहित्य का द्वार द्वार प्रचार उनके प्रति सक्रिय श्रद्धाञ्जली होगी।

—प्रो० पृथ्वीराज जैन एम० ए०, शास्त्री
सम्पादक विजयानन्द',
मन्त्री—श्री आत्मानन्द जैन महासभा,
पंजाब, अम्बाला शहर।

महान् संत के प्रति

अनायास ही जब यह कर्ण कटुक समाचार सुनने को मिला कि परम् श्रद्धेय प्रवर्तक पं०र० श्री शुक्लचन्द्र जी महाराज स्वर्गस्थ हो गए हैं हृदय को बहुत अघात पहुंचा। उनके चले जाने से समाज एक प्रकार से अनाथ हो गया है। उनकी सब से बड़ी महानता थी, सब को साथ लेकर चलने की। सामाजिक बुराई को दूर करने का यही उनके पास सर्वोत्तम मार्ग था। वे पृथक्ता में विश्वास नहीं करते थे। जब कभी भी संकट का समय आया आप उस सामाजिक और वैयक्तिक जीवन में चट्टान की भांति अडिग रहे और समाधान दिया।

मैंने आप श्री जी को अति निकट से सादड़ी बृहद् सम्मेलन के अवसर पर ला० हर जस राय जी के साथ एस० एस० जैन सभा पंजाब की ओर से गया था, देखा था। आप वस्तुत: एक महान् सन्त और सब के हितैषी थे। आप के रिक्त स्थान की पूर्ति असम्भव है।

ऐसे संत-चरण युगल में श्रद्धांजलि अर्पित है।

—खरैती लाल जैन 'साढौरा'

I offer my sincerest and heart-felt tribute to our beloved and great intellectual and spiritual master, Pandit Shukal Chand Ji Maharaj. *The vacuum caused by his death can hardly be filled in and the Jain Community has become poorer by his departure.* It is high time that we rigidly follow and act upon his sermons *viz*; universal brotherhood, non-violence, truth, tolerance and patience.

State Bank of India,
Jullundur City.

A.K. Oswal.

HOMAGE

The sad demise of pravartak Swami Sh. Sh. 1008 Sh. Shukal Chand Ji on 29.2.68 at 7.10 P.M., was like a bolt from the blue. It is a great loss to society and to the nation which is never to be regained.

He was an incarnation of Peace, Tolerance and Compassion. Self-control and self-confidence were his special features. Who so ever came in contact with him, was influenced by his great personality and generous nature.

His generosity can be described in the following lines :—

"Without one least complainting word,
Without one single sigh,
He yields the cup, he simply says
He needs it more than I."

He was a man of principle. He was both a leader and preacher. To maintain unity in the society had been his message through-out his life time.

I, on behalf of my family, pay homage to the departed Guru and pray for tranquility in the heavenly abode.

Jullundur City M.K. Jain, B.Sc.



संस्मरण



संस्मरण



संस्मरण : (१)

संयम के धनी

[स्वर्गीय गुरुदेव के श्री मुख से सुना हुआ उनके जीवन का एक प्रेरणाप्रद मधुर संस्मरण ।]

बात है चान्दनी चौक देहली की । उस समय मैं नव दीक्षित था । नई दीक्षा, नई उमर अपने नए अनुभवों के संग-संग प्रत्येक नई वस्तु की कामना करती थी, जैसे कि नए वस्त्र, नए पात्र, नई पुस्तकें आदि आदि ।

नए रजोहरण की प्रतिलेपणा करते समय पुरानी जीर्ण सी वदसूरत डंडी पर जब नज़र गई तो उसे देख कर मन विचलित सा हो गया । वहां विराजित स्थविर सन्त श्री हीरालाल जी म० की सेवा में उपस्थित हुआ मात्र इस इच्छा से कि इस पुरानी डंडी की जगह एक सुन्दर सी नई डंडी मेरे रजोहरण में अपना स्थान बना ले ।

मैं उनके सन्मुख जाकर खड़ा हो गया किन्तु संकोचवश कुछ कह न सका मानो जिह्वा की चेतना को जड़ता ने जकड़ लिया हो । वे सन्त भी क्या थे ? उदात्त संयमी, सीधे, सरल व सरस भाषी । उनका हृदय नवनीत से भी कोमल था । उन के आचारवान जीवन में किसी प्रकार का मिथ्याभिमान कभी किसी को दृष्टिगत नहीं हुआ । मुझ पर अपनी अन्तर्भेदी दृष्टि डाल कर वे सहज भाषा में बोले–कहो साहु क्या बात है ?

मैंने अपनी अभिलिप्सा उनके समक्ष रख दी । वे केवल इतना कह कर ही चुप हो गए, कि अच्छा, कभी कहीं योग मिला तो दिला देंगे ।

मेरे मन मस्तिष्क में तो केवल एक यही बात समाई हुई थी । जब तक उस को पूरा न करलूँ मुझे चैन कहां ? क्योंकि उमर ही कुछ ऐसी थी और एक दिन मेरी मनपसन्द डंडी मिल ही गई । उसे पाने के लिए मन व्याकुल सा हो उठा । चित्त की चंचलता के अतिरेक में पुरानी डंडी को तोड़ कर पुनः उनकी सेवा में जा खड़ा हुआ ।

मेरे आग्रह को वे टाल न सके, और मुझे साथ लेकर उसी दुकान पर पहुँच गए जहां कि मैं चाहता था । ढेर सी बेंत की डंडिएं सामने पड़ी थीं पर सब एक से एक पुरानी । मुझे उनमें से एक भी पसन्द न थी । अन्त में जब मेरा मन न

माना तो हार कर मैंने अपनी मनोनीत एक नई डंडी की ओर इशारा करके कहा महाराज श्री ! मुझे तो यह चाहिए।

पर मिल न सकी। वे बोले—"नहीं मुनि ! ऐसी कीमती वस्तु की साधु के जीवन में कोई आवश्यकता नहीं होती। वस्तु नई है या पुरानी, संयमी साधक यह नहीं देखता। क्योंकि बाह्य उपकरण तो केवल अवलम्बन मात्र होते हैं। साधु तो आत्मा को बलवती बनाने की कोशिश करता है, न कि परिग्रह को बढ़ाने की।"

एक पुरानी सी डंडी लेकर मैं चला आया। हृदय में खेद था। और आज, जब कभी रजोहरण की ओर दृष्टि जाती है तो उनके शब्द कानों में गूंजने लगते हैं, हृदय उनके आदर्शों पर अपनी समस्त श्रद्धा उंडेल देता है।

वर्तमान स्थिति को सामने देख हृदय पीड़ा से भर जाता है। पीड़ा से कराहती हुई श्रद्धा की एक मद्धिम सी आवाज रह रह कर सुनाई देती है कि कहां ये आज के साधु और कहां आप।

संस्मरण : (२)

आचार्य-अनुग्रह

साधक के जीवन की कसौटी सहनशीलता ही होती है। जीवन में ताड़ना तथा तर्जना के कड़वे घूंट पीने की शिक्षा उसे साधना के संकल्प के साथ साथ ही दी जाती है। गुरुजनों की ताड़ना को वह अपने जीवन के समुत्थान का निर्देश मानता है तथा समाज और साथियों की ताड़ना को अपनी साधना की सफलता का सम्बल।

साधक का हृदय फूल से भी कहीं अधिक सुकोमल होता है। इतना कोमल, जिसमें कि करुणा तथा मैत्री की सुधाधारा सतत प्रवाहित होती रहती है। सृष्टि के सूक्ष्म से सूक्ष्म प्राणी के लिए भी उसके मन में दया और वात्सल्य के मृदु भावों का संचरण अविराम होता है। लेकिन वही उसका कोमल चित्त इतना अधिक कठोर भी होता है कि अपमान भरी वाणी के तीक्ष्ण वाण तक उसे भेद नहीं सकते।

अपराधी व्यक्ति ताड़ना तथा अपमान की कटुकता को मन मसोस कर पीने में भी हिचकिचाता है जब कि निरापराध साधक हंसते-हंसते अपमान के विष का आचमन कर उसे पचा लेता है। इसी लिए तो वह मानवेतर होता है। श्रद्धेय प्रवर्तक श्री जी महाराज के जीवन का एक ऐसा ही प्रसंग आज संस्मरित हो रहा है।

उनके साधु जीवन के प्रारम्भ की बात है। आज की तरह स्थानकवासी जैन मुनि मुद्रित पुस्तकों पर अवलम्बित नहीं रहते थे। शास्त्र, ढाल, चौपाई तथा गायन आदि जो कुछ भी उनके पास होता सभी हस्तलिखित होता था जिसको वे अत्यन्त यत्नपूर्वक रखते थे। पत्र स्याही की चिकनाई तथा मौसम की नमी के कारण आपस में चिपक न जाएं, इसलिए उन्हें धूप में सुखाते व गुलाल आदि लगाकर पूर्णतया उनकी रक्षा करते थे। अस्तु।

अमृतसर में विश्रुतनाम आचार्य श्री सोहनलाल जी म० की सेवा में रत्न मुनि शुक्ल मध्याह्न में हस्तलिखित ग्रन्थों को बड़ी यत्ना से धूप में रख रहे थे। कुछ धूप में, कुछ डब्बे में और कुछ उनके हाथ में थे जिन्हें वे अलग अलग करने का उपक्रम कर ही रहे थे कि एक मुनि आकर बोले शुक्ल मुनि! मैंने तुम से एक चौपाई मांगी थी, वह मुझे जल्दी से ला दो।

महाराज श्री! इन्हें व्यवस्थित करके आपको ला देता हूं, उन्होंने अपनी स्वभाविक नम्रता के अनुसार उत्तर दिया किन्तु वे सन्त सहन न कर सके। कुपित हो गए और कुछ अपमान भरे शब्द कहकर, देता है या नहीं, केवल इतना ही नहीं, उनके हाथों से ग्रन्थ छीन कर फेंक कर बोले चल, उठ, मुझे इसी समय लाकर दे।

आचार्य श्री जी ने यह सब देख लिया था। अतः श्री शुक्लचन्द जी म० को बुला कर पूछा—मुनि! क्या बात थी?

और, वे अपनी सफाई पेश न करके केवल इतना ही कह कर चुप हो गए कि पूज्य, ऐसी कोई बात नहीं थी।

दीर्घ दृष्टा आचार्य इस अन्याय पूर्ण दुर्व्यवहार को प्रश्रय देना पसन्द नहीं करते थे। उस मुनि को बुला कर उन्होंने कहा कि मैंने सब कुछ देख लिया है। इस प्रायश्चित के साथ साथ इससे क्षमा याचना करो।

मुनि के क्षमा मांगने से पूर्व ही मुनि शुक्लचन्द्र उनके चरणों पर गिर कर कहने लगे—नहीं गुरुदेव, क्षमा तो मुझे मांगनी चाहिए।

आचार्य श्री जी का हृदय गद् गद् हो गया। उन्हें सीने से लगा कर बोले—वत्स! तू बहुत सहिष्णु है और शायद यही तेरे उज्जवल भविष्य का संकेत है।

संस्मरण : (३)

समाज के शंकर

कहते हैं जब सागर मंथन हुआ तो उसमें अमृत और विष के दो कुम्भ प्राप्त हुए। जब उन्हें वितरित किया जाने लगा तब अमृत पाने के लिए सभी मचल उठे, आगे २ होकर अमृत की याचना करने लगे किन्तु विष पान के लिए कोई नहीं आया। मैदान खाली देख कर शंकर ने विष-पात्र मुंह से लगा लिया, और यह कह कर, तुम अमर रहो, उसे कण्ठ में स्थान देकर पचा लिया।

विष घातक होता है। शरीर को विषैला करके जीवन को विनष्ट कर देता है। कुसम्प, विघटन तथा वैमनस्य केवल सामाजिक बुराई ही नहीं बल्कि एक घातक विष है जो समाज की जड़ों को जलाकर सुख एवं शान्ति को समाप्त कर देता है। कुछ समाज के अगुवा ऐसे होते हैं जो अपनी श्रद्धा, निष्ठा तथा मान्यताओं को जीवित रखने के लिए इस विष को उगलते हैं और कुछ महापुरुष ऐसे भी होते हैं जो अपने यश, नाम तथा अधिकारों से ऊपर उठ कर शंकर की तरह उस कटु जहर को पी जाते हैं।

ऐसे ही थे हमारे श्रद्धेय प्रवर्त्तक श्री जी म०।

बात कोई पुरानी नहीं है। जैनभूषण श्री प्रेमचन्द्र जी म० तथा श्री सुशील मुनि जी म० के आपस के वैमनस्य के कारण स्थिति कुछ गम्भीर बन गई थी, स्वामी श्री प्रेमचन्द्र जी म० स्व० प्रवर्त्तक श्री म० से भी रुष्ठ थे। ऐसी कोई विशेष बात नहीं थी, केवल विश्व धर्म सम्मेलन के सम्बन्ध में विचार भेद था।

श्री प्रेम चन्द्र जी म० उसे अपने अनुशासनात्मक ढंग से चाहते थे पर असफल रहे। हमेशा विजय का सेहरा युग सेनापति के सिर पर होता है, बूढ़े सैनिकों के सिर पर नहीं। अन्ततोगत्वा उन्होंने प्रतिद्वन्दी बनकर प्रतिशोध का कार्य अपना लिया। श्री सुशील मुनि जी एवं उनका प्रत्येक हितेच्छु उनकी नजरों में खटकने लगा। संघ के मन्त्री होने के कारण स्व० पं० जी म० भी लपेट में आ गए।

एक दिन तत्कालीन जैनाचार्य पूज्य श्रीआत्माराम जी म० ने अपनी गम्भीर शारीरिक एवं सामाजिक स्थिति को देख कर सन्निकटवर्ती सभी साधुगण तथा अधिकारी मुनियों को बुलाया। पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० भी उनके आदेश तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए लुधियाना पधार गए और स्वामी श्री प्रेमचन्द्र जी म० भी।

समाज के कुछ गणमान्य व्यक्तियों ने आपसी मनमुटाव को समाप्त करने का इसको स्वर्णावसर समझा। एक बैठक के पश्चात् वे लोग जैन भूषण जी तथा स्व० पं० जी म० की सेवा में उपस्थित हुए।

लोगों का हृदय पसीज गया, नेत्र सजल हो गए। मस्तक श्रद्धावनत हो गया जिस समय पं० श्री जी म० ने यह कहा कि मुझे प्रेमचन्द्र जी से कोई शिकायत नहीं और न ही उनसे किसी प्रकार का विरोध है। फिर भी संघ शान्ति के लिए श्री प्रेमचन्द्र जी म० चाहें तो मैं बड़े से बड़ा बलिदान कर सकता हूँ। अपना मन्त्रि पद भी व सम्पूर्ण अधिकार उन्हे सहर्ष दे सकता हूँ। इतना ही नहीं, पंजाब प्रान्त से निष्कासन भी मुझे स्वीकार है। पर बात कुछ बन नहीं सकी, सब का हृदय पसीजा लेकिन केसरी जी नहीं—। वे स्थानक की उपरि खण्ड में ठहरे हुए थे और पं० जी म० नीचे व्याख्यान भवन में। मेरठ के गण मान्य व्यक्तियों ने उन्हें ऊपर श्री प्रेमचन्द्र जी म० के पास चलने की प्रार्थना की। वे सहर्ष चल पड़े बिना किसी संकोच के। वे छोटे हैं मैं बड़ा हूँ, क्यों जाया जाए? ऐसा विचार मात्र भी मन में न आया। दूसरे दिन आचार्य सम्राट् की सेवा में पं० श्रीहेमचन्द्र जी म० श्री रघुवरदयाल जी म० पं० श्री त्रिलोकचन्द्र जी म० एवं श्री ज्ञान मुनि जी आदि कई मान्य सन्तों के समक्ष आचार्य श्री के चरणों पर हाथ रख पं० जी म० ने क्षमा का दान मांगा। वे अनमने से हो कर यह कह कर कि—'दिल तो नहीं मानता लेकिन फिर भी मैं आपको खमाता हूँ।' चल दिए और इसको भी उन्होंने वरदान समझ कर आदर किया।

वे सचमुच महान थे। इस लिए तो मेरी यह निष्ठुर लेखनी उन्हें जगती-तल का शंकर लिखते हुए गर्वान्वित हो रही है। ❁ ❁

संस्मरण : (४)

राह न रुकी

व्यक्ति परिश्रम करता है अपने लिए, नाना प्रकार की यातनाएं सहन करता है। भूख प्यास, आधि-व्याधि अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट तथा मानसिक पीड़ाओं का बोझ वहन करता है। दूसरों के लिए नहीं केवल अपने स्वार्थों को सफल करने के लिए, लेकिन—आत्मार्थी होते हुए भी दूसरों के लिए जीता है और मृत्यु को अधर पान करता है। उसके चिन्तन मनन में दूसरों का हित होता है। उसके जीवन की प्रत्येक गति विधि में स्वार्थ नहीं परार्थ की झलक होती है।

आपको ऐसे ही एक साधक की बात सुनाता हूँ। गौर वर्ण, उन्नत ललाट उमर के बोझ से दबे हुए अपने आत्म बल के सहारे मार्ग पर बढ़ता जा रहा है। शरीर पूर्ण तथा जरा ग्रस्त है, लेकिन साहस बलवान है, पावों की बढ़ती हुई सूजन चलने से इन्कार करती है। किन्तु वृद्धकाय साधक की युवा मन की जवान उमंगे

उत्क्लान्त एवं स्तंभित पगों में क्रान्ति का संचार करके आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। उसका गतव्य है अजमेर में होने वाला शिखर सम्मेलन।

भक्तगण कहते हैं, गुरुदेव ! आप ने अपने प्रतिनिधि बनाकर अपने सुयोग्य शिष्य श्री महेन्द्र मुनि जी म० तथा सुमन मुनि जी म० को भेज ही दिया है। अतः आप न जाएं। डाक्टरों का कहना है कि आपका बढ़ता हुआ रक्त चाप विश्राम का संकेत करता है। आपके लिए एक २ क़दम चलना भी खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार जान से खिलवाड़ न कीजिए। हमारी प्रार्थना आपके स्थिर वास की स्वीकृति चाहती है। पर उन्होंने अपनी गति में शिथिलिता न आने दी और यह कह कर कि शरीर विश्राम चाहता है कर्त्तव्य नहीं, हमारे मानोनीत नूतन आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी के अनुग्रह पूर्ण आदेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री अमरचन्द्र जी म० का सन्देश कि 'आप जाएंगे तो मैं भी प्रयत्न करूंगा' का पालन तथा श्रमण संघीय शान्ति व संगठन की सुरक्षा के लिए अजमेर सम्मेलन में उपस्थित रहना मेरा परम कर्त्तव्य है, कर्त्तव्य की वेदी पर मैं शारीरिक सुख की आहुति दे सकता हूँ। किन्तु शारीरिक रक्षा के लिए कर्त्तव्य की नहीं और वे चलते ही रहे। शारीरिक बाधाएं तथा श्रद्धालु भक्तों का अनुग्रह उन्हें रोक न सका।

उन्होंने चैन की सांस ली अपनी मंज़िल पर पहुँच कर। अम्बाला से अजमेर की लम्बी तथा कष्टपूर्ण पद यात्रा की केवल सम्मेलन की सफलता तथा एकता प्रेम एवं मैत्री की भावना की सुरक्षा के लिए ! आप समझ गए होंगे वे कौन थे ?

एक वृद्ध साधक—

वे थे हमारे स्व० प्रवर्तक पं० श्री शुक्लचन्द्र जी म० जिन के हृदय में दर्द था, अपना नहीं—समाज का, अपने सहचरों का। उनके मन में एक बलवती भावना थी—और वह थी समाज कल्याण की। उन्होंने जो कुछ भी दिया समाज के लिए, अपने लिए नहीं।

उनका जीवन एक सुगन्धित काण्ठ वर्तिका की तरह था जो दूसरों को सुरभित करने के लिए स्वयं जलता है और उसकी रक्षा विशेष यह कहती हुई बिखर जाती है :—

"बहारें लुटा दीं जवानी लुटा दी, तुम्हारे लिए जिन्दगानी लुटा दी।"

उनके जीवन का यह संस्मरण इस लोकोक्ति की सत्यता का प्रमाण है—सन्त बड़े परमार्थी—गुरुदेव, आप वास्तव में परमार्थी सन्त थे।



A TRIBUTE

There is no one in the world of Jainism who is not acquainted with the name of the most revered jain saint Pandit Ratna Pravartak Shri 1008 Shri Shukla Chand Ji Maharaj.

He was a great laureate, philosopher and a successful formulator of Jain Dharma. He was the heart and soul of the Sadhu Samaj and was indispensable for his followers for the vast knowledge which he had about Jainism and its principles. Maharaj Shri Jee was always at the service of right and good cause. Every moment of his life was rich in educativeness and he was always willing to share his noble thoughts and knowledge with others. He was of the opinion, that simplicity should be the true essence of life. Glory and heritage of any religion, be held, depends upon the simplicity of life, which its followers have. For him simple living and high thinking should be the aim of life.

Maharaj Shri Jee was the eternal embodiment of simplicity and tranquility. He believed that words, are the reflection of one's feelings and deeds that of his thoughts. He used to say that sacrifice and sufferings are the ways of self purification. He was a philsopher who esteemed a unique place amongst men of his type. He was calm and serene in nature and was a man of high ideals and wisdom.

He considered salvation as the state of bliss and place. He spent all his life in search of its attainment. He spent his life in self meditation and prepared himself to the indifference of pains resulting from wordly sufferings. In him, right faith, right knowledge and right conduct were inextricabely woven. Throughout his life he practised, humulity, forgiveness, austerity, detachment, truthfulness, self restraint, sacrifice and celibacy. For him these virtues were indispensable for the realization of the goal he had set before himself. Because of these noble virtues in him, he left a deep impact on all who ever were fortunate enough to be in contact with him. Gurudev had been a great motivating force, a fountain of knowledge, to those who knew him and admired his ideals. His ideas are cherihsed by all his followers, for whom Gurudev has been an ideal of life.

At the tender age of 23 years Maharaj Shri Jee by the grace of Pujya Acharya Shri Kanshi Ram Jee Maharaj stepped into the path of Sadhuism by obtaining Diksha under His Holiness and was onward ever on the path of righteousness and self purification. Till the very end of Maharaj Shri Jee's virtuous and noble life there was a continuous search for truth and eternal peace. He set before all the noble examples of how man can withdraw himself from the evils of life and devote his life to the ways of liberation of the soul and to restore it to omniscience. Not only this, Gurudev by his unparallel sacrifice and virtues has left an eternal example of self sacrifice for the future generations. By following his path man would achieve salvation and shall overcome all the evils of life very easily. He has been one of those noble souls that have soothed the mind and soul of all mankind. In whose teachings, the restless hearts have found peace and solace. He is one of those few religious souls who sacrificed "self" for the uplift and enlightenment of the mankind. Pandit Shukla Chand Ji Maharaj's followers will cherish his great ideals and the sole motivating force in attaining calm and peace to the restless minds and hearts of many, that would lead mankind to a richer life.

We pray to God that may the eternal torch of nobility lit by Maharaj Shri Jee glorify and enlighten the mankind immemorial.

Fortunes
Shanti Sarup Jain,
Handwriting Expert,
Ambala City.